नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो

५

आगम-सागर-कोषः

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]

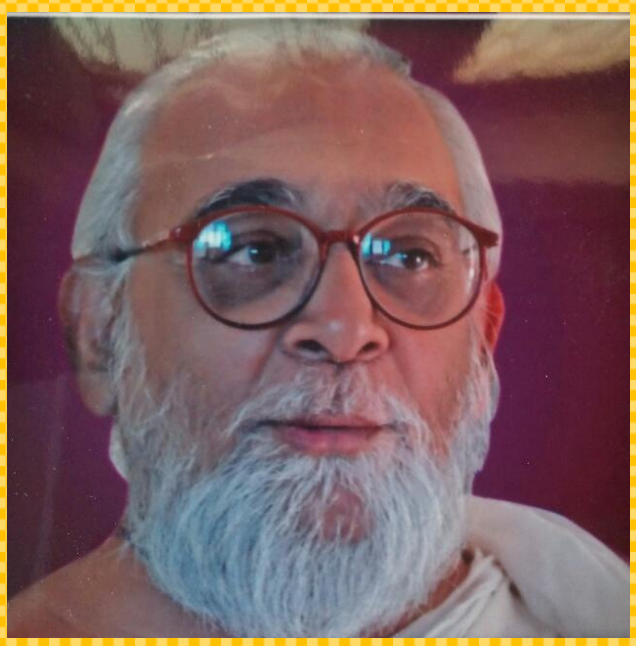

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष–रचयिता

मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com._M.Ed._Ph.D._श्रुतमहर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो नमः

आगम-सागर-कोषः-५

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी

..पूज्यपाद् आचार्य श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज..

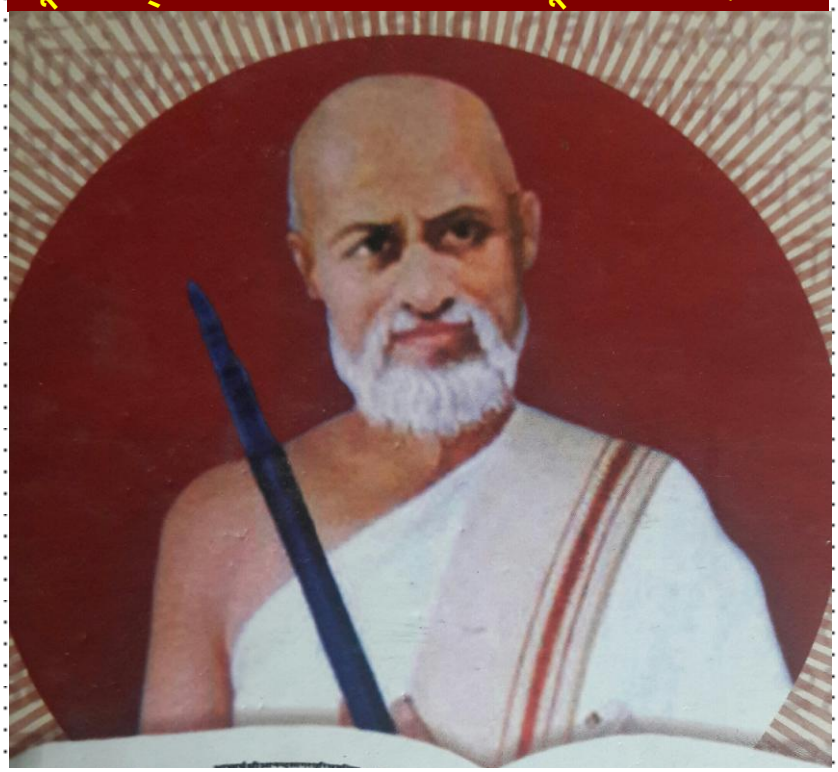

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

मुनिश्री दीपरत्नसागरजी महाराज

[M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि]

12/11/2018 सोमवार, २०७५ कारतक सुद ५

Type Setting: - आशुतोष प्रिन्टर्स, जेतपुर Mobile: 9925146223

It's a Net publication of 'jainelibrary.org' [North America]

"आगम-सागर-कोष:" विषयक किञ्चित् स्पष्टीकरण

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने अपने युगमे आगमो के बहोत से शब्दो एवं उन की व्याखाओ का चयन किया था, किन्तु ईसे शब्दकोष के रुपमे संकलन और मुद्रण पूज्य आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजी आदिने करवाया | ईस कोष का नाम 'अल्प-परिचित-सैद्धान्ति-शब्दकोष:' रक्खा. परन्तु इसमे शब्दार्थ भी है, बहोत स्थान पर शब्दो की आगमिक व्याख्याए भी है और शब्दो के बीच अनेक स्थान पर खास नाम भी है |

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य सूर्योदयसागरसूरिजी कि सूचना एवं उनसे हुए विचार-विमर्श अनुसार हमने ईस 'कोष' के अध्ययनमे देखा की –कई जगह पर सिर्फ़ शब्द है, कई जगह शब्द और संदर्भ है मगर अर्थ नहि है, कई जगह पर संदर्भ के नाम है मगर पृष्ठांक नहि है तो कहीं कहीं शब्दो के अ-कारादि क्रममे गलति दिखी है | ऐसी अनेक मर्यादाओ का उल्लेख स्वयम् आचार्यश्री कंचनसागरसूरिजीने 'अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष' भाग -१ मे किया है |

हमने ईस कोष की रचना करते वक्त सिर्फ़ पूज्यपाद आनन्दसागर सूरीश्वरजी महाराज द्वारा संचित शब्दो एवं व्याख्याओ को ध्यानमे ले कर ईस 'कोष' की रचना की है | रचना करते वक्त विशेषावश्यकभाष्य, उपदेशमाला, तत्त्वार्थसूत्र और पउमचरियं के शब्द निकाल कर सिर्फ़ आगमो के शब्दो को हि स्थान दिया है | अनेक स्थानो पर प्रत्यय या विभक्ति को हटा कर 'शब्दकोष' के नियमानुसार मूल शब्द रख दिये है, परिणाम स्वरुप जहा जहा समान शब्द प्राप्त हुए, उन शब्दो को एकसाथ रख कर उन के संदर्भ वहि नीचे जोड दिये है, कहीं कहीं एक हि शब्द की व्याख्या से पता चलता है की ये शब्द भले एक है मगर 'अर्थ' कि द्रष्टि से वे शब्द भिन्न भिन्न है, तो उन शब्दो को अलग अलग भी कर दिया है | जहा प्राकृत और संस्कृत दोनो शब्द है, वहा प्राकृत शब्द को पीछे से आगे ले कर बोल्ड टाईपमे रक्खे है | ऐसे अनेक परिवर्तन कर के कोष का उपोगिता मूल्य बढाकर हमने ईस कोष की रचना की है |

हमने ईस 'कोष' का नाम **"आगम-सागर-कोष:"** पसंद किया है | यहा सिर्फ़ आगमिक शब्दो को हि स्थान दिया है इसिलिए 'आगम' शब्द पसंद किया, सागरजी महाराज द्वारा शब्द संचित हुए इसिलिए 'सागर' शब्द लिया, ईस कोषमे शब्द, खासनाम और व्याखयाए तिनो का समावेश हुआ है इसिलिए शब्दकोष नाम कि जगह सिर्फ़ कोष [Dictionary] शब्द रक्खा है |

ईस 'कोष' को हमने पांच भागोमे प्रगट किया है, करीब 1200 पृष्ठोमें रहे हुए ईस ग्रन्थमे 41,000से ज्यादा शब्दो [+नामो+धातु]का समावेश हुआ है | अनेक शब्दो की व्याख्याए भी है और इन शब्दो या व्याख्याओ के आगमसंदर्भ भी दिये है | इस के साथ हम एक मर्यादा का भी स्वीकार कर लेते है- इस कोष के मूल संपादनमे बहोत से शब्द और अनेक व्याख्याए समाविष्ट नहीं हुइ है, इसिलिए यहा पर भी अनेक शब्द और व्याख्याए छूट गए है | शब्दो और खास-नामो के लिए आप हमारा [१] आगम सद्दकोसो भाग १ से ४ और [२] आगम नाम एवं कहाकोसो देख शकते है, और व्याख्याओ के लिए हम भविष्यमें **'जैन आगम कोष:'** बनाने का आयोजन कर रहे है | परमात्मा की कृपा हुइ तो मेरे पांच-सो नब्बे [590] प्रकाशनो की तरह 'जैन-आगम-कोष:' भी अवश्य आप के कर-कमलोमें समर्पित हो जायेगा |

...**मुनि दीपरत्नसागर.....**

← संक्षेप-सूचि →

क्रम	आगम का नाम	संक्षेप	क्रम	आगम का नाम	संक्षेप
०१	आचाराङ्ग	*आचा॰*	२४	चतु:शरणप्रकीर्णक	*चतु॰*
०२	सूत्रकृताङ्ग	*सूत्र॰*	२५	आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	*आतु॰*
०३	स्थानाङ्ग	*स्था॰*	२६	महाप्रत्याख्यानप्रकीर्णक	*महाप॰*
०४	समवायाङ्ग	*सम॰*	२७	भक्तपरिज्ञाप्रकीर्णक	*भक्त॰*
०५	भगवती(अङ्ग)	*भग॰*	२८	तन्दुलवैचारिकप्रकीर्णक	*तन्दु॰*
०६	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग	*ज्ञाता॰*	२९	संस्तारकप्रकीर्णक	*संस्ता॰*
०७	उपासकदशाङ्ग	*उपा॰*	३०	गच्छाचारप्रकीर्णक	*गच्छा॰*
०८	अन्तकृद्दशाङ्ग	*अन्त॰*	३१	गणिविद्याप्रकीर्णक	*गणि॰*
०९	अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग	*अनुत्त॰*	३२	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	*देवे॰*
१०	प्रश्नव्याकरणाङ्ग	*प्रश्न॰*	३३	मरणसमाधिप्रकीर्णक	*मरण॰*
११	विपाकश्रुताङ्ग	*विपा॰*	३४	निशीथछेदसूत्र	*निशी॰*
१२	औपपातिकोपाङ्ग	*औप॰*	३५	बृहत्कल्पछेदसूत्र	*बृह॰*
१३	राजप्रश्नीयोपाङ्ग	*राज॰*	३६	व्यवहारछेदसूत्र	*व्यव॰*
१४	जीवाजीवाभिगमोपाङ्ग	*जीवा॰*	३७	दशाश्रुतस्कन्धछेदसूत्र	*दशाश्रु॰*
१५	प्रज्ञापनोपाङ्ग	*प्रज्ञा॰*	३८	जीतकल्पछेदसूत्र	*जीत॰*
१६	सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*सूर्य॰*	३९	महानिशीथछेदसूत्र	*महानि॰*
१७	चन्द्रप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*चन्द्र॰*	४०	आवश्यकमूलसूत्र	*आव॰*
१८	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्ग	*जम्बू॰*	४१	ओघनिर्युक्तिमूलसूत्र	*ओघ॰*
१९	निरयावलियकोपाङ्ग	*निर॰*	४१	पिण्डनिर्युक्तिमूलसूत्र	*पिण्ड॰*
२०	कल्पवतन्सिकोपाङ्ग	*कल्प॰*	४२	दशवैकालिकमूलसूत्र	*दशवै॰*
२१	पुष्पिकोपाङ्ग	*पुष्पि॰*	४३	उत्तराध्ययनमूलसूत्र	*उत्त॰*
२२	पुष्पचूलिकोपाङ्ग	*पुष्प॰*	४४	नन्दीचूलिकासूत्र	*नन्दी॰*
२३	वृष्णिदशोपाङ्ग	*वृष्णि॰*	४५	अनुयोगद्वारचूलिकासूत्र	*अनुओ॰*
---	देशीय शब्द	*दे॰*	---	चूर्णि	*चू॰*

सूचना- [१] उपरोक्त ४५ आगमो के जो शब्द या व्याख्या संदर्भ ईस कोषमे शामिल किये है, उसमें ६ छेदसूत्रो और चन्द्रप्रज्ञप्ति के अलावा बाकी सभी आगमो श्री सागरानन्दसुरिजी महाराज संपादित प्रतो से है, चन्द्रप्रज्ञप्ति के संदर्भ सूर्यप्रज्ञप्ति अनुसार है, सिर्फ़ ६ सूत्र के संदर्भ हस्तपोथी से लिए है

[२] यहां आगमो के जो संदर्भ दिये है, वे उन आगमो की प्रत या पोथी के पृष्ठ-अंक है |

[३] हमारा प्रकाशन "सवृत्तिक आगम सुत्ताणि" भाग १ से ४० मे ये सभी आगम मुद्रित है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बाल ब्रह्मचारीश्री नेमिनाथाय नमः

पूज्य–आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

श

शक- म्लेच्छदेशविशेषः। *उत्त॰ ३३७।*

शकुनिक- पक्षी। *उत्त॰ ३७८।*

शकुनिकसङ्ग्रहणकं- पञ्चरम्। *उत्त॰ ३७८।*

शकुनिका- पक्षिणी। *उत्त॰ ४०९।*

शक्ति- शक्तिः प्रहरणविशेषः। *भग॰ १८२।* प्रहरणविशेषः। *आव॰ ५८८।*

शक्र- सौधर्मकल्पे इन्द्रः। *ज्ञाता॰ १२७।*

शङ्क-शङ्कः- लौकिककालोपायः। *दशवै॰ ४०।* कालशुर्द्ध्ययर्थं साधनविशेषः। *आव॰ ५५४।*

शङ्ख- जीवमिश्रे दृष्टान्तः *प्रज्ञा॰ २५८। जीवा॰ १९१।* शुक्लवर्णपरिणतः *प्रज्ञा॰ १०।* द्वीन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ २३।*

शङ्खचर- द्वीप विशेषः। *अनुयो॰ ९०।*

शङ्खनक- जीवमिश्रे दृष्टान्तः। *प्रज्ञा॰ २५८।*

शङ्खा- वापीनाम। *जम्बू॰ ३७१।*

शङ्खावर्त्ता- वापीनाम। *जम्बू॰ ३७१।*

शङ्खोत्तरा- वापीनाम। *जम्बू॰ ३७१।*

शची- शक्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *जम्बू॰ १५९।*

शत- ग्रन्थान्तरपरिभाषयाऽध्ययनम्। *भग॰ ५।*

शतपत्र- सुरभिगन्धे दृष्टान्तः। *प्रज्ञा॰ ४७३।*

शतपत्रिका- पूष्पविशेषः। *अनुयो॰ २१४।*

शतपद- वास्तुन्यासविशेषः। *जम्बू॰ २०८।*

शतपर्वा- शतपत्री-पवर्गवनस्पती। *आचा॰ ५७।*

शतमुख- आधाकर्मपरिभोगे गुणचन्द्रश्रेष्ठिनः पुरम्। *पिण्ड॰ ७४।*

शतातीक- वृद्धः वर्षशतमानः। *सूत्र॰ ८४।*

शतायुः- अजितसेनापरनाम। *सम॰ १५९।*

शतारुक- क्षुद्रकोष्ठम्। *आचा॰ २३५।* एकादशं क्षुद्रकुष्ठम्। *प्रश्न॰ १६१।*

शफ- खुरः। *जीवा॰ ३८।* खुरः। *प्रज्ञा॰४५।*

शबर- म्लेच्छदेशविशेषः। *उत्त॰ ३३७।* म्लेच्छविशेषः। *आचा॰ ३७७।*

शबरदेशजा- शबरी। *ज॰ १९१।*

शबरा- येषामनेकशाखे शृङ्गे भवतः। *जम्बू॰ १२४।*

शबल- बकुशः-कर्बुरः। *स्था॰ ३३६।* बकुशम्। *भग॰ ८९१। आचा॰ ९७।*

शबलीभूत- उन्मिश्रम्। *आचा॰ ३२१।*

शब्द- राजग्राह्यत्वे शब्दकरणम्। *नन्दी॰ १५८।*

शब्दकरत्व – रात्रौ महाशब्देनोल्लापितत्वम्। सप्तदशममसमा-धिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४।*

शब्दनिःस्पृहत्वं- प्रथमा भावनावस्तु। *प्रश्न॰ १५९।*

शब्दवेधी- धनुर्वेदविशेषः। *आचा॰ १७६।*

शब्दसप्तैकक- आचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कंधे द्वितीयचूडायां चतुर्थमध्ययनम्। *स्था॰ ३८७।*

शब्दाद्बैत- सर्वशब्दात्मकमिदमित्येकत्वं प्रतिपन्नः। *स्था॰ ४२५।*

शब्दाद्बैतवादी- सर्व्वं शब्दात्मकमिदमित्येकत्वं प्रतिपन्नः। *स्था॰ ४२५।*

शब्दापाति- वर्तुलवैताढ्यः। *सम॰ ९५।*

शब्दापाती- वर्तुलविजयार्द्धपर्वतविशेषः। *प्रश्न॰ ९५६।*

शब्दायते- आकारयति। *जीवा॰ २४३।*

शब्दोन्नतिक- उन्नतशब्दम्। *जीवा॰ १२३, १६४।*

शय्यम्भव- परिपाट्या प्रभवशिष्यः। *आव॰ ६२।* अनाचीर्णे आचार्यः। स्थविरविशेषः। *आव॰ ६२। बृह॰ १६६* अ।

शय्यातरपिण्डभोजन- पञ्चमः शबलः। *प्रश्न॰ १४४।*

शय्यातरावग्रह- पञ्जविधावग्रहे चतुर्थः। *आचा॰ १३४।*

शय्यापरिकर्म्मवर्जन- तृतीयभावनावस्तु। *प्रश्न॰ १२८।*

शय्याभाण्ड- शय्योपकरम्। *निर॰ २७।*

शरिध- तोणः। *प्रश्न॰* । तोणः। *३२२।*

शरपर्शी- मुञ्जः। *स्था॰ ३३९।*

शराव- अवधेराकारविशेषः। *आचा॰ १५।*

शरासन- भद्रम्। *भग॰ ५४७।*

शरिका- *आचा॰ ३५७।*

शरीर- नैषेधिकी। *आव॰ २६६।*

शरीरपर्याप्ति- यया तु रसीभूतमाहरं धातुरुपतया परिणमयति सा शरीरपर्याप्तिः। *बृह॰ १८४* आ।

शरीरसम्पत्- आरोहपरिणाहयुक्ततादिचतुर्भेदभिन्ना सम्पत्। *उत्त॰ ३९।*

शरीरानुगतः- उद्गारोच्छ्वासादिः। *स्था॰ ३३६।*

शर्क- मणिपरीक्षायां ज्ञातव्यः। *जम्बू॰ १३८।*

शर्करा- मधुररसपरिणता। *प्रज्ञा॰ १०*।

शर्करिकालेपः- । *ओघ॰ १४५*।

शर्करिल- पादेषु न्यस्यमानेषु शर्करामात्रसंस्पर्शः। *प्रज्ञा॰ ८०*।

शलभ- सम्मूर्च्छनजीवविशेषः। *आचा॰ ७०*।
सम्मूर्च्छनज-विशेषः। *दशवै॰ १४१*।

शलाका- भूमिस्फोटकविशेः। आचा *५७*। घटे कारणम्। *आचा॰ २२८*।

शल्लकी- स्कन्धबीजा। *दशवै॰ १३९*।

शव- कुणपः। *प्रश्न॰ ५२*।

शसि- नृपतिविशेषः। *उत्त॰ ३८८*।

शश्वद्भाव- प्रलयाभावः। *जीवा॰ ९९*।

शष्कुलिका- भक्ष्यविशेषः। *प्रश्न॰ १६३*।

शष्प- हरितम्। *दशवै॰ २३५*।

शस्त्रपरिज्ञा- आचाराङ्गे प्रथममध्ययनम्। *आव॰ ५६३*।

शाकटिक- सारथिः। *स्था॰ २४०*।

शाकढिक- सौपारके वृद्धश्रावकः। *व्यव॰ १७४* आ।

शाकिनी- डाकिनी। *प्रश्न॰ ५२*।

शाक्य- मतविशेषः। *आचा॰ ४०३*। शाक्यः-मतविशेषः। *उत्त॰ ३३७*। शाक्यः। *आव॰ ५९*।

शाटक- वस्त्रविशेषः। *उत्त॰ ९२*।

शान्तिकर्म- होमादि। *स्था॰ ३९४*।

शान्तिचन्द्र- जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिकर्तारः। *जम्बू॰ ५४४*।

शान्तिचन्द्रगणिः- जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिविधायकः। *जम्बू॰ ४२४*।

शाम्ब- द्रव्यभावसङ्कोचे दृष्टान्तः। *जम्बू॰ १०*।
द्रव्यभाव-सङ्कोचे दृष्टान्तः। *आव॰ ३७९*।

शारि- अष्टापदद्यूतभेदः। *जम्बू॰ १३७*।

शार्ङ्ग- विष्णुधनुः। *प्रश्न॰ ८८*।

शालनकं- पुष्पकं फलप्रभृतिः। *जीवा॰ २७८*। शाकः। *प्रश्न॰ १४१*। भोज्यपर्दाविशेषः। *पिण्ड॰ १७२*। शालनकं-व्यञ्जनं तक्रादि वा। *भग॰ ३२६*। शालनकम्। *व्यव॰ १४२* अ।

शालिका- संमूर्च्छिमजीवविशेषः। *आचा॰ ७०*।

शालिग्राम- ग्रामविशेषः। *दशवै॰ २८१*। आधाकर्मपरिहरणे ग्रामणीवणिजस्थानम्। *पिण्ड॰ ७२३*। आधाया अभ्याहृत-विवरणे देवशर्ममड्खस्य ग्रामः। *पिण्ड॰ ९७*।

शालिभद्र- शुलभोबोधौ दृष्टान्तः। *राज॰*।

शाकूल- दर्दूरः। *दशवै॰ १४१*।

शावकः- बोहित्थः, पोतो वा। *प्रश्न॰ ३९*।

शावितः- शादितः-आकारितः। *व्यव॰ १४४* अख।

शास्ता- तीर्थकृदादिः। *आचा॰ २५०*। अर्हन्। *आव॰ ११९*।

शास्ति- निराकरोति। *भग॰ १७४*।

शिक्षक- नवदिक्षीतः। *आचा॰ ८०*।

शिक्षेत- आसेवेत। *आचा॰ २९१*।

शिखरी- वर्षधरः। *स्था॰ ६८*।

शिबिका- यानविशेषः। *आचा॰ ६०*।

शिरः- मस्तकम्। *आचा॰ ३८*।

शिरसिज- केशः। *उत्त॰ ३३८*।

शिरीषकुसुम- सुकुमारकुसुमविशेषः। *जीवा॰ २७०*।

शिरोविशुद्ध- शिरसि प्राप्तो यदि नानुनासिकः। *स्था॰ ३९६*। स्वः शिरसि प्राप्तः सन्नानुनासिको भवति ततः शिरोविशुद्धम्। *जम्बू॰ ४०*।

शिलाप्रवाह- विद्रुमं रत्नम्। *जीवा॰ १६४*।

शिलीमुख- द्रव्यशल्यम्। *आव॰ ७८३*।

शिल्प- कादाचित्कं, नित्यव्यापारः। *भग॰ ५७३, ३६८*।
शिल्पं-साचार्यकं, नित्यव्यापारस्तु शिल्पमिति। *स्था॰ २८३*, शिल्पं-साचार्यकं नित्यव्यापारश्च। *आव॰ ४१५*।
साचार्यकं कादाचित्कं वा। *नन्दी॰ १४४*।
सिद्धिशब्दाभिधेय-साम्ये भेद। *स्था॰ २५*।

शिवक- शिवकः। *स्था॰ ६*।

शिवकोष्टक- तगरायामाचार्यस्य शिष्यः। *व्यव॰ ३१७* अ।

शिवदेव- आधायाःप्रामित्यद्वारविवरणे श्रेष्ठी। *पिण्ड॰ ९९*।

शिवा- शक्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *जम्बू॰ १५९*।
आधायाः प्रामित्यद्वारविवरणे शिवदेवश्रेष्ठिपत्नी। *पिण्ड॰ ९९*।

शिशिर- हेमन्तऋतुः। *ओघ॰ २१२*।

शिशुपाल- महाबलराजसूनुः। *प्रश्न॰ ८८*।

शिशुपालिका- बालवत्सा। *ओघ॰ १६३*।

शिशुकुमार- मकरविशेषः। *पिण्ड॰ १४६*।

शिष्टं- विष्टत्त्वं-अभिमतसिद्धान्तोक्तार्थता, वक्तुः शिष्टतासू-चकत्वम्। *सम॰ ६३*।

शिष्यते- निराक्रियते। *जीवा॰ ३८८।*
शिष्णपयितुं- आसेवनाशिक्षाग्रहणप्रदानतः। *व्यव॰ २१५।*
शीतं- प्रासुकम्। *दशवै॰ २०६।* शीता-वैशद्यकृत् स्तम्भन-स्वभावः। *स्था॰ २६।*
शीतरुपा- योनिभेदः। *आचा॰ २४।*
शीतला- दाहस्फोटकात्मको रोगविशेषः। *उत्त॰ ३५८।*
शीतलिका- व्याधिविशेषः। *व्यव॰ १९२* अ।
शीता- महानदीविशेषः। *प्रश्न॰ ९६।* शीता-नीलपर्वते चतुर्थकूटम्। *स्था॰ ७२।*
शीताकार- भोगः, क्षेत्रपरिमाणोद्भवो वा। आय॰ ४९९।
शीतीभूत- निर्वृत्तः। *आचा॰ २५८।*
शीतोदा- निषधपर्वते सप्तमकूटम्। *स्था॰ ७२।* शीतोदामहा-नदीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ९६।*
शीतोदाद्वीप- द्वीपविशेषः। *जम्बू॰ ३०९।*
शीतोदाप्रपातकुण्ड- कुण्डविशेषः। *जम्बू॰ ३०९।*
शीतोष्परुपा- योनिभेदः। *आचा॰ २४।*
शीर्षद्वारिका- कल्पेन शिरः स्थगनरुपा। *बृह॰ १२५* आ।
शीर्षप्रहेलिका- गणनास्थानविशेषः। *आचा॰ ८९।*
शीला- गुणसमृद्धनृपपत्नी। *पिण्ड॰ ४७।*
शुक- कीरः। *जीवा॰ १८८।*
शुक्ति- भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६।*
शुक्तिक- द्वीन्द्रियजीवविशेषः। *प्रज्ञा॰ २३।*
शुक्तिसंपुट- मुक्ताधारपुटम। *प्रश्न॰ १५२।*
शुक्लपाक्षिकः- किञ्चिदूनपुद्गलपरावर्त्तार्धमात्रसंसारको जीवः। *प्रज्ञा॰ ११७।*
शुक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाति- शुक्लध्यानस्य तृतीयो भेदः। *प्रज्ञा॰ १०९।*
शुचिविधा- मन्त्रशौचम्। *स्था॰ ३४१।*
शुण्ठो- पर्वगभेदः। *आचा॰ ५७।*
शुण्डामकरा- मत्सविशेषः। *समः १३५।*
शुद्धयोग- निर्दोषव्यापारः। *उत्त॰ ६५७।*
शुद्धोञ्छ- उत्सर्गपदम्। *बृह॰ २५०* आ॰।
शुल्क- करः। *आव॰ ४९९।*
शुल्कपालः- सामुच्छेदिकानां प्रतिबोधकः श्रावकविशेषः। *स्था॰ ४१२।*
शुल्व- ताम्रम्। *प्रश्न॰ १५२।*
शुषिर- शङ्खवेण्वादौ। *आचा॰ ४१२।*
शुष्कगोमयः- *नन्दी॰ १५१।*
शुष्कुलीकर्ण- अनज्तद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४।*
शूर- भटः। *भग॰ ४६३।*
शूल- आयुद्धविशेषः। *ज्ञाता॰ १३८।* शूलः। *समः १२६।*
शूलपाणि- अस्थिकग्रामे यक्षः। *स्था॰ ५०१।*
शृगालत्वविहारी- दीनः। *आचा॰ २५४।*
शृगालभक्षित- भक्तविषयं प्रयोजनं सम्यक् न करोति (यः)। *व्यव॰ १६३* आ।
शृङ्ग- वृतम्। *निशी॰ ६२* अ।
शृङ्गाटक- समूर्च्छिमतरुजीवः। *आचा॰ ५७।* शृङ्गाटकः-त्रयस्रसंस्थाने दृष्टान्तः। *प्रज्ञा॰ ११।*
शृङ्गारमति- गर्भाधानपरिसाटरूपमूलद्वारविवरणे सिन्धुरा-जपत्नी। *पिण्ड॰ १४५।*
शृङ्गाशृङ्गि- युयुत्सया योधयोर्वल्गनम्। *जम्बू॰ १३९।*
शेखरक- आपीडः, आमेलकः। *जीवा॰ ३६१।* शेखरकः-आपीडः। *प्रज्ञा॰ ९६।* शेखरकः-शिरोवेष्टनम्। *स्था॰ ३०४।*
शेषवत्- त्रिविधानुमाने द्वितीयमनुमानम्। *भग॰ २२२।*
शैक्षकपरिपालना- यावन्नोपस्थाप्यते तावन्न भिक्षां हिंडापयितव्यः। *बृह॰ ६४* अ।
शैली- रूढिः। *नन्दी॰ १५७।*
शैवाल- बादरनिगोदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७८।*
शौभन- मध्यस्थः कथः। *प्रश्न॰ ११४।*
श्यामाक- बीजविशेषः। *आचा॰ २८५।*
श्रंशना- देशतो भङ्गः। *प्रश्न॰ १३८।*
श्रमं- दौर्बल्यम्। *आचा॰ ३८०।*
श्रव्यशब्दार्थ- मधुरम्। *अनुयो॰ १३३।*
श्रस्तरः- सस्तरणम्। *उत्त॰ ३८०।*
श्राद्ध- पितृक्रिया। *जीवा॰ २८१।*
श्राद्धधर्म्म- सम्यक्त्वमूलानि द्वादशव्रतानि। *बृह॰ १८८।*
श्रावक- व्रतवान्। *आचा॰ २८१।*
श्रावकढङ्ककुम्भकार- सुदर्शनायाः-स्थिरकारकः श्राद्धः। विशे॰ ९३६।
श्रावकदुहिता- विद्वज्जुगुप्सायामुदाहरणम्। *प्रज्ञा॰ ६१।*
श्रावस्ती- कुणालजनपदे नगरी। *ज्ञाता॰ १२५।*
श्री- हिमवद्वर्षधरे षष्ठकुटः। *स्था॰ ७१।*
श्रीकान्ता- उदितोदयस्य राज्ञी। *नन्दी॰ १६६।*

श्रीखण्ड- मलयम्। *जीवा॰ २४४*। श्रीखण्डं-सुरभिगन्धपरिणतः। *प्रज्ञा॰ १०*।

श्रीजयसिंहसूरि- निःसङ्गचूडामणिराचार्यः। *अनुयो॰ २७१*।

श्रीदामगण्डक- जलजादिभास्वरपञ्चवर्णकुसुमनिर्मितम्। *स्था॰ ४०१*।

श्रीदामराजसुत- मथुरायां नृपतिः। *स्था॰ ५०८*।

श्रीदेवी- श्रीदेवीसमाश्रयमध्ययनम्। *स्था॰ ५१२*।

श्रीनिलय- नगरविशेषः, आधानुमोदनायां गुणचन्द्रराजधानी। *पिण्ड॰ ४९*।

श्रीपर्णीफल- कासवनालीयम्। *आचा॰ ३४९*।

श्रीमती- गोचरविषयोपयुक्ततायां सागरदत्तश्रेष्ठिवधूः। *पिण्ड॰ ७८*।

श्रीयक- स्थूलभदहस्वामिलघुभ्राता। *बृह॰ १००* अ।

श्रीवत्स- शुभनाम। *भग॰ २८२*।

श्रीस्थलक- भानुराजनगरम्। *पिण्ड॰ ३३*।

श्रुतं- शोभनमाकर्ण्णितम्। *व्यव॰ ४४०* अ।

श्रुतकेवलिता- चतुर्दशपूर्वी। *भग॰ १२*।

श्रुतजिन- विशिष्टश्रुतधरः। *आव॰ ५०१*।

श्रुतज्ञानलाभ- भावदीपः। *सूत्र॰ १८५*।

श्रुतनिश्रित- यत्पूर्वमेव कृतश्रुतोपकारं इदानीं पुनस्तदनपेक्ष-मेवानुप्रवर्त्तते तद् अवग्रहादिलक्षणं श्रुतनिश्रितम्। *आव॰ ९*।

श्रुतभेद- सूत्रार्थोभयविषयः। *स्था॰ ३८१*।

श्रुतव्यवहारिणः- अवशेषपूर्वधरा एकादशाङ्गधारिणः। *व्यव॰ ५* अ।

श्रुतसम्पत्- बहु श्रुततादिचतुर्भेदभिन्नं सम्पत्। *उत्त॰ ३९*।

श्रुतसमाधिप्रतिमा- समाधिप्रतिमायां प्रथमो भेदः। *सम॰ ९६*। समाधिप्रतिमायां प्रथमो भेदः। *स्था॰ ६५*।

श्रेणीः- पङ्किः। *राज॰ ९६*।

श्रेणिक- नन्दपतिः। *नन्दी॰ १५०*। श्रेणिकः नन्दिषेणपिता राजा। *नन्दी॰ १६६*। श्रेणिकः-क्षायिके दृष्टान्तः। *आव॰ ३८२*। श्रेणिकः-चारित्रमोहनीयकर्मोदये दृष्टान्तः। *उत्त॰ १८५*। श्रेणिकः-आत्मोपक्रमे मृत्वा नरकोत्पन्ने दृष्टान्तः। *भग॰ ७९६*। श्रेणिकः-केवलसम्यग्दर्शनी व्यक्तिविशेषः। *आव॰ ८०५*। श्रेणिकः-क्षायिकसम्यग्दृष्टिवतोऽपि चरणक-रणरहितस्य न सिद्धिः। *आव॰ ५३३*। श्रेणिकः-श्रद्धावान्। *आचा॰ २४९*।

श्रेणिस्वस्तिक- नाट्यविशेषः। *जम्बू॰ ४१४*।

श्रेणीव्यवहारादि- व्यवहारः- पाटीगणितप्रसिद्धोऽनेकधा। *स्था॰ ४९७*।

श्रेयान्- परमप्रशस्यः। *जीवा॰ ३८६*।

श्रेयांस- जातिस्मरणरूपविज्ञानवान्। *आचा॰ २१*। श्रेयांसः-येन भगवद्दर्शनाद् सामायिकं अवाप्तम्। *आव॰ ३४७*।

श्रेष्ठी- श्रीदेवताध्यासितसौवर्णवृविभूषितोत्तमाङ्गः। *राज॰ १२१*।

श्लक्षणः- सूक्ष्मः। *जीवा॰ २३४*। श्लक्षणः-श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्ध निष्पन्नम्। *जीवा॰ १६०*।

श्लक्ष्णमत्स्य- मत्स्यभेदः। *सम॰ १३५*।

श्लाघा- श्लोकः *भग॰ ६७३*।

श्लीपद- रोगविशेषः। *बृह॰ १७०* अ।

श्लेषणता- *आचा॰ २५५*।

श्लोक- श्लाघा। *आव॰ ४७२*।

श्वपता- चाण्डाला ये शुनः पचन्ति तन्त्रीश्च विक्रीणतीति। *व्यव॰ २८५* अ।

श्वयथु- रोगविशेषः। *बृह॰ १७०* ण।

श्वेतपट- अर्हत्पुत्रकः। *नन्दी॰ १५२*।

श्वेतविका- यत्रार्याषाढः। विशे॰ ९५२।

- x – x – x – x –

षकारः

षट्परिक्षेपा- षड्जातीयाः परिक्षेपाः। *जम्बू॰ २८६*।

षड्जीवनिकायः- दशवैकालिके चतुर्थमध्ययनम्। *आव॰ ५६३*।

षण्णवतिछेदनकदायी- यो राशिरर्द्धेनार्द्धेन छिद्यमानः षष्णवतिं वारान् छेदं सहते पर्यन्ते च सकलमेकं रूपं पर्यवसितं भवति स राशिः। *प्रज्ञा॰ २८१*।

षर्द्ध- सागरियं। *निशी॰ ३३* अ।

षष्टितन्त्र- कुशास्त्रविशेषः। *नन्दी॰ २४९*।

षोडशीकला- चन्द्रमण्डलं बुद्ध्या द्वाषष्ठिसङ्ख्यैर्भागेः परिकल्प्यते, परिकल्प्य च तेषां भागानां पञ्चदशभिर्भागो ह्रियते लब्धाश्चत्वारो द्वाषष्ठिभागाः शेषौ द्वौ भागौ तिष्ठतः तौ च सदाऽनावृतौ एषा किल षोडशी कला। *सूर्य॰ १४८*।

षोलिका- काञ्चनकोशी। *जम्बू॰ ५२८*।

- x – x – x – x –

सकारः

सं- सम् सङ्गता। *स्था॰ १४०*। सम्-सम्यक् प्रवृत्त्या। *उत्त॰ २२५*। सम्-एकत्र। *स्था॰ १३९*। सम्-भृशम्। *उत्त॰ ४९९*। सम्-भृशम्। *उत्त॰ ६०५*। संशब्दः प्रकर्षादिवचनः। *औप॰ ८४*। सम्-सन्ततम्। *स्था॰ ५८*। सम्-भृशम्। *उत्त॰ १८३*। सम्-परस्परसंश्लेषार्थः। *भग॰ ३७*। सम्-साङ्गत्त्यं, एकसभावो वा। *उत्त॰ ५६७*। एकीभावः। *प्रज्ञा॰ ५५९*। सम्यग् रमणीयतया। *जम्बू॰ ७७*। एकीभावः। *आव॰ २७८*। संशब्दस्यातिशयार्थत्वाद्वा अतिप्रभाते, प्रतिशब्दार्थत्वाद्वा प्रतिप्रभातम्। *स्था॰ ११८*। सम्यग्-एकीभावः। *प्रज्ञा॰ १८*। संशब्दः। प्रकर्षादिवचनः। *भग॰ १४*। सङ्करेण स्वपरलाभमीलनात्मकः। *भग॰ ७२७*।

संकड्ड- संकष्टो-संथासः। *व्यव॰ ३१२ आ*।

संकड- सङ्कटं-दुष्टप्रवेशम्। *ओघ॰ १८१*। सङ्कटं-विषमम्। *पिण्ड॰ १७१*। सङ्कटं-गहनम्। *प्रश्न॰ ५२*।

संकडमुह- सङ्कटमुखभाजनः कमठादि। *ओघ॰ १८२*।

संकणिज्जे- सङ्कपदं-भयजनकम्। *ज्ञाता॰ ७८*।

संकपय- शङ्कापदं किमेतन्मदारब्धमनुष्ठानं निष्फल स्यादि-त्येवंभूतो विकल्पःशङ्का तय्याः पदं-निमित्तकारणम्। *आचा॰ १९७*।

संकप्प- सङ्कल्पः-भयादिविकल्पः। *भग॰ २०२*। सङ्कल्पः-प्रक्रमाद्रागद्वेषमोहरूपाध्यवसायः। *उत्त॰ ६३७*। सङ्कल्पः-कर्त्तव्याध्यवसायः। *आचा॰ २०३*। सङ्कल्पः-विकल्पो मनोविशेषः एव विमर्शः। *स्था॰ १८३*। संकल्पः- इष्टा-निष्टवियोप्राप्तिजो मानस आतङ्कः। *दशवै॰ २७३*। सङ्कल्पः-अप्रशस्ताध्ययवसायः। *दशवै॰ ८५*। संकल्पश्चद्विधाध्याना-त्मकः चिन्तात्मकश्च, तत्र आद्यः स्थिराध्यवसायलक्षण-स्तथाविधदृढसंनहनादिगुणोपेतानां, द्वितीयश्चलाध्यवसा यलक्षणस्तदितरेषाम्। *जम्बू॰ २०३*। सङ्कल्पः-वधाध्य वसायः, छेदनं वा। *भग॰ ९३*। सङ्कल्पः-विकल्पः। *भग॰ ११६*। सङ्कल्पः-अध्यवसायस्यैकर्थिकः। *विपा॰ ३८*। अब्रह्मणः षष्ठं नाम, विकलपस्तत्प्रभवत्वादस्य सङ्कल्पः। *प्रश्न॰ ६६*। युक्तायुक्तविवेचनम्। *ज्ञाता॰ २८*। सङ्कल्पः-विकल्पः। *ज्ञाता॰ २८*।

संकप्पओ- सङ्कल्पजः-यो मनसः सङ्कल्पाज्जायते प्राणा-तिपातः। *आव॰ ८१८*।

संकप्पियं- तुज्झे यं पछित्तं विज्जिहिति। *निशी॰ ३०६*।

संकम- यां प्रकृतिं बध्नाति जीवः तदनुभावेन प्रकृत्यन्तरस्थं दलिकं वीर्यविशेषण यत्परिणमयति स सङ्क्रमः। *स्था॰ २२२*। संकमिज्जति जेण, पाणियस्स वागडाए वा भण्णइ। *दशवै॰ ७४*। सङ्क्रमगम्यो नदीपथः। *बृह॰ १६१ आ*। तत्थ जइ संकमणं तं। *निशी॰ २० आ*। सङ्क्रमः। *आव॰ १५०*। सङ्क्रमः-विषमोत्तरणमार्गः। *प्रश्न॰ ८*। सङ्क्रमः-अनेकेष्टकादिनिर्मितः। *ओघ॰ ३१*। *निशी॰ २३२ आ*। काष्टचारः। *निशी॰ ११९ अ*। सङ्क्रमः, सेतू। *जम्बू॰ २३०*। सङ्क्रमः-जलगर्त्तापरिहाराय पाषा-णकाष्ठरचितः। *दशवै॰ १६४*।

संकमइ- सङ्क्रामति-याति। *दशवै॰ १२२*।

संकमण- फुडियस्स गमणकाले संकमण भण्णति। *निशी॰ ८३ अ*। सङ्क्रमणं-मूलप्रकृत्यभिन्नानामुत्तरप्रकृती-नामध्यवसायविशेषेण परस्परं सञ्चारणम्। *भग॰ २५*। सङ्क्रम्यतेऽनेनेति सङ्क्रमणं चारित्रम्। *आचा॰ १२२*।

संकमणकाल- सङ्क्रमणकालं-मरणकालम्। *आव॰ ३४५*।

संकममाण- सङ्क्रामन् सङ्क्रमितुभिच्छन्। *सूर्य॰ ४९*।

संकमिउ- सङ्क्रमितुम। *आव॰ १९२*।

संकर- सङ्कर, उक्कुरुडिका। *उत्त॰ ३५९*। सङ्करः-कड्कीर्यते सङ्करणं वा-सम्पिण्डनं सङ्करः। परिग्रहस्य सप्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९२*। सङ्करः-भिन्नजातीयानां मीलकः। *सूत्र॰ ११*। *निशी॰ १३३ आ*। तृणादिकचवरः। *बृह॰ १८ अ*। संमिलनशीलः निर्भयो वा। *बृह॰ ९७ अ*। सङ्करः- नाम किञ्चिद् ग्रामोऽपि खेटमपि खेटमपि आश्रमोऽपि। *बृह॰ १८१ आ*। सङ्करः-तृणाद्यवष्करः। *व्यव॰ ११५ आ*।

संकरक्षत्रिय- प्रदानक्षत्रियः, द्विजेन क्षत्रिययोषितो जातः। *आचा॰ ८*।

संकरदूस- सङ्करः स चेह प्रस्तावात्तृणभस्मगोमयाङ्गारादि- मीलक उक्कुरुडिकेतियावत् तत्र दुष्यं-वस्त्रं सङ्करदुष्यम्। *उत्त॰ ३५९*।

संकरिसण- आगभिन्यामुत्सर्पिण्यां नवमवासुदेवः। *समः १५४*।

संकला- शृङ्खला। *आव॰ २५०*।

संकलिआ- सङ्कलिका। *ओघ॰ ७९*।

संकलियं- श्रृंखला। महाप॰।

संकसमाण- सम्-एकीभावेन कसन्-गच्छन् संकसमानः। *जीवा॰ १२३*। कवलप्रक्षेपं कुर्वन्तः। अथवा आस्वादयन्तः। *निशी॰ ५१* अ।

संकया- सङ्कथा-वार्त्तालापः-*आव॰ ६६५*। सङ्कथा। *उत्त॰ १९२*।

संका- संकणं शंका-अनिरपेक्षाध्यवसायः। *निशी॰ ९९* अ। शङ्का-विकल्पः। *आचा॰ १९७*। शङ्कनं शङ्का-संशय-करणम्। *आव॰ ८११*।

संकाइय- साङ्कयिकं-भारोद्वहनयन्त्रं साङ्कायिकम्। *भग॰ ५२०*।

संकामणे- सङ्क्रामणं-प्रस्तुतप्रमेयेऽप्रस्तुतप्रभेयस्य प्रवेशनं, प्रमेयान्तरगमनमित्यर्थः, अथवा प्रतिवादितमते आत्मनः सङ्क्रामणं परमाताभ्यनुज्ञानमित्यर्थः। अष्टमदोषः। *स्था॰ ४९३*।

संकामिओ- सङ्कामितो दत्तः। *बृह॰ ७९* अ। स्वस्थानात् परं स्थानं नीतः सङ्क्रामितः। *आव॰ ५७४*।

संकामिय- सङ्क्रामितं विभक्तिवचनाद्यन्तरतया परिणामितं तदनुयोगः। *स्था॰ ४९५*।

संकास- सङ्काशः-सदृशः। *उत्त॰ ३५९*। सङ्काशं-सदृशम्। *उत्त॰ ८४*। संकाशः-छायाविशेषः। *आव॰ १८६*।

संकासा- सङ्कासा-सदृशी। *उत्त॰ ६५२*।

संकिए- शङ्कितः-सञ्जातशङ्कः। *भग॰ ११४*।

संकिओ- शङ्कितः-भिक्षादोषविशेषः। *आव॰ ५७५*।

संकिट्ठा- संकृष्टा-विलिखिता। *ज्ञाता॰ १*। संक्लिष्टा-अति-सङ्कटा। *व्यव॰ १८१* आ।

संकिण्ण- सङ्कीर्णः-शबलीकृतचारित्रः। *बृह॰ १९* अ।

संकित- एषणेऽप्यनेषणीयतया शङ्कितः। *स्था॰ ४८४*। शङ्कितः-यस्य त्रीणी स्थानान्यहितादित्वाय भवन्ति स शङ्कितः-देशतः सर्वतो वा संशयवान्। *स्था॰ १७६*। शङ्कितः-किमिदं निष्पत्स्यते न वेत्येवं विकल्पवान्। *ज्ञाता॰ ९४*। शङ्कितः-एकभावविषयसंशययुक्तः। *स्था॰ २४७*।

संकितगणणोवगा- शङ्कितगणनोपगा शङ्किता चासौ गणना च शङ्कितगणना तां शङ्कितगणनामुपगच्छति या प्रत्युपेक्षणा सा। *ओघ॰ ११०*।

संकिन्न- सङ्किर्णः-स्वपक्षपरपक्षव्याकुलः। *भग॰ ९१९*।

संकिय- शङ्कितं सम्भाविताधाकर्मादिदोषम्, प्रथम एषणादोषः। *पिण्ड॰ १४७*।

संकिलि- सङ्क्लपय। *बृह॰ ९१* अ।

संकिलेस- असमाधिः। *स्था॰ ४८९*। सङ्क्लेशः-तीव्रा-शुभपरिणामः। *आव॰ ६६१*।

संकिलिस्समाण- सङ्क्लिश्यमानकं, तत्तूपशमश्रेणितः प्रच्यवमानस्य। *प्रज्ञा॰ ६८*।

संकु- शङ्कप्रमाणः। *जीवा॰ १८९*।

संकुइअ- सङ्कचितं अशुभकायव्यापारपरित्यागात्। *आव॰ १५४*।

संकुइय- संकुचितं-वलीभूतम्। *बृह॰ २४४* आ।

संकुचिअपसारिअ- सङ्कचितप्रसारितं दिव्यनाट्यविधिः, सङ्कोचनेन सङ्कचितं प्रसारणेन च प्रसारितम्। *४१२*।

संकुचिय- सङ्कचितं गात्रसङ्कोचकरणम्। *दशवै॰ १३१*।

संकुडण- सङ्कोचनम्। *ओघ॰ १७८*।

संकुडा- सङ्कवा सङ्कचिता। *सूर्य॰ ६७*।

संकुडिअ- सङ्कटितं सङ्कचितम्। *जम्बू॰ १७०*।

संकुडिय- सङ्कटितम्। *भग॰ ३०८*।

संकुला- सङ्कटा। *प्रश्न॰ १६*।

संकुलिकन्नदीव- लवणसमुद्रे विदिक्षु चतुर्थोऽन्तरद्वीपः। *स्था॰ २२६*।

संकुलिकन्ना- सङ्कुलिकर्णद्वीपे मनुष्याः। *स्था॰ २२६*।

संकये- केतनं-केतं-चिह्नमङ्गुष्ठमुष्ठिग्रन्थिगृहादिकं स एव केतकः सह केतकेन सकेतक ग्रन्थादिसहितम्। नवमं प्रत्याख्यानम्। *स्था॰ ४९८*। सङ्कतं केतं सचिह्नं, अङ्गुष्ठादिचिह्नसहितम्। *आव॰ ८४०*।

संकोए- सङ्कोचनं जानुसदंशकादेः। *ओघ॰ २१४*।

संकोडणा- सङ्कोटता गात्रसङ्कोचनम्। *प्रश्न॰ ५६*।

संकोधिय- संक्रोधिकम्। *सूत्र॰ ३२८*।

संकोय- सङ्कोचः। *भग॰ २३६*।

संख्यावत्त- ललाटः। *निशी॰ ३४७* अ।

संक्रम- अनेकेष्टकादिनिर्मितः। *ओघ॰ ३१*।

संख- एकोनविंशतितममहाग्रहः। *स्था॰ ७८*। शङ्खः-महानिधिः। *जम्बू॰ २५९*। तृतीयवेलन्धरपर्वते पल्योपमस्थितिको देवः। *स्था॰ २२६*। सप्तमभावितीर्थकरपूर्वभ-वनाम। *सम॰ १५४*। शङ्खः। *प्रज्ञा॰ ३६१*। शङ्खः- महाग्र-हविशेषः। *जम्बू॰ ५३४*। शङ्खो वक्षस्कारः। *जम्बू॰ ३५७*। शङ्खः-मायोदाहरणे गजपुरनगरे इभ्यश्रावकः, यस्य पूर्वभवे धनश्रीः सा सर्वाङ्गसुंदरी दुहिता जाता। *आव॰ ३९४*। शङ्खः-मथुरायां युवराजः। *उत्त॰ ३५४*। चक्रवर्तेन्र-वममहानिधिः। *स्था॰ ४४८*। द्वाविंशतिनेमिजिनपूर्वभव-नाम। *सम॰ १५१*। भगवत्यां द्वादशमशतके प्रथमोद्देशकः। *भग॰ ५५२*। भगवत्यां त्रयोदशशतके दृष्टान्तः। *भग॰ ६१८*। तृतीयो वेलन्धरनागराजः। *जीवा॰ ३११*। शङ्खः-तृतीयवेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वतः। *जीवा॰ ३११*। शङ्खः-गणराजः, सिद्धार्थराजमित्रम्। *आव॰ २१४*। संग्रामः। *बृह॰ २५६ अ*। श्रमणोपासकविशेषः। *भग॰ ५५२*। शङ्खः- वाद्यविशेषः। *भग॰ २१६*। काशीवाणास्यां नरपतिः। *ज्ञाता॰ १४१*। काशीराजा। *ज्ञाता॰ १२४*। शङ्खः-दीर्घा-कृतिः। *निशी॰ ६२ अ*। शङ्खः- काशीजनपदराजः वाराणसी निवासी। *स्था॰ ४०१*। शङ्खः-समुद्रोद्भवो जन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३१*। शङ्खः। *आचा॰ ४१२*।

संखचुण्णः- शङ्खचूर्णः-शङ्खनिष्पन्नरजः। *पिण्ड॰ १६४*।

संखडः- । स्वक्षेत्रपक्षपातजनिता राटिरिति। *ओघ॰ ७०*। कलहः। *पिण्ड॰ १००*।

संखडति- सङ्खण्डयति। *आव॰ १११*।

संखडि- सङ्खडिः-सङ्खड्यन्ते-विराध्यन्ते प्राणिनः यत्र सा सङ्खण्डिः। *आचा॰ ३२९*। सङ्खडि-सङ्खडिभक्तम्। *आचा॰ ३३०*। संखडी-प्रकरणविशेषः। *ओघ॰ ४७*। प्रकरणम्। *बृह॰ ४३ आ*। असावाहारय सङ्खड्यन्ते प्राणिनोऽस्यामिति सङ्खण्डिः। *आचा॰ ३०६*।

संखडिकरणं- सङ्खड्यन्ते प्रणिनो यस्यां सा सङ्खडिः-अने-कसत्त्वव्यापत्तिहेतुः तस्याः करणं सङ्खडिकरणम्, प्रथमा-लिकादि। *ओघ॰ ११*। *निशी॰ २८५ अ*।

संखडिनिवेस- संङ्खडिनिवेशः। *आचा॰ ३३१*।

संखडी- सङ्खडिः-विवाहादिप्रकरणं, सङ्खड्यन्ते प्राणिनो अस्यामिति सङ्खडिः। *पिण्ड॰ ७९*। यत्र घनजनसमुदायो जेमनार्थं मिलितः। *आव॰ ८५६*। गोचरीदोषः। *आव॰ ३१४*। सङ्खडिः-सामयिकीभाषया भोजनप्रकरणार्थः। *ओघ॰ २३*। प्रकरणम्। *ओघ॰ ४७*। सङ्खडि। *आव॰ ८४६, ३९६*। छिंडिका। *बृह॰ १५ आ*। *निशी॰ १८५*।

संखणग- सङ्खागारो। *निशी॰ ५७ आ*। शङ्खनक-शङ्खाकृतिरेवात्पन्तलघुर्जीवः। *उत्त॰ ६९५*। शङ्खनकः-लघुशङ्खः। *जीवा॰ ३१*। शङ्खनकः-शङ्ख एव लघुः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

संखणाभ- शङ्खनाभः ग्रहविशेषः। *जम्बू॰ ५३४*।

संखतलं- शङ्खतलं-शङ्खमध्यभागः। *जम्बू॰ ४२७*। शङ्ख-तलं-शङ्खस्योपरितनो भगः। *जम्बू॰ ४९*। शङ्खतलं-शङ्ख-स्योपरितनो भागः। *जीवा॰ २०५*।

संखदत्तित- सङ्ख्यादत्तिकः-सङ्ख्याप्रधानाः- परिमिता एव दत्तयः-सकृद्भक्तादिक्षेपलक्षणा यस्य सः सङ्ख्याद-त्तिकाः। *स्था॰ २९८*।

संखदल- शङ्खदलं-शङ्खदलचूर्णम्। *प्रज्ञा॰ १०७*। शङ्खदलं शङ्खशकलम्। *जीवा॰ ३६०*।

संखधमग- शङ्ख ध्मात्वा यो जेमति। *भग॰ ५१९*।

संखधमा- शङ्खं ध्मात्वा ये जेमन्ति, तापसविशेषः। *निर॰ २५*।

संखपाल- धरणस्य चतुर्थो-लोकपालः। *स्था॰ १९७*।

संखमाला- शङ्खमाला द्रुमगणविशेषः। *जम्बू॰ ९८*। एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। *जीवा॰ १४५*।

संखय- संस्कर्तृ-तन्तुवात्सन्धातुम्। *सूत्र॰ ६७*। संस्कृतः न तात्त्विकशुद्धिमान् किन्तूपचरितवृत्तिः, संस्कृतागमप्ररूप-कत्वेन वा। *उत्त॰ २२७*।

संखलेत्तूण- विशृङ्खलय्य। *उत्त॰ १००*।

संखवण- आलभिकानगर्यामुद्यानम्। *उपा॰ ३६*। आलभिकायां चैत्यम्। *भग॰ ५५०*।

संखवण्ण- विंशतितममहाग्रहः। *स्था॰ ७८*।

संखवण्णाभ- शङ्खवर्णाभः-ग्रहविशेषः। *जम्बू॰ ५३४*।

संखवन्नाभः- एकविशंतितममहाग्रहः। *स्था॰ ७९*।

संखवाल- धरणाभिधाननागराजस्य लोकपालः शङ्खपालकः, वरुणस्थ पुत्र स्थानीयो देवः। *भग॰ १९९*।

शङ्खपालकः अन्ययूथिकः। *भग॰ ३२३*।
आजीवकोपाशकः। *भग॰ ३७०*।

संखसमए- साङ्ख्यसमयः-साङ्ख्यसमाचारः। *ज्ञाता॰ १०५*।

संखसिला- शङ्खशिला-मुक्तशैलादिका शिला। *सूत्र॰ २९२*।

संखा- सम्यक् ख्यायते-प्रकाश्यतेऽनयेति संख्या प्रज्ञा। आचा॰ *२५१*। द्वीन्द्रियविशेषः शङ्खः समुद्रोद्भवः। *प्रज्ञा॰ ४१*। साङ्ख्यतम्। *ज्ञाता॰ १०५*। संख्यायन्ते-परिच्छि-द्यन्ते जीवादयः पदार्थो येन तज्ज्ञानं सङ्ख्या। *सूत्र॰ २३५*। *स्था॰ ८०*। साङ्खा ब्राह्मणपरिव्राजकः। *औप॰ ९९१*। सङ्ख्या-व्यवस्था। *सूत्र॰ ४१३*।

संखाइआ- सङ्ख्यानं सङ्ख्या तामतीताः सङ्ख्यातीता असङ्ख्येया इत्यर्थः। *ओघ॰ २७*।

संखाण- सङ्ख्यानं-गणितम्। *स्था॰ ४५२*। भगवत्यां दृष्टान्तः। *भग॰ ९७४*। सङ्ख्यानं-गणितस्कन्धः। *भग॰ ११४*।

संखादत्तिए- भिक्षाचर्याया भेदः। *भग॰ ९२१*। सङ्ख्या-प्रधानाः पञ्चषादयो दत्तयोर्भिक्षाविशेषाः। *भग॰ ९२४*।

संखादत्तिय- सङ्ख्याप्रधानाभिर्दत्तिभिश्चरति यः सः सङ्ख्यादत्तिकः। *प्रश्न॰ १०६*।

संखाय- सङ्ख्याय-अवधार्य। *आचा॰ २५८*।

संखायण- साङ्ख्यायानं-श्रवणगोत्रम्। *जम्बू॰ ५००*।

संखायणसगोत्त- श्रवणनक्षत्रगोत्रम्। *सूर्य॰ १५०*।

संखार- संस्कारः। *बृह॰ २५५* आ।

संखारा- तुन्नाकविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६*।

संखालग- शङ्खवन्तौ च शङ्खयोः। अक्षिप्रत्यासन्नावयवावि-शेषयोः संलग्नो-सम्बद्धावित्येके। *ज्ञाता॰ १३३*।

संखावत्ता- शङ्खावर्त्ता-शङ्खस्येवावार्त्तो यस्यां सा। *स्था॰ १२२*। शङ्खस्येवावर्त्तो यस्याः सा शङ्खावर्त्ता, मनुष्ययोनौ द्वितीयो भेदः। *प्रज्ञा॰ २२७*।

संखिआ- शङ्खिका-लघुशङ्खरूपा, तस्याः स्वरो मनाक् तीक्ष्णो भवति न तु शङ्खस्येवाति यम्भीरः। *जम्बू॰ १०१*।

संखिगा- शाङ्खि-ह्रस्वः शङ्खः। *भग॰ २१६*।

संखिज्ज- सङ्ख्येयः-वर्षसहस्रात्परः *नन्दी॰ ९४*।

संखित्त- संक्षिप्त-स्तोकावगाहनम्। *भग॰ २६६*।

संखिद- शङ्खकं, चन्दनगर्भशङ्खहस्तः, माङ्गल्यकारिणः शङ्ख-ध्मा। *जम्बू॰ १४२*।

संखिय- चन्दनगर्भशङ्खहस्तः, शङ्खवादकः *भग॰ ४८१*।

संखिया- शंङ्खिका-लघुशङ्खरूपा। *जीवा॰ २६६*। ह्रस्वशङ्खो जात्यन्तरात्मकः शङ्खिका। *राज॰ ४९*।

संखुन्न- सङ्क्षुन्नं- सङ्कुचितम्। *बृह॰ २६४* आ।

संखेज्जइभाग- सङ्ख्येयभागः। *अनुयो॰ १६३*।

संखेज्जक- सङ्ख्यातक-सङ्ख्यातवर्षसहस्रलक्षणम्। *प्रश्न॰ २४*।

संखेज्जजीवित- सङ्ख्यातजीविकः-सङ्ख्यातजीवः-वनस्पतिकाये प्रथमो भेदः। *स्था॰ १२२*।

संखेज्जलीविया- वृक्षजीवितव्ये प्रथमो भेदः। *भग॰ ३६४*।

संखेज्जवित्थड- सङ्ख्येयविस्तृत-सङ्ख्येययोजनप्रमाणं विस्तृतं-विस्तारो यस्य स। *जीवा॰ १०६*।

संखेव- सङ्क्षेपः सङ्ग्रहः। *स्था॰ ५०३*। सङ्क्षेपणं सङ्क्षेपः। *आव॰ ३६४*। सङ्क्षेपः-सङ्ग्रहः। *स्था॰ ५०४*।

संखेवरुई- सङ्क्षेपरुचिः-सङ्क्षेपः-सङ्ग्रहस्तस्मिन् रुचिर्यस्य स। *उत्त॰ ५६३*। सङ्क्षेपः-सङ्ग्रहः तत्र रुचिर्यस्य विस्तरार्थापरिज्ञानात् स सङ्क्षेपरुचिः। *प्रज्ञा॰ ५६*। सङ्क्षेपः-संग्रहः तत्र रुचिः सङ्क्षेपरुचिः चिलातिपुत्रवत्। *स्था॰ ५०३*।

संखोभिज्जमाणी- सङ्क्षोभ्यमाना-अधो निमज्जनतः तद्ग-तलोकक्षोभोत्पादात्। *ज्ञाता॰ १५६*।

संखोभियपुव्व- कायेनापरस्य चरकादेः कायः सङ्क्षोभित। पूर्वः। *आचा॰ ३३२*।

संग- सङ्गः-यस्य महामुनेरवगतसंसारमोक्षकारणस्येयं सङ्गः-आरम्भः। *आचा॰ २५८*। सङ्गः-भावतोऽभिष्वङ्गः, स्नेहगुणतो रागः। *आव॰ ७२३*। सङ्गः-सम्बन्धः, शब्दादिः वाऽभिष्वङ्गविषयः। *उत्त॰ १८३*। सङ्ग-अष्टाविधं कर्म विषयसङ्गः। *आचा॰ ७९*।

संगइ- सङ्गतिः नियतिः। *सूत्र॰ ३१*।

संगइय- स्वाङ्गिकं-परिभुक्तप्रायम्। दातुः स्वाङ्गिकं परिभक्त-प्रायम्। आवा॰ *४००*। नियतिः। *सूत्र॰ २८९*। यस्मिन् दिवसे यद्वाहयते तत्सङ्गतिकम्। *बृह॰ १०६* आ।

संगए- परिचितः सङ्गतं विद्यते यस्यासौ साङ्गतिकः। *स्था॰ २४५।*

संगएइ- साङ्गतिकः, सङ्गतिमात्रघटितः। *जम्बू॰ १२३।*

संगकर- सङ्गकरः-प्रतिबन्धोत्पादकः। *उत्त॰ ३९०।*

संगतं- सङ्गतं-मैत्रीगतं गमनं-सविलासं चङ्क्रमणम्। *सूर्य॰ २९४।*

संगतिकपात्र- पात्रविशेषः। *बृह॰ १०६* अ।

संगंथ- सङ्ग्रन्थः-स्वजनस्यापि स्वजनः पितृव्यपुत्रशालादिः। *आचा॰ १००।* सङ्ग्रन्थः-स्वजस्यापि स्वजनः पितृव्यपुत्रशालादिः। *जम्बू॰ १४९।*

संगम- नदीमीलकः। *ज्ञाता॰ ३३।* सङ्गमः-नदीमिलकः। *ज्ञाता॰ ६३।*

संगमओ- सङ्गमकः। *आव॰ २१९।* सङ्गमकः-सौधर्मकल्प-वासीदेवः, अभवसिद्धिकः। *आव॰ २१६।* संगमकः-कण-यितचतुर्थभङ्गे दृष्टान्तः। *व्यव॰ २०६* आ।

संगमथेर- सङ्गमस्थविरः, नित्यवासी आचार्यविशेषः। *आव॰ ५३५।* सङ्गमस्थविरः-कुल्लयरनगरवास्तव्य आचार्यः। *उत्त॰ १०८।* सङ्गमस्थविरः-नित्यवासी आचार्यविशेषः। *आव॰ ५३८।* आयरिया। *निशी॰ ९५* आ।

संगय- सङ्गतः-सर्वकामविरक्ततायाविषये देवलासुतराजस्य दासः। *आव॰ ७१४।* सङ्गतं-सुश्रिष्टम्। *जीवा॰२७६।* सङ्गं-उपपत्तिभिरबाधितम्। *प्रश्न॰ १२०।* सङ्गतः-उचितः। *ज्ञाता॰ १३।* सङ्गतः-देहप्रमाणोचितः। *जीवा॰ २७१।* सङ्गतः-अनुगतः सदृशः। *प्रश्न॰ ८४।*

संगलिया- फलिका मुद्रा भाषाश्च। *अनुत्त॰ ४।*

संगह- सङ्ग्रहणं भेदानां सङ्गृह्णाति वा भेदान् सङ्गृह्यन्ते वा भेदा येन स सङ्गृहः। *स्था॰ ३९०।* सामान्यप्रतिपादनपरः मूलनयः। *स्था॰ ३९०।* सङ्गृह्णातीति सङ्गृहः। *ओघ॰ २०७।* दशविधदाने द्वितीयो भेदः, व्यसनादौ सहायकरणं-तदर्थं दानम्। *स्था॰ ४९६।* सङ्गृहः-शिष्यादिसङ्ग्रहणम्। *प्रश्न॰ १२६।* सङ्ग्रहः-सम्यक् पदार्थानां सामान्याकारतया ग्रहणं सङ्ग्रहः। *सूत्र॰ ४२६।* नयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२७।* सङ्ग्रहः-शिष्याणांसङ्ग्रहणम्। *व्यव॰ १७२* अ। सङ्ग्राहकः। *व्यव॰ २४७।* संग्रहण भेदानां कङ्गृह्यन्ते वा येन स, सङ्ग्रहो-महासामान्यमात्राभ्युपगमपर इति। *स्था॰ १५२।* संगृह्यते इति सङ्ग्रहः-वर्षाकल्पादिः। *उत्त॰ ५२७।* सङ्ग्रहः-समुदायः। *स्था॰ २२३।* सङ्ग्रहः-शिष्याणां श्रुतोपादानम्। *स्था॰ ३५०।* सङ्ग्रहः-समुदायः। *दशवै॰ ७।*

संगहकाओ- संग्रहकायः-प्रभूता अपि यत्रैकवचनेन दिश्यन्तो गृह्यन्ते स सङ्ग्रहः, तत्सम्बन्धी कायः। *आव॰ ७३७।*

संगहकाय- सङ्ग्रहकायः-सङ्ग्रहैकशब्दवाच्यस्त्रिकटुकादि-वत्। *दशवै॰ १३५।*

संगहइय- सङ्गृहीतः-शिष्यीकृतः। *स्था॰ ३५०।*

संगहपरिन्ना- संग्रहपरिज्ञा अष्टमीपरिज्ञा। *व्यव॰ ३९१* अ।

संगहिअ- सम्यग् गृहीत-उपात्तः सङ्गृहीतः पिण्डित एकजातिमापन्नोऽथो विषयः। *अनुयो॰ २६४।*

संगहिओ- ज्ञानादिभिः सङ्गृहीतः। *आव॰ ७९३।*

संगहिय- आभिमुख्येन गृहीतः, उपात्तः संगृहीतः। *आव॰ २८३।*

संगाणपरिण्णा- सङ्गपरिज्ञा, योगसङ्ग्रहे त्रिंशत्तमो योगः। *आव॰ ६६४।*

संगाम- सङ्ग्रामः-तृतीयवासुदेवनिदानकारणम्। *आव॰ १६३।*

संगामरह- सङ्ग्रामरथः, सङ्ग्रामार्थं रथः। *जीवा॰ २८१।*

संगामसीस- सङ्ग्रामशीर्षः-युद्धप्रकर्षः। *उत्त॰ ४८६।*

संगामिया- कृष्णवसुदेवस्य द्वितीया भेरी। *बृह॰ ५६* अ। सङ्ग्रामिकी-देवतापरिगृहीता गोशीर्षचन्दनमयी भेरी। *आव॰ ९७।*

संगार- सङ्गारः-संकेतः प्रथमभावकाले कर्त्तव्यः। *ओघ॰ १७।* सङ्केतः *आव॰ ३६७।* सङ्केतस्तस्माद् या सा सङ्ग्रारप्रव-ज्या, मेतार्यादीनामिवेति। *स्था॰ १२९।* सङ्गारः-सङ्केतः। *सूत्र॰ ११।* सङ्गारः। *ओघ॰ ७३।* सङ्गारः- सङ्केतः। *स्था॰ २४५।* सङ्केतः। *आव॰ ५६५।* सङ्गारः। *ओघ॰ १७।* संकेतः। *बृह॰ ३७* अ। सङ्केतः। *ज्ञाता॰ ९१।* सङ्गारः-सङ्केतः। *व्यव॰ १३०* अ।

संगारदिण्णओ- दत्तसङ्केतः। *आव॰ ९५।*

संगिण्ह- संगृह्णात-स्वीकुरुत। *भग॰ २१९।*

संगिल्लं- समुदायम्। *व्यव॰ ३१* अ।

संगृहणाति- क्रोडीकरोति। *अनुयो॰ २२३।*

संगेल्ल- सङ्गिल्लं-समुदायः। *व्यव॰ ३२ अ।*

संगोवग- सङ्गोपकः यदृच्छाचारितायां संवरणात्। *ज्ञाता॰ २४२।*

संगोवयामि- संगोपयामि क्षेमस्थानप्रापणेन। *भग॰ ६३७।*

संगोवित्ता- सङ्गोपयिता-अल्पसागरिककरणेन मलिनतारक्ष-णेन वेति। *स्था॰ ३८६।*

संगोवेति- संगोपयति, पालयति अनाभोगेन हस्तस्खलनक-ष्टेभ्यः। *जम्बू॰ १२६।*

संगोवेमाणी- सङ्गोपयन्ती स्थगयन्ती। *ज्ञाता॰ ९१।*

संघ- सङ्घः-गुणरत्नपात्रभूतसत्त्वसमुहः। *स्था॰ २८२।* संघः-समुदायः। *प्रज्ञा॰ ८८।* सङ्घः-समस्त एव साध्वा-दिसङ्घातः। *आव॰ ५१०।* सङ्घः-चातुर्वर्णः श्रमणादिस-ङ्घातः। *नन्दी॰ ४३।* संघः-साधुसाध्वीवर्गः। *व्यव॰ १५३ अ।* सङ्घः-गणसमुदायः, चतुर्वर्णरूपो वा। *बृह॰ २६१ अ।* सङ्घः-गणसमुदाय इत्येवं सूत्रद्वयेन दशविधं वैयावृत्त्य-माभ्यन्तरतपोभेदभूतं प्रति-पादितमिति। *स्था॰ २९९।* सङ्घः-चतुर्विधरूपः। *आव॰ ४११।* सङ्घः-समुदायः। *जीवा॰ १६०, २२७।*

संघट्ट- सङ्घट्टः-परस्परं संघर्षः। *व्यव॰ १३० आ।* सङ्घट्टः-जंघार्धप्रमाणे उदकसंस्पर्शे सङ्घटः नाभिप्रमाणे उदकसंस्पर्शे। *व्यव॰ २५ आ।* जंघा अर्द्ध बूडति स सङ्घट्टः। *बृह॰ १६१ अ।* अत्थ तले पादतलातो आर-भेऊणं जाव सक्क जंघाए अद्धं छुट्ठति एस संघट्टो भन्नति। *निशी॰ ७८ आ।* सङ्घट्टयेत्-चालयेत्। *ओघ॰ ११२।* जङ्घार्द्धमात्रप्रमाणा जलं सङ्घट्टः। *ओघ॰ ३२।* सङ्घट्टः-जङ्घार्धमुदकम्। *आव॰ ६५६।* वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

संघट्टए- सङ्घट्टयेत्-स्पृशेत्। *दशवै॰ २२८।*

संघट्टण- सङ्घट्टनं-अविधिना स्पर्शनम्। *आव॰ ५७४।* सङ्घट्टनं-सम्मर्दनम्। *पिण्ड॰ १६१।*

संघट्टिओ- सङ्घट्टितः-मनाक् स्पृष्टः। *आव॰ ५७४।*

संघट्टिज्ज- सङ्घट्टम्। *आचा॰ ३४४।*

संघट्टिय- सङ्घट्टितं-परस्परं घर्षयुक्तम्। *जीवा॰ १९२।*

संघट्टिया- सङ्घट्टश्चाक्रमणभेदोऽत आक्रान्तानां पृथिव्यादीनां यादृशी वेदना भवति तत् प्ररूपणा। *भग॰ ७६६।*

संघट्टेइ- सङ्घट्टयति-स्पृशति। *आव॰ ६१३।*

संघट्टेति- सङ्घट्टयति-अतीव सङ्घातविशेषमापादितान् कुर्वन्ति। *प्रज्ञा॰ ५९२।*

संघट्टेह- सङ्घट्टयथ-स्पृशथ। *भग॰ ३८१।*

संघडदंसि- निरंतरदर्शी। *आचा॰ १९५।*

संघडिए- समर्थः-तद्दिवसपर्याप्तभोजी वा। *बृह॰ १९७ अ।*

संघडिय- सम्यग् घटितः-परस्परं स्नेहेन सम्बद्धः वयस्य इति। *उत्त॰ ३९४।* देशीपदमव्युत्पन्नमेव मित्राभिधायि। *उत्त॰ ३९।*

संघथेरा- सङ्घस्थविराः-लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यव-स्थाकारिणस्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहकाः। *स्था॰ ५१६।*

संघधम्म- सङ्घधर्म्मः-गोष्ठीसमाचारः आर्हतानां वा गणसमु-दायरूपश्चतुर्वणो वा सङ्घस्तद्धर्म्मः-तत्समाचारः। *स्था॰ ५१६।*

संघपाहुणा- कुलगणसंघथेराः। *निशी॰ २०७ अ।*

संघभत्त- सङ्घभक्तम्। *पिण्ड॰ ८८।*

संघयण- संहनवः-अस्थिरचनाविशेषः। शक्तिविशेषो वा। *प्रज्ञा॰ ४७०।* संहननः-अस्थिसंचयः। *सम॰ १५०।* संहननं-शरीर-सामर्थ्यहेतुः वज्रऋभनाराचादि। *उत्त॰ २३५।* संहननं-अस्थिनिचयः। *जीवा॰ १५।* संहननं-अस्थिसंचयः। *भग॰ ७२।* संहननं-अस्थिसञ्चयः। *स्था॰ ३५७।* संहननं-वपुर्दृढीकारकारणास्थिनिचयात्मकम्। *जम्बू॰ ७०।* संहननं-अस्थिसञ्चयविशेषः। *भग॰ १२।* संहननः। *आव॰ ४२०।*

संघरिससमुट्ठिय- सङ्घर्षसमुत्थितः-अरण्यादिकाष्ठनिर्म्मन-समुदूभूतः तेजस्कायिकः। *प्रज्ञा॰ २९।*

संघसिज्ज- संघर्षम्। *आचा॰ ३४४।*

संघाइए- सङ्घातयति-निष्पादयति। *सम॰ ७५।*

संघाइम- संघातिमं, यत्पुष्पं पुष्पेण परस्परनालप्रवेशेन संयो-ज्यते। *जम्बू॰ १०४।* संघात्यं कञ्चुकादि। *दशवै॰ ८७।* संङ्घातितः-अन्योन्यं गात्रैरेकत्र लगितः। *आव॰ ५७४।* सङ्घातिमं-यत्पुष्पं पुष्पेण परस्परं नालप्रवेशेन संयोज्यते। *जीवा॰ २६७।* सङ्घातिमं-संघातेन निष्पन्नं, इतरेतरनिवे-शित-नालपुष्पमालावत्। *प्रश्न॰ १६०।* सङ्घातिमं-यत्पर-स्परतो नालसङ्घातेन सङ्घात्यते। *जीवा॰ २५३।* सङ्घातिमं-

बहुवस्त्रादिखण्डसङ्घातनिष्पन्नो वस्त्रविशेषः। कञ्चुकवत्। *अनुयो॰ १३*। सङ्घातिम-यत्परस्परतो नालसङ्घातनेन सङ्घात्यते। *भग॰ ४७७*।

संघाए- अनन्तानां परमाणूनां विशि-ष्टैकपरिणामापत्तिः सङ्घातः। *अनुयो॰ १७६*।

संघाएइ- सङ्घटयति अन्योऽन्य गात्रैः संहतं करोति। *भग॰ २३०*।

संघाएति- सङ्घातयत्ति परस्परं सङ्गातमापन्नं कुर्वति। *प्रज्ञा॰ ५९२*।

संघाएह- सङ्घातयथ-संहतां कुरुथ। *भग॰ ३८१*।

संघाओ- सङ्घातः प्राथमिको ग्रहः। *आव॰ ४६२*।

संघाड- सङ्घाटः ज्ञातायां द्वितीयमध्यनम्। *आव॰ ६५३*। *सम॰ ३६*। सङ्घातः-षष्ठाङ्गे द्वितीयं ज्ञातम्। *उत्त॰ ६१४*। शृङ्गारकम्। *प्रज्ञा॰ ४०*। सङ्घाटकः-श्रेष्ठिचौरयोरेकबन्धन-बद्धत्वमिदमप्यभीष्वर्थज्ञापकत्वात् ज्ञातमेवः। ज्ञातायां द्वितीयमध्ययनम्। *ज्ञाता॰ १०*। सङ्घाटः-समानलिङ्गयुग्म-रूपम्। *राज॰ ६९*। सङ्घाटकम्। *आव॰ ९१*। सङ्घाडो-युग्मवाची। *जम्बू॰ २३*।

संघाडइल्ल- सङ्घाटकीयः। *आव॰ ८६३*। सङ्घाटिकः। *निशी॰ ९६* आ।

संघाडओ- सङ्घाटकः। *आव॰ ३६७*।

संघाडगो- सङ्घाटकः। *आव॰ ८३८*।

संघाडि- संघाटी-निर्ग्रन्थिकाप्रच्छदविशेषः। *ज्ञाता॰ २०४*। सङ्घाटी- वस्त्रसंहतिजनिता। *उत्त॰ २५०*।

संगडिए- समर्थः तद्दिवसपर्याप्तभोजी वा। *बृह॰ १७९* अ। सङ्घाटिकः सहचारी। *जम्बू॰ १२३*।

संघाडिम- कंचुकादिसु कट्टसंबंधीसु वा संघाडिमं। *निशी॰ ७१* आ।

संघाडिया- शृङ्घाटिका। *आव॰ ६२२*।

संघाडी- सङ्घाटी। *आव॰ ३१३*। सङ्घाटी। *ओघ॰ २०९*। सङ्घाटी-कल्पद्वयं त्रयं वा। *आचा॰ ३०९*। सङ्घाटीः-उत्त-रीयविशेषरूपः। *स्था॰ १८७*। प्रायेण संघडिज्जंतित्ति संघाडी गुणसंघायकारिणी वा संघाडी। *निशी॰ ६३*।

संघाडए- संघाटकः-साधुयुग्मम्। *बृह॰ ८६* आ।

संघाडेति- संघातयति। *आव॰ ९९*।

संघात- सङ्घातं-अधिकं गात्रसंकोचनम्। *आचा॰ ५५*। अन्योन्यगात्रसंकोचनम्। *आव॰ ११*। परोप्परतो गत्ताणं संपिंडणा। *दशवै॰ ६९*।

संघातत्ता- सङ्घातत्त्वं-तथारूपशरीरपरिणतिभावः। *जीवा॰ ३४*।

संघातिम- सङ्घातिमं-यत्परस्परतः। पुष्पनालादिसङ्घातनेनो-पजन्यत इति। *स्था॰ २८६*। सङ्घातिमं-सङ्घातनिष्पाद्यम्। *ज्ञाता॰ २७९*। चोलकादि। *आचा॰ ४१४*। *निशी॰ ७९*। दुगतिपट्टापव्वारेण। *निशी॰ ७९* अ।

संघातेत- सङ्घातयतः-पूरयतः। *सूर्य॰ २२*।

संघाय- सङ्घातः-परस्पर गात्रसंस्पर्शपीडारूपः। *दशवै॰ १५६*।

संघायणनाम- सङ्घात्यन्ते-पिण्डीक्रियन्ते औदारिकादिपु-द्गला येन तत्सङ्घातं तच्च तन्नाम च सङ्घातनाम। *प्रज्ञा॰ ४७०*।

संघायणा- संघातना। *आव॰ ४१०*। संघातना-संहन्यमानानां –संयुज्यमानानामौदारिकादिपुद्गलानां तैजसकार्मणपुद्गलैः सह यदात्मनस्तत्पुद्गलग्रहणात्मिकासु तदनुकूलक्रियासु वर्त्तनात्मकं प्रयोजकत्वं सा। *उत्त॰ १९८*।

संघायणिज्ज- संघातनीया-प्रमाणपुरुषतया मीलनीयः। *उत्त॰ ५९३*।

संघाययति- सङ्घातयति-योजयतिः। *दशवै॰ १६२*।

संघायसंखा- द्व्याद्यक्षरसंयोगरूपाः सङ्ख्येयाः सङ्घातस-ङ्ख्याः। *अनुयो॰ २३३*।

संघाया- सङ्घाता-द्विधा पर्यवाणामक्षराणां च। *बृह॰ ४३*।

संचइया- घयगुलमोइगाइणा जे अविणासी। *निशी॰ २०२* आ। संचयसंजात एषामिति संचयिताः तारकादिदर्शनादितः प्रत्ययः येषां षण्यां मासानां परतः सप्तमासादिकं यावदुत्क-र्षतोऽशीतं शतं मासानां प्रायश्चित्तप्राप्तास्ते संचयिताः। *व्यव॰ ९७* आ।

संचतिता- जे छण्हं मासाणं पारणपिच्छित्तं पत्ता तं सत्तमा-सादि जाव आसी तं सतं मासाणं ठितेसिं उवणारोवणविभा-गेण दिवसा घेत्तुं छम्मासो णिप्पाएता दिज्जंति। *निशी॰ १२२* आ।

संचय- संचीयते संचयनं वा सञ्चयः, परिग्रहस्य द्वितीयं

नाम। *प्रश्न॰ ९२।*

संचयकृत्स्नं- अशीतं मासाशतं ततः परस्य संचयस्याभावात्। *व्यव॰ ११८* आ।

संचयया होइ- सञ्चयपराभवन्ति-अनागतमेव चिन्तयति। *ओघ॰ १००।*

संचरणं- उपयोगगमनम्। *उत्त॰ १६६।*

संचाएइ- शक्नोति। *भग॰ ११२।* शक्नोति। *स्था॰ १४३।* शक्नोति। *आचा॰ ३३१।*

संचाएति- शक्नुवति। *स्था॰ ३१२।*

संचाएज्जा- शक्नुयात्। *प्रज्ञा॰ ३९९।*

संचार- सञ्चारः-सञ्चारिमकीटिकामत्कोटादिसत्त्वव्याघातः। *पिण्ड॰ १६२।*

संचारसम- सञ्चारसम-वंशतन्त्र्यादिभिर्यदङ्गुलसञ्चारसमं गीयते तत्। *स्था॰ ३९६।* वंशतन्त्र्यादिष्वेवाङ्गलीसञ्चार-समं यद्गीयते तत् सञ्चारसमम्। *अनुयो॰ १३३।*

संचालेति- संचालयति संचारयतीति पर्यालोचयतीत्यर्थः। *ज्ञाता॰ २४।*

संचितित- संसुवितम्। *आव॰ ५८९।*

संचिक्ख- संतिष्ठति। *ओघ॰ ४०।*

संचिक्खइ- सन्तिष्ठते। *आचा॰ २४२।* प्रतीक्ष्यते, कार्याद्वि-रमति। *आव॰ ७५५।*

संचिक्खमाण- समतया ईक्षमाणः-पश्यत्। *उत्त॰ ४०६।*

संचिक्खाविज्जति- संरक्ष्यते। *आव॰ ८३८।*

संचिक्खावेउ- प्रतिपालयति। *ओघ॰ ११८।*

संचिक्खावेत्ता- प्रतीक्ष्य। आजझ ६४१।

संचिक्खे- निरूपयति। *ओघ॰ १६७।* संतिष्ठेत्। *ओघ॰ ५९।* समाधिना तिष्ठेत्। न कुजनर्करायितादि कुर्यात्त्। *उत्त॰ १२०।* संतिष्ठति। *ओघ॰ ४०।*

संचिक्खेइ- परिभावयति। *व्यव॰ २५७* अ।

संचिट्ठण- संस्थानं अवस्थितिक्रिया। *भग॰ ४७।*

संचिट्ठणा- कायस्थितिः। *जीवा॰ ६९।* अवस्थानम्। *जीवा॰ ६१।* सातत्येनावस्थानम्। *जीवा॰ ७८।* कायस्थितिः। *जीवा॰ ४०६, ४२८।*

संचिनोति- बघ्नाध्राति। *उत्त॰ २४६।*

संचिय- आबाधाकालातिक्रमेणोत्तरकालवेदनयोग्यता निषि-क्तम्। *प्रज्ञा॰ ४५९।*

संच्छिन्न- व्याप्तः। *ज्ञाता॰ ७८।*

संच्छोभ- संक्रामणम्। *बृह॰ ३०१* आ।

संछण्णं- संछन्नं जलेनान्तरितम्। *जम्बू॰ १२३, २९१।*

संचण्णपत्तभिसमुणाल- समून्नपत्रबिंशमृणालः। *आव॰ ८१९।*

संछन्न- जलेनान्तरितम्। *जम्बू॰४२।*

संछोभ- प्रक्षेपकम्। *बृह॰ २६५* अ। प्रक्षेपः। *व्यव॰ ३४२* अ।

संजइज्ज- उत्तराध्ययनेषु अष्टादशममध्ययन्। *सम॰ ६४।*

संजइत्त- संयतीसत्कः। *व्यव॰ ३१* अ।

संजईज्ज- संयतीयं-उत्तराध्ययनेष्वष्टादशममध्ययनम्। *उत्त॰ ९।*

संजउ- सम्यग् यतः संयतः असद्व्यापारेभ्य उपरतः। *उत्त॰ ३६०।*

संजए- संयतः रागद्वेषावपाकृत्यः स्थितः। *दशवै॰ १७८।*

संजणित- संजनितः-उत्पादितः। *ज्ञाता॰ ३१।*

संजतासंजत- संयतासंयत- देशविरतः। *प्रज्ञा॰ ३९२।*

संजत्ता- सङ्गता यात्रा-देशान्तरगमनं संयात्रा। *ज्ञाता॰ १३२।*

संजत्ताणावावाणियया- सङ्गता यात्रा-देशान्तरगमनं संयात्रा तत्प्रधाना नौवाणिजकाः-पोतवणिजा-संयात्रानौ वाणि-जकाः। *ज्ञाता॰ १३२।*

संजम- संयमनं संयमः-पापोपरमः। *स्था॰ ३२३।* संयमः-प्रत्त्युपेक्षादिः। *भग॰ ७५९।* संयमः-मूलगुणरूपः। *अनुयो॰ २६५।* संयमः-संवरः। *ज्ञाता॰ ८।* संयमः-संयमवान्, साधुः। *उत्त॰ ३१५।* संयमः-प्राणातिपाताद्यकरणम्। *स्था॰ १५६।* संयमः प्रेक्षोत्प्रेक्षाप्रमार्जनादिलक्षणः। *स्था॰ ३६०।* संयमः-अनवद्यानुष्ठानलक्षः। *आव॰ ३४१।* संयमः-हिंसात उपरमः अहिंसायाश्चत्त्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९।* संयमः-पञ्चाश्रवनिरोधादिलक्षणः। *सूर्य॰ ५।* संयमः-पृथिव्यादिसंरक्षणलक्षणोऽभिनवकर्मानुपादानफलः। *प्रश्न॰ १०२।* संयमः-रक्षा। *भग॰ १२२।* संयमः-प्रज्ञापनाया द्वित्रिंशत्तमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।* संवरः। *भग॰ १३।* संयमः-प्रतिपन्नचारित्रः। *भग॰ ४३३।* संयमः

पञ्चाश्रवनिरोधादिल-क्षणः। *जम्बू॰ १६*। संयमः- सत्यम्। *आव॰ ७५*। संयमः- देशविरत्यात्मकः। *उत्त॰ २४९*। संयमं-पृथिव्या-दिसंरक्षणलक्षणः। *भग॰ १००*। संयमो-रक्षा। *ज्ञाता॰ ६०*। संयमः- प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणः। *आव॰ ६०४*।

संजमखेत्त- जत्थ आहारोवहिसेज्जाकाले वा सति सतंतं अविरुद्धो य उवहि लब्भति। *निशी॰ १३०* आ। *निशी॰ ३५४* अ।

संजमघाय- संयमघातकं-संयमविनाशकम्। *आव॰ ७३१*।

संजमजाया- संयमयात्रा-संयमानुपालनम्। *भग॰ २९४*।

संजमजीय- संयमजीवितम्। *आव॰ ४८०*।

संजमजीविय- संयमजीवितं साधूनाम्। *स्था॰ ७*।

संजमजोओ- संयमयोगः संयमव्यापारः। *आव॰ २६३*।

संजमजोग- संयमयोगः प्रत्त्युपेक्षणादिः। *बृह॰ १७२* अ।

संजमज्जवगुण- संयमार्जवगुणं संयमार्जवे गुणौ यस्य तपसः स। *दशवै॰ २०७*।

संजमट्ठ- संयमार्थः अनाश्रवत्वम्। *भग॰ १००*।

संजमणा- समयः। *ओघ॰ ११४*।

संजमबहुल- संयमबहुलः-पृथिव्यादिसंरक्षणप्रचुरः। *प्रश्न॰ १२८*। संयमं- आश्रवविरमणादिकं बहु इति बहुसङ्ख्यं यथा भवति संजमबहुलम्। *उत्त॰ ४२२*।

संजमभयउव्वेयकारि- संयमभयोद्वेगकारिकः-संयमस्य दुष्करत्वप्रतिपादनपरः। *ज्ञाता॰ ४९*।

संजमरिया- संयमेर्या-सप्तदशविधसंयमानुष्ठानम्। *आचा॰ ३७५*।

संजमावसत- संयमनामवसथो गृहम्। *व्यव॰ १७३* आ।

संजय- संयतः-इन्द्रियनोइन्द्रियसंयमवान्। *आचा॰ ३५०*। संयतः-पृथ्व्यादिव्यपादननिवृत्तः। *उत्त॰ ११४*। संयतः- सम्-एकीभावेन यतः संयतः, क्रियां प्रति यत्नवान्। *आव॰ ५१६*। संयतः-सम्यक् संयमानुष्ठाने यतः- यत्नपरः। *ओघ॰ ७५*। संयतः-सम्यगुपयुक्ता। *आचा॰ ३२२*। संयमः-निरवद्येतरयोगप्रवृत्तिनिवृत्तिरूपः। *प्रज्ञा॰ ५३५*। संयतः- श्राद्धः। *आव॰ ७९८, ७९९*। संयतः- सामस्त्येन यतः। *आव॰ ७६२*। संयतः-सप्तःदशप्रकारः संयमोपेतः। *दशवै॰ १५२*। संयतः-वधादिपरिहारे प्रयतः। *भग॰ २९५*। *उत्त॰ ४८७*। संयतः। *आव॰ ३००*। संयतः-सं यच्छति स्म सर्वसावद्ययोगेभ्यः सम्यगुपरमति स्मेति संयमः। *प्रज्ञा॰ ४२४*। संयतः- हिंसादिपापस्थाननिवृत्तिः। *प्रज्ञा॰ ५३५*। संयतः- प्रयत्नवान्। *दशवै॰ १५५*।

संजयजण- संयतजनः-साधुलोकः। *आव॰ ४००*।

संजयमणुस्स- संयतमनुष्यः-साधुः। *स्था॰ ३२०*।

संजयलाभ- संयतलाभः-स्वर्गापवर्गप्राप्तिरूपः। *उत्त॰ ४७८*।

संजयासंजय- संयतासंयतः हिंसादीनां देशतो निवृत्तः। *प्रज्ञा॰ ५३५*।

संजयोय- संयतीयं-उत्तराध्ययनेष्वष्टादशममध्ययनम्। *उत्त॰ ४३७*।

संजलण- सञ्जलतीति सञ्जलनः-प्रतिक्षणरोषः, अष्टममस-माधिस्थानम्। *सम॰ ३७*। चतुष्प्रकारकषायः। *सम॰ ३१*। सञ्ज्वलनः-मुहुर्मुहुः क्रोधाग्निना ज्वलनम्। *भग॰ ४७२*। संज्वलनः-यो मुहूर्ते २ रुष्यति, अष्टमम-समाधिस्थानम्। *आव॰ ६५३*। संज्वलनः-क्षणे क्षणे संज्वलयतीतिसंज्व-लनः अत्यन्तक्रोधनः। *सूत्र॰ ३१३*। सञ्ज्वलयति-दीपयति सर्वसावद्यविरतिमपीन्द्रियार्थसम्पाते वा सञ्ज्वयलति-दीप्यत इति सञ्ज्वलनः- यथाख्यातचारित्रावारकः। *स्था॰ १९४*। सञ्ज्वलनं-गुणोद्भासनम्। *उत्त॰ ५७९*।

संजलणा- ईषज्ज्वलनात् संज्वलनाः, सपदि परीषहादिसङ्घा-तज्वलनाद्वा, क्रोधादयश्चत्वारः कषायः। *आव॰ ७८*। परी-षहोपसर्गनिपाते सति चारित्रिणमपि सम्-ईषत् ज्वलयन्तीति सञ्ज्वलनाः। *प्रज्ञा॰ ४६८*।

संजले- निर्यातने प्रति भूतश्ववाक्रोशदानातः सञ्ज्वलते, तन्नि-र्यातनार्थं देहदाहलौहित्यप्रत्याक्रोशाभिघातादिरग्निव-द्दीप्यते। *उत्त॰ १११*।

संजाई- सञ्जातिः। *सूर्य॰२८२*। सञ्जातिः। *जीवा॰ ३४७*।

संजाए- सञ्जातः-प्रीणितः, महाकायः। *दशवै॰ १७*।

संजातः- प्रचुरं लब्धम्। *ओघ॰ १८७*।

संजायभया- सञ्जातभया भयप्रकर्षाभिधानायैकार्थीकः। *विपा॰ ४३*। सञ्जातभया। *भग॰ १६६*।

संजायसड्ढा- संजायश्रद्धः-प्रकर्षेण जातश्रद्धः। *सूर्य॰ ६*।

संजीवणी- सञ्जीवनी-जीविदात्री नरकभूमिः। *सूत्र० १३७।*

संजुग- सयुगं-संग्रामः। *बृह० २३०* आ।

संजुत्त- संयुक्तः-समुपेतः। *जीवा० २६८।* संयुक्तं-अर्थक्रियाकरणयोग्यम्। *आव० ८३१।* संयुक्तं-भूषणयुतं जीवयुक्तं यः स्त्रीशरीरम्। *बृह० ४१* अ।

संजुत्तदव्वसम्म- संयुक्तद्रव्यसम्यक् ययोर्द्रव्ययोः संयोगो गुणान्तराधानाय नोपमर्दाय उपभोक्तुर्वा मनःप्रीत्यै पयः-शर्क्करयोरिव तत्संयुक्तद्रव्यसम्यक्। *आचा० १७६।*

संजुत्तयसंजोग- समिति सङ्गतो योगः-संयोगः, सयुक्तमेव संयुक्तकं-अन्येन संश्लिष्टं, तस्य संयोगो-वस्त्वन्तरसम्बन्धः संयुक्तसंयोगः। *उत्त० २३।*

संजुत्ता- समिति-सम्यग् भृशं वा युक्ता संयुक्ताः। *उत्त० ७१३।* परिणीता। *निशी० १०१।*

संजुत्ताहिगरण- संयुक्ताधिकरणे-अर्थक्रियाकरणयोग्यम-धिकरणम्। *आव० ८३०।*

संजूह- संयूथः-ग्रन्थरचना। *अनुयो० १५०।* संयूथः-निकायविशेषः। *भग० ६७६।* दृष्टिवादे सूत्रेऽष्टमो भेदः। *सम० १२८।* सङ्गतं-युक्तार्थम्। *स्था० ४९५।* सामान्यः-संक्षेपः। *सूत्र० ३०५।*

संजोएमाण- संयोजयन्-प्रतिसमयमपरापरेणोपयोगरूपतयो-त्त्पद्यमानेन घटयन्। *उत्त० ५९३।*

संजोग- संयोगः सम्यग्-अविपरितो योगः-समाधिः *उत्त० २०।* संयोगं-ममत्वपूर्वकं सम्बन्धम्। *आचा० १७२।* संयोगः-भङ्गः। *पिण्ड० १६५।*

संजोगट्ठी- संजोगार्थी-धनधान्यादिहिरण्यद्विपदचतुष्पदराज्याभार्यादिसंयोगस्तेनार्थी। *आचा० १०१।* संयुज्यते संयोजनं वा संयोगोऽर्थः-प्रयोजनं संयोगार्थः- सोऽस्यास्तीति संयोगार्थी। शब्दादिविषयः संयोगो मातापितादिभिर्वा तेनार्थी कालाकालसमुत्थायी। *आचा० १०१।*

संयोगदिट्ठपाठी- अनेकान् संयोगान् व्यापार्यमाणान् यो दृष्टावान् यश्च तत्पाठं पठितवान् सः संयोगदृष्टपाठी। *व्यव० १३१* आ।

संजोगपाठी- संयोगपीठनः-योग्यद्रव्यसंयोगवेदिनः। *बृह० १७१* आ।

संजोगा- संयोगाः-औषधद्रव्यमीलनसंयोगाः। *बृह० २८९।*

संजोगाभिलासा- संयोगाभिलाषः-कथं-ममैभिर्विषयादिभि-रायत्यां सम्बन्ध इतीच्छ। *आव० ५८५।*

संजोगिम- संयोगिमः यस्तैलवत्त्यग्निसंयोगेन निर्वृतः। *उत्त० २१२।*

संजोयणा- तत् (उदय) फलभूतेन कर्मणा संसारेण वा संयोजयतीति संयोजना। *आव० ७७।* संयोजनं-एकजात्ती- यातिचारमीलनं संयोजना प्रायश्चित्तम्। *स्था० २००।* संयुजना-निर्वत्तितानामेकत्र सङ्घातना। *बृह० २३४* अ। संयोज्यन्ते-सम्बन्धन्तेऽनन्तसङ्ख्येर्भवैर्जन्तवो यैस्ते संयोजना। *प्रज्ञा० ४६८।*

संयोजणादोस- आहारलोलुपतया दधिगुडादेः संयोजनां विदधतः संयोजनादोषः। *आचा० ३५१।*

संजोयणादोसदुट्ठ- संयोजनादोषदुष्टं-संयोजना-द्रव्यस्य गुणविशेषार्थं द्रव्यान्तरेण योजनं सैव दोषस्तेन दृष्टम्। *भग० २९२।*

संजोयणाहिगरणिया- यत्पूवं निर्वर्तितयोः खड्गतत्मुष्ट्यादि-कयोरर्थयोः संयोजनं क्रियते सा संयोजनाधिकरणिकी। *स्था० ४१।*

संज्झंतिआ- सहाया। *निशी० ९५* आ।

संज्झब्भरागसरिस- सन्ध्याभ्ररागसदृशः। *उत्त० ३२९।*

संज्झागत- जम्मि उदिते सूरो उदिते तं सज्झागयं, जं सूरस्स पिट्ठतो अग्गतो वा वण्णतरं तं। *निशी० ९९* अ।

संज्झप्पभ- सन्ध्याप्रभं-प्रथमस्य इन्द्रलोकपालस्य सोमस्य विमानम्। *भग० १९४।*

संज्झब्भराग- सन्ध्याभ्रागः-वर्षासु सन्ध्यासमयभावी अभ्रागः। *जम्बू० ३४।*

संज्झा– सन्ध्या-कालनीलाद्यभ्रपरिणतिरूपा प्रतीतैव। *अनुयो० १२१।*

संज्झगय- यत्र नक्षत्रे सूर्यो अनन्तरं स्थास्यति तत्, आदि-त्यपृष्टस्थितमन्ये पुनराहुर्यस्मिन्नुदिते सूर्य उदयति तत् संध्या-गतम्। सूर्यस्य पृष्टतोऽग्रतौ वा अनन्तरनक्षत्रं संध्यागतम्। *व्यव० ६२* अ।

संज्झागयाइ- दुष्टनक्षत्राणि। *गणि०।*

संज्झाणुरागसरिआ- सन्ध्यानुरागेण सदृशात् वर्णतः। *ज्ञाता॰ २३१।*

संज्झाराग- सन्ध्यारागः। *प्रज्ञा॰ ३६१।*

संज्ञासूत्र- त्रिविधसूत्रे प्रथमम्। *बृह॰ ५०* आ।

संज्ञि- सम्यक्त्ववान्। *आचा॰ २८१।*

संट्ठमाणिय- स्यन्दमानिकः-पुरुषप्रमाणं जन्पानविशेषः। *भग॰ ५४७।*

संठप्पय- संथाप्यतः तत्कृत्यकरणम्। *भग॰ ४६९।*

संठवण- मुहादीर्ण उज्जभावणं। *निशी॰ १२३* अ। लिंपणं। *निशी॰ २३२* आ।

संठवावेति- संथापयति। *आव॰ ५५५।*

संठविय- संस्थापितः-संस्कृतः। *नन्दी॰ ६४।* संस्थापितः-मीलितः। *प्रश्न॰ ६४।*

संठवेयव्व- संस्थापयितव्यः। *आव॰ ५६०।*

संठाण- संस्थानं-मृगशिरः। *जम्बू॰ ४९७।* संस्थानं-आकारविशेषः। *जीवा॰ १०३।* संस्थानं-कटीनिविष्टकरादिसन्निवेशात्मकम्। *उत्त॰ ४२८।* संस्थानं-आकारः। *स्था॰ ६८।* संस्थापनं-आकारविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४७२।* संस्थानं-स्कन्धाकारः। *भग॰ ८५८।* संस्थानं-आरोपित-ज्याधनुराकारः। *स्था॰ ६८।* संस्थानः-मृगशिरो नक्षत्रम्। *सूर्य॰ २२५।* संस्थानं-सम्यगवस्थानम्। *जीवा॰ ३४५।* संस्थानं-आकारविशेषः। *प्रज्ञा॰ २९३।* संस्थानं-विन्यासविशेषः। *दशवै॰ २३७।* संस्थानं-आकारः। *भग॰ ११।* संस्थानं शरीराकृतिरवयवरचनात्मिका। *स्था॰ ३५७।* संस्थानं-यथास्थामनङ्गोविन्यासः। *जम्बू॰ १८२।*

संठाणविजए- धर्मध्यानस्य चतुर्थो भेदः, संस्थानानिलोकद्वी-पसमुद्राद्याकृतयः तस्याः विचयो-निर्णयो यत्र तदा संस्थानविचयः। *भग॰ ९२३।*

संठिई-संस्थितिः-व्यवस्था। *जम्बू॰ ५४३।* संस्थितिः। *सूर्य॰ ६७।* संस्थितिः-अवस्थानम्। *सूर्य॰ ७।* संस्थितिः-व्यवस्था। *सूर्य॰ ६, ८।*

संठिए- संस्थितं-सदृशकारम्। *अनुयो॰ १७२।*

संठित- संस्थितः विशिष्टसंस्थानवद्। *ज्ञाता॰ २।* संस्थितं-वृत्तचतुरस्रम्। *बृह॰ २४४* आ। संस्थितः-व्यवस्थितः। *सूर्य॰ ४।*

संठियंमि- संस्थिते। *ओघ॰ २११।*

संड- षण्डः। *आव॰ ८२५।* षण्डः। *व्यव॰ ३१* अ। सत्कः। *व्यव॰ ३१* अ। खण्डं, वनम्। *जम्बू॰ २४२।* षण्डः। *आव॰ ४१४।*

संडास- सदंसं-ऊरूसन्धिम्। *ओघ॰ ८४।* सण्डासं-जङ्घोवरिन्तरालम्। *ओघ॰ १०७।* संदेशकः। *बृह॰ २५९* आ। सदंशः। *दशवै॰ १२३।* संदंशकः- सङ्गुष्ठतर्जन्योरग्रम्। *आव॰ ६४।* *निशी॰ १८।*

संडासए- अङ्गुष्टप्रदेशिनीभ्यां यत्गृह्यते। *व्यव॰ ३६९* अ।

संडसगं- संडासकं नासिकाकेशोत्पाटनम्। *सूत्र॰ ११७।* *ज्ञाता॰ १४३।*

संडासत- संदंशकम्। *आव॰ २२७।*

संडासतोंड- संदंसतुण्डः-संदंशकाकारमुखपक्षी। *प्रश्न॰ १४।*

संडिर्भं-संडिम्भं-बालक्रीडास्थानम्। दशव *१६६।*

संडिब्भं- बालरूवागि रमंति धणुहि। *दशवै॰ ७५।*

संडिय- तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

संडिल्ला- शाण्डिल्याः जनपदविशेषः। यत्र नंदीपुरनगरम्। *प्रज्ञा॰ ५५।*

संडेय- षण्डेयः-षण्डपुत्रकाः। *औप॰* र।

संडेया- षाण्ढेयाः-षण्ढपुत्रकाः षण्ढा। *ज्ञाता॰ १।*

संडेल्ला- काश्यपे द्वितीयो भेदः। *स्था॰ ३९०।*

संडेवए- सण्डवकः-पाषाणादि। *ओघ॰ ३१।* सण्डेवकः-पाषापणादि योऽन्यस्मिन्पाषाणादो पादनिक्षेपः स संडेवकः। *ओघ॰ ३१।*

संडेवा- तज्जातशिलादयः, अन्यतो वा नीताः इट्टालकादयश्च। *बृह॰ १६२* अ।

संणाय- कुटुम्बम्। *आव॰ ४०५।*

संणायकुल- सजातीयकुलम्। *आव॰ ८४६।*

संणिवेस- सत्थावासणत्था णं संणिवेसं गामो वा पिंडितो संनिविट्ठो जत्थ गतो वा लोगो संनिविट्ठो सण्णिवेसं। *निशी॰ ७०* आ।

सण्णा- सञ्ज्ञाः- असातावेदनीयमोहनीयकर्मोदयसम्पाद्या आहाराभिलाषादिरूपाश्चेतनाविशेषः। *सम॰ १०।*

संत- श्रान्तः शरीरतः। *ज्ञाता॰ ९७।* सन्तः सौम्यमूर्तित्वात्। *ज्ञाता॰ १०३।* श्रान्तः-शान्तो वा मनसा। *ज्ञाता॰ १३९।* श्रान्ताः-खिन्नः। *ज्ञाता॰ २२४।* श्रान्तो भवभ्रमणात्। *जं॰ १४६।* अन्तर्वृत्त्या शान्तः।

श्रान्तो भवभ्रमणात्। *औप॰ ३५*। श्रान्तः देहदेखने। *विपा॰ ४१*। शान्तः-अत्ययन्तम-न्दभूतः। *जम्बू॰ ३१८*। श्रान्तः। *दशवै॰ १०५*।

संतइभाव- अनन्तरोऽनुभवभावः सन्ततिभावः। *प्रज्ञा॰ ३२३*।

संतकम्म- सत्कर्म-सत्तावस्थं कर्म। *सम॰ ४०*।

संतत्तभाव- सन्तप्तभावः-समिति-समन्तात् तप्त इव तप्तः अनिर्वृत्तत्वेन भावःकरणमस्येति। *उत्त॰ ३९९*।

संतपय- सच्च तत्पदं चेति सत्पदं सन्तं तत् पदं सन्तपदं-गत्यादि। *आव॰ १९*।

संतपयपरूवणया- सत् इति सद्भूतं विद्यमानार्थमित्यर्थः। सच्च तत्पदं व सत्पदं तस्य प्ररूपणा। *आव॰ ८३१*। सत्पदप्ररूपणतागत्यादिभिद्वारराभिनिबोधिरकस्य कर्त्तव्या। *आव॰ १९*।

संतया- सन्ततम्। *भग॰ २०*।

संतर- सान्तरं-सव्यवधानम्। *प्रज्ञा॰ २६४*। अंतरकप्पो, जहासत्तीए चउत्थमादी करेंति। *निशी॰ ३५३* आ। स्वान्तरः स्वकृत अन्तरः। *बृह॰ १७०* अ।

संतरण- प्लवनम्। *ओघ॰ २३*। जत्थ त्ति णदीए एसिं पंचण्हं णदीणं किम्हिइ उतरणं संतरणं अथवा बहुदगथामे संतरणं। *निशी॰ ७७*।

संतरित्तए- सन्तरीतुं-साङ्गत्येन नावादिना लङ्घयितुम्, सकृद्वोत्तरीतुमनेकशः सन्तरीतुमिति। *स्था॰ ३०९*।

संतरित्ततुं- भूयः प्रत्यागन्तुम्। *बृह॰ १६१* आ।

संतरूत्तर- सान्तराणि-वर्द्धमानस्वामिसत्कयतिवस्त्रापेक्षया या कस्याचित्कदाचिन्मानवर्णविशेषतो विशेषतानि उत्तराणि च-महाधनमूल्यतया प्रधानानि प्रक्रमाद्वस्त्राणि यस्मिन्नसौ सान्तरोत्तरः। *उत्त॰ ५००*।

संतविरिय- विद्यमानसामर्थ्यः। *आव॰ ५३४*।

संतसे- सन्त्रसेत्-उद्विजेत्। *उत्त॰ ९१*।

संताण- जालकम्। *बृह॰ १६६* अ। सन्तानः-निबन्धनम्। *पिण्ड॰ १४५*। सन्तानः-प्रवाहः। *आव॰ ६०१*।

संताणा- जालकम्। *बृह॰ १६६* अ।

सांताणए- सन्तानः-कालिकतन्तुकम्। *ओघ॰ ११७*।

संताणग- कोलियपुडगं अकुजियं संताणगो। *निशी॰ ८३* अ। *निशी॰ २५५* आ।

संताणगसंकमण- पिपीलगमक्कोडगादीणं भण्णति। *निशी॰ ८३* अ।

संतावणी- संतापयतीति सन्तापनी कुम्भी। *सूत्र॰ १३६*।

संतासती- सावयभयं वा अण्णो य परिरएण पंथो णत्थिएसा सव्वा। *निशी॰ १२४* आ।

संति- शमनं शान्तिः-अशेषकर्म्मापगमोऽतो मोक्ष एव शान्तिः। *आचा॰ १२८*। शमनं-शान्तिः-अहिंसा इत्यर्थः। *आचा॰ २५६*। शान्तिः-मोक्षः। *स्था॰ ४२६*। शाम्यन्त्यस्यां सर्व-दुरितानीति शान्तिः-निर्वाणं, उपशमः। *उत्त॰ ३४१*। शान्तियोगात्तदात्मकत्वात्तत्कर्तृत्वाद्वा शान्तिः षोडशो जिनः, यस्मिन् गर्भगते सति महदशिवमुपशान्तमतः शान्तिः। *आव॰ ५०५*। शान्तिः-सामायिकचतुर्थपर्यायः। *आव॰ ४७४*। शान्तिः-उपशमः, प्रशमसंवेगनिर्वेदानुकम्पास्तिक्याभिव्य-क्तिलक्षणसम्यग्दर्शनज्ञानचरणकलापः। *आचा॰ ७७*।

संतिओ- सत्कः। *आव॰ ५३५*।

संतिकम्म- शान्तिकर्म-अग्निकारिकादिकम्। *प्रश्न॰ ३९*।

संतिकम्मगिह- शान्तिकर्मगृह-यंत्र शान्तिकर्म क्रियते। *आचा॰ ३६६*।

संतिग- सत्कः। *आव॰ ४२५*।

संतिगिह- शान्तिगृहं-शान्तिकर्मस्थानम्। *भग॰ २००*।

संतिज्जाघर- शान्त्यार्यागृहम्। *उत्त॰ २१६*।

संतिसुव्वया- शान्तिसुव्रताः-सन्ति विद्यते शोभनानि सम्यग्ज्ञानाधिष्ठितत्वेन व्रतानि-हिंसाविरमणादीनि येषां ते सुव्रताः शान्ता वा उपलक्षिताः सुव्रताः शान्तिसुव्रताः। *उत्त॰ २९२*।

संती- पञ्चमचक्रवर्ती। *आव॰ १५९*। *सम॰ १५२*। शान्तिः-द्रोहविरतिः अहिंसायाश्चतुर्थं *प्रश्न॰ ९९*। *निशी॰ २७६* आ। असिवपसमणट्ठाणं। *निशी॰ ७०* अ।

संतुट्ठ- संतुष्ठः-लाभालाभयोः समः। *दशवै॰ १८७*।

संतुयट्ट- शयितः। *ज्ञाता॰ १८१, २०९*।

संथड- संस्तृतं-धनं संनिपतितम्। *आचा॰ ३४०*। संस्तृतं धनं प्रेक्ष्य। *आचा॰ ३३३*। संस्तृतं-धनम्। *आचा॰ ३३३*। संस्कृतं नाम राज्यं यदविलिप्तम्। *व्यव॰ २७९* आ। संस्तृतः-व्याप्तः। *ओघ॰ २१९*। समर्थः। *दशवै॰ २१९*।

पज्जत्तं लभंतो। *निशी॰ ३१२*अ। सस्तीर्णं आच्छादितम्। *भग॰ ३७, १५३*। संस्कृतः। *आचा॰ ३३३*।

संथडिओ- हट्ठसमत्थो। *निशी॰ ३०८* आ।

संथडी- पर्याप्तभक्तपानलभः सन्ततभोजी वा। *बृह॰ १८२* अ। *निशी॰ ३१२*अ। दिणे पज्जतं वा अपज्जतं भुंजंतो। नि॰ *३१* आ।

संथय- संस्तयः-परिचयः। *पिण्ड॰ १९७*।

संथर- संस्तरः-निवार्हः। *पिण्ड॰ ११९*। संस्तरेत्-यापयितुं समर्थः। *दशवै॰ १८२*। फासुएसाणिज्जा असणादि या पज्जत्ती लब्भंति जत्थ हट्ठो य तं। *२०२*अ।

संथरओ- संसूरतो निसूरतः। *बृह॰ ५२*अ।

संथरण- संस्तरणं-संतरणम्। *ओघ॰ १४३*। संस्तरणं-प्राशुकमेषणीयं वाऽशनादिपर्याप्तं प्राप्यते, न किमपि ग्लानत्वं विद्यते। *बृह॰ २५१* अ।

संथरमाण- संस्तरन्-संयमानुपरोधेन वर्त्तमानः। *आव॰ ५३८*।

संथरे- संस्तरति। *ओघ॰ २१६*।

संथव- संस्तवः-परिचयो भूयो गमनाद्भवति। *आचा॰ १८४*। संस्तवः-पूर्वपश्चात्संस्तवरूपो वचनसंवासरूपो वा। *उत्त॰ ४८७*। संस्तावकम्। *ज्ञाता॰ २१३*। संस्तवः-परिचयः। *सूत्र॰ ७२*। संस्तवः- परिचयः। *दशवै॰ १०९*। संस्तवः-वदनं प्रशंसा। *आचा॰ २६*। संस्तवः प्रशंसावचनम्, स्तुतिः। *पिण्ड॰ १४१*। संस्तवः-परिचयः कामसम्बन्धः। *सूत्र॰ १७७*। संस्तवः-परिचयः। *प्रज्ञा॰ ६०*। संस्तवः पूर्वसंस्तु-तैर्मात्रादिभिः पश्चात्संस्तुतैश्च श्वश्रादिभिः परिचयः। *उत्त॰ ४१४*। श्लाघा-वचनसंस्तवः। *पिण्ड॰ १३९*। संस्तवो-गुणकीर्तनम्। *उत्त॰ ५६६*। संवासोः। *निशी॰ २४२*अ। संस्तवः-परिचयः अभिष्वङ्गहेतुत्वात्परिग्रहः, परिग्रहस्य द्वाविंशतितमं नामः। *प्रश्न॰ ९२*।

संथवपिंड- संस्तवपिण्डः पूर्वपश्चात् संस्तवादवाप्तः। *आचा॰ ३५१*।

संथवेज्जा- स्त्र्यादिसंसक्तां वसतिं सेवेत। *आव॰ ३५९*।

संथार- संस्तारः-लघुकोऽर्द्धतृतीयहस्तमानः। *अनुयो॰ २०*। संस्तारं-कम्बल्यादि। *उत्त॰ ४३४*। संस्तारकः। अर्द्धतृतीयहस्तप्रमाणः। *आचा॰ ३६९*। संस्तारकः-भूमिरूपः। *ओघ॰ ९०*। संस्तारकं-अपवर्त्तकमाश्रित्य। *आचा॰ ३६९*। संसरः-दर्शकुशंकम्बलीवस्त्रादिः। *आव॰ ८३६*। संस्तारः-अर्द्धतृतीयहस्तः। *आव॰ ७२७*। संस्तारकः। *ओघ॰ २१७*। संस्तारकः। *दशवै॰ ८९*। संस्तारकं-तृणमयादिरूपम्। *दशवै॰ २३१*। अट्ठाइयहत्थो। *निशी॰ १६०* आ। संतारकः-शय्यापट्टः। *पिण्ड॰ १९*। एन्द्रजालिकः। *तन्दु॰*। संस्तरंति-साधवोऽस्मिन्निति संस्तारः-उपाश्रयः। *व्यव॰ ८*आ। *निशी॰ १५*आ।

संथारए- संस्थारकः। *ज्ञाता॰ ६०*।

संथारक- संस्तारकः-तृणमयः। *ओघ॰ ५६*।

संथारग- संस्तारको-लघुतरः। *स्था॰ ३१२*। संस्तारकः-लघुतरः। *ज्ञाता॰ १०७*। संस्तारकः-शय्यातो हीनः। *औप॰ ४१*। संस्तारकम्। *प्रज्ञा॰ ६०६*। संथारभूमी। *निशी॰ ८३*अ। संस्तारकः-लघुतरः। *भग॰ १३६* संस्तारकः। *आचा॰ ३७६*। संस्तारकः-अर्द्धतृतीयहस्तः। *प्रश्न॰ १२०*।

संथारगत- संस्तारगतः-संलिख्यकृतप्रत्याख्यानः। *व्यव॰ ४१४*आ।

संस्थारणिज्जा- साधुणो अक्खा सगुणा जणवया संथारणि-ज्जा। नि॰ *४३*आ।

संथारपट्ट- संसारपटः। *ओघ॰ ८३*।

संथारपायदंडग- वनस्पतौ प्रयोजनम्। *स्था॰ ३३९*।

संथुअ- संस्तुतः-भूयो भूयो दर्शनेन परिचितः, अथवा पूर्वसंस्तुतो मातापित्रादिभिहितः। पश्चात्संस्तुतः। *आचा॰ १००*। संस्तुतः-स्नेहात्प्रशंसितः। *भग॰ ६४७*। संस्तुतः-भयो दर्शनेन परिचितः। *जम्बू॰ १४९*।

संथुय- संश्रुतः-दशनभाषणादिभिः परिचितः। *प्रश्न॰ १४०*। संस्तुतः-सम्यगभिवन्दितः। *उत्त॰ ५१२*। लोग्गजत्ता-परिचयं। *निशी॰ १४७*अ।

संथुया- संस्तुताः-प्रपौत्रश्वशुरादयः। *बृह॰ १३५*अ।

संदंसिए- सन्दर्शितः-उपलम्भितः। *ज्ञाता॰ २११*।

संदट्ठ- संदष्टः मुसलाभिश्चुम्बितः। *जम्बू॰* **५७।**

संदट्ठओ- सदृशपूर्वापरसूत्रद्वयेन संदंशकेनैव गृहितत्वात् संदष्टकः। *बृह॰ १९५*अ।

संदण- स्यन्दनः रथविशेषः। पश्न॰ ८।

संदमाणि- स्यन्दमानिका-पुरुषप्रमाणो जम्पानविशेष। *जीवा॰ १८९*।

संदमाणिअ- स्यन्दमानिकः-पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषः।

जम्बू० ३०।

संदमाणिआ- स्यन्दमानिका-पुरुषायामप्रमाणः शिबिकावि-शेषः। *जम्बू० १२३।* दीर्घो जम्पानविशेष-पुरुषस्य स्वप्र-माणावकाशदायी स्यन्दमानिका। *जम्बू०३७।*

संदमाणिय- पुरुषप्रमाणायामो जम्पानविशेषः। *भग० १८७, २३७।* पुरुषप्रमाणायामो जम्पानविशेषः। *अनुयो० १५९।*

संदमाणिया- शिबिकाविशेषः। *सूत्र० ३३०।*

संदमाणी- स्यन्दमाना। *ज्ञाता० ३।*

संदमाणीया- स्यन्दमानिका पुरुषस्य स्वप्रमाणावकाशदायी। *जीवा० १९२।* स्यन्दमानिका-पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषः। *औप० ४।*

संदाणियं- संघातीतं पुव्वागारे ट्ठवियं सुत्तेण वा संदाणियं। *निशी० १५२* अ।

संदिट्ठ- गुरुणाऽभिहितः संदिष्टः। *आव० २६८।* संदिष्टः-उक्तः। *ओघ० २१।* प्रेषितः। *बृह० ८९* आ। संदिष्टः-उक्तः। *ओघ० ८५।* सन्दिष्टः-भूक्तः। *ओघ० १९०।*

संदिसह- संदिशत-ददत्त। *ओघ० १७९।*

संदिसावेऊण- संदिश्य। *दशवै० ३८।*

संदीण- संदीयते-जलप्लावनात् क्षयमाप्नोतीति सन्दीनः। *उत्त० २१२।* सन्दीनः-क्षोभ्यः। *जम्बू० ८।* यो हि संदीयते-जलप्लावनात् पक्षमासादावुदकेन प्लाव्यते स सन्दीनः। *जम्बू० ८।* सन्दीनः-प्रचुरेन्धनतया विवक्षित-कालावस्थाप्यसन्दीनो वितरीतस्तुं सन्दीन इति, आदित्य-चन्द्रमाडण्यादिरसन्दीनोऽपरस्तु सन्दीनः। *आचा० २४७।*

संदेह- नाद्याद्युपदकनिमज्ञनलक्षणः। *बृह० २२* अ।

संधणट्ठा- सन्धानार्थं-अविच्छिन्नप्रवाहार्थम्। *ओघ० १८३।*

संधणा- विस्मृत्यापांतराले तुटितस्य पुनः सन्धानकरणं सन्धना। *व्यव० ३७६* अ। सन्धना-प्रदेशान्तरविस्मृ-तस्य सूत्रादेर्मेलनं घटना योजना। *आव० २६७।* सन्धानम्। *आव० ६३४।*

संधावइ- सन्धावति-पौनःपुन्येन गच्छति। *आचा० २४।*

संधि- सन्धिः-कर्म्मसन्ततिः सन्धीयत इति वा भवाद्भवान्त-रमनेनेति सन्धिः। *आचा० २०९।* सन्धिः-अवसरः। *आचा० २६५।* सन्धिः-अवसरः। *आचा० २०४।* सन्धिः-द्विधाभावलक्षणः। *सूत्र० २८।* सन्धानं सन्धिः-उत्तरोत्तर-पदार्थपरि-ज्ञानम्। *सूत्र० २८।* सन्धिः-फलद्वयापान्तराल-प्रदेशः। *जीवा० १९८।* सन्धि-सन्धिमेलः। *जीवा० ३५९।* सन्धिः-सन्धानम्। *जीवा० २७१।* सन्धिः-यथाकालमनु-ष्ठानविशधायी यो यस्य वर्त्तमानः कालः कर्तव्यतयोपस्थि-तस्तत्करणतया तयेव सन्धत्तः। *आचा० १३१।* सन्धिः-मीलनम्। *ज्ञाता० १५७।* सन्धिं-कर्त्तव्यकालम्। *आचा० १३१।* सन्धिः-क्षत्रम्। *उत्त० २०७।* सन्धिः-चौरखातं भित्तिसन्धिम्। *आचा० ३४१।* सन्धिः-सन्निकर्षः। *प्रश्न० ११७।* सन्धिः। *आव० २१९।* सन्धिः-चित्तं क्षत्रम्। *दशवै० १६६।* दोण्ह घराणं अंतरा छिंडो। *निशी० ५३* अ।

संधिकंम- सवुडकरणं। *निशी० २३२* आ।

संधिकरण- सन्धिकरणं-द्वयोर्विवादमानयोः सन्धानकरणम्। *उपा० ७।*

संधिचारी- सन्धिचारी-छिद्रान्वेषी। *आचा० ३६५।*

संधिच्छेय- सन्धिच्छेदः-क्षात्रखानकः। *प्रश्न० ४६।*

संधिच्छेयएअ सन्धिच्छेदकः-छात्रखानकः। *ज्ञाता० ७८।*

संधिच्छेयग- सन्धिच्छेदकः गृहभित्तिसन्धीन् विदारकः। *ज्ञाता० २३६।* यो भित्तिसन्धीन् भिनत्ति स सन्धिच्छेदकः। वीपा० ५६।

संधिदोस- सन्धिदोषः-विश्लिष्टसंहितत्वं व्यत्ययो वा, सूत्रो-च्चारणे द्वात्रिंशत्तमदोषविशेषः। *आव० ३७४।*

संधिपाल- सन्धिपालः-राज्यसन्धिरक्षकः। *भग० ३१९।*

संधिमेल- सन्धिः। *जीवा० १८०।*

संधिय- सन्धितः-संयोजितः, संधानं सन्धा सा जाता-ऽस्येति। *उत्त० २१२।*

संधिल्लाओ- संधातवन्तः। *व्यव० १६९* आ।

संधिवाल- सन्धिपाल राज्यसन्धिरक्षकः। *भग० ४६४।* सन्धिपालः राज्यसन्धिरक्षकः। *औप० १४।* सन्धिपालः-राज्यसन्धिरक्षकः। *राज० १४०।* सन्धिपालः-राज्यस-न्धिरक्षकः। *जम्बू० १९०।*

संधिस्सामि- सन्धास्यामि-पटितं-पटितं सेविष्यामि। *आचा० २४४।*

संधी-सन्धिः कर्म्मसन्ततिरूपः। *आचा० २२४।* सन्धिः फलकानां सन्धिमेलः। *जम्बू० २३।* सन्धिः-सन्धिमेलः। *जीवा० १८०।*

संधीणामजो- जो पण्णस्स मज्झे पासलतो पुट्ठीवसोत्ति। वृत्तं भवति। *निशी॰ १४१* अ।

संधीसंखेडग- जतो गमिस्संति सो दिसाभागो। *निशी॰ ८६* अ।

संधुकिओ- प्रगुणितः। *आव॰ ६९३*।

संनत- सन्नतः अधोनमतम्। *प्रश्न॰ ८०*।

संनद्ध- सन्नद्धः-सन्नहत्यः कृतसन्नाहः। *विपा॰ ४६*।

संना- संज्ञा-समाचारः। *बृह॰ ११३* आ।

संनायग- सञ्ज्ञातकः स्वजनः। *बृह॰ ११९* आ।

संनाहपट्ट- विहारे शरीरेणोपधैर्बन्धनार्थकः पटः। *बृह॰ २५३* आ।

संनिओग- सन्नियोगः-स्वपरप्रयोजनेषु सम्यग्व्यापारणम्। *उत्त॰ ६३१*।

संनिकास- संनिकाशः प्रभा। *जीवा॰ २१४*।

संनिकेय- संनिकेत-स्थानम्। *भग॰ ४६९*।

संनिगब्भ- सञ्ज्ञिगर्भसङ्खयः। *भग॰ ३७३*।

संनिचओ- सम्यग् निश्चयेन चीयत इति सन्निचयः। *आचा॰ १३०*। सन्नियः-प्राचुर्य्यमुपभोग्यद्रव्यनिचयः। *आचा॰ १०८*।

संनिचयाइ- सन्निचयः-धान्यसञ्चयः। *भग॰ २००*।

संनिचिए- संनिचितं प्रचयविशेषनिबिडम्। *भग॰ २७५, २७७*।

संनिचित- सन्निचितः प्रचयविशेषान्निबिडीकृतः। *अनुयो॰ १८२*।

संनिभा- छाया। *उत्त॰ ६५२*।

संनिरूद्ध- सन्निरुद्धः-गृहस्थाकुला वसतिर्भवति। *आचा॰ ३७०*।

संनिवाइए- सन्निपातिकः उदयादिद्वयादिभावानां मेलकः सन्निपातः। स एव तेन वा निर्वृतः। *अनुयो॰ ११४*।

संनिवाइय- सान्निपातिकः द्रव्योपसर्गे भेदः। *आव॰ ४०५*।

संनिविट्ठ- सन्निविष्टं, सम्यग्-निश्चलतया अपदपरिहारेण च निविष्टम्। *जम्बू॰ २९२*। सम्यक्-स्वशरीरानाबाधाया निविष्टः सन्निविष्टः। *जीवा॰ १९४*। सन्निविष्टः-आवासितः। *आचा॰ ३३५*।

संनिवेस- सन्निवेशः-यत्र सार्थादिरावासितः। *जीवा॰ २७९*। सनिवेशः-यात्रादिसमायातजनावासः। *उत्त॰ ६०५*। संनि-वेशः। *दशवै॰ १८३*। *स्था॰ ८६*। सन्निवेशः घोषादिः। *भग॰ ३६*।

संनिवेसणा- संनिवेशना-स्थापना। *उत्त॰ ५८६*।

संनिवेसमारी- सन्निवेशमारी-मारीविशेषः। *भग॰ १९७*।

संनिसिज्जा- सम्यग् निषीदन्ति-उपविशन्त्यस्यामिति सनि-षद्या-पाठाद्यासनम्। *उत्त॰ ४२४*।

संनिहाण- सन्निधानं-यो हि लघुकर्म्मा सम्यग् निधियते नारकादिगतिषु येन तत् सन्निधानं-कर्म्म। *आचा॰ २७५*। सन्निधीयते यत्र कारणं तत् सन्निधानं-अधिकरणम्। *आव॰ २७८*।

संनिहाणसत्थ- सम्यग् निधीयते नरकादिगतिषु येन तत्स-न्निधानं कर्म्म तस्य स्वरूपनिरूपकं शास्त्रं यदि वा सन्निधा-नस्य-कर्म्मणः शस्त्र संयमः सन्निधानशस्त्रम्। *आचा॰ २७५*।

संनिहि- सन्निधिः-सम्यग्निधीयत इति सन्निधिः-विनाशि-द्रव्यः। *आचा॰ १३०*। सम्यग् निधीयते अवस्थाप्यते स सन्निधिः। *आचा॰ १०८*। सन्निधिः-गोरसादिः। *आचा॰ ३२७*। सन्निधिः- पर्युषितम्। *दशवै॰ १९८*।

संनिहिए- अणपण्णिकानमिन्द्रः। *स्था॰ ८५*।

संनिहिय- सन्निहितं-विनिवेशितम्। *ज्ञाता॰ १३०*। सन्नि-धिकः-दाक्षिणात्याणपन्निकव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ९८*।

संनिहिसंनिचओ- सन्नियचः सन्निधिस्तस्य। सन्निचयः। *आचा॰ १०८*।

संनिही- सन्निधिः-घृतगुडादीनां सञ्चयक्रिया। *दशवै॰ ११७*। सन्निधीयते नरकादिष्वनेनात्मेति सन्निधिः। घृतादेरुचित-कातिक्रमेण स्थापनम्। *उत्त॰ ४५६*।

संनी- संज्ञी-गृहीताणुव्रतः अविरतिसम्यग्दष्टिर्वा। *बृह॰ २९७* आ।

संपइ- राया-असोगसिरिदिण्णरज्जो। *निशी॰ ४४* आ।

संपउत्त- संप्रयुक्तः-योजितः। *ज्ञाता॰ ५७*। सम्प्रयुक्तः सज्जितः। *जम्बू॰ २६५*।

संपओग- सम्प्रयोगः-प्रवर्त्तनम्। *ज्ञाता॰ २३८*। संप्रयोगः-सम्यक् संगतो वा प्रयोगः संप्रयोगः अकल्पितः। *दशवै॰ ४०*। संप्रयोगः-सम्यर्कः। *ओघ॰ ८८*।

संपक्खाल- मृतिकादिघर्षणपूर्वकं योऽङ्गं क्षालयत्ति।

भग० ५१६। सम्प्रक्षालः-मृतिकादिघर्षणपूर्वकं योऽङ्ग क्षालयत्ति। *औप० ९०*।

संपक्खालगा- मृतिकाघर्षणपूर्वकं योऽङ्गं प्रक्षालयति, तापस-विशेषः। *निर० २५*।

संपगाढ- सम्प्रगाढ-अतिशयासक्तः। *उत्त० ४७९*।

संपट्टण- संवर्तनं-मार्गमिलनस्थानम्। *ज्ञाता० ७९*।

संपडिलेह- सम्प्रयुपेक्षते-प्रतिजागर्त्ति गृह्णाति। *उत्त० ५४५*।

संपडिवज्जइ- सम्प्रतिपद्यते-सम्यगवबुध्यते। *दशवै० २५६*।

संपडिवाइओ- सम्प्रतिपातितः-संस्थितः। *उत्त० ४९६*।

संपडुगभंडभारी- संपादुकभाण्डधारी नामा यावन्मात्रमुप-करणं उपयुज्यते तावन्मात्रं धरति शेषं परिष्ठापयति। *व्यव० ३१६* आ।

संपण्ण- षड्रोसोपेतम्। *बृह० १७९* अ।

संपत्त- सम्प्राप्तं-शोभनेन प्रकारेण स्वाध्यायकरणादिना प्राप्तम्। *दशवै० १६३*। *ज्ञाता० ३९*।

संपत्ती- समापत्तिः। *आव० ३७३*। भवितव्यता। *आव० ८३३*। सम्प्राप्तिः-प्राणातिपातापत्तिः। *ओघ० ३६*।

संपदाय- संप्रदायकः-यश्चौराणां भक्तकादि प्रयच्छति स। *प्रश्न० ४७*।

संपदावण- सत्कृत्य प्रदाप्यते तस्मै उपलक्षणत्वात् सम्प्रदीयते वा यस्मै स सम्प्रदानं सम्प्रदापनं वा। *स्था० ४२८*।

संपन्न- सम्पन्नः ज्ञानादिगुणपरिपूर्णः सत्प्रज्ञः-सम्यग् अविपरीता प्रज्ञा सत्प्रज्ञा वा। *उत्त० ६५*। सङ्गता प्रज्ञा यस्य सः सम्प्रज्ञः-सम्पन्नो वा ज्ञानादियुतः। *उत्त० ४६५*। सम्पन्नः-समृद्धः। *दशवै० २२२*।

संपमज्जेइ- विरजीकरोति। *औप० ६४*।

संपमारए- सम्पमारयेत्। सम्-एकीभावेन प्रकर्षेण प्राणानां मारणं अव्यक्तत्वापादनम्। *आव० ३९*।

संपया- सम्पत्-सम्पन्नता सम्पत्-उदयोदीरणादिरूपा विभूतिर्वा। *उत्त० ६६*।

संपयायं- सम्पदामायो-लाभः-सम्पदायः। *उत्त० ४७४*।

संपराइयं- सम्परायिकी- कषाहेतुकः कर्मबन्धः। *भग० १०५*।

संपराए- सम्परायः-सङ्ग्रामः। *ज्ञाता० १५९*।

संपराग- सम्परायः-कषायः। *स्था० ३२४*।

संपराण्हाणिग- सोधगो। *निशी० ४३* अ।

संपराय- सम्परायः-संसारः-*सूर्य० १४१*। सम्परायः संसारः परिषहोपसर्गसङ्ग्रामः। *दशवै० ९५*। सम्पर्येति-पर्यटति अनेन संसारमिति सम्परायः-लोभाख्यः कषायः। *उत्त० ५६८*। सम्परायन्तिभृशं पर्यन्त्यस्मिन् जन्तव इति सम्प-रायः-संसारः। *उत्त० ४७८*। संपरैति-पर्यटति संसारम-नेनेति सम्परायः-क्रोधादिकषायः। *अनुयो० २२२*। सम्प-रायः-कषायः। *भग० १०६*। संपरायः-कषायोदयः। *प्रज्ञा० ६८*। सम्परायः-कषायः। *भग० ३८५*।

संपरिवुड- संपरिवृत्तः-सम्यक्परिवारितः परिकरभावेन परि-करितः। *भग० १३७*।

संपलग्ग- योद्धं सम्प्रलग्नः। *ज्ञाता० १४६, २३९*।

संपलत्त- संप्रलप्तः-प्रतिपादितः। *ज्ञाता० ८६*।

संपलियंक- सम्पर्यङ्कः-पद्मासनम्। *औप० ९५*। पद्मासनम्। *ज्ञाता० ७७*।

संपलियंकणिसन्न- सम्पर्यङ्कनिषण्णः-पद्मासननिषण्णः। *स्था० २३२*।

संपलियंकनिसण्ण- पद्मासनोपविष्टः। *भग० १२८*।

संपऽसंप- संपातिमासंपातिमं। *बृह० ३३* अ।

संपसारणं- संप्रसारणं-पर्यालोचनम्। *सूत्र० १८१*।

संपसारतो- गिहीणं कज्जाणं गुरुलाघवेणं संपसारंतो संपसारतो। नि० ९२ आ।

संपसारेइ- पर्यालोचयति। *स्था० ३७१*।

संपसारेति- मन्त्रयतीत्यर्थः। *व्यव० २२४* अ।

संपाउणिज्जासि- सम्यक् प्रापयेत्। *उत्त० ३५३*।

संपाउणेज्ज- पुद्गलान् गृह्णियात्, आहारयेदित्यर्थः। *भग० ७३०*।

संपाउप्पायक- सम्पातानां-अनर्थमलीकानामुत्पादकः सम्पातोत्पादकः। परिग्रहस्याष्टादशमं नाम। *प्रश्न० ९२*।

संपागड- सम्प्रकटं-अगीतार्थं प्रत्यक्षम्। *स्था० २१८*। सम्प्रकटं अगीतार्थसमक्षमकल्प्य भक्तादि। *स्था० २०२*।

संपागडकिच्च- समत्थजणस्य पागडाणि अधिच्चाणि करेति जो सो संपागडकिच्चा, अहवा असंजमकिच्चाणि संपाग-डादि करेति जो सो संपागडकिच्चो, संपागडसेवी

वा, मूलगुणउत्तरगुणसेवतीत्यर्थः। *निशी॰ ९२* आ।

संपात- अनर्थमलीकम्। *प्रश्न॰ ९३*। प्रातः-प्रभातं तेन सम्प्रातः सम्प्रातरपि च प्रभातसमकालमपि, अतिप्रभातः। *स्था॰ ११७*।

संपातिम- सम्पतितुं-उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गन्तुमागन्तुं वा शीलं येषां ते सम्पातितः प्राणिनः। *आचा॰ ५५*।

संपाती- उल्लावकः। *उत्त॰ १६९*।

संपाय- संपातः-चलनचमत्कारः। *उत्त॰ ४४०*।

संपाविउकामे- यातुमनाः-प्राप्तुकामः। *भग॰ २१*।

संपिंडिय- सम्पिण्डितः-एकत्रपिण्डीभूतः। *जीवा॰ १८८*।

संपिणद्ध- सम्पिनद्धं-अत्यर्थं वेष्टितम्। *भग॰ ४६९*।

संपिनद्ध- सम्पिन्नद्धः-वद्धः। *ज्ञाता॰ २२२*।

संपिहति- संपदिधति-परिभुंजते। *बृह॰ २१९* अ।

संपीआ- संप्रीताः-सम्यगान्तरप्रीतिभाजः। *उत्त॰ ३९४*।

संपीडन- सङ्घातं, यद्वा समिति-भृशं पीडा-दुःखकृताबाधा संपीडा तामुपैति। *उत्त॰ ६३१*।

संपुच्छण- कुशलं भवत इत्यादि सम्प्रच्छनम्। *आव॰ ५२४*।

संपुच्छणा- सम्प्रश्न-सावद्यो गृहस्थविषयः, राढार्थं कीदृशो वाऽहमित्यादिरूपः। *दशवै॰ ११७*। सम्प्रश्नः-पर्यालोचम्। *जीवा॰ १६६*। अप्पणो अंगावयवाणि अपुच्छमाणो परं पुच्छइ। *दशवै॰ ५०*।

संपुच्छिया- सम्पोच्छिका-पादादिलूषिका। *ज्ञाता॰ ११९*।

संपुड- सम्पुटं-काष्टयन्त्रम्। *प्रश्न॰ ५६*। दुगाइफलगा। *निशी॰ ६१* अ।

संपुडग- फलकद्विकादिमयं पुस्तकम्। *बृह॰ २१९* आ।

संपुडण- संपुटं-मीलनं निमिषणम्। *बृह॰ १४७* आ।

संपुडफलए- संपुटफलकः-पुस्तकपञ्चके चतुर्थो भेदः। *स्था॰ २३३*। सम्पुटफलकपुस्तक यद् द्विकादिकं तनुपत्रोच्छ्रतरूपम्। *आव॰ ६५२*।

संपुडय- पोत्थगपणमे पंचमं। *निशी॰ १८१* अ।

संपुण्णकुड- सम्पूर्णकुटः-कुटेषु चतुर्थः। *आव॰ १०१*।

संपुल- सम्पुलः दधिवाहनस्य कञ्चुकी। *आव॰ २२५*।

संपहा- सम्प्रेक्षा-पर्यालोचना। *आचा॰ ११४*। सम्प्रेक्षा-पर्यालोचना। *आचा॰ ११५*। सम्यग्-अविपरिता प्रेक्षाबुद्धिः। *उत्त॰ २८१*।

संपेहेइ- सम्प्रेक्षते-पर्यालोचयति। *ज्ञाता॰ ३०*। सम्प्रेक्षते-सङ्गतासङ्गतविभागतः पर्यालोचयति। *भग॰ १२८*। सम्प्रे-क्षते-पर्यालोचयति। *भग॰ ११६*। सम्प्रेक्षतेपर्यालोचयति। *जम्बू॰ २०३*।

संपेहेति- सम्पहेक्षते। *आव॰ ३०३*। सम्प्रेक्षते-पर्यालोचयति। *ज्ञाता॰ ६१*। पर्यालोचयति। *निर॰ १५*।

संफुसिज्ज- संस्पर्शनं-सकृद् बहु स्पर्शनम्। *दशवै॰ १५३*।

संबंधि- सम्बन्धी श्वशुरादिः। *जम्बू॰ २७०*। सम्बन्धी-मातृपक्षीयः, श्वसुरकुलीनो वा। *भग॰ १६३*। सम्बन्धीः-श्वशुरादिः। *भग॰ ४८३*।

संबंधी- सम्बन्धी-श्वशुरादी। *औप॰ १०३*। दैवरादिः। *औप॰ ८१*।

संबंधीसंथव- सम्बन्धिसंस्तवः-परिचयसंस्तवः। *पिण्ड॰ १३९*।

संब- शाम्बः-अंतकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य सप्तममध्ययनम्। *अन्त॰ १४*। शाम्बः-कृष्णजम्बूमतीसुतः। *अन्त॰ १८*। शम्बः-यादवविशेषः। *प्रश्न॰ ७३*। शम्बः-दुर्दान्तमुख्यः। *अन्त॰ २*। शाम्बः-कृतिकर्मदृष्टान्ते वासुदेवपुत्रो भाव-न्दकः। *आव॰ ५१५*। दुर्दन्ते मुख्यः। *ज्ञाता॰ २०७*। याद-वविशेषः। *ज्ञाता॰ २१३*। दुर्दान्तकुमार विशेषः। *ज्ञाता॰ १००*। द्वारवत्यां कुमारः। *बृह॰ ३०* अ। शाम्बः। *आव॰ ९४*।

संबद्ध- सम्बद्धं-स्वात्मनः शरीरसंलग्नम्। *जीवा॰ १२०*। सम्बद्धं-अनुबद्धम्। *प्रज्ञा॰ ८१*। सम्बद्धः-गृहस्थः। *सूत्र॰ ९१*। वायाए परोप्परं सविउमारद्धं। *निशी॰ २१६* आ।

संबद्धा- सम्बद्धा-अतिशय्या वसतेश्च एक एव पृष्टवंशः। *व्यव॰ १३५* अ।

संबर- सम्बरः-यस्यानेकशाखे-शृङ्गे भवतः, एतादृशो मृगविशेषः। *प्रश्न॰ ७*। द्विखुरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५*। स्थानिकः शोधकः। *व्यव॰ २३१* आ।

संबररुहिर- सम्बररुधिरम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

संबल- सुदंष्ट्रेन समं युद्धकः। *आव॰ १९७*।

सबलथइया- शम्बलस्थगिका। *आव॰ ३५४*।

संबलमोदग- शम्बलमोदकः। *आव॰ ३५४*।

संबलिय- शाल्मकी। *आव॰ ३५१*।

संबाइ- द्वारावत्यां कुमाराः। *बृह॰ ३०* अ।

संबाह- सम्बाधः-यत्र कृषीबललोकऽन्यत्र कर्षणं वणिग् वर्गो वा वाणिज्यं कृत्वाऽन्यत्र पर्वतादिषु विषमेषु

स्थानेषु संवोडुमिति। *बृह॰ १८१* आ। संबाहः- यत्र पर्वतनित-म्बादिदुर्गे परचक्रभयेन रक्षार्थं धान्यादीनि संबहन्ति स संबाहः। *स्था॰ २९*। संबाधः-प्रभुत। चातुर्वर्ण्यनिवासः। *उत्त॰ ६०५*। सम्बाधः- यात्रामागतप्रभूतजननिवेशः। *जीवा॰ ४०*।

संबाहा- सम्बाधाः-पीडाः, सम्बाधयन्तीति सन्बाधाः- पीडाः उपसग्र्गजनिता नानाप्रकारातङ्कजनिता वा। *आचा॰ २१६*। सम्बाधा-शैलशृङ्गशायिनो निवासाः, यात्रासमागतप्रभूत-जननिवेशा वा। *जम्बू॰ १२१*। संबाधा-यात्रासमागतप्रभू-तजननिवेशाः। *जीवा॰ २७९*। *स्था॰ ८६*।

संबुक्क- शम्बूकः-शङ्खः। *उत्त॰ ६०५*। शम्बूकः-शङ्खः। *स्था॰ २१६*। सम्बूकः-द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३१*। रावणभागिनेयः खरदूषणचन्द्रनखासुतः विद्याधरकुमारः। *प्रश्न॰ ८७*। शङ्खः- तद्वच्छङ्खभ्रमिवत्। *स्था॰ ३६६*।

संबुक्कवट्टा- संवुक्कः-शङ्खः तद्वच्छङ्खभ्रमिवदित्यर्थो या वृत्ता सा सन्बुक्कवृत्ता। *स्था॰ ३६५*।

संबुक्का- द्वीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

संबुद्ध- सम्बुद्धः-विदितविषयस्वभावः सम्यग्दृष्टिः। *दशवै॰ ९९*। *स्था॰ ५१६*। *ज्ञाता॰ १०७*।

संबोहण- सम्बोधनम्। *आव॰ ३०८*। *ज्ञाता॰ १५१*।

संभंत- सम्भ्रान्तः-उत्सुकः। *विपा॰ ४३*। सम्भ्रान्तः- आकुलः। *दशवै॰ १६३*। सम्भ्रान्तः- साश्चर्यः। *जम्बू॰ ४१८*।

संभताओ- आकुलीभूतः। *ज्ञाता॰ २९*।

संभग्ग- सम्भग्नं-मथितम्। *ज्ञाता॰ ८६*।

संभज्जिय- आमर्दितम्। *आचा॰ ३२३*।

संभभ- सम्भ्रमः प्रमौदकृदौत्सुक्यम्। *विपा॰ ८६*। सम्भ्रमः-सम्भ्रमः। *ओघ॰ ५२*। सम्भ्रमः- गतिस्खलनम्। *जम्बू॰ ३८८*। सम्भ्रमः। *राज॰ १६*। सम्भ्रमः-उदकाग्निहस्त्या-द्यागमनसमुत्थः आकास्मिकः। *बृह॰ २६१* अ। त्वरित्त-त्वरिता प्रवृत्तिः। *राज॰ २४*। सम्भ्रमः-परचक्रादिभयम्। *अनुयो॰ १३९*। सम्भ्रमो-व्याकुलत्वम्। *अनुयो॰ १३७*। अग्गि- उदगचोरबोधेगादियं। *निशी॰ ४२* आ।

संभमा- आउमादिया। *निशी॰ २६३* अ।

संभरइ- संस्मरति। *ओघ॰ १७६*।

संभरिज्जा- संस्मरेत्। *आव॰ ६७६*।

संभलि- दूती। *व्यव॰ १२५* अ।

संभव- सम्भवः-सम्भवन्ति प्रकर्षेण भवन्ति चतुर्त्रिंशद-तिशयगुणा अस्मिन्निति सम्भवतः तृतीय जिनः। यस्मिन् गर्भे सति अभ्यधिका शस्यनिष्पत्तिरतः। *आव॰ ५०२*। सम्भवः-सदा भवनम्। *सूत्र॰ ३५०*।

संभवानुमान- व्याकरणादिना शास्त्राभ्यासेन संस्क्रियमाणा याः प्रज्ञाया ज्ञानातिशयो ज्ञेयावगमं प्रत्युपलब्धः। *सूत्र॰ २१३*।

संभाइयं- सम्भाजितः। *आव॰ २००*।

संभार- सम्भारः-प्राभृत्यम्। *जम्बू॰ १००*। संभारः- अवश्यंतया कर्मणो विपाकानुभावेन वेदनम्। *सूत्र॰ ४१४*। उपरि प्रक्षेप्यद्रव्यम्। *ज्ञाता॰ १९६*। बहुद्रव्यसंयोगः। *बृह॰ १८८* अ। सम्भारः-प्राभृत्यम्। *जीवा॰ २६५*। संभ्रियते-धार्यते संभरणं वा धारणं संभारः। परिग्रहस्य षष्ठं नाम । *प्रश्न॰ ९२*।

संभारयति- सम्भृतं करोति। *ज्ञाता॰ १७७*।

संभारितं- वासितं कर्पूरपाटलादिर्वासितं सम्भारितम्। *बृह॰ १७२* आ।

संभावणत्थतक्क- प्राकृतशैल्या अर्थसंभावना एवमेव चायमर्थ उपपद्यत इत्यादिरूपोतर्कः। *दशवै॰ १२५*।

संभावियाइं- वयं शोभानानीत्यवमन्यन्ते। *बृह॰ १८८* आ।

संभास- सम्भाषणं-स्मरकथाभिर्जल्पः, संप्राप्तकामस्य तृतीयो भेदः। *दशवै॰ १०४*।

संभिच्च- एकत्रः। *निशी॰ १७१* अ।

संभिण्ण- समेकीभावेन भिन्नं सम्भिन्नं यथा बहिस्तथा मध्येपि, अथवा सम्भिन्नमिति द्रव्यं गृह्यते, कथम्- काल-भावौ हि तत्पर्यायौ ताभ्यां समन्ताद्वा भिन्नं संभिन्नम्। *आव॰ ८५*।

संभिण्णलोगनालि- संभिन्नलोकनाडी- चतुर्दशरज्वात्मिका कन्यका चोलकसंस्थाना। *आव॰ ४०*।

संभितं- सम्भृतं-उपस्कृतम्। प्रश्नव *१६३*।

संभिन्न- परिपूर्णम्। *जीवा॰ ४०२*। परिपूर्णम्। *प्रज्ञा॰ ५४१*। *सम॰ १२८*। सम्-एकीभावेन भिन्नं सम्भिन्नं यथा बहिस्तथा मध्येऽपीत्यर्थः *स्था॰ ६१*।

संभन्नश्रोत- संभिन्नश्रोत-अभिधानलब्धियुक्तं। *ठाणा॰ ६२०।*

संभिन्नसोत- यः सर्वतः-शृणोति स संभिन्नश्रोता, संभिन्न नु वा परस्परतो लक्षणतोऽभिधानतश्च सुबहूनपि शब्दान्शृणोति सम्भिन्नश्रोता। *आव॰ ४७।*

संभिन्नसोता- सम्भिन्नं-सर्वतः सर्वशरीरावयवैः श्रृण्वन्तीति सम्भिन्नश्रोतारः, सभिन्नानि-प्रत्येकं ग्राहकत्वेन शब्दादि-विषयैर्व्याप्तानि श्रोतांसि इन्द्रियाणि येषां ते सम्भिन्न श्रोतासः। सामस्त्येन वा भिन्नान् परस्परभेदेन शब्दान् शृण्वन्तीति वा सम्भिन्नश्रोतारः। *प्रश्न॰ १०५।*

संभिन्नसोय- सम्भिन्नान्-बहुभेदभिन्नान् शब्दानान् पृथक् २ युगपच्छृपन्तीति सम्भिन्नश्रोतारः। संभिन्नानि वा शब्देन व्याप्तानि शब्दग्राहीणि, प्रत्येकं वा शब्दादिविषयैः श्रोतांसि-सर्वेन्द्रियाणि येषां ते सम्भिन्नश्रोतारः। *औप॰ २८।*

संभिय- श्लेष्मिकः। *आव॰ ४०५।* सम्भृतः-सस्कृतः। *उत्त॰ ४०५।*

संभुंजितए- सम्भोजयितुं-भोजनमण्डल्यां निवेशयितुम्। *स्था॰ ५७।*

संभूअ- सम्भूतः-त्रिपृष्ठवासुदेवधर्माचार्यः। *आव॰ १६२।* संभूतं-पाकातिशयतः ग्रहणकालोचितम्। *दशवै॰ २१९।*

संभूअजई-सम्भूतयतिः-विश्वभूतिदीक्षागुरुः। *आव॰ १७२।*

संभूत- वाराणस्यां चण्डालः, ब्रह्मदत्तपूर्वभवः। *उत्त॰ ३७६।* जस्सभद्दस्सीसो। *निशी॰ २४३* आ। *निशी॰ ३०४* अ। सम्प्राप्तः। *उत्त॰ २६३।*

संभूतिविजए- सम्भूतिविजयः- अनरगारविशेषः। *विपा॰ ९५।*

संभूय- सम्भूतं-सम्यक् परिपालनाय भूतं-संवृत्तम्। *आचा॰ १२३।* सम्भूतविजयो माढरगोत्रः। *नन्दी॰ ४९।*

संभूयविजय- सम्भूतिविजय-स्थूलभद्रगुरवः। *आव॰ ३९५।*

संभोइए- अशेषसमानसामाचारिकः। *ओघ॰ १६।*

संभोइय- सांभोगिकं-अशेषसमानसामाचारिकम्। *ओघ॰ १६।* सम्भोगिकः *आचा॰ ३५२।* *निशी॰ १८* आ। सांभोगिकं-समसुखदुःखः। *व्यव॰ २४१।* साम्भोगिकः-एकसामाचारीप्रविष्ठः। *आचा॰ ४०३।* एकसामाचारिकता। *औप॰ ४२।* साम्भोगिकः। *आव॰ ६५२।*

संभोए- मण्डलीसम्भोगः। *ओघ॰ २११।*

संभोएत्ता- मिश्रयित्वा। *आचा॰ ३४६।*

संभोग- समिति-संकरेण स्वपरलाभमीलनात्मकेन भोगः सम्भोगः। *उत्त॰ ५८७।* कामविकारः। *नन्दी॰ १६३।* एकमण्डल्यां समुद्देसनादिरूपः। *बृह॰ १४०* आ। संभोगः-एकत्र भोजनं समं भोगो सम्भोगो यथोक्तविधिना सम्भुजन्ते, सम्भजते वा स्वस्य वा भोगः। *निशी॰ २३४* अ। सम्भोगः-एकमण्डोलीभोक्तृत्वम्। *भग॰ ७२७।* सम्मोगः-समानधर्मिकाणां परस्परेण भक्तादिदानग्रहणरूपः। *भग॰ ९२५।*

संभोगकाल- सम्भोगकालः-उपभोगप्रस्तावः। *उत्त॰ ६३२।*

संभोगपच्चक्खाण- एकमण्डलीकभोक्तृत्वस्य प्रत्याख्यानं गीतार्थावस्थायां जिनकल्पद्युद्यत् विहारप्रतिपत्त्या परिहारः सम्भोगप्रत्याख्यानम्। *उत्त॰ ५८७।*

संभोगिय- सम्-एकत्र भोगो भोजनं सम्भोगः, साधूनां समानसामाचारीकतया परस्परमुपध्यादिदानग्रहणसंव्यवहा-रलक्षणः स विद्यते यस्य स सम्भोगिकः। *स्था॰ १३९।* साम्भोगिकः-एकसामाचारीकः। *स्था॰ ४०८।*

संभोतित- साम्भोगिकं-एकभोजनमण्डलिकादिकम्। *स्था॰ ३००।*

संभोयण- एकमण्डल्यां भोजनम्। *बृह॰ १५७* अ।

संमं- सम्यग् अपुनरागमनेन। *आचा॰ १११।* सम्यग्ज्ञानं-सम्यक्त्वम्। *आचा॰ २१२।*

संभइसंपुच्छणाबहुल- सम्मतिसम्प्रश्नबहुलः-संमत्या उत्त-मया मत्या यः संप्रश्नः- पर्यालोचनं तद्बहुलः। *जीवा॰ १६६।*

संमए- सम्मतम्। *भग॰ १२२।*

संमज्जग- जन्मज्जनस्यैवासकृत्करणम्। *भग॰ ५१९।* उन्मज्जनस्यैवासकृत्करणेन यः स्नाति, स। *औप॰ ९०।* उन्मज्जनस्यैवासकृत्करणेन यः स्नाति तापसविशेषः। *निर॰ २५।*

संमज्जण- समार्ज्जनं दण्डपुञ्छनादिना। *अनुयो॰ २६।* पमज्जणं। *निशी॰ २३१* अ। प्रमार्जणम्। *निशी॰ १७२*

आ।

संमज्जिअ- सम्मार्जितं-अपहृतकचवरम्। *ज्ञाता॰ २५।*

संमज्जिय- सम्मार्जनं-शलाकाहस्तेन कचवरशोधनम्। *प्रश्न॰ १२७।* सम्मार्जित कचवरशोधनेन। *जीवा॰ २४६।* संमृज्य-वस्त्रादिनाऽऽर्द्रतामपनीय। *आचा॰ ३३६।*

संमट्ठ- संमृष्टः-आकर्णपूरितः। *जम्बू॰ ९५।* संसृष्टः-आकर्णभृतम्। *भग॰ २७७।*

संमट्ठा- प्रमार्जिता। *निशी॰ २३२* अ।

संमत- वल्लभः। *निशी॰ १६* अ।

संमत्त- सम्यक्त्वं-प्रशस्तं-शोभनं एकं सङ्गतं वा तत्त्वं सम्यक्त्वम्। *आचा॰ २४५।* सम्यक्तवं-आचारप्रकल्पस्य चतुर्थो भेदः। *आव॰ ६६०।* सम्पूर्ण-निरूपचरितम्। *सूत्र॰ ४०२।* सम्यक्त्वं-तत्त्वार्थश्रद्धानरूपम्। *आव॰ ७८।*

संमत्तकिरिया- सम्यक्त्वक्रिया-सुन्दराध्यवसायात्मिका क्रिया। *जीवा॰ १४३।*

संमतदंसिण- समत्त्वदर्शितः सम्यक्त्वदर्शिनः समस्तदर्शितः। *आचा॰ १८८।*

संमद्दण- सम्मर्दनं-पूर्वच्छिन्नानामेवापरिणतानां मर्दनम्। *दशवै॰ १८५।*

संमद्दा- वस्त्रस्य मध्यप्रदेशे संवलिताः कोणा भवन्ति प्रत्युपेक्षणीयोपधिवेण्टिकायामेवोपविश्य प्रत्युपक्षेपते सा सम्मर्द्दा। *स्था॰ ३६१।* समर्द्दा यत्र मध्यप्रदेशे वस्त्रस्य संवलिताः बहुमतः। *ओघ॰ १७७।*

संमयसच्च- सम्मतसत्यं-कुणुदकुवलयोत्पलतामरसानां समाने पङ्कस्मभवे गोपादीनामपि सम्मतमरविन्दमेव पङ्कजमिति। *दशवै॰ २०८।*

संमाजिया- सम्मार्जिका-गृहस्यान्तर्बहिश्च बहुकरिकावाहिका। *ज्ञाता॰ ११९।*

संमाण- सन्मानं-वस्त्रपात्रादिभिः पूजनम्। *दशवै॰ ३०।* सन्मानः विश्रामणादि। *बृह॰ २३७* अ।

संमिक्ख- मसक्ष्य-पर्यालोच्य। *उत्त॰ १२०।*

संमित- सम्मितः-प्रमाणोपेताङ्गः। *ज्ञाता॰ १२०।*

संमिस्स-सम्मिश्रं-वल्ल्यादि पुष्पादि वा। *आव॰ ८२८।* संमिश्रं-स्फुटितत्वक्। *आचा॰ ३४९।*

संमुइ- सम्मुदितं-अकुटिलतया कारकः। *व्यव॰ २४१।*

संमई- सम्मतिः। *जम्बू॰ १७७।*

समुच्छंति- सम्मूर्च्छन्ति-तत्पुद्गलमीलनात्तदाकारतयो-त्पद्यते। *भग॰ २६९।*

संमुच्छ- सम्मूर्च्छः-गर्भोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिना-मुत्पादः। *प्रज्ञा॰ ४४।* सम्मूर्छनं सम्मूर्च्छः-गर्भोपपातव्य-तिरेकेणैव यः प्राणिनामुत्पादः। *जीवा॰ ३५।*

संमुच्छइ- सम्मूर्छति-सम्मूर्छजन्मना लब्धात्मलाभो भवति। *जीवा॰ ३०७।*

संमुच्छिम- सम्मूर्च्छा-अतिशयमूढता। *उत्त॰ ६९८।*

संमुच्छिम- व्यजनादिजन्यः सम्मूर्च्छिमः। *स्था॰ ३३६।* सम्मूर्च्छेन निर्वृत्तः-सम्मूर्च्छिमः। *स्था॰ २७३।* सम्मू-र्च्छिमः- अगर्भजः। *स्था॰ ११४।* सम्मूर्च्छिमः। *सम॰ १३५।* सम्मूर्च्छिमः-अचित्तस्य पञ्चमी भेदः। *ओघ॰ ११३।* सम्मूर्च्छिमः-पद्मिनीशृङ्गाटकपाठशैवलादयः। *आचा॰ ५७।*

संमुच्छिममणुस्सा- सम्मूर्च्छिममनुष्याः। *प्रज्ञा॰ ५७।*

संमुच्छिमा- सम्मूर्छन सम्मूच्छं-गर्भोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिनामुत्पादः, तेन निर्वृत्ताः सम्मूर्च्छिमाः। *प्रज्ञा॰ ४४।* सम्मूर्च्छनं सम्मूर्च्छा-अतिशयमूढता तया निर्वृताः सम्मूच्छिमाः, समित्युत्पत्तिस्थानपुद्गलैः सहैकीमावेन मूर्च्छन्ति तत्पुद्गलोपचयात्सम्मूर्च्छिमाः भवन्तीत्यौणदिक इभप्रत्यये सम्मूर्च्छिमाः। *उत्त॰ ६९८।* सम्मुच्छिमाः-प्रसि-द्धबीजाभावेन पृथिवीवर्षादिः समुद्भवं तथाविधं तृणादि। *दशवै॰ १४०।* सम्मूर्च्छनजाः-शलभपिपीलिकामक्षिकाशा-लूकादयः। *दशवै॰ १४१।*

संमुति- पण्डजनपदे शतद्वारानगरे राजा। *भग॰ ६८८।*

संमुती- जम्बूभरते आगामिन्यायुत्सर्पिण्यां षष्ठःकुलगरः। *स्था॰ ५१८।*

संमूढ- सं-भृशं भूढः-वैचित्र्यमुपागतः सम्मूढः। *उत्त॰ १८३।*

सम्मूछयेयु- उत्पादयेयुः। *बृह॰ १०२* आ।

संमेल- परिजनसन्मानभक्तं गोष्ठी भक्तं वा। *आचा॰ ३३४।* गोठते वा भत्तं संमेलं भण्णति। कंभारंभे सुण्हासिता जे ते संमेलो। *निशी॰ २२* आ।

संमोह- सम्मोहभावनाजनितः सम्मोहः। *स्था॰ २७४।* सम्मोहः-मूढता। *भग॰ ९२६।* सम्मोहः-किं कर्तृव्यता मूढता। *अनुयो॰ १३७।* मूढात्मानो देवविशेषः। *बृह॰ २१२*

।

संयताद्यवगम- सन्दिग्धबुद्धिः। अव्यक्तमतः। *आव० ३११*।

संयमकेडे- केषु करोतीत्यर्थः। *निशी० २१४* अ।

संयमध्रुवयोगयुक्तता- संयमः-चरणं तस्मिन् ध्रुवो-नित्यो योगः-समाधिस्तद्युक्तता, सन्ततोपयुक्ततेति। आचारसम्पत्ते प्रथमो भेदः। *उत्त० ३९*। चरणे नित्यं समाध्युपयुक्तता। *स्था० ४२३*।

संयमस्थान- संयमः-सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहार विशुद्धिसूक्ष्मसम्परायययथाख्यातरूपः तस्य पञ्चविधस्या-ऽप्यसङ्ख्येयानि संयमस्तानानिः आचा ८९।

संयमासंयम- चारित्रारित्रम्। *भग० ३५०*।

संयुग- गर्भाधानपरिसाडरूपमूलद्वारविवरणे सिन्धुराजनगरम्। *पिण्ड० १४५*।

संयोजण- संयोजनं-हलगरविषकूटयन्त्राद्यङ्गानां पूर्वनिर्वत्ति-तानां मीलनम्। *भग० १८२*।

संयोजनाधिकरणक्रिया- अधिकरणक्रियाया द्वितीयो भेदः, सिद्धानां संयोजनलक्षणा। *प्रश्न० ३७*।

संयोजनाधिकरणिकी- संयोजनं-पूर्वनिर्वत्तितानां हलगरविष-कूटयन्त्राद्यङ्गानां मीलनं तदेव संसारहेतुत्त्वादाधिकरणिकी संयोजनाधिकरणिकी। *प्रज्ञा० ४३६*।

संयोजनाप्रायच्छित्त- प्रायच्छित्तविशेषः। *व्यव० ११* अ।

संरंभकरण- संरम्भकरणं पृथिव्यादिविषयमेव मनः-सङ्क्लेशकरणम्। *स्था० १०८*।

संरक्खग- नानाव्यसनेभ्यः संरक्षकः। *ज्ञाता० २०४*।

संरक्खणा- संरक्षणा आभिष्वङ्गवशाच्छरीरादिरक्षणम्। परिग्रहस्य षोडशमं नाम। *प्रश्न० ९२*।

संरक्षणता- यत्र तिष्ठतामगारिणो भवन्ति गवादिभिर्भज्यमानां वसतिमन्यद्वा समीपवर्त्तिगुहं संरक्षता। *बृह० २५४* आ।

संरोहण- औषधविशेषः। आवा० *२२७*।

संरोहिणी- औषधिविशेषः। *आव० ४०२*।

संलग्गिरि- परस्परं हस्तावलगिकया व्रजन्ति, युगलिता व्रजन्ति। *ओघ० ५५*।

संलवएति- संलपति-लपति। *आव० ४३३*।

संलवण- संलपनं-पौनःपुन्येन सम्भाषणम्। *आव० ८११*।

संलाप- संलापः-परस्परभाषणलक्षणः। *ज्ञाता० १३*। मिथोभाषा। *भग० ४७८*।

संलाव- संलापः-पत्या सह सकामं स्वहृदयप्रत्यर्पणक्षमं परस्परं सम्भाषणम्। *जम्बू० ११६*। संलापः-मुहुर्मु-हुर्जल्पः। *भग० २२३*। संलापः-पत्या सह सकामस्वहृद-यप्रत्यर्पणक्षमं परस्परसंभाषणम्। *जीवा० २७६*। संल्लापः-प्रियेण सह सप्रमोदं संक्रामं परस्परं सङ्कथा। *सूर्य० २९४*। संल्लापः- परस्परभाषणम्। *स्था० ४०८*। संलापः-संकथा। *बृह० २६९* आ।

संलिख्यते- शरीरकषायादि कृशीक्रियते। *उपा० १२*।

संलिह- सलेखनं-इषल्लेखनम्। *दशवै० २२८*।

संलिहनकल्प- भिक्षाभक्तविलिप्तानां पात्रकाणां-संलिहनं कर्त्तव्यमित्यर्थः। *ओघ० १९०*।

संलिहित्ता- संलिख्य-प्रदेशिन्या निरवयवं कृत्वा। *दशवै० १८२*।

संलिहिय- संलिखितम्। *आव० ८५७*। संलिह्य-निरवयवं कृत्त्वा। *आचा० ३३६*।

संलिहे- संलिलेत्। *दशवै० २२८*।

संलिहेज्जा- सलिखेत्। *आचा० ३३८*।

संलीण- एकाश्रयस्थः संलीनः। *दशवै० ११९*।

संलीणया- संल्लीनता-बाह्यतपोविशेषः। *दशवै० २९*। संलीनता। *उत्त० ६०७*।

संलुंचिआ- संलुञ्च्यः अपनीय-छित्त्वा। *दशवै० १८५*।

संलेह- कवलत्रयम्। *बृह० १८१* आ।

संलेहणा- संलेखना-भक्तपानप्रत्याख्यानम्। *समः १२०*। संलेखता-तपोविशेषः। *स्था० ५७*। संलेखना-शरीरस्य तपसा कृशीकरणम्। *औप० ९६*। संलेखना-तपोविशेषल-क्षणा। *आव० ८४०*। संलेखना-संलीख्यते-कृशीक्रियतेऽ–नया शरीकषायादि सा, तपोविशेषलक्षणा। *भग० २९७*। संलिख्यते-कृषीक्रियतेऽनयेति। संलेखना-तपः। *भग० १२७*। संलेखना-तपोविशेषलक्षणा। *उपा० १२*।

संलेणाज्झूसणाझूसिय- संलेखनासेवनाजुष्टः। *ज्ञाता० ७५*। संलेखनाजोषणाजोषितः-संलेखनक्षपणया क्षपितकायः। संलेखनाजोषणया-सेवनया जोषितः-सेवित उत्तमार्थ-गुणैरित्येवंभूतः। *सूत्र० ४१९*।

संलेहणाझूषणाराहणया- संलेखनाजोषणाराधना-

संलेखना-यास्तपोविशेषलक्षणायाः जोषणं-सेवनं तस्याराधना-अख-ण्डकालस्य सरणम्। *आव॰ ८३९।*

संलेहणासुय- संलेखनाश्रुतं-द्रव्यभावसंलेखना यत्र श्रुते प्रतिपाद्यते तत्। *नन्दी॰ २०५।*

संलेहा- तिण्णिलंबणा। *निशी॰ ३११ अ।*

संवग्ग- संवर्गः-गुणनम्। *व्यव॰ ७६ अ।*

संवच्छर- सावत्सरं-ज्योतिषम्। *सूत्र॰ २१८।* संवत्स-रातिचारनिर्वृतं प्रतिक्रमणं सांवत्सरिकम्। *आव॰ ५६३।* संवत्सरः अयनद्वयमानः। *स्था॰ ८६।* संवत्सरः- द्वे अयने। *जीवा॰ ३४४।* कालविशेषः। *भग॰ ८८८।* संवत्सरः-वर्षासु चातुर्मासिको। ज्येष्ठावग्रहः। *दशवै॰ २८३।*

संवच्छरपडिलेहणग- जम्मदिनादारभ्यः संवत्सरः प्रत्युपेक्ष्यते एतावतिथः संवत्सरोऽद्य पूर्ण इत्यवं निरूप्यते महोत्सवपूर्वकं यत्रदिने तत्संवत्सरप्रत्युपेक्षणकम्। *ज्ञाता॰ १३१।*

संवट्ट- संवर्त्तः-संहारः। *भग॰ ३२२।* संवर्त्तन्ते पिण्डीभ-वन्त्यस्मिन् भयत्रस्ता जना इति। *उत्त॰ ६०५।* चोरधाडि-भएण बहू गामा एगट्ठिता णायगाहट्ठिता य। *निशी॰ ३५८ व।* संवर्तः-परचक्रामेऽनेकग्रामाणामेकत्र स्थानम्। *बृह॰ ५४ आ।* संवर्त-जालम्। *आव॰ ३४६।*

संवट्टइत्ता- संवर्त्य-सङ्कोच्य। *स्था॰ ९०।*

संवट्टए- संवर्त्तनमपवर्त्तनं संवर्तः स एव संवर्त्तकः-उपक्रमः। *स्था॰ ६७।* संवर्तयति-नाशयति। *जम्बू॰ १७३।*

संवट्टग- संवर्त्तकः-तृणकाष्ठादिनामपहारको वातविशेषः। *जम्बू॰ १६७।*

संवट्टगपवण- संवर्त्तकपवनं-वायुविशेषः। *आव॰ १२१।*

संवट्टगवाए- संवर्तकवातः यो बहिः स्थितमपि तृणादि विव-क्षितक्षेत्रान्तः क्षिपन्तीति। *उत्त॰ ६९४।* संवर्त्तकवातः-तृणादिसंवर्त्तनस्वभावः। *जीवा॰ २९।*

संवट्टण- संवर्तनः-वस्तुनाशः। *बृह॰ ४२ अ।*

संवट्टय- संवर्त्तकः तृणकाष्ठादीनां संवर्त्तकः। *भग॰ ३०६।*

संवट्टयवाय- संवर्त्तकवातः-तृणादिसंवर्त्तनस्वभावो वातः। *भग॰ १९६।*

संवट्टवाए- संवर्तकवातः-णादिसंवर्त्तनस्वभावः। *प्रज्ञा॰ ३०।*

संवट्टिज्जा- संवर्त्तयेत्-संक्षिपेत्। *आचा॰ २८४।*

संवट्टियं- संवर्त्तितं-संवर्त्तयतुं। *आव॰ ४२९।*

संवट्टेइ- संवर्त्तयति-एकत्रस्थाने न्यस्यति। *औप॰ ६४।*

संवट्टेमाणी- संवेष्टयन्ती-पोषयन्ती। *ज्ञाता॰ ९१।*

संवड्ढणा- संवर्धना। *आव॰ ५६।*

संवणिया- परिचिता, प्रसादिता। *उत्त॰ ५३।*

संवत्ते- यत्र विषमादो भयेन लोका संवर्तीभूतस्तिष्ठति। *व्यव॰ ३६२ आ।*

संवर- संव्रियते-कर्मकारणं प्राणातिपातादि निरुध्यते येन परिणामेन स संवरः- आश्रवनिरोधः। *स्था॰ १९।* संवरः-आश्रवनिरोधः इन्द्रियकषायनिग्रहादिभेदः। *स्था॰ १८१।* संवरः-इन्द्रियनोइन्द्रियनिवर्त्तनम्। *भग॰ १००।* संवरः-कर्मणामनुपादानम्। *प्रश्न॰ १०१।* संवरः-अहिंसाया द्विच-त्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९।* संव्रियते-निरूध्यते आत्मत-डागे कर्मजलं प्रविशदेभिरिति संवरः-प्राणातिपातविरमणा-दिकः। *प्रश्न॰ २।* शम्बरः-दिखुरश्चतुष्पदः। *जीवा॰ ३८।* संवरः-शुभाध्यवसायः। *भग॰ ४३३।* संवरः। *प्रज्ञा॰ ५६।* संवरः-चारित्रम्। *दशवै॰ १८८।* संवरः-सर्वप्राणातिपाता-दिविनिवृत्तिरूपो धर्मः-चारित्रधर्म इत्यर्थः। *दशवै॰ १५९।* संवरः। *व्यव॰ २६९ आ।* चतुर्थतीर्थकृत्पिता। *सम॰ १५०।* संवरः-अभिनन्दनपिता। *आव॰ १६१।* आग-मीन्यामुत्सर्पिण्यामष्टादशमतीर्थकृत्। *सम॰ १५४।* स्ता-निकः शोधकः। *व्यव॰ २१७ आ।* संवरः-योगसङ्ग्रहे विंशतितमो योगः। *आव॰ ६६४।* स्तानिकः-शोधकः। *व्यव॰ २८५ आ।*

संवरट्ठ- संवरार्थः-अनाश्रवत्वम्। *भग॰ १००।*

संवरणं- निवारणम्। *बृह॰ ११० आ।* प्रत्याख्यानम्। *ओघ॰ ३३।* जीवतडागे कर्म्मजलस्य निरोधनं संवरः। *स्था॰ ३१६।*

संवरबहुल- संवरबहुलः-प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारनिरोधप्रचुरः। *प्रश्न॰ १२८।*

संवरिय- संवृत्तः-हर्षातिरेकादतिस्थूरीभवन्तः निषिद्धः। *भग॰ ४६०।* संवृतं-आसेवितम्। *११२।*

संवरियासवदार- संवृताश्रवद्वारं-स्थगित प्राणातिपातादिकम्। *आव॰ ७७४।*

संवरेमाणे- संवृण्वन्-निवर्त्तयन्, आचक्षाणः। *भग॰ ५४।*

संवर्त्तक- वातविशेषः। *नन्दी॰ १४८।*

संवर्त्तकवात- संवर्त्तकं-योजनं यावत् क्षेत्रशुद्धिकारको वातः संवर्तकवातः। *समः ६१*।

संवर्त्तयति- वेण्टलिकां करोति। *ओघः ७४*।

संवर्त्त्य- सारानेकीकृत्य। *स्थाः ३८४*।

संवलिय- संवलितः मिश्रितः। *आवः ७२१*।

संववहारिय- व्यवहारिकश्च यद्यपि भूयोऽपि निगोदावस्था-मुपयन्ति तथापि सः सांव्यवहारिकः। *प्रज्ञाः ३८०*।

संवसित्तए- संवासयितुं संस्तारकमण्डल्यां निवेशयितुम्। *स्थाः ५७*।

संवसित्ता- समष्य-सहैवासित्वा। *उत्तः ४०४*।

संवहणं- जो रहजोगो तं संवहणं। *दशवैः ११०*।

संवाद- जल्पविधिः। *नन्दीः २३४*।

संवाय- संवादः-परस्परभाषणं वचनैक्यं वा। *उत्तः ४९८*। संवादः-शुभाशुभगतः संलापः। *समः १२४*।

संवास- संवासः-चिरं सहवासः। *स्थाः १९७*।

संवासनं- शयनं संवासः। *स्थाः २७४*। संवसनं-परिभोगः। *सूत्रः ११३*। संवासौ-मैथुनार्थं संवसनम्। *स्थाः १९३*। संवसनम्। *ओघः ५५*। संवासः। *आवः २१३*।

संवासेइ- समिति भृशं वासयति संवासयति-गात्रिं दिवं चाव-स्थापयति। *उत्तः ३२२*।

संवाह- संबाधः यात्रासमागतप्रभूतजनविशेषः। *प्रज्ञाः ४८*। अन्नत्थ किसिंकरेत्ता अन्नत्थ वोढुं वसंति तं संवाह भण्णति। *निशीः ७०* आ। संवाहः-पर्वतनितम्बादिदुर्गे स्था-नम्। *औपः ७४*। संवाहः-रक्षार्थं धान्यादिसंवहनोचितदु-र्गविशेषरूपः। *प्रश्नः ६९*। संम्बाधः-अतिबहुप्रकारलोकस-ङ्कीर्णस्थानविशेषः। *अनुयोः १४२*। संवाहः-स्थापनी। *प्रश्नः ९२*।

संवाहण- सम्बाधनं-शरीरस्यास्थिसुखत्वादिना नैपुण्येन मर्द्दनविशेषः। *स्थाः २४७*। संबाधनं-अस्थिमांसत्वग्रोम-सुखतया चतुर्विधं मर्दनम्। *दशवैः ११७*।

संवाहणिए- क्षेत्रादिभ्यस्तृणकाष्ठ धान्यादेर्गृहादावानयनं तत्प्र-योजनानि संवाहनिका। *उपाः ३*।

संवाहति- एक्कसि परिमद्दति। *निशीः ११६* अ।

संवाहमारी- मारीविशेषः। *भगः १९७*।

संवाहिंती- संवाहयन्ती। *आवः ५५९*।

संविक्खति- विलम्बते प्रतीक्षते। *आवः ६३७*।

संविकिख्य- संविकीर्णम्। *आवः ६३९*।

संविग्ग- संविग्नः-मोक्षं प्रति प्रचलितः-संसारभीरूः। *भगः ५०२*। मोक्षसुखाभिलाषी। *ओघः २०२*। संविग्नः मोक्षार्थी। *आवः ८६०*। संविग्नः। *आवः ५३९*। संविग्नः। *आवः १०१*। संविग्नः-मोक्षाभिलाषी। *ओघः ५६, ४९*। संविग्नम्। *व्यवः १४०* अ। संविग्नः संभोगिकः उद्यितविहारी। *व्यवः ३२८* आ। सांभोगिकः-समसुखदुःखः गीतार्थः। *व्यवः २४४* अ। उद्यतविहारी। *बृहः ६५* अ। उद्यतवि-हारी। *बृहः २९३* आ। णिच्चं संसारभओव्विगचित्तो। *निशीः ७४* आ।

संविग्गपक्खि- संविग्नपाक्षिकः-संविग्नानां पक्षस्तत्पक्षस्तत्र भवस्तत्पाक्षिकः। *व्यवः १५९* अ।

संविग्गभाविय- संविग्नभावितः-श्रमणोपासकविशेषः। *स्थाः ११०*। उज्जुयविहारी हि जे सद्दा भाविता ते। *निशीः २०२* अ।

संविग्नपाक्षिकः- लघुपर्यायः। *स्थाः १९७*। *उत्तः ४३४*।

संविग्नभावित- श्रमणोपासके भेदः। *भगः २२७*।

संविचिन्न- संविचरितः आसेवितः। *ज्ञाताः ९९*।

संविज्ञो- जो एताणि करेंतो वि संविज्ञो-गीतार्थपरिणामकः। *निशीः ५२* आ।

संवित्तिः- ज्ञा। *आवः २८२*।

संविदे- संवित्ते। *उत्तः २८२*।

संविद्धपह- संविद्धपथः-सम्यग्विद्धः-ताडितः क्षुण्णः पन्थाः-मोक्षमार्गो ज्ञानदर्शनचारित्राख्यो येन स तथा। *आचाः २१२*।

संविधानक- संविधानकः। *स्थाः १३५*। *नन्दीः १६१*।

संविधूय- परिषहोपसर्ग्गान् प्रमथ्य। *आचाः २८६*।

संविभागसील- संविभागशीलः-लब्धभक्तादिसंविभागकारी। *प्रश्नः १२६*।

सविल्लिया- सङ्कोचिता। *उपाः २४*।

संविह- आजिविकोपाशकः। *भगः ३६९*।

संवीत- संवीतः-प्रहतः। *सूत्रः ८३*।

संवुड- संवृत्तः-समाहितः। *सूत्रः ६३*। संवुतः-सकलाश्रव-विरमणम्। *उत्तः ६१*। संवृत्तः-निरुद्धाश्रवः। *उत्तः ६६*। संवृत्तं-समन्तत आवृतम्। *सूर्यः २९३*। इन्द्रियकषायसंव-रेण संवृतः। *प्रश्नः १४२*। संवृतः-उपयुक्तः। *दशवैः १७८*। संवृत्तं-पार्श्वतः-

कटकुट्यादिना सङ्कटद्वारम्। *उत्त॰ ६०*। संवृतः-पिहितास्रवद्वारः। *आचा॰ ३५०*।

संवुडअणगार- भगवत्यां नवमशतके द्वितीयोद्देशकः। *भग॰ ४९२*।

संवुडबउस- संवृतबकुशः-प्रच्छन्नकारी। बकुशे चतुर्थो भेदः। *स्था॰ ३३७*। बकुशे। तृतीयो भेदः। *भग॰ ८९०*।

संवुडबकुस- संवृतबकुशः-यो मूलगुणादिषु संवृतः सन् करोति। बकुशस्य तृतीयो भेदः। *उत्त॰ २५६*।

संवुडबहुल-संवृतबहुलः-कषायेन्द्रियसंवृतत्वप्रचुरः। *प्रश्न॰ १२८*।

संवुडा- संवृता-सङ्कटा घटिकालयवत्। *स्था॰ १२२*। संवृता-नारकाणां योनिः। *प्रज्ञा॰ २२७*।

संवुड्ढ- संवृद्धः। *आचा॰ ३४८*। संवर्द्धितः-भोजनदानादिना अनाथपुत्रकः। *स्था॰ ५१६*।

संवुय- संवृतः-परिगतः-परिवृतो वा। *औप॰ ६६*।

संवृतविवृता- योनिभेदः। *आचा॰ २४*।

संवृता- योनिभेदः। *आचा॰ २४*। कल्पना। *उत्त॰ ४७२*। एकैकस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च संवृता योनिः। *प्रज्ञा॰ २८*।

संवेग- संवेगः- संसाराद्भयं मोक्षाभिलाषो वा। *सम॰ ५८*। संवेगः-भवभयः *भग॰ ९०*। संवेग-मोक्षसुखाभिलाषा। *दशवै॰ ३९*। संवेगः-सिद्धिश्च देवलोकः सुकुलोत्पत्तिश्च भवति संवेगः। *दशवै॰ ११३*। संवेगः-मोक्षाभिलाषः। *उत्त॰ ४४१*। प्रशमादिगुणेषु द्वितीयः। *आव॰ ५९१*। संवेगः-धर्मकथा-यास्तृतीयो भेदः। *दशवै॰ ११०*। संवेगः-शरीरादिपृथग्भावः मोक्षौत्सुक्यं वा। *आव॰ ५५०*। संविग्नः। *आव॰ ५२*। संवेगः। *उत्त॰ ३२४*। मोक्षाभिलाषः। *भग॰ ७२७*। संवेगः-सुकुलोत्पत्तिरित्यादेरभिलाषः। संवेगः। *बृह॰ ३८ अ*। संवेगः-योगसङ्ग्रहे सप्तदशो योगः। *आव॰ ६६४*। भवमयं मोक्षाभिलाषः। *भग॰ ५५०*।

संवेगजणिअहास- संवेगः-मोक्षाभिलाषस्तेन जनितो हासो-मुखविकाशात्मकोऽस्येति संवेगजनितहासः-मुक्त्युपायोऽयं दीक्षेत्युत्सवमिव तां मन्यमानः, प्रहसितमुख इति। *उत्त॰ ४६४*।

संवेयणी- संवेगयति-संवेगं करोतीति संवेद्यते वा संबोध्यते संवेज्यते वा-संवेग ग्राह्यते श्रोपाऽनयेति संवेदनी संवेजणी। *स्था॰ २१०*। संवेज्यते-मोक्षसुखाभिलाषो विधीयते श्रोता यकाभिस्ता संवेजनी। *औप॰ ४६*।

संवेल्लित- परिवेष्टितः। *प्रज्ञा॰ ३०६*।

संवेत्रिएज्ञता- संवेल्लन्ती-सङ्कोचिता वा । *ज्ञाता॰ ६६*।

संवेल्लिय- संवेल्लितं-संवृतम्। *जीवा॰ २०७*। संवेल्लितं-संवृतं किञ्चिदाकुञ्चितम्। *जम्बू॰ ५२*। संवेल्लितं-संवृत्तम्। *राज॰ ४९*।

संवेह- संज्जोगो। *निशी॰ १०८ अ*। संवेधः-संयोगः। *व्यव॰ ७६ अ*।

संव्रियते-निरुध्यते। *प्रश्न॰ २*।

संश्लेषः- समवायः। *आव॰ २७८*।

संसए- संशयः-अनिर्द्धारितार्थम्। *औप॰ ८४*। संशयः-अनवधारितार्थं ज्ञानम्। *भग॰ १३*। अनवधारितार्थं ज्ञानम्। *जम्बू॰ १६*। संशयः-अनवधारितार्थं ज्ञानम्। *राज॰ ५८*।

संसग्ग- संसर्गः-सम्बन्धः। *दशवै॰ १६५*।

संसग्गि- संसर्गिः-सम्पर्कः, अब्रह्मणश्चतुर्थं नामः। *प्रश्न॰ ६६*। संसर्गः। *उत्त॰ ४७*।

संसग्गी- संसग्रिः-प्रीतिः। *बृह॰ १३७ आ*। *निशी॰ ३७ अ*।

संसज्जइ- संसज्यते। *आव॰ ६४४*।

संसज्जिम- संसक्तिकान्-तन्मध्यनिपतितजीवयुक्तः। *पिण्ड॰ १५०*।

संसट्ठ- संसृष्टः-आकर्णं पूरितः। *अनुयो॰ १८२*। संसृष्टः-भूमिकर्मादिना संस्कृतः। *आचा॰ ३६१*। संसृष्टं-भोक्तुकामेन गृहीतकूरादौ क्षिप्तो हस्तः क्षिप्तो न तावत् मुखे क्षिपति तच्च लेपालेपकरणस्वभावम्। *स्था॰ १४८*। संसृष्टं-भोक्तुकामम्। *व्यव॰ ३५३ आ*। संसृष्टं-उच्छिष्टम्। *बृह॰ २७२ आ*। संसृष्टं-गोरससंसृष्टे भाजने प्रक्षिप्तं सद्यदुदकं गोरसरसेन परिणामितम्। *बृह॰ २६७ आ*। संसृष्टं-खरण्टितेनेत्यर्थो हस्तभाजनादिना दीयमानम्। *स्था॰ २९८*। संसट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देतित्ति संसट्ठो। *निशी॰ १२ अ*। संसृष्टम्। *आव॰ ८५८*।

संसट्ठकप्प- संस्पृष्टकल्पः। *स्था॰ ३७२*। संसृष्टकल्पः-मैथुनप्रतिसेवा। *व्यव॰ २०५ आ*। संसृष्टकल्पः-मैथुन-प्रतिसेवा। *बृह॰ २२४ आ*।

संसट्ठकप्पित- संसृष्टेन-खरण्टितेनेत्यर्थो हस्तभाजनादिना दीयमानं कल्पिकं-कल्पवत् कल्पनीयमुचितमभिग्रहविशेषा-द्भक्तादि यस्य स संसृष्टकल्पिकः। *स्था॰ २९८।*

संसट्ठपाणग- संसृष्टपानकं-उष्णोदकं तन्दुलधावनादि वा। *बृह॰ २९८* आ।

संसट्ठोवहड- संसृष्टोपहृतं-संसृष्टमेवं भुतमुपहतम्। *स्था॰ १४८।*

संसत्त- संसक्तं-सङ्कीर्णम्। *सम॰ १५।* संसक्तः-कदाचित्-संविग्नगुणानां कदाचित्पार्श्वस्थादिदोषाणां सम्बन्धाद् गौरव-त्रयसंसजनाच्च। *ज्ञाता॰ १११।* संसक्तं-त्रसयुक्तम्। *ओघ॰ १६८।* संसक्तं आरनालाद्यपरेण। *दशवै॰ २००।* संसक्तम्। *दशवै॰ ४७।* संसक्तः-सन्निहितदोषगुणः। *आव॰ ५१८।* संसक्तं-द्वीन्द्रियादिजीवमिश्रम्। *बृह॰ ४७* अ।

संसत्तगाहणी- संसक्तग्रहणिः कृमिसंसक्तोदरः। *ओघ॰ १२५।*

संसत्ततव- संसक्ततपा- 'आहार-उवहि-पूयासु जस्स भावो उ निच्च संसक्तो। भावोवहतो कुणई अ तवोवहाणं तदट्ठाए'। *बृह॰ २१५* आ।

संसत्ततवोकम्म- संसक्ततपःकर्म्म-आहारोपधिशय्यादिप्रति-बद्धभावतपश्चरणः। *स्था॰ २७५।*

संसत्तदेस- संसक्तदेशः। *आव॰ ६२३।*

संसत्तपिंड- भुत्तावसेसं। *निशी॰ २७०* अ।

संसद्द- संशब्दं काशितादिरूपम्। *ओघ॰ ५२।*

संसुद्धणाणदंसणधर- संसुद्धज्ञानदर्शनधरः संशुद्धे ज्ञानदर्शने धारयति यः स। *उत्त॰ २५७।*

संसप्पग- संसप्पतीति संसर्प्पकः, संसर्प्पकः-पिपीलिको-ष्ट्रादिः। *आचा॰ २९१।* संसर्पगः-पिपीलिकादिः। *ओघ॰ २०१।* संसर्प्पतीति-संसर्प्पकः-शून्यगृहादावहिनकुलादि यो प्राणीनः। *आचा॰ ३०८।*

संसय- संशीतिः संशयः- उभयांशावलाम्बा प्रीतितिः संशयः। *आचा॰ २००।* संशीतिः संशयः इदमित्थं भविष्यति संशयः। *आचा॰ २००।* संशीतिः संशयः इदमित्थं भवि-ष्यति नवेत्युभयांशावलम्बनः प्रत्ययः। *उत्त॰ ३१२।*

संसयकरणी- अनेकार्थप्रतिपत्तिकारी संशयकरणी। *भग॰ ५००।* याऽनेकार्थाभिधायितया परस्य संशयमुत्पादयति सा भाषा संशयकरणी। *प्रज्ञा॰ २५६।* संशयकरणी-अनेकार्थ-साधारणा, असत्यामृषाभाषाभेदः। *दशवै॰ २१०।*

संसयपड्ड- संशयप्रश्नः-क्वचिदर्थे संशयः सति यो विधीयते। *स्था॰ ३७५।*

संसरण- संसरणं-ज्ञानावरणादिकर्मयुक्तानां गमनम्। *दशवै॰ ७१।* संस्मरणं-संकल्पिकतद्रूपस्यालेख्यादिदर्शनम्। असं-प्राप्तकामे चतुर्थो भेदः। *दशवै॰ १९४।*

संसरपासय- संसरत्पाशकम्। *आव॰ ८२०।*

संसा- पसंसा। *निशी॰ ५८* आ।

संसार- संसरणं संसारः। *आव॰ ७०।* संसारः-गतिचतुष्टयम्। *स्था॰ २२०।* संसरणं संसारः-मनुष्यादिपर्यायान्नारकादि-पर्यायगमनाम्। *स्था॰ २१९।* संसरणं संसारः-नारकतिर्य-ङ्नरामरभवभ्रमणलक्षणः। *जीवा॰ ८।* संसारं-संजाततन्दु-लादिसारम्। *दशवै॰ २१९।* संसारः-तिर्यग्नरना-रकामरभ-वसंसरणरूपणः। *दशवै॰ ३९।* संसरणं संसारः-नारकति-र्यग्नरामरभवानुभवलक्षणः। *प्रज्ञा॰ १८।*

संसारअपरित्त- संसारापरीत्तः-कृष्णपाक्षिकः। *जीवा॰ ४४६।*

संसारकंतार- संसार एव कान्तारं-अरण्यं संसारकान्तारम्। *ज्ञाता॰ ८९।* संसारः कान्तारमिवातिगहनतया संसार-कान्तारः। *उत्त॰ २३३।*

संसारणीयं- कथनीयम्। *आचा॰ ३८४।*

संसारपयणुकरण- संसारप्रतनुकरणः-संसारक्षयकारकः। *आव॰ ४९३।*

संसारपरित्त- संसारपरीत्तः- अपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तान्तः संसारः। *जीवा॰ ४४६।* संसारपरीतः। सम्यक्त्वादिना कृतपरिमित-संसारः। *प्रज्ञा॰ २९४।*

संसारमंडल- संसारमण्डलं-एवमुक्तक्रमेण वैमानिकावसानं संसारिजीवचक्रवालं नेतव्यमित्यर्थः, अथ चेह स्थाने वाचनान्तरे कुलकरतीर्थकरादिवक्तव्यता दृश्यते, ततश्च

संसारमण्डलशब्देन पारिभाषिकसंज्ञया सेह सूचितेति सम्भावते। *भग॰ २२५।*

संसारमुक्ख- संसारान्मोक्षो-विश्लेषः संसारमोक्षः निर्वृत्तिः। *उत्त॰ ४००।*

संसारमोचक- दृष्टान्तविशेषः। *प्रश्न॰ ३५।*

संसारविउसग्ग- नारकायुष्कादिहेतूनां मिथ्यादृष्टित्वादीनां त्यागः। *भग॰ ९२७।*

संसारसमावण्ण- संसारो-नारकतिर्यग्नरामरभवानुभवलक्ष-णस्तं सम्यग्-एकीभावेनापन्नः संसारवर्त्ती। *प्रज्ञा॰ १८।* संसारं-चतुर्गतिभ्रमणरूपं सम्यग-एकीभावेनापन्नः-संसार-समापन्नः *प्रज्ञा॰ ४३७।*

संसाराणुप्पेहा- संसारानुप्रेक्षा-संसारस्य-चतसृषु गतिषु सर्वावस्थासु संसरणलक्षणस्यानुप्रेक्षा। *स्था॰ १९०।*

संसारिए- संसारिका-स्थापना। *बृह॰ १५५* आ।

संसारिण- संसारिजनः। *पउ॰ १०२, १०४।*

संसारिय- सांसारिकम्। *सूत्र॰ ३८०।*

संसारिया- स्थानान्तरादुचितस्थाननिवेशितः। *ज्ञाता॰ १३३।*

संसारेति- ईषत्स्वस्थानात् स्थानान्तरनयनेन। *ज्ञाता॰ ९४, ९७।*

संसाहग- अणुवच्चगो। *निशी॰ २६* अ। चोलापकः-पृष्ठत आगतः। *बृह॰ १२९* आ।

संसाहण- संसाधनं-गच्छतः सम्यगनुव्रजनम्। *उत्त॰ १७।* संसाधनं-गच्छतः अनुगमनम्। *दशवै॰ २४१।* संसाधण-गच्छतोऽनुव्रजनम्। *व्यव॰ १९* आ।

संसाहेहि- संसाधय व्रज संश्लाघय-साधूक्तं साध्वित्येवं प्रशंसां कुरु। *ज्ञाता॰ १८९।*

संसि- स्वके-क्वकीये। *भग॰ ६८४।*

संसिआ- संश्रितः-उत्पत्तिकायां स्थितः। *जं॰ २२०।*

संसिचिय- संसिच्य-अर्थनिचयं संवर्ध्य। *आचा॰ १२३।*

संसिच्चमाण- संसिच्यमानः आपूर्यमाणः। *आचा॰ १५९।*

संसिज्जइ- संस्विद्यते सन्मूर्छनाभिमुखीभवति। *जीवा॰ ३२२।* संस्विद्यते-सन्मूर्छति, वर्षा वर्षति। *जीवा॰ ३४४।* संस्विद्यते-उत्पत्तयाभिमुखीभवति। *जीवा॰ ३०७।*

संसिट्ठ- संश्लिष्टं, संसर्गवत्। *भग॰ ८७।* संश्लिष्टः-स्नेहात् सम्बद्धः। *भग॰ ६४७।* संसृष्टं-गोरसभावितम्। *बृह॰ २९७* आ। संसृष्टः-पूर्वपरिचित उद्भ्रामकः। *बृह॰ ९* आ। भगवत्यां चतुर्दशशतके षष्ठोद्देशकः। *भग॰ ६३०।*

संसुद्धं- सामस्त्येन शुद्धं एकान्ताकलङ्कम्। *आव॰ ७६०।* संशुद्धः-अशबलचरणः अकषायत्वात्। *स्था॰ २१।* संशुद्धं-सामस्त्येन शुद्धं-एकान्ताकलङ्कम्। *ज्ञाता॰ ४९।*

संसुमा- धन्यसार्थवाहस्य पञ्चपुत्रोपरिबालिका। *ज्ञाता॰ २३५।*

संसेइम- संस्वेदजं पिष्टोदकादि। *दशवै॰ १७७।* तिलधावनोदकं यदि वाऽरणिकादिसस्विन्नधावनोदकम्। *आचा॰ ३४६।*

संसेइमा- संस्वेदजाः-मत्कुणयूकाशतपदिकादयः। *दशवै॰ १४१।*

संसेतिमं-संसेकेन निर्वृत्तमिति संसेकिमं-अरणिकादिपत्र-शाकमुत्काल्प येन शीतलजलेन संसिच्यते तत्, संसेकेन निर्वृत्तम्। *स्था॰ १४७।*

संसेतिमाम- णाम पिठेरपाणियं तावेत्ता पिडियट्ठिया तिला तेण ओलहिज्जंति, तत्थ जे आमा तिला ते संसेतिमामं। भण्णति आदिग्गहणेणं जंपि अण्णं किंचि एतेणं कमेणं संसिज्जति तंपि संसेतिमामं भण्णति। *निशी॰ १२५* अ।

संसेयंति- संस्विद्यन्ते। *भग॰ २६९।*

संसेवियं- संसेवितं-सञ्चिन्तितम्। *आव॰ ५८९।*

संसेविया- अधिष्ठिता। *बृह॰ १६९* अ।

संसेसिय- सांश्लेषिकी-कर्मसंश्लेषजननी। *आचा॰ ४१६।*

संशोधण- संशोधनं हरीतक्यादिदानेन पित्ताद्युपशमनम्। *पिण्ड॰ १३३।*

संसोहन- गात्रस्य सम्यक् सोधनं। संशोधनं-विरेचनम्। *आचा॰ ३१३।*

संस्कार- यथा लोके वक्तारः। *नन्दी॰ १७।*

संस्कारवत्- संस्कारवत्त्वं-संस्कारादिलक्षणयुक्तत्वं, वचनातिशये प्रथमः। *सम॰ ६३।*

संस्कारस्कन्धः-पुण्यापुण्यादिधर्मसमुदायः। *प्रश्न॰ ३१।* संस्कारस्कन्धः-पुण्यापुण्यादिधर्मसमुदायः। *सूत्र॰ २५।*

संस्कृते- रथादेर्भग्नजीर्णपोढापरावयवसंस्कारादिति, संस्कृत-द्रव्यसम्यक्। *आचा॰ १७६।*

संस्थान- नेपथ्यं- तत्तद्देशप्रसिद्धम्। *उत्त॰ ४२४।*

संस्थापना- वसतेः संस्कारकरणम्। *बृह॰ २२४* आ।

संस्थिति- तत्पर्यायानुबन्धः। *भग॰ ५८६*।
संइह- संहतिः-मिलनम्। *भग॰ १०४*।
संहणण- संहननं-अस्थिसञ्चयरूपम्। *प्रश्न॰ ८२*।
संहनन- अस्थिबन्धविशेषः। *सम॰ १४९*।
संहरइ- संहरति- सङ्कोचयति। *जीवा॰ २५५*।
संहरण- कर्मभूम्यारकर्मभूमिषु नयनम्। *जीवा॰ ५६*। देवादिना अन्यत्र नयनम्। *बृह॰ २२६* अ।
संहरत- प्रापयत। *जम्बू॰ १६१*।
संहरति- संस्थापयति। *बृह॰ ३२* आ।
संहरिय- संहृतं-संलीनीकृतम्। *औप॰ ६०*।
संहरेमाण- संहरन्-अन्यत्र नयन्। *भग॰ २१८*।
संहर्षः-स्पर्द्धा। ठा॰ *१५२*।
संहिच्चं- संहित्त्य- सह संभूय। *ज्ञाता॰ ९३*।
संहिता- अस्खलितपदोच्चारणम्। *ओघ॰ २*। अस्खलितादि-गुणोपेतो विविक्ताक्षरो झटिति मेघाविनामर्थप्रदाया संनि-कर्षः-सम्यकः सदर्थानां हिता संहिता। *बृह॰ ४९*।
संहिय- संहितः सन्ततः। सन्ततः-अपान्तरालरहितः। *जीवा॰ २७५*। सहिकः क्षमः। *जम्बू॰ ११४*। संहितः-मिलितः। *आचा॰ ३०२*। संहितः-संयतीभिः युक्तः। *ओघ॰ ५७*।
संहिया- सहिता- चारकसुश्रुतरूपा। *ओघ॰ ५३*। संहिता-अस्खलितपदोच्चारणम्। *अनुयो॰ २६३*।
सअट्ठिय- सास्थिकं सहास्थिः। *आचा॰ ३४७*।
सई- सकृद्-एकां वाराम्। *ओघ॰ ११८*। सकृत्-एकैकं वारम्। *सूर्य॰ ११*। सकृत्-एकमेव। *उत्त॰ २३९*। स्वयं स्वभावेन। *स्था॰ ६३*। सरय। *बृह॰ १९०* आ। पटमवारा। *निशी॰ २१८* अ। सुखलक्षणफलबहुलता। *ज्ञाता॰ १६२*।
संइगाल- साङ्गारं प्रशंसार्हभोजनम्। *पिण्ड॰ १७५*। *आचा॰ १३१*।
सइ-स्मृतिः- उपयोगलक्षणा। *आव॰ ८३४*। बहुफलत्वम्। *औप॰ ७४*। सन्। *दशवै॰ १२५*। बहुः। *भग॰ ४८२*। सत्-विद्यमानम्। *ओघ॰ ५१*। स्मृतिः। *उपा॰ ९*।
सइअकरणा- स्मृत्यकरणं-उपयोगलक्षणास्मृतेरनासेवनम्। *आव॰ ८३४*।
सइओ- शतिकः। *दशवै॰ १०८*।
सइकाल- सत्कालः-देसकालः-*बृह॰ २०६* अ।
सइज्जिआए- सह सखिक्रियया। *ओघ॰ ७२*।
सइज्झिया- प्रातिवेश्मिकी। *बृह॰ २४१* आ।
सइत्तु- स्वप्तुं-निद्रातिवाहनं कर्त्तुम्। *दशवै॰ २०४*।
सइरप्पयारी- स्वैरपचारी स्वच्छन्दविहारी। *ज्ञाता॰ २३६*।
सइरायार- स्वैराचारः। *आव॰ ७१०*।
सई- स्मरणं-स्मृतिः-पूर्वानुभूतार्थालम्बनः प्रत्ययः। *आव॰ १८*। सती-स्त्री। *ओघ॰ १४६*। सदा। *उत्त॰ २८०*।
सईणा- तुवरी। *भग॰ २७४*। तुवरी। *स्था॰ ३४४*।
सउज्जोय- सोद्योतं-बहिर्व्यवस्थितवस्तुस्तोमप्रकाशनकरम्। *प्रज्ञा॰ ८७*।
सउज्जोया- सहोद्योतेन-वस्तुप्रभासनेन वर्त्तन्ते ये ते। *स्था॰ २३२*।
सउण- शकुनं-श्येनादिपक्षिः। *प्रश्न॰ ३७*। शकुनः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८*। शकुनं-श्येनः पक्षिविशेषः। *अनुयो॰ १३०*। शकुनः। *ज्ञाता॰ १२४*।
सउणरुअ- शकुनरुतं, पक्षिभाषितम्। *जम्बू॰ १३६*।
सउणा- शकुनाः-काककपोतादयः। *बृह॰ १५२* आ।
सउणिज्झया- शकुनिध्वजा-शकुनिचिह्नोपेता ध्वजा। *जीवा॰ २१५*।
सउणिपलीणगसंठित- शकुनिप्रलीनकसंस्थितः-धनिष्ठान-क्षत्रसंस्थानम्। *सूर्य॰ १३०*।
सउणी- सकुनी अंगवेदमीमांसान्यायपुराणधर्मशास्त्रवित्। *बृह॰ १८* आ। शकुनिः-अष्टमकरणः। *जम्बू॰ ४९३*। शकुनी-चतुर्दश विद्यास्थानानि। *आव॰ ५२०*। शकुनी। *ज्ञाता॰ २०८*।
सउणीघरए- शकुनिगृहं-वंशनिर्मितं छब्बकम्। *ओघ॰ १८४*।
सउत्तिंग- सचित्तवती। *सम॰ ३९*।
सउलिया- कुलिकाभिः सह वर्त्तमाना शकुनि वा। *अनुयो॰*
सउवयार- जेसिं आगयाणं उवयारो कीरइ ते। *निशी॰ २०८* अ।
सउववारा- सोपचाराः-त्रिषु स्थानेषु प्रयुक्तनैषेधिकी शब्दः। यद्वा संयतीभिर्येषां वक्ष्यमाण उपचारः प्रयुक्तस्ते सोपचाराः। *बृह॰ २११* अ।
सऊणरुय- कलाविशेषः *ज्ञाता॰ ३८*।
सएज्जए- सहवासी- प्रातिवेश्मिकः। *बृह॰ १६४* अ।
सएज्झियाओ- सख्यः। *आव॰ ३५३*।

सओ- सन्तः। *भग॰ ४५५।*

सकंसा-सह कांस्यः द्रव्यमानविशेषः सकांस्यः। *उपा॰ ४८।*

सक- शकः। *प्रश्न॰ १४।*

सकक्कस- सकार्कश्यं-कर्कशभावोपेतम्। *औप॰ ४२। ओघ॰ १८१।*

सकडक्ख- सकटाक्षः-सापङ्गदर्शनः। *ज्ञाता॰ १६५।*

सकडाह- समांसं-सगिरं तथा कटाहम्। *प्रज्ञा॰ ३७।*

सकण्ण- सकर्णः। *आव॰ ३९८।*

सकथ- तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेषः। *निर॰ २७।*

सकम्मपरिणामज्जणिय- स्वकर्मपरिणामजनितम्। *आव॰ ५८६।*

सकरणं- मनोवाक्कायकरणसाधनः सलेश्यजीवकर्तुको जीवप्रदेशपरिस्पन्दात्मको व्यापारः। सकरणं-वीर्यम्। *भग॰ ५७।*

सकल- शकलं- खण्डरूपम्। *सूर्य॰ १३६।*

सकलचन्द्रः- वाचकविशेषः। *जम्बू॰ ५४४।*

सकलचन्द्रगणिः- शान्तिचन्द्रगुरवः। *जम्बू॰ ४२४।*

सकषायोदय- विपाकावस्थां प्राप्तः स्वोदयमुपदर्शयन् कषाय-कर्मपरमाणुः। *प्रज्ञा॰ १३५।*

सकसाई- सकषायी-कषायोदयसहितः। *प्रज्ञा॰ १३५।* सह कषायो यस्य येन वेति सकाषायः-जीवपरिणामविशेषः स विद्यते यस्य स सकषायी। *प्रज्ञा॰ ३८६।*

सकसाए- सकषाय-सचित्तपृथिव्याद्यवयवगुण्ठितः। *आचा॰ ३४६।*

सकसिणं- अखंडिय। *निशी॰ १३६* आ।

सकह- सकथा-तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेषः। *भग॰ ५२०।* सक्थि, दाढम्। *जम्बू॰ १६२।*

सकहा- सक्थी अस्थी। *सम॰ ६४।* सकथा-हनुमा। *आव॰ १६९।*

सकाम- सह कामेन-अभिलाषेण वर्त्तते इति सकामं, सकाममिव सकामं मरणं प्रत्यसंत्रस्ततया। *उत्त॰ २४२।* एकशः। *बृह॰ १४* अ।

सकाममरण- भक्तपरिज्ञानादि प्रशस्तः। *उत्त॰ २४१।*

सकालुष्य- आविलम्। *५३।*

सकिरिए- सक्रियः-कायिक्यादिक्रियायुक्तः सकर्मबन्धनो वा। *भग॰ २९५। आचा॰ ४२५।*

सकिरित- सक्रियं-प्रस्तावादशुभकमबन्धयुक्तम्। *स्था॰ ३००।*

सकुंत- सकुन्तः-पक्षिविशेषः। *अनुयो॰ १४१।*

सकुर- आचामाम्लम्। *आव॰ ८५५।*

सकुलिका- शकीनका। *निशी॰ ४४* आ।

सकुली- पर्पटिः। *निशी॰ २६०* आ।

सकुहर- सच्छिद्रः। *जम्बू॰ ४००।*

सकुहरगुंजंतवंसतंतीसुसंपउत्त- सकुहरो गुञ्जन् यो वंशो यत्र- तन्त्रीतलतालयग्रहसुसंप्रयुक्तं भवति, सकुहरे वंशे गुञ्जति तन्त्र्यां च वाद्यमानायां यत्तन्त्रीस्वरेणाविरुद्धं तत् सकुहरगु-ञ्जद्वंशतन्त्रीसुसंपहयुक्तम्। *जीवा॰ १९५।*

सकृत- एकवारः। *ओघ॰ १८१।*

संकेय- संकेतक-केतनं केतः-चिह्नमङ्गुष्ठमुष्ठिग्रन्थिगृहादिकं स एव केतकः सहकेतकेन सकेतकं-ग्रन्थादिसहितम्। *स्था॰ ४९९।*

सकोतिगा- गमणागमणसचेट्ठा। ते य सवीरियत्तणतो चेव सकोतिगा। *निशी॰ ११६* आ।

सकोसं- तस्यां पूर्वादिशु दिक्षु प्रत्येकं सगव्युतमूर्ध्वमधश्चार्द्ध-कोशं अर्धयोजनेन च समं ततो यस्य ग्रामोऽसन्ति सत् सकोशम्। *व्यव॰ ३७२* अ।

सक्क- सोधर्मदेवलोके इन्द्रः। *स्था॰ ८५।* शक्रः-देवराजा। *आव॰ ३५९।* शक्रः-आसनविशेषाधिष्ठाता शक्रः, दक्षिणा-र्द्धलोकाधिपति। *जम्बू॰ ७५।* शक्रः-सौधर्मेन्द्र। *स्था॰ ५१८।* शक्रः- देवानां स्वामी। *उत्त॰ ३५०।* इन्द्रः। *ज्ञाता॰ २५३।*

सक्कणोमि- शक्नोमि। *आव॰ ४०२।*

सक्कदूए- शक्रदूतः। शक्रादेशकारी पदात्यनीकाधिपतिः हरि-नैगमेषीदेवः। *भग॰ २१८।*

सक्कप्पभ- शक्रदेवेन्द्रस्य उत्पातपर्वतः। *स्था॰ ४८२।*

सक्करप्पभा- शर्कराप्रभा द्वितीयानरकपृथ्वी। *प्रज्ञा॰ ४३।* शर्कराप्रभा-उपलखण्डप्रकाशवती पृथ्वीविशेषः। *अनुयो॰ ८९।*

सक्करा- शर्कराः-कर्कीरकाः। *जम्बू॰ ३७४।* शर्करा-लघूपशकलरूपा। *प्रज्ञा॰ २७।* पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९।* शर्करा-कर्करकः। *जीवा॰ २८२।* शर्करा-काशादिप्रभवा। *प्रज्ञा॰ ३६४।* शर्करा-लघूपलशकलरूपा पृथिवी। *जीवा॰ २३।* शर्करा-लघूपलसकलरूपा। *उत्त॰ ६८९।* शर्करा-

कृच्छ्रमूत्रको रोगः। *बृह॰ २४९* अ। शर्करा-भुरुणुपृथिवी। *जीवा॰ १४०*। शर्करा-श्लक्ष्णपाषाणशकलरूपा। *उत्त॰ ६९७*। शर्करा, काशादिप्रभवा। *जम्बू॰ ११८*। शर्करा-काशादिप्रभा-वातद्रसो वा। *उत्त॰ ६५४*। *आचा॰ ३३७*।

सक्कराभा- गौतमगोत्रे पञ्चमभेदः। *स्था॰ ३९०*।

सक्का- युक्तम्। *निशी॰ ९७* आ।

सक्कार- सत्कारः अर्धप्रदानादिः। *उत्त॰ ६६८*। सत्कारः-स्तवनवन्दनादिः। *स्था॰ ४०८*। सत्कारः वस्त्रादिभिः। *स्था॰ १३७*। सत्कारः-वन्दनाभ्युत्थानादिकः। *ओघ॰ ७०*। सत्कारः-वन्दनस्तवनादिः। *सम॰ ९५*। सत्कारो-वन्दनादिनाऽऽदरकरण वस्त्रादिदानम्। *भग॰ ६३७*। सत्कारः- सेव्यतालक्षणः। *जम्बू॰ १२२*। सत्कारो-वस्त्राभ्यर्चनम्। *स्था॰ ३५८*। सत्कारः-वस्त्रादिपूजा। *भग॰ ३९०*। अभ्युत्थानादिसम्भ्रमः सत्कारः। *आव॰ ४०६*। सत्कारः-भक्तपानवस्त्रपात्रादीनां परतो लाभः, एकोनविं-शतितमः परीषहः। *आव॰ ६५७*। सत्कारः-स्तवनवन्द-नादिः। *दशवै॰ ३०*। सत्कारः-सेव्यतालक्षणः। *जीवा॰ २८०*। सत्कारः- वस्त्रादिभिः पूजनम्। *उत्त॰ ८३*। सत्कारः-भक्तपानवस्त्रपात्रादीनां परतो लाभः। *आव॰ ६५८*। सत्कारः-वन्दनाभ्युत्थानादिः। *बृह॰ २३७* अ। सत्कारः-स्तुत्यादिगुणोन्नतिकरणम्। *राज॰ २७*। सत्कारः-प्रवरस्त्रीदिभिः पूजनम्। *स्था॰ ५१५*। सत्कारः-स्तुत्या-दिभिणोन्नतिकरणम्। *जम्बू॰ ३९८*। सत्कारः – प्रवरव-स्त्राभरणादिभिरभ्यर्च्चतम्। *आव॰ ७८७*। सत्कारा-अभ्युत्थानासनदानवन्दनानुव्रजनादिः। *आव॰ ८३७*।

सक्कारणिज्ज- सत्कारणीयम्। *सूर्य॰ ३६७*। वस्त्रादिभिः। *भग॰ ५०५*। वस्त्रैः। *औप॰ ५*।

सक्कारपुरक्कार- सत्कारः-वस्त्रादिभिः पूजन पुरस्कारः-अभ्युत्थानासनादिसंपादनम्। सकलैवाभ्युत्थानाभिवादन-दानादिरूपा प्रतिपतिः सत्कारस्तेन पुरस्करणम् सत्कार-पुरस्कारः। *उत्त॰ ८३*।

सक्कारवत्तिया- सत्कारप्रत्ययं-सत्कारनिमित्त प्रवरवस्त्रा-भरणादिभिरभ्यर्च्चननिमित्तम्। *आव॰ ७८६*।

सक्कारिता- सत्कारयित्वा वस्त्रादिना। *स्था॰ १११*।

सक्कारिय- सत्कारितः वस्त्रादिना। *भग॰ ५८२*।

सक्कारेमो- सत्कारयामः आदरं कुर्मः वस्त्राचनं वा सन्मानयामः। *भग॰ ११५*।

सक्कुणोमि- सत्कारयामः आदरं कुर्मः वस्त्राचनं वा सन्मानयामः। *भग॰ ११५*।

सक्कुरओ- सत्तुरतः-प्रद्योतनसभायां कश्चिदन्धो गायकः। *आव॰ ६७४*।

सक्कुलि- शष्कुनिः तिलपर्य-टिका। *दशवै॰ १७६*। शष्कुलो-तलपर्प्पटिका। *प्रश्न॰ १५३*।

सक्कुलिकन्ना- शष्कुलीकर्णनामा अष्टम अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*।

सक्कुलिगा- शुष्कखाद्यकं मोदकवत्। *बृह॰ १७७* अ।

सक्ख- साक्षम्। *ज्ञाता॰ २२१*।

सक्खि- साक्षी। *आव॰ ८२२*। साक्षी। *प्रश्न॰ ३०*।

सक्खेत्त- स्वक्षेत्रं-सक्रोशयोजनामन्तरम्। *बृह॰ १८३* अ।

सक्थिनी- पाश्चात्यपादयोर्जामूपरिभागः। *जम्बू॰ ३७*।

सखलियार- सोपवारम्। *आव॰ ४०१*।

सखा- मित्रम्। *आचा॰ १००*।

सखिंखिणिय- सकिङ्किणीकः। क्षुद्रघष्टिकोपेतः। *ज्ञाता॰ ३१*।

सखुड्ड- सबालं यदि वा सह क्षुद्रः सिंहमार्जारादिः। *आचा॰ ३६२*।

सखेत्तं- सक्रोशयोजनमात्रं क्षेत्रम्। *बृह॰ १४०* आ। *निशी॰ १८* अ।

सगंथ- सग्रन्थ-श्वशुरकुलसम्बन्धसम्बद्धः शालकशालिकादिः। *प्रश्न॰ १४०*।

सगज्जिए- सगर्जितः-मुक्तमहाध्वनिः। *ज्ञाता॰ २४*।

सगड- शकटं सुभद्राभद्रवाहपुत्रशकटनामा विपाकेऽध्ययनम्। *स्था॰ ५०७*। शक्नोति शक्यते वा धान्यादिकमनेन वोढु-मिति शकटम्। *उत्त॰ २४७*। शकटं-गड्डुकादि। *अनुयो॰ १५९*। सव्वमेतं कृतम्। *निशी॰ १३८* आ। शकटं प्रतीतम्। *जीवा॰ २८१*। शकटं-गन्त्री। *प्रश्न॰ ८*। *भग॰ २३७*। शकटं-मन्त्री। *प्रश्न॰ १६१, ९१*। शङ्कटः-शकटा-भिधसार्थवाहसुतः, दुःखविपाकानां चतुर्थमध्ययनम्। *विपा॰ ६५*।

सगडतित्तिदी- शकटतित्तिरी शकटयुक्ता तित्तिरी। *दश॰ ५९*।

सगडब्भि- स्वकृद्भित्-स्वकृतमनेकजन्मोपात्तं कम्मं भिनत्तीति स्वकृतभित्। *आचा० १७१।*

सगडमुह- शकटमुखं-उद्यानविशेषः। *आव० १४७।* शकट-मुखं-उद्यानम्। *आव० २१०।* शकटमुखम्। *जम्बू० १५०।*

सगडलट्ठणीपएसबद्ध- शाकटलट्ठनी(कट) प्रदेशबद्धः। *आव० ४१७।*

सगडवट्टा- शकटवर्त्तनी। *आव० ३५८, ५१४।*

सगडव्वूह- शकटव्यूहः-शकटाकारः सैन्यविन्यासविशेषः। निर० *१८।*

सगडाल- शकटालः-योगसङ्ग्रहे शिक्षादृष्टान्ते कल्पकवंशप्रसूतो नवम नन्दराजमन्त्री। *आव० ६७०।* शकटालः स्थूलभद्रपिता। *उत्त० १०४, १०५।* शकटालः-नवमे नन्दे कल्पकवंशप्रसूतः। *आव० ६९३।*

सगडीसागड- शकट्यो-गन्त्रिका-शकटानां गन्त्रिविशेषाणां समूहः। *भग० ६६८।* शकट्योः-गन्त्र्यःशकटानां समूहः शाकटं च शकटीशाकटम्। *ज्ञाता० ११८।*

सगड्डड्ढिसंठिय- शकटोद्धिसंस्थितं रोहिणीनक्षत्रसंस्थानम्। *सूर्य० १३०।*

सगडुद्धीसंठिय- शकटोर्द्धिसंस्थितः। *सूर्य० ७३।*

सगडुद्धी- शकटोर्द्धिः। *आचा० १५।*

सगपाय- अप्पणिज्जो सण्णामत्तओ। *निशी० १९३।*

सगर- जम्बूभरते द्वितीयचक्रवर्ती। *सम० १५२।* सगरः-परिनिर्वृतः चक्रवर्त्तिविशेषः। *उत्त० ४४८।* सगरः- राज-शार्दुलः, द्वितीयचक्रवर्ती। *आव० १५९।* सगरः-चक्रवर्ती-विशेषः। *प्रज्ञा० ३००।*

सगरचक्रवर्त्ती- सुबुद्धिमहामात्यवान्। *नन्दी० २४२।*

सगारदुअ- सह अगारेण वर्तत इति सागारी गृहस्थः तयोर्द्वयं तादेव द्वौ। *ओघ० १६।*

सगरसुत- ज्वलनप्रभनागाधिपकृतोपद्रववान्। *जम्बू० २२३।* सगरचक्रवर्तीपुत्रः। *आव० १६९।*

सगह- संगह क्रूरग्रहेणाक्रान्तं तत्। *व्यव० ६३* अ।

सगा- म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा० ५५।*

सगार- सागरः-सह आगारेण वर्त्तत इति गृहस्थः। *औप० १६।*

सगास- सकाशं-मूलम्। *ओघ० २०।*

सगिं- सकृत्। *व्यव० २७५* अ।

सगिहगमणं- स्वगृहगमनम्। *ज्ञाता० १६९।*

सगीतार्थ- प्रत्त्युच्चारणसमर्थः। *निशी० ३२२* आ।

सगेवेज्ज- सह ग्रैवेयकेण- ग्रीवाबन्धनेन यथाभवति तथा। *ज्ञाता० ८६।*

सगोप- परस्परबाहुगुम्फनं स्तनोपरिमर्कटबन्धमिति। *उत्त० ४०४।*

सग्ग- स्वर्गः-देवलोकदेशः प्रस्तटः। *भग० २२१।*

सग्गपयाणग- स्वर्गे गन्तव्ये प्रयाणकमिव-गमनमिव यत् स्वर्गप्रयाणकम्। *प्रश्न० १०२।*

सग्गह- जं क्रूरग्रहेणोत्क्रान्तं तं सग्गहं। *निशी० ९९* अ।

सङ्कट- सङ्कुलः। *प्रश्न० १६।*

सङ्कटद्वार- क्षुद्रद्वारः। *आचा० ३२९।*

सङ्कलन- गणितम्। *स्था० ४७८।* सङ्कलनं-गणितविशेषः। *नन्दी० २३८।*

सङ्कलनादिकं- । *स्था० २६३।*

सङ्कलिका- सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशमाध्ययननाम, अस्याध्यय-नस्यान्तदिपदयोः सङ्कलनात् सङ्कलिका। *सूत्र० २५३।*

सङ्कलित- गणितविशेषः। *जम्बू० १३७।*

सङ्कीर्णभाषा- शौरसैन्यादिः। *जम्बू० २५९।*

सङ्कुल- ग्रामविशेषः। आधासम्भवदृष्टान्ते जिनदत्तश्रावकस्य भद्रशिलग्रामनिकटे ग्रामः। *पिण्ड० ६३।*

सङ्क्लिश्यमानक- उपशमश्रेणितः प्रच्यवमानस्य सूक्ष्मस-म्परायम्। *स्था० ३२४।*

सङ्क्षेपः- समासः-भेदष्वन्तर्भावः। *भग० ३५७।*

सङ्खडिमनादर- यत्रेवासौ सङ्खडिः स्यात्तत्र न गन्तव्यम्। *आचा० ३२९।*

सङ्गम- परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे सुन्दरस्य जामता। *पिण्ड० १२७।*

सङ्गमस्थविर- कृतिकर्मणि नित्यवासविषये उदाहरणम्। *आव० ५१७।* क्रीडनधात्रीदोषविवरणे आचार्याः। *पिण्ड० १२५।*

सङ्गर- सङ्गरः। *नन्दी० २१।*

सङ्ग्रहणि- अर्थे प्रकारः। *सम० १०९, १११।*

सङ्ग्रहपरिज्ञा- बालदुर्बलग्लाननिर्वाहबहुजनयोग्यक्षेत्रग्रह-णलक्षणादि चतुर्भेदभिन्ना। *उत्त० ४०।*

सङ्ग्रामरथः- । *जीवा॰ १८९।*

सङ्घात- संपीडनम्। *उत्त॰ ६३१।* सङ्घातः। *नन्दी॰ ४३।*

सङ्घातकरणं- करणस्य तृतीयभेदः। *आव॰ ४५८।*

सङ्घातपरिशाटकरण- करणस्य तृतीयभेदः। *आव॰ ४५८।*

सचमक्कारया- सचमत्कारता साशङ्कता। *बृह॰ २१२* आ।

सचिट्ठ- सचेष्टः- सक्रियः। *दशवै॰ १०९।*

सचित्त- पृथिव्यादि। *आव॰ २२८।* सचित्तं-अण्डकादि। *दशवै॰ १५५।*

सचित्तद्रव्यपरिद्यूनः- जीर्णशरीरः स्थविरका जीर्णवृक्षो वा। *आचा॰ ३५।*

सचित्तनिक्खेवण- सचित्तनिक्षेपण व्रीह्यादिष्वन्नादेर्निक्षेपणम्। *आव॰ ८३८।*

सचित्तपडिबद्धाहार- सचित्तप्रपितबद्धाहारः वृक्षे प्रतिबद्धा-हारः। *आव॰ ८२८।*

सचित्तपरिण्णाए- सचेनाहारः परिज्ञातः तत्स्वरूपादिपरिज्ञा-नात्प्रत्याख्यातो येन स सचित्ताहारपरिज्ञातः श्रावकः। सप्तमी प्रतिमा। *समं॰ १९।*

सचितरए- सचित्तरजः-अरण्ये वातोद्भूतपृथिवीरजः। *आव॰ ७३२।*

सचितसंयिस्साहारः- सचितसंयिसाहारः- सचित्तपुष्पवल्ल-यादिमिश्राहारः। *आव॰ ८२८।*

सचित्ताणं दव्वाणंविउसरणया- सचित्तानां द्रव्याणां-पुष्प-ताम्बूलादीनां व्यवसरणं व्युत्सर्जनम्। *ज्ञाता॰ ४६।*

सचिल्लय- सर्वापचक्षुः। *प्रश्न॰ २५।*

सचिव- सचिवः-वस्त्रः। *व्यव॰ १२५* आ।

सची- शक्रदेवेन्द्रस्याग्रमहिषी। *जीवा॰ २६५।*

सच्च- सत्थः-आगमः। *आचा॰ १६९।* सत्यं-ऋतं तपः संयमो वा। *आचा॰ १६५।* सत्यं-अविसंवादनयोगाद्या-त्मकम्। *उत्त॰ ५६५।* सत्यं-सद्भयो-जीवेभ्यो हितताया प्रतिज्ञातशूरतया वा। *स्था॰ ३५३।* सत्त्यः-संयमः सदागमो वा। *उत्त॰ २६४।* सद्भ्यो-जीवेभ्यो हितः सस्य-संयमः। *स्था॰ ९९।* सत्यः-संयमः। *समं॰ २७।* सद्भ्यो हितः सत्त्यः संयमः। *आचा॰ १६२।* सद्भ्यो हितं सत्थं समेभूतं वा। *ज्ञाता॰ ४९।* सद्भावसारं संयमो वा। *बृह॰ १६२* आ। वाक्कभंणोरविसंवादिता। *बृह॰ ३१३* अ। सत्यं-सम्य-ग्वादः। *औप॰ ३३।* सद्भ्यो-मुनिभ्यो गुणेभ्यः पदार्थेभ्यो गुणेभ्यः पदार्थोभ्यो वा हितं सत्यम्। *प्रश्न॰ ११४।* सत्त्यं-सद्भूतार्थम्। *प्रश्न॰ १२०।* सत्यं-षष्ठं पूर्वम्। *स्था॰ १९९।* संयमः शौचं। च *आव॰ ७०५।* सद्भ्यो हितं, परमार्थो यथावस्थितपदार्थ यथावस्थितपदार्थनिरूपणं वा मोक्षो वा तदुपायभूतो वा संयमः सत्यम्। *सूत्र॰ २१४।* सत्यो वा संयमः, सन्तः-प्राणिनस्तेभ्यो हितत्वात्। *सूत्र॰ २५५।* सत्यः-अविसंवादी। *उत्त॰ २८१।* तदादेशनामवितथत्त्वात्। *ज्ञाता॰ १३०।* सत्यं-वचनविषयम्। *ज्ञाता॰ ७।*

सच्चइ- सत्यकिः-विद्याधर। *दशवै॰ १०७।* आगामिन्यां चतुर्विंशत्याकेकादशमतीर्थकृत्पूर्व भवनाम। *समं॰ १५४।*

सच्चई- सत्यकी-प्रधानर्शनवतोऽपि चारित्रेण विनाऽघर गतिप्राप्तौ दृष्टान्तः। *आव॰ ४३२।*

सच्चग- सत्यका-लौकिकमुदारणम्। *उत्त॰ ११८।*

सच्चती- सत्यकीनिर्ग्रन्थीपुत्रः। *स्था॰ ४५७।*

सच्चतीय- सत्यकिः-वेटकदुहितुर्ब्रह्मचारिण्याः पुत्रः, भावी वहेश्वरः। *आव॰ ६८६।*

सच्चनेमी- सत्यनेमिः-अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य नवमम-ध्ययनम्। *अन्त॰ १४।* सत्यनेमिः-समुद्रविजयस्य तृतीयः सुतः। *उत्त॰ ५९६।*

सच्चपरक्कम- सत्यः-अवितथस्तात्त्विकत्वेन परे-भावशत्र-वस्तुषामाक्रमणं आक्रमः-अभिभव यस्यासौ सत्यपराक्रमः। *उत्त॰ ४४४।*

सच्चप्पवाय- सत्यप्रवादं सत्यं-संयमो वचनं वा सत्सत्यं संयमं वचनं वा प्रकर्णेण स प्रवञ्चं वदतीति सत्यप्रवादम्, षष्ठमपूर्वम्। *नन्दी॰ २४१।* सत्यप्रवादः पूर्वविशेषः। *दशवै॰ १३।*

सच्चप्पवायपुव्वं- षष्ठं पूर्वम् यत्र सत्यः-संयमः सत्यं वचनं वा सभेद सप्रतिपक्षं च प्रोच्यते सत्सत्यप्रवादपूर्वम्। *समं॰ २६।*

सच्चभामा- सत्यभामा-अन्तकृद्दशानां पच्चमवर्गेऽध्ययनम्। *अन्त॰ १५, १८।*

सच्चभासय- यः सम्यगुपयुञ्ह सर्वज्ञमतानुसारेण वस्तुप्रति-ष्ठानबुध्य भाषते स सत्यभाषकः। *प्रज्ञा॰ २६८।*

सच्चमंत- सत्त्वं प्रधानं महंतीएवि अवदीए जो आदिणो भवति सो। *निशी॰ ६१* अ।

सच्चरए- सत्यं-अवितथभावणं तस्मिन् रतः-आसक्तः सत्यरतः। *उत्त॰ ३४५।*

सच्चवती- दंतपुरणगरे दंतचक्करायस्स भज्जा। *निशी॰ १२८* अ।

सच्चवदी- सत्यवती योगसङ्ग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरन-गराधिपतिदन्तचक्रराज्ञः पत्नी। *आव॰ ६६६।*

सच्चविल- मनोवचनकायसत्यवेदी। महाप॰।

सच्चविती- दन्तपुरनगरे दन्तचक्रराजपत्नी। *व्यव॰ १०७।*

सच्चसंध- सत्यसन्धः। *आव॰ ६९१।*

सच्चसेण- जम्बवैरवते। त्रयोदशमतीर्थकृत्। *सम॰ १५४।*

सच्चसेव- सेवायाः सबलीकरणात् सत्यसेवम्। *ज्ञाता॰ ४।*

सच्चा- सन्तो-मुनयः सद्भ्यो हिता-इहपरलोकाराधकत्वेन मुक्तिप्रापिका सत्या, यो वा यस्मै हितः स तत्र साधुरिति सत्यः, सन्तो-मूलोत्तरगुणाः विद्यमान वा तेभ्यो हिता तेषु साध्वी, वा यथाऽवस्थित वस्तुतत्त्वरूपणेनेति व, आराधनीत्वाद्वा। सत्त्या। *प्रज्ञा॰ २४७।* सतां हिता सत्या, सन्तो मुनयस्तदुपकारिणी, सन्ती-मूलोत्तरगुणास्तदनुप-घातिनी वा सन्तः-पदार्था जीवादयः तद्विता तत्प्रत्याय-नफला जनपदसत्यादिभेदा वा सत्या। *आव॰ १६।*

सच्चाण- सत्याणः कायोत्सर्गदृष्टान्ते यक्षविशेषः। *आव॰ ८०१।*

सच्चामोस- उभयस्वभावा वस्त्वेकदेशप्रत्यायनफला उत्प-न्नमिश्रादिभेदा सत्यामृषा। *आव॰ १६।*

सच्चित्त- सचित्तवर्जकः-श्रावकस्य सप्तमी प्रतिज्ञा सप्तमा-सप्रमाणा। *आव॰ ६४६।*

सच्चित्तदवियकप्प- सच्चित्तद्रव्यकल्पः-तद्यथा-प्रव्राजना-मुडापना-शिक्षापना-उपस्थापना-संभुञ्जना संवासना च, एवंविध षड्विधमपि सच्चित्तद्रव्यकल्पमाचरन्ति। *बृह॰ २५८* अ।

सच्चित्तरजो- सचित्तरजः व्यवहारसमन्विता वातोद्धता श्लक्ष्णधूलिस्तच्च सचित्तरजः। *व्यव॰ २४०* अ।

सच्चिल्लओ- सत्यः। *आव॰ २०३।*

सच्चोवाए- सत्यावपातं सफलसेवम्। *ज्ञाता॰ १३०।*

सच्छंद- स्वछन्दः-स्वाभिप्रायः। *ज्ञाता॰ १५२।*

सच्छंदमई- स्वछन्दमतिः-निरर्गलबुद्धिरत एव स्वच्छन्दवि-हारी। *ज्ञाता॰ २३६।*

सच्छंदा- आभिग्रहिका। *व्यव॰ ३२१* आ। स्वच्छन्दाआ-भिग्रहिका। *बृह॰ २३३* आ।

सच्छाया- सती-शोभना छाया यस्याः सा। *जीवा॰ २९४।*

सजीव- कोट्यारोपितप्रत्यञ्चः। *ज्ञाता॰ २३७।*

सजोगि- सहयोगैः-कायव्यापारादिभिर्यः सः सयोगी। *स्था॰ ५०।*

सजोगी- सयोगी-अनिरुद्धयोगः भवस्थकेवलिग्रामः, भूतग्रा-मस्य त्रयोदशमं गुणस्थानम्। *आव॰ ६५०।*

सज्ज- वर्तमानः। *निशी॰ ५९* अ। षड्जः-शरीरष-ट्स्थानजातः, सप्तस्वरे प्रथमः। *अनुयो॰ १२७।* षड्भ्यो जातः षड्जः। नालाकण्ठोरुतालुजिह्वादन्तसंश्रितः। *स्था॰ ३९३।*

सज्जक्खय- आतंको शूलम्। *निशी॰ १४८* अ।

सज्जक्खार- सद्यो भस्म। *ज्ञाता॰ १७५।*

सज्जगाम- प्रथमो ग्रामः। *स्था॰ ३९३।*

सज्जग्गहणा- वट्टमाण कालग्गहणं अभिक्खग्गहणं। *निशी॰ १०* अ।

सज्जणत्ता- आसेवणाभावे सज्जणता। *निशी॰ ७१।*

सज्जह- सज्जतं-सङ्गं कुरुत। *ज्ञाता॰ १४७।*

सज्जा- वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४।*

सज्जासंथार- शयनं शय्या तदर्थं संस्तारकः शय्यासंस्ता-रकः, शय्या-सर्वाङ्गीकी संस्तारकः-अर्धतृतीयहस्तप्रमाणः। *आचा॰ ३६९।*

सज्जिए- सज्जितः-निष्पादितः। *जम्बू॰ १०५।*

सज्जिओ- सज्जितः-निष्पादितः। *जीवा॰ २६८।*

सज्जित्था- गिहीत्यर्थः। *निशी॰ ५१* अ।

सज्जिय- सज्जितं-वितानितम्। *प्रश्न॰ ७६।* सज्जयित्वा। *आव॰ ४२२।*

सज्जीव- कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८।* सज्जीवकरणंमृतघात्वा –दीना सहजस्वरूपापादनम्। *जम्बू॰ १३९।*

सज्जेउं- सज्जयितुम्। *आव॰ ८१३।*

सज्जो पुढवी- सज्जपुढवि-कुमारपृथवी। *ज्ञाता॰ १०५।*

सज्झंतिए- सहाध्यायि। *व्यव॰ १३६* अ।

सज्झंलिओ- सब्रह्मचारी। *बृह॰ १३६* आ।

सज्झं- सह्यम्। *आव॰ ४०८*।

सज्झगिरिसिद्धओ- सह्यगिरिसिद्धकः क्रमसिद्धोदाहरणे सिद्धविशेषः। *आव॰ ४०८*।

सज्झयनिमित्त- स्वाध्यायनिमित्तं-प्रतिपृच्छानिमित्तम्। *व्यव॰ ४५* अ।

सज्झाए- कुहणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

सज्झाओ- स्वाध्यायः-वाचनादिनि। *आव॰ ४४९*। अभ्यन्तरतपसि चतुर्थो भेदः। *भग॰ ९२२*।

सज्झादी- सज्झिकाः-प्रतिवेश्मिकाः। *बृह॰ ४९* अ।

सज्झाय- स्वाध्यायः- अनुप्रेक्षणादिः। *उत्त॰ ४३८*। सुष्ठु आ-मर्यादया अधीयत इति स्वाध्यायः अङ्गादि तमुद्देष्ठुं योगविधिक्रमेण सम्यग्योगेनाधीष्वेदमित्येवमुपदेष्टुम्। *स्था॰ ५७*। स्वाध्यायः-वाचनादिरूपः, तत्त्वचिन्तायां धर्महेतुत्वाद्धर्मः। *दशवै॰ २३*। शोभना अध्यायः स्वाध्यायः। *आव॰ ७३१*। स्वाध्यायः-सूत्रपौरुषीलक्षणः। *आव॰ ५७६*। स्वाध्यायः-अधीतगुणनरूपः। *प्रश्न॰ १११*। स्वाध्यायः-नन्द्यादिसूत्रविषयो वाचनादिः। *स्था॰ २१३*। स्वाध्यायः- शोभनं आ-मर्यादया अध्ययनं-श्रुतस्याधिकमनुसरणं स्वाध्यायः। *स्था॰ ३४९*।

सज्झायपोरुसि- स्वाध्यायपौरुषी। *आव॰ ३१३*।

सज्झायभूमि- स्वाध्यायभूमिः सा चागाढयोगमधिकृत्योत्क-र्षतः षण्मासा। *व्यव॰ ७८* अ।

सज्झायमंगल- स्वाध्यायमङ्गलं-स्वाध्याय एव मङ्गलम्। *ओघ॰ १८४*।

सज्झायसज्झाण- स्वाध्याय एव सद्ध्यानं स्वाध्यायसद्ध्यानम्। *दशवै॰ २३८*।

सज्झिग- सहवासी। *बृह॰ २१५* आ।

सज्झिया- सज्झिका-प्रातिवेश्मिकी। *बृह॰ १३९* अ।

सज्झिलग- लघुभ्राता। *व्यव॰ १९४* आ। भ्राता। *पिण्ड॰ १००*। सहोदरः। *बृह॰ ५५* अ। सखायौ। *ओघ॰ १७२*। भगिनी। *पिण्ड॰ ९८*।

सज्झोरुवा- सज्झोरूपा। *व्यव॰ १२४* आ।

सञ्ज्वलन- क्रोधादिभेदवान्। *आचा॰ ९१*।

सञ्जवलनत्व- प्रतिक्षणरोषणत्वम्। अष्टममसमाधिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४*।

सञ्झा- सन्ध्या। ओप॰ २०२।

सञ्ज्ञाक्षर- सञ्ज्ञाक्षरं-अक्षराऽऽकारविशेषः, यथा घटिका-संस्थानो धकारः, कुरुण्टिकासंस्थानश्चकार इत्यादि। *आव॰ २४*।

सञ्झिभूता- विशिष्टावधिज्ञान्यादयः। *भग॰ ४७२*।

सञ्ज्ञास्कन्धः- सञ्ज्ञानिमित्तोद्ग्राहणात्मकः प्रतययः। *सूत्र॰ २५*।

सट्टती- सडवल्लो। *निशी॰ ५१* अ।

सट्टियर- बन्धुः। *निशी॰ २४३* अ।

सट्टुक- सङ्घातवन्तः। *व्यव॰ १६९* आ।

सट्ठगा- सालिभेओ। *दशवै॰ ९२*।

सट्ठाणंतर- स्वस्थानं-परमाणोः परमाणुभाव एव, तत्र वर्तमा-नस्य यदन्तरं-चलनस्य व्यवधानं निश्चलत्वभवनलक्षणं सत्स्वस्थानान्तरम्। *भग॰ ८८६*।

सट्ठाण- स्वस्थानं-यत्रासते बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ताः आसीनाश्च वर्णादिविभागेनोदेष्टुंशक्यन्ते तत्स्वस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ७३*। स्वस्थानम्। *ज्ञाता॰ १६९*। स्वस्थानं-चुल्य-वचुल्यादिकम्। *पिण्ड॰ ८९*। सुत्ते णिबद्धं तं। *निशी॰ १४७* अ। मूलवसहग्गामोघरं। *निशी॰ १८३* अ।

सट्ठाणट्ठाणंतराणं- शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषां स्वस्था-नात्-पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्यास्थानस्योत्पत्ति-स्थानात् संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः, स्थाना-न्तराणि-स्थानान्तराण्यपि अनन्तस्थानान्यव्यवहितस-ङ्ख्याविषया गुणाकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थानस्थाना-न्तराणि क्रमव्यवस्थितसङ्ख्यानविशेषा इत्यर्थः, अथवा स्वस्थानानि च-पूर्वस्थानानि स्थानान्तराणि च-अन्तर-स्थानानि स्वस्थानस्थानान्तराणि, अथवा स्वस्थानात् प्रथमस्थानात् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानान्तराणि-विवक्षित-स्थानानि स्वस्थानस्थानान्तराणि। *सम॰ ९१*।

सट्ठाणवट्ठो- तिण्णिवारा मासलहुं चउत्थवाराए तमेव मासगुरु एवं चउलहुओ चउगुरुं छल्लहुओ छग्गुरुं। *निशी॰ २३४* आ।

सट्ठाणसन्निगास- स्वं-आत्मीयं स्थानं-पर्यवाणामाश्रयः स्वस्थानं-पुलाकादेः पुलाकादिरेव तस्य सन्निकर्षः-संयोजनं स्वस्थानसन्निकर्षः। *भग॰ ९००।*

सट्ठि- संजमे सेट्ठा जस्स सा सट्ठी। *निशी॰ २००* अ।

सट्ठिआ- षष्टिकाः-शालिभेदः। *दशवै॰ १९३।*

सट्ठिग- षष्टिकाः षष्ठ्यहोरात्रैः परिपच्यमानास्तन्दुलाः। *जम्बू॰ २४३।*

सट्ठितंत- कापिलीयशास्त्रम्। *भग॰ ११२।* षष्ठितन्त्रंसाङ्ख्य-मतम्। *ज्ञाता॰ १०५।*

सडण- शटनं कुष्टादिनाङ्गुल्यादिः। *भग॰ ४६९।*

सडणपडणविद्धंसणधमम्मक- शटनपटनविध्वंसनधर्मकः। *उत्त॰ ३२९।*

सडसडिंत- शटितशटितम्। *आव॰ ६८०।*

सडिण- वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।*

सडिय- शाटितः-वाधिविशेषाच्छीर्णतां गतः। *ज्ञाता॰ ११५।*

सडियपडियं- शटितपटितम्। *आव॰ ३४५।*

सड्ढ- श्राद्धः। *औप॰ ९०।* श्राद्धः। *भग॰ ५१९।* श्राद्धः-तापसविशेषः। *निर॰ २५।* श्राद्धः-श्रद्धा श्रद्धानं यस्मिन् अस्ति स, श्रद्धेयवचनः। *स्था॰ १३९।*

सड्ढर- आरजालम्। *बृह॰ ११७* आ।

सड्ढा- श्रद्धा-धर्म्मेच्छा। *आचा॰ २२३।* श्रद्धा-तत्त्वश्रद्धानं सदनुष्ठानचिकीर्षा। *भग॰ ५५०।* श्रद्धा-इच्छा। *राज॰ ५८।* श्रद्धा-इच्छा। *भग॰ १३।* श्रद्धा-इच्छा। *निर॰ ३। सूर्य॰ ५।*

सड्ढावं- श्रद्धानम्। *आव॰ ८१५।*

सड्ढि- श्रद्धा-श्रद्धानम्। *भग॰ ९०।* श्रद्धा-अस्याऽस्तीति श्रद्धी-गिही, अण्णतित्थि उ वा। *निशी॰ १८३* आ। श्रद्धावन्तिः। *ओघ॰ ९६।*

सड्ढिकिडी- अविरतसम्यग्दृष्टिका यथाभद्रिका। *व्यव॰ २५०।*

सड्ढियर- अतिश्राद्धः-श्रीगुप्तस्थविरशिष्यो रोहगुप्ताभिधः। *आव॰ ३१८।*

सड्ढी- शैक्षः। *उत्त॰ १६८।* श्रद्धा-मोक्षमार्गोद्यमेच्छाविद्यते यस्यासौ श्रद्धावान्। *आचा॰ १७३।* श्रद्धा-रुचिरस्यास्तीति श्रद्धावान्। *उत्त॰ २५१।* श्रावकः। *निशी॰ १४७* अ।

सढ- सढः-तदवयवरूपः केशरिस्कन्धसटावद्। *भग॰ ६७२।* सढः-शढस्य मायिनः कर्मत्वात्। अधर्मद्वारस्य द्वितीयं नाम। *प्रश्न॰ २६।* शढं-यत् साठयेन विश्राम्भार्थं वन्दते। ग्लानि व्यपदेशं वा कृत्वा न सम्यग् वन्दते। कृतिकर्मणि विंशतितमो दोषः। *आव॰ ५४४।* शढः- संयमयोगेष्वना-दृतः। *दशवै॰ २४७।* शढः। *दशवै॰ ८९।* शढः-तत्तन्नेपथ्या-दिकरणतोऽन्यथाभूतमात्मानमन्यथा दर्शयति। *उत्त॰ २४५।* शढः-वक्राचारः। *उत्त॰ २७४।* शाढ्ययोगाच्छढः-विश्वस्तजनवञ्चकः। *उत्त॰ २८०।* शढः-मायावी। *आव॰ ५३७।* शढं-अन्तः सद्भावशून्यं वन्दनम्। *बृह॰ १२* आ।

सढओ- स्तम्बः। *बृह॰ २६८* आ।

सणंकुमार- सनत्कुमार-कल्पोपगवैमानिकभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।* सनत्कुमारः-चातुन्तचक्रवर्ती राजा, प्रथमा अन्तकि-रियावस्तु। *उत्त॰ ५८२।* सनत्कुमारः-चतुर्थचक्रवर्ती। *सम॰ १५२।* सनत्कुमारः-नारायणवासुदेवागमनदेवलोकः। *आव॰ १६३।*

सणंकुमारवडिंसग- सप्तसागरोपमस्थितिकदेवविमानम्। *सम॰ १३।*

सणंकुमारावडिंसए- सनत्कुमारावतंसकः-सनत्कुमारस्य मध्येऽवतंसकः। *जीवा॰ ३९१।*

सणंदिघोस- द्वादशविधतूर्यनिनादोपेतः। *जम्बू॰ ३७।*

सण- सनः-त्वक्प्रधानो धान्यविशेषः। *स्था॰ ४०६।* त्वक्प्रधाननालो धान्यविशेषः। *भग॰ २७४।* वल्कप्रधानो वनस्पतिविशेषः। *ज्ञाता॰ १६०।* गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।* शणं-त्वक्प्रधाननालो धान्यविशेषः। *जम्बू॰ १२४।* शणः। *आव॰ १३०।* औषधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* धान्यविशेषः। *उत्त॰ ६५३।*

सणपल्ली- पल्लीविशेषः। *व्यव॰ ३१२* अ।

सणप्फ- सह नखैः नखरात्मकैर्वर्तत इति सनखम्। *उत्त॰ ६९९।*

सणप्फदा- सनखानि-दीर्घनखपरिकलितानि पदानि येषां ते सनखपदाः श्वादयः। *प्रज्ञा॰ ४५।*

सणप्फय- सनखपदः नाखरः सिंहादिः। *स्था॰ २७३।* सनखपदः-दीर्घनखपरिकलितं पदं यस्य स आश्वादिः। *जीवा॰ ३८।*

सणबंधण- सनबन्धनं-सनपुष्पवृन्तम्। *ज्ञाता॰ ६।*

सणवण- सणवनं-वनविशेषः। *आव॰ १८६। भग॰ ३६।*

सणसत्तरस- शणसप्तदशानि-व्रीहिर्यवो मसूरो गोधूमो मुद्गमाषतिलचणकाः अणवः प्रियङ्गुकोद्रवमकुष्टकाः शालिरालकम्। किञ्चित् शालयकलत्थो शणसप्तदशानि। *बृह॰ १३९ अ।*

सणहपय- सनखपदः सिंहादिः। *प्रश्न॰ १५।*

सणायग- स्वजनः। *ओघ॰ १९०।*

सणाहा- सस्वामिका। *ज्ञाता॰ १५०।*

सणिंचरसंवच्छर- यावता कालेन शनैश्चरो नक्षत्रमेकमथवा द्वादशापि राशीन् भुङ्क्ते स शनैश्चरसंवत्सरः। *स्था॰ ३४४।*

सणिंचारि- शनैश्चारी-मन्दचारी, भारते वर्षे मनुष्यभेदः। *भग॰ २७६।*

सणिंचारी- शनैश्चारिणः। *जम्बू॰ ३१३।* शनैश्चारिणः-शनैः-मन्दमुत्सुकत्वाभावाच्चरन्तीत्येवंशीलाः। *जम्बू॰ १२८।*

सणिइ- शनैः। *आव॰ ७१७।*

सणिच्छर- शनैश्चरः-चतुर्थो महाग्रहः। *सूर्य॰ २९४।* शनैश्चरः-महाग्रहः। *जम्बू॰ ५३४।* चतुर्थो महाग्रहः। *स्था॰ ७८।*

सणिच्छरसंवच्छर- शनैश्चरैर्निष्पादितः संवत्सरः शनैश्चरसंव-त्सरः शनैश्चरसम्भवः। *सूर्य॰ १५३।* शनैश्चर-संवत्सरः। *सूर्य॰ १७२।*

सण्ण- काइयं। *निशी॰ ११६ अ।*

सण्णा- संगारेत्यर्थः। *निशी॰ ५५ अ।* संज्ञानं-संज्ञा सम्यग्ज्ञानम्। *राज॰ १३३।* संजाणतीति सण्णा, जं पुव्वण्हे गोविं दट्ठूण अवरण्हे पुणो पच्चभिजाणइ, जहा सो चेव एस गोवित्ति। *दशवै॰ ५४।* संज्ञानं-संज्ञा-व्यञ्जनावग्रहोत्त-रकालभावी मतिविशेषः। *आव॰ १८।* अभिलाषो-आत्म-परिणामः। *आव॰ ५८०।* सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञा। *जीवा॰ १५।* सञ्ज्ञा। *आव॰ ३६९।* संज्ञानं संज्ञा-अवगमः। *आचा॰ १२।* संज्ञा, ज्ञानं, अवबोधः। *आचा॰ १३।* संज्ञानं सञ्ज्ञा-भूतभवद्भाविभावस्वभावपर्यालोचम्। *जीवा॰ १७।*

सण्णाइओ- संज्ञायितः। *दशवै॰ ४४।*

सण्णाणनाणोवगत- सन्ति शोभनानि 'नाने' त्यनेकरूपाणि ज्ञानानि-सङ्गत्यागपर्यायधर्माभिरूचित्त्वाद्यवबोधात्कानि तैरुपगतः सन्नानाज्ञानोपगतः। *उत्त॰ ४८७।*

सण्णातग- सज्ञातीयः। *आव॰ (व०) २८९।* सज्ञातीयः। *आव॰ ५७८।*

सण्णातय- सजातीयः। *आव॰ ३७०।*

सण्णापाणय- सञ्ज्ञापानीयम्। *आव॰ ५१३।*

सण्णाभूमि- सञ्ज्ञाभूमिः-पुरीषोत्सर्गभूमिः। *आव॰ ५७९।* संज्ञाभूमिः-विहारभूमिः। *दशवै॰ ११।*

सण्णाभूमी- सञ्ज्ञाभूमिः। *उत्त॰ १९२।* सञ्ज्ञाभूमिः- पुरी-षोत्सर्गभूमिः। *आव॰ ५७७।*

सण्णाय- सज्ञातीयः। *आव॰ ६४७।*

सण्णायग- संज्ञातीयः-निजकः। *आव॰ ६१८।*

सण्णि- संज्ञानं संज्ञा-सम्यग्ज्ञानं तदस्यास्तीति संज्ञी-सम्यग्दृष्टिः। *नन्दी॰ १९१।* सञ्ज्ञी-श्रावकः। *ओघ॰ २२।* सञ्ज्ञी-श्रावकः। *ओघ॰ ५९।*

सण्णिएल्लग- संज्ञितः। *आव॰ ३०५।*

सण्णिगब्भ- गर्भस्थः संज्ञी सञ्ज्ञिगर्भः। *आव॰ १७९।*

सण्णिगास- सन्निकाशः-प्रकाशः। *जम्बू॰ ५२।*

सण्णिचिए- सन्निचितः-प्रचयविशेषान्निबिडीकृतः। *जम्बू॰ ६५।*

सण्णिनाणे- सञ्ज्ञिज्ञानं सञ्ज्ञो-समनस्कस्तस्य ज्ञानं सञ्ज्ञिज्ञानं, तच्चेहाधिकृतसूत्रान्यथानुपपत्तेर्जातिस्मरणमेवः। *सम॰ १८।*

सण्णिवाय- सन्निपातः- आगमनम्। *जम्बू॰ २८०।*

सण्णिविट्ठ- सन्निविष्टं-सन्निवेशं, पाटकः। *औप॰ २।*

सण्णिहि- सन्निधिः, पर्युषितखाद्यादिः। *जम्बू॰ ११८।*

सण्णी- सञ्ज्ञी। *आव॰ २८९।* सञ्ज्ञी-विशिष्टस्मरणादि-रूपमनोविज्ञानभाक्। *जीवा॰ १७।* वासिष्ठगोत्रे षष्ठो भेदः। *स्था॰ ३९०।* सञ्ज्ञी-श्रावकः। *ओघ॰ ३८।* दीर्घकालि-क्युपदेशेन संज्ञी। *आव॰ २१।* दंसणसंपण्णो। *निशी॰ ३२५ अ।* सावओ सयणा वा अहाभद्दओ। *निशी॰ १२६ आ।* सञ्ज्ञी-श्रावकः। *ओघ॰ ३८।* सञ्ज्ञीश्रावकः। *ओघ॰ १०२।*

सण्ह- श्लक्ष्ण-मृष्टः। *जीवा॰ ३४३।* श्लक्ष्णः। *ओघ॰ २१६।* *ज्ञाता॰ १६।* श्लक्ष्णो नाम चूर्णितलोष्ठकल्पा मृदुपृथिवी। *प्रज्ञा॰ २६।* श्लक्ष्लः। *आव॰ ६२४।* श्लक्ष्णं-श्लक्ष्णपुद्ग-लस्कन्धनिष्पन्नम्। *प्रज्ञा॰ ८७।* श्लक्ष्णः-

मसृणः स्निग्धः। *जम्बू॰ २१८*। श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नम्। *सम॰ १३८*।

सण्हकरणी- श्लक्ष्णानि-चूर्णरूपाणि द्रव्याणि क्रियन्ते यस्यां सा श्लक्ष्णकरणी। *भग॰ ७६६*।

सण्हपट्ट- सूक्ष्मपट्टः। *भग॰ ५४२*।

सण्हबायरपुढविक्काइया- श्लक्ष्णाश्च ते बादरपृथिवीकायि-काश्च, श्लक्ष्णा चासौ बादरपृथिवी च सा कायः- शरीरं येषां त एव श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः। *जीवा॰ २२*।

सण्हमच्छ- मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४३*। मत्स्यविशेषः। *जीवा॰ ३६*।

सण्हसण्हिया- प्राक्तनप्रमाणापेक्षयाऽगुणत्वाद् उध्द् र्वरेण्वपेक्षया त्वष्टमभागत्वात् श्लक्षणश्लक्ष्णिका। *भग॰ २७५*। प्राक्तनप्र-माणादष्टगुणत्वादूर्ध्वरेण्पेक्षया त्वष्टमभागवर्त्तित्वात् श्लक्ष्ण-श्लक्ष्णिका। *अनुयो॰ १६३*।

सण्हा- श्लक्ष्णा-चूर्णितलष्टकल्पा मृदः पृथिवी तदात्मका जीवा अपि। *उत्त॰ ६८९*। श्लक्ष्णाः श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिष्पन्नाः। *जम्बू॰ २०*। श्लक्ष्णा। *आव॰ ८५५*। श्लक्ष्णपरमाणुस्क-न्धनिष्पन्ना। *स्था॰ २३२*। श्लक्ष्णा-चूर्णितलोष्टकल्पा मृदपृथिवी। *जीवा॰ २२*। *निशी॰ २४६* अ।

सण्हापुढवी- श्लक्ष्णपृथिवी-मृद्वी चूर्णीतलोष्टकल्पा पृथिवी। *जीवा॰ १४०*।

सण्हावरण्णग- लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*।

सण्हिसण्हिआ- अनन्तानां व्यावहारिकपरमारणूनां समुद-यसमितिसमागमेन या परिमाणभात्रा गम्यते सैका अतिशयेन श्लक्ष्णा श्लक्ष्णश्लक्ष्णा सैव श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका। *जम्बू॰ ९४*।

सतंजए- शतञ्जयः त्रयोदशमदिवसः। *सूर्य॰ १४७*।

सतंत- स्वतन्त्रं-स्वसिद्धान्तोक्तः प्रकारः। *बृह॰ १५२*।

सतए- आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भावि दशमतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम॰ १५४*।

सतग्घि- शतघ्नी-महती यष्टिः। *प्रश्न॰ ८*।

सतत- उत्सर्पीण्यां मोक्षगामिका। *स्था॰ ४५७*।

सतदुवार- शतद्वारं नगरं, विमलवाहनराजधानी। *विपा॰ ९५*। पाण्डुजनपदे नगरम्। *स्था॰ ४५८*।

सतधणू- उत्सर्पीण्यां भावी दशमकुलकरः। *स्था॰ ५१८*।

सतपुप्फी- वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

सतपोरग- पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२*।

सतर- सतरं दधि। *ओघ॰ ४८*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*।

सता- सदा-प्रवाहतोऽनाद्यपर्यवसितं कालम्। *स्था॰ ४७१*।

सताउ- शतायुर्नाम या शतवारं शोधिताऽपि स्वस्वरूपं न जहाति। *जम्बू॰ १००*। शतायुः या शतवारं शोधिताऽपि स्वस्वरूपं न जहाति सा। *जीवा॰ २६५*।

सताणितो- वत्थजणवए कोसंबीणगरी, तस्स अधिवो सताणितो। *निशी॰ १६* अ।

सति- स्मृतिः-पूर्वानुभूतस्मरणम्। *जीवा॰ १२३*।

सति काल- प्राप्ता भिक्षावेला। *ओघ॰ १५५*। सत्कालः भिक्षासमयः। *बृह॰ २५६* अ।

सत्तित्थउब्भावण- स्वतीर्थोद्भावना। *आव॰ ५३७*।

सतिरं- सेच्छा। *निशी॰ २६४* आ।

सती- धर्मकथायां नवमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५३*। शोभना स्वकीया वा। *व्यव॰ ५३* आ। विशिष्टा। *निशी॰ १४९* अ।

सतीते- शक्रेन्द्रस्याग्रमहिषीणां राजधानी। *स्था॰ २३१*।

सतेरा- तृतीया विद्युतकुमारमहत्तरिका। *स्था॰ १९८*। *जम्बू॰ ३९१*। धरणस्याग्रमहिषी। *ज्ञाता॰ २५१*।

सत्त- सत्त्वं-चित्तविशेषः। *भग॰ ४६९*। सत्त्वं-परीषहेषु साधोः सङ्ग्रमादावितरस्य वा। *स्था॰ ३४२*। सत्त्वं-अवैक्लव्यकरमध्यवसानकरम्। *भग॰ ४६९*। सत्त्वाः। *ज्ञाता॰ ६०*। सत्त्वं-आपत्स्ववैक्लव्यकरमध्यवसानकरम्। *ज्ञाता॰ २११*। सत्त्वं-दैन्यविनिर्मुक्तो मानसोऽवष्टम्भः। *अनुयो॰ १५८*। सत्त्वं-आपत्स्ववैकल्यकरमवध्यसानकरम्। *उत्त॰ ५९०*। सक्तः-सामान्येनैवासक्तिमान्। *उत्त॰ ६३२*। सक्तः- आसक्तः, शक्तो वा-समर्थो सम्बद्धो वा। *भग॰ ११२*। सक्तः-बद्धाग्रहः। *उत्त॰ २६७*। सत्त्वं-धैर्यम्। *बृह॰ १९७*। सत्त्वं-स्थैर्यम्। *बृह॰ १८६* अ। सत्त्वम्। *उत्त॰ १३५*। सत्तं-इक्षुरसादि। *आव॰ ६२४*। सत्त्वं। *दशवै॰ ५५*। सत्त्वं-साहसम्। *जम्बू॰ १८२*।

सत्त्वः-सांसारिक-संसारानीतभेदः। *आव॰ ७३०*। सत्त्वाः-पृथिव्यप्तेजोवायवः। *प्रज्ञा॰ १०७*। तत्त्वं-धृतिबलम्। *बृह॰ २१७ अ*। सत्त्वं-वीर्यान्तरायकर्मक्षयोपशमादिजन्य आत्मपरिणामः। *आव॰ २३६*।

सत्तकित्ति- जम्बूभरते आगामिन्यां दशमतीर्थकृत्। *सम॰ १५३*।

सत्तग्ग- शक्त्यग्रं-प्रहरणविशेषाग्रम्। *जीवा॰ १०६*।

सत्तधणू- निरयावल्यां पञ्चमवर्गे दशममध्ययनम्। *निर॰ ३९*।

सत्तपदिग- सप्तभिः पदैर्व्यवहरतीति सप्तपदिकः। *आव॰ ९२*।

सत्तपदिवय- साप्तपदिकव्रतम्। *आव॰ ९२*।

सत्तपन्न- सप्तपर्णः सप्तच्छदः। *भग॰ ३७*।

सत्तपन्नवण- सप्तच्छदवनम्। *स्था॰ २३२*।

सत्तभावणा- सत्त्वभावना। *आव॰ २०२*।

सत्तम- सप्तमः-सप्तप्रमाणः। सप्तसङ्ख्यः। *प्रश्न॰ १३५*।

सत्तमासिआ- सप्तमा भिक्षुप्रतिमा। *सम॰ २१*।

सत्तसिया- भिक्षुप्रतिमाविशेषः। *ज्ञाता॰ ७२*।

सत्तरत्त- सप्तरात्रः-दिनाविनाभावित्वाद्रात्रीणां सप्ताहोरात्रः। *उत्त॰ ५३१*। सप्तरात्रं-सप्त दिनानि यावत्। *जम्बू॰ २४४*।

सत्तरातिंदिया- प्रतिमाविशेषः। *ज्ञाता॰ ७२*।

सत्तवइ- सप्तवृतिम्। *आव॰ ४०५*।

सत्तवइय- मारे उ कामेणं जावइएणं कालेणं सत्तपयाइं ओसक्किज्जंति एव इयं कालं, पडिक्खित्ता मारेव्वं। *बृह॰ २९ आ*।

सत्तवण्ण- सप्तपर्णः-वृक्षविशेषः। *जीवा॰ २२२*। सप्तपर्णः सप्तच्छदः। *ज्ञाता॰ १६०*। सप्तपर्णः-सप्तच्छदः। *अनुयो॰ क्ष ४३*।

सत्तवण्णवण- सप्तच्छदवनम्। *स्था॰ २३०*। सप्तपर्णवनम्। *जीवा॰ १४५*।

सत्तवदिआ- सप्तपदिका-गुणविषये दृष्टान्तः। *आव॰ ८१९*।

सत्तवन्न- सप्तपर्णः-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*। सप्तपर्णः-वृक्ष-विशेषः। *भग॰ ८०३*।

सत्तवन्नवडिंसए- सौधर्मकल्पे द्वितीयं बडिंसगविमानम्। *भग॰ १९४*।

सत्तवेत्त- वृक्षविशेषः। *भग॰ ८०२*।

सत्त सत्तमिया- सप्त सप्तमानि दिनानि यस्यां सा सप्तस-प्तमिका। *सम॰ ७०*। सप्तसप्तमानि दिनानि यस्यां सा सप्त-सप्तमिका। *स्था॰ ३८७*। सप्तसप्तमिका-सप्तभिर्दिनानां सप्तकैर्भवति सा। *औप॰ ३१*। सप्तसप्तमिकाभिक्षुप्रतिमा-विशेषः। *अन्त॰ २८*। सप्तसप्तकादिनानां यस्यां सा-सप्त-सप्तमिका। *व्यव॰ ३४७ अ*। भिक्षुप्रतिमाविशेषः। *व्यव॰ ३४६ आ*।

सत्तसत्तिक्कया- अनुद्देशकतयैकसरत्वेन एक्काः-अध्यय-नविशेषः। आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयचूडारूपाः, ते च समुदायतः सप्तेतिकृत्वा सप्तैकका। *स्था॰ ३८७*। आचारप्रकल्पे द्वितीयश्रुतस्कन्धस्याष्टमादारभ्य यावच्चतुर्दशममध्ययनम्। *प्रश्न॰ १४५*।

सत्तहत्था- लोमपक्षीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*।

सत्ता- सत्त्वाः-पृथिव्याद्येकेन्द्रियः। *आचा॰ ७१*। सत्त्वाः-तिर्यङ्नरामराः। *आचा॰ २५६*। सत्त्वाः-पृथिव्यादयः। *स्था॰ १३६*। सत्त्वाः-पृथिव्यप्तेजोवायुकायिकाः। *जम्बू॰ ५३९*। अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावा। *सूत्र॰ ४२६*। जाती स्त्रीवचनम्। *प्रज्ञा॰ २५१*।

सत्तावरी- एसा अणंतजीवा छल्ली। *निशी॰ १४१ अ*।

सत्तासुओ- सत्त्वासुकः उत्तरपौरस्त्यो वातविशेषः। *आव॰ ३८६*।

सत्तावहवद्दल- सप्ताहवर्दलः-सप्ताहमेघः। *ओघ॰ १५९*।

सत्ति- शक्तिः प्रहरणविशेषः। *आव॰ ४८७*। शक्तिः-त्रिशूलम्। *प्रश्न॰ २१*। शक्तिः-प्रहरणविशेषः। *दशवै॰ २४४*। शक्तिः-शस्त्रविशेषः। *आव॰ ६५१*। शक्तिः-त्रिशूलरूपः। *प्रश्न॰ ४८*। शक्तिः-त्रिशूलम्। *जम्बू॰ २६६*। शक्तिः-प्रहरण-विशेषः। *जीवा॰ १०८*। शक्तिः शस्त्रविशेषः। *प्रज्ञा॰ ९७*। शक्तिः-त्रिशूलम्। *औप॰ ७१*।

सत्तिक्कसत्तया- सप्तसप्तकं-आचाराङ्गस्य सप्तदशमतो त्रयो-विंशतितममध्ययनम्। *सम॰ ४४*।

सत्तिम्- शक्तिमत्-शरीरमन्त्रतन्त्रपरिवारादिसामार्थ्ययुक्तम्। *स्था॰ ३५३*।

सत्तिवण्ण- अजितनाथस्य चैत्यवृक्षम्। *सम॰ १५२।*

सत्तिवण्णवण- सप्तपर्णवनं-वनखण्डनाम। *जम्बू॰ ३२०।*

सत्तिवन्न- भवणवासीदेवानां द्वितीयं चैत्यवृक्षम्। *स्था॰ ४८७।*

सत्ती- शक्तिः-प्रहरणविशेषः। *भग॰ ९३।* शक्तिः-शक्तिहे-तुत्त्वं, अहिंसायाश्चतुर्थ नाम। *प्रश्न॰ ९९।* शक्तिः-प्रवृत्तिः। *नन्दी॰ १९०।* शक्तिः-शक्तिरूपम्। *जीवा॰ ११७।*

सत्तुंज- शत्रुञ्जयः, मूलगुणप्रत्याख्याने साकेतनगराधिपतिः। *आव॰ ७१५।*

सत्तु- शत्रुः-प्रत्यनीकः। *राज॰ ११।* शत्रुः। *स्था॰ ४६३।*

सत्तुअ- शक्तुकः, आचाम्यस्य गोण्णं तृतीयं नाम। *आव॰ ८५४।*

सत्तुए- सक्तवः-भ्रष्टवयक्षोदरूपाः। *बृह॰ आ॰ २६७ आ।*

सत्तुग- सक्तुः यवक्षोदरूपः। *पिण्ड॰ १६८।* ते य जवविगारो। *दशवै॰ ८०।*

सत्तुसेण- अन्तकृद्दशान्तं तृतीयवर्गस्य षष्ठममध्ययनम्। *अन्त॰ ३।*

सत्तुस्सेह- सप्तहस्तोच्छ्रितः। *ज्ञाता॰ ६२।*

सत्तू- शत्रुः अगोत्रजः। *औप॰ १२।*

सत्तेक्कतय- सप्तैककः, आचारप्रकल्पस्य सप्तदशादारभ्य त्रयोविंशतिरन्तानि अध्ययनानि। *आव॰ ६६०।*

सत्तेरा- सत्तारा-विदिग्रुचकवास्तव्या विद्युत्कुमारीस्वामिनी। *आव॰ १२२।*

सत्तोपसत्त- सक्तोपसक्तः- सक्तश्च पूर्वमुपसक्तश्च पश्चात्। *उत्त॰ ६३२।*

सत्त्व- जीवाः। *भग॰ ११२।*

सत्त्वपरिग्रह- सत्वपरिगृहीत्वं-साहसोपेतता, त्रयत्रिंशत्तमवच-नातिशयः। *सम॰ ६३।*

सत्थ- शस्त्रं-उपघातकारि। *आचा॰ १०२।* सार्थः-गणिम-धरिमादिभृतपृषभादिसङ्घातः। *उत्त॰ ६०५।* शस्त्रं-उपघा-तकारी। *आचा॰ १७४।* शस्त्रं-हिंसकं वस्तु। *स्था॰ ४९२।* सार्थः। *आव॰ ३४८।* शास्त्रं शस्त्रं अर्थशास्त्रापि खड्गादि अक्षेप्यायुधम्। *प्रश्न॰ ११६।* शास्तयेऽनेनास्मादस्मिन्निति वा ज्ञेयमात्मेति वा शास्त्रम्। *आव॰ ८६।* शास्त्रं-आप्तवचनम्। *दशवै॰ १२८।* शस्त्रम्। *आव॰ २७३।* शस्यन्ते-हिंस्यन्ते-ऽनेन प्राणिन इति शस्त्रं उत्सेचनगालन-उपकरणधावनादि स्वकायादि च वर्णाद्यापत्तयो वा पूर्वास्थाविलक्षणः। शस्त्रम्। *आचा॰ ४६।* सत्थवाहो। *निशी॰ ३९/* शस्त्रं-क्षुरिका-दिकम्। *भग॰ १२०।* शिष्यतेऽनेनेति शास्त्रंश्रुतम्। *आव॰ २६।* शस्त्रं-क्षुरिकादि। *ज्ञाता॰ ३०।*

सत्थकुसल- शस्त्रेषु शास्त्रेषु वा कुशलाः शस्त्रकुशलाः शास्त्र-कुशला वा। *उत्त॰ ४७५।*

सत्थकोस- शस्त्रकोशः-क्षरनखरदनादिभाजनम्। *ज्ञाता॰ १८१।* नि॰ १८ आ। शस्त्रकोषः-नखरदनादिभा-जनम्। *विपा॰ ४१।*

सत्थकोसग- शस्त्रकोषकः। *उत्त॰ २०२।*

सत्थजाय- शस्त्रजातं-आयुधविशेषः। *आचा॰ ३७९।*

सत्थपरिणा- शस्त्रपरिज्ञा-आचाराङ्गस्य प्रथममध्ययनम्। *उत्त॰ ६१६।*

सत्थपरिणाभिय- शस्त्रेण परिणामितं-कृतातिनवपर्यायं शस्त्रपरिणामितम्। *भग॰ २१३।*

सत्थपरिण्णा- आचाराङ्गे प्रथममध्ययनम्। *सम॰ ४४।* शस्त्रपरिज्ञा आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रथममध्यय-नम्। *प्रश्न॰ १४५।* शस्त्रपरिज्ञा-आचारप्रकल्पस्यं प्रथमो भेदः। *आव॰ ६६०।*

सत्थपरिन्ना- शस्त्रं द्रव्यभावभेदादनेकविधं तस्य जीवनशंस-नहेतोः परिज्ञा-ज्ञानपूर्वकं प्रत्याख्यानं यत्रोच्यते सा शस्त्र-परिज्ञा। *स्था॰ ४४४।*

सत्थर- स्रस्तरः-शयनम्। *प्रश्न॰ १६३।*

सत्थवज्झ- शस्त्रवध्यः। *ज्ञाता॰ १९९।*

सत्थवाह- सार्थवाहः। *भग॰ ३१९।* सत्थं वाहेति सो। *निशी॰ २७०* आ। *निशी॰ २३७* आ। जो वाणिओ रातीहिं अब्भणुण्णातो सत्थं वाहेति सो। *निशी॰ २०९* आ। सार्थवाहः-सार्थनायकः। *प्रज्ञा॰ ३३०।* *ज्ञाता॰ ७९।* सार्थवाहः। *प्रश्न॰ ९६।* गण्यंधार्यमेयं परिच्छेद्यं च द्रव्यजातं गृहीत्वा योऽन्यदेशं व्रजति, नृपबहुमतः, प्रसिद्धः, दीनाना-थेषु पथि वत्सलः पथि स सार्थवाहः। *अनुयो॰ २३।* सार्थवाहकः-सार्थनायकः। *स्था॰ ४६३।* सार्थवाहः-यो गणिमादिद्रव्यजातं गृहीत्वा लाभार्थमन्यदेशं व्रजति, नृपब-हुमतः, प्रसिद्धः, पथि दीनानाथानां वत्सलः स। *जीवा॰ २५०।* सार्थवाहः यो

गणिमादिक्रयाणकं गृहीत्वा देशान्तरं गच्छन् सह चारिणामध्वसहायो भवति। *जम्बू॰ १२२*।

सत्था- शास्ता-तीर्थकरः। *निशी॰ २७* आ।

सत्थातीत- शस्त्रातीतं शस्त्रादग्न्यादेरतीतं उत्तीर्णम्। *भग॰ २९३*।

सत्थातीय- शस्त्रातीतं शस्त्रेण-उदुखलमुशलयन्त्रकादिना अतीतमतिक्रान्तम्। *भग॰ २१३*।

सत्थाहपुत्तो- सार्थवाहपुत्रः। *आव॰ ११६*।

सत्थियमुह- स्वस्तिकमुखं-स्वस्तिकाग्रभागः। *सूर्य॰ ७१*।

सत्थिल्लिओ- सार्थकः। *आव॰ ११५*।

सत्थोवाडण- शस्त्रेण-क्षुरिकादिना अवपाटनं-विदारणं देहस्य यस्मिन् मरणे तत् शास्त्रोत्पाटनम्। *भग॰ १२०*। शस्त्रेणक्षु-रिकादिना अवपाटनं-विदारणं स्वशरीरस्य यस्मिस्तच्छ-स्त्रावपाटनम्। *स्था॰ ९३*। शस्त्रेणावपाटनम्। *ज्ञाता॰ २०२*।

सत्पुरुषा- किंपुरुषभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ९०*।

सत्य- सिद्धं, प्रतिष्ठितम्। *दशवै॰ ३३*।

सत्यकि- चारित्रमोहनीयकर्म्मोदयवान्। *उत्त॰ १८५*। केवल-सम्यग्दर्शनी व्यक्तिविशेषः। *आव॰ ८०५*। प्रद्वेषे दृष्टान्तः। *आचा॰ १४६*। सत्यकिः-प्रव्राजने दृष्टान्तः। *निशी॰ २८* अ। सत्यकिः-केवलसम्यग्दर्शनी व्यक्तिविशेषः। *आव॰ ८०५*।

सत्यकी- द्वेषतो द्वैपायनेन व्यापादितः। *व्यव॰ १२* अ।

सत्यभामा- कृष्णवासुदेवभार्या। *प्रश्न॰ ८८*।

सथणिए- सस्तनितः-कृतमन्दमन्दध्वनिः। *ज्ञाता॰ २४*।

सदक्खिणं- सदानम्। *ज्ञाता॰ २२०*।

सदारमंतभेए- स्वदारमन्त्रभेदः-स्वकलत्रविश्वबधविशिष्टा-वस्थामन्त्रितान्यकथनम्, स्थूलमृषावादविरमणे तृतीयोऽतिचारः। *आव॰ ८२०*।

सदारसंतोस- स्वदारसन्तोषः स्वकलत्रसन्तोषः। *आव॰ ८२३*। स्वदारसन्तोषः-आत्मीयकलत्रादन्यत्रेच्छानिवृत्तिः। *स्था॰ २९१*।

सदारसंतोसिए- स्वदारैः सन्तोषः स्वदारसन्तोषः स एव स्वदारसन्तोषिकः। स्वदारसन्तुष्टिः *उपा॰ ३*।

सदारा- नागेन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*।

सदावरी- त्रीन्द्रियजीवभेदः। *उत्त॰ ६९५*।

सदाशिवः- । *उत्त॰ ८१*। सदाशिवः। *स्था॰ २०२*।

सदिव्व- सह दिव्यैः सादिव्यं-गन्धर्वनगरादिदिव्यकृतम्। *आव॰ ७३१*।

सद्द- शपनं शपति वा असौ शय्यते वा तेन वस्त्विति शब्द-स्तस्यार्थपरिग्रहादभेदोपचारान्नयोऽपि शब्दः। पञ्चममूलनयः। *स्था॰ ३९०*। शब्दः-कलहबोलः, महान् शब्दः। *आव॰ ६४५*। शब्दः तत्स्थान एव व्यापी श्लाघा। *दशवै॰ २५७*। शब्दः-शब्दाख्यनयः। *उत्त॰ ७७*। शब्दः-आर्त्तस्परः। *प्रश्न॰ १९*। शब्दः। *औप॰ ५*। शब्दः-शब्दशास्त्रः। *जम्बू॰ २०९*। शब्दः-नयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२७*। व्याकरणम्। *निशी॰ ३०* आ। शब्दः-अर्द्धदिग्व्यापी। *स्था॰ ५०३*। शब्दः-अर्द्धदि-ग्व्यापी। *भग॰ ६७३*। शब्द्यतेऽनेनेति शब्दः, भाषात्वेन परिणतःपुद्गलराशिः। *आव॰ १४*। शब्दः-मन्मनभाषितादि। *उत्त॰ ४२७*। शब्दः शब्द्यते-अभिधीय-तेऽभिधेयमनेनेति शब्दो-वाचको ध्वनिः। *स्था॰ १५२*। शब्दः शब्दनमभिधानं शब्द्यते वा ये न वस्तु स शब्दः। *स्था॰ १५३*।

सद्दकर- शब्दकरः-रात्रौ महत्ता शब्देनोल्लापस्वाध्यायादिका-रको गृहस्थभाषाभाषको वा। *प्रश्न॰ १२५*। सप्तदशममसमा-धिस्थानम्। *सम॰ ३७*। शब्दकरः-यः कलहबोलं करोति, विकालेऽपि महता शब्देनैव वदति वैरात्रिकं वा गार्हस्थभाषां भाषते। षोडशमासमाधिस्थानम्। *आव॰ ६५३*।

सद्दकरणं- शब्दकरणं-उक्तिः। *आव॰ ६४६*।

सद्दणय- शब्द्यते वस्त्वनेनेति शब्दः, तमेव गुणीभुतार्थं मुख्य-तया यो मन्यते स नयोऽप्युपचाराच्छब्दः। *अनुयो॰ २६५*।

सद्दणया- शब्दनयाः-शब्दप्रधाना नयाः। *स्था॰ १५३*।

सद्दनया- शब्दप्रधाना नयाः शब्दनयाः-शब्दसमभिरूढैवंभूताः शब्देनार्थं गमयन्तीत्यतः शब्दनया उच्यते। *अनुयो॰ २२४*।

सद्दपडियं- शब्दपतितम्। *आव॰ २९२*।

सद्दवेही- शब्दं लक्षीकृत्य विध्यति यः स शब्दवेधी। *ज्ञाता॰ २३६*। शब्दवेधी। *आव॰ ४००*।

सद्दहइ- श्रद्धत्ते-सामान्येनैवमिदमिति। *स्था॰ २४७*।

सद्दहइत्ता- श्रद्धाय शब्दार्थोभयरूपं सामान्येन प्रतिपद्य। *उत्त॰ ५७२*।

सद्दहण- श्रद्धानं-तथेतिप्रत्ययलक्षणः। *स्था॰ ३४९।* श्रद्धानं सम्यक्त्वमोहनीयकर्माणुक्षयक्षयोप(शमोप) शमसमुत्थात्म-परिणामरूपं सम्यक्त्वम्, श्रद्धानं-सम्यक्त्वं भवत्याख्यातं, तच्च श्रद्दधाति जीवादितत्त्वमनेनेति श्रद्धानं सम्यक्त्वमोह-नीयकर्माणुक्षयक्षयोप (शमीप) शमसमुत्थात्म-परिणामरू-पम्। *उत्त॰ ५६३।*

सद्दहणकप्प- सद्दाणसद्दहंतस्स। *निशी॰ १४६* अ।

सद्दहणसुद्ध- श्रद्धनेन-तथेतिप्रत्ययलक्षणेन शुद्धं-निरवद्यं श्रद्धानशुद्धम्। *स्था॰ ३४९।*

सद्दहणा- श्रद्धाना-श्रद्धानशुद्धिः-प्रत्याख्यानशुद्ध्याः प्रथमो भेदः। *आव॰ ८४७।*

सद्दहति- श्रद्धत्ते-प्रत्येति-प्रीतिविषयीकरोति। *स्था॰ १७६।*

सद्दहमाण- श्रद्दधानः आर्द्रचित्ततया मन्यमानः *जीवा॰ ४।*

सद्दहित- श्रद्धितः-सामान्येन प्रतीतः। *स्था॰ ३५६।*

सद्दहामि- श्रद्दधे सामान्येनैवमेवमयमिति। *आव॰ ७६१।* निग्रन्थं प्रवचनमस्तीति प्रतिपद्यते। *भग॰ १२१।* श्रद्दधे सामान्यतः। *भग॰ ४६७।* श्रद्दधे-अस्तीत्येवं प्रतिपद्यो। *ज्ञाता॰ ४७।*

सद्दहिए- श्रद्धितः। *भग॰ १०१।*

सद्दहियं- अब्भुवगयं। *निशी॰ १४७* अ।

सद्दहे- श्रद्धत्ते। *उत्त॰ ५६९।*

सद्दहेज्जा- श्रद्दधीत-श्रद्धाविषयां कुर्यात्। *प्रज्ञा॰ ३९९।*

सद्दाइ- शब्दं-शब्दद्रव्यम्। *भग॰ २१६।*

सद्दाउलग- शब्देनाकुलं शब्दाकुलं शब्दाकुलं-बृहच्छब्दं, तथा महता शब्देनालोच्यति। *स्था॰ ४८४।*

सद्दाउलय- शब्दाकुलं-बृहच्छब्दं यथा भवत्येवमालोचयति, अगीतार्थान् श्रावयन्नित्यर्थः। आलोचने सप्तमो दोषः। *भग॰ ६१९।*

सद्दाणुवाए- शब्दानुपातः शब्दोच्चारम्। देशावकाशिके तृती-योऽतिचारः। *आव॰ ८३४।*

सद्दालपुत्त- सद्दालपुत्रः तत्त्ववक्तव्यताप्रतिबद्धम्। *स्था॰ ५०९।* महावीरस्य सप्तमश्राद्धः। *उपा॰ १।*

सद्दावई- शब्दापातिनाम वृत्तवैताढ्यपर्वतः। *जम्बू॰ २९५।* शद्धापाती- वृत्तवैताढ्यपर्वतः। *जम्बू॰ २९९।* शब्दापाती –वृत्तवैताढ्यः, हैमवतवर्षस्य पर्वतः। *जीवा॰ ३२६।*

सद्दावाती- शब्दपाती-हेमवते पर्वतः। *स्था॰ ७१।*

सद्दिय- शब्दः-प्रसिद्धः स सञ्जातो यस्य तच्छब्दितः। *ज्ञाता॰ ३।*

सद्दूल- शार्दूलः-व्याघ्रविशेषः। *प्रश्न॰ ७।* शार्दूलः-व्याघ्रः। *जीवा॰ २७२।*

सद्दल- सद्दलः भल्लः। *प्रश्न॰ २१।*

सद्धा- श्रद्धा-प्रवर्द्धमानसंयमस्थानकण्डकरूपा। *आचा॰ ४३।* श्रद्धा-मनःप्रसादः। *आव॰ २६३।* श्रद्धा-रूचिः। *आव॰ ३४१।* श्राद्धं-पितृक्रियाः। *जम्बू॰ १२३।* श्रद्धा-तत्त्वे सुश्रद्धानमास्तिक्यं, अनुष्ठानेषु वा निजोऽभिलाषः। *स्था॰ ४१६।* श्रद्धा-वाञ्छा। *उत्त॰ ३६१।* श्रद्धा-तत्त्वेषु श्रद्धानमास्तिक्यमित्यर्थः। *स्था॰ ४१६।* श्रद्धा-भक्तिः, भावना च। *आव॰ ३४१।* श्रद्धा-निजोऽभिलाषः। *आव॰ ७८७।* श्रद्धा-श्रवणं प्रति वाञ्छा। *सूर्य॰ २६६।* श्रद्धाप्रधा-नगुणस्वीकरणरूपा। *दशवै॰ २३८।* श्रद्धा-विशुद्धश्चित्तपरि-णामः। *आव॰ ८३७।* परिणामो। *दशवै॰ १२७।* श्रद्धा-तत्करणाभिलाषरूपा। *उत्त॰ ५७७।* श्रद्धा-तत्सङ्गमा-भिलाषः। असम्प्राप्तकामस्य तृतीयो भेदः। *दशवै॰ १९४।* श्रद्धा-अभिलाषः। *ज्ञाता॰ १६५।*

सद्धादी- आत्मास्तित्ववादी। *निशी॰ १०* अ।

सद्धावप्रतिषेध- सर्वस्मात् सद्भावप्रतिषेधः। *स्था॰ २९०।*

सद्य- प्रगुणीभूतः सज्जः। *जीवा॰ १९३।*

सद्योविस्यन्दित- तत्कालनिष्पादितः। *जीवा॰ ३५५।*

सधूम- सधूमं अङ्गारत्वमप्राप्तं ज्वलदिन्धनम्। *पिण्ड॰ १७६।* सधूमं निन्दार्हभोजनम्। *पिण्ड॰ १७५।* सधूमम्। *आचा॰ १३१।*

सन- सनसूत्रम्। *उत्त॰ ५७१।*

सनखपद- चतुष्पदतिर्यञ्चे चतुर्थो भेदः। *सम॰ १३५।*

सनत्कुमार- विषयविपाके दृष्टान्तः। *आचा॰ १२६।* सनत्कु-मारः-क्वचिद्रोगसम्भवे विनष्टाङ्गे दृष्टान्तः। *सूत्र॰ ८२।* सनत्कुमारः-वर्णात्त्वचच्छायातोऽपचीयत्वे दृष्टान्तः। *सूत्र॰ २९४।* सनत्कुमारः-असातवेदनीये दृष्टान्तः। *आचा॰ २०६।*

सनाइपिंड- स्वज्ञातयः-स्वकीयस्वजनास्तैर्निजक इति यथेप्सितो यः स्निग्धमधुरादिराहारो दीयते सः स्वज्ञाति-पिण्डः। *उत्त॰ ४३६।*

सन्तः- प्राणिनः पदार्था मुनयो वा। *स्था॰ ४९०।* सन्तः-मुनयः-पदार्था वा। *प्रज्ञा॰ ३१८।* सन्तः-मुनयः-मूलो-

त्तरगुणाः विद्यमानाश्च। *प्रज्ञा॰ २४७*। सन्तः-मुनयो गुणा पदार्था वा। *आव॰ ७६०*।

सन्दमाणिया- पुरुषप्रमाणो जम्पानविशेषः। *जीवा॰ २८२*।

सन्द्रावो- द्रव्यसमूहः। *निशी॰ २१* अ।

सन्ध्या- सन्ध्याकालः-नीलाद्यभ्रपरिणतिरूपा। *जीवा॰ २८३*।

सन्ध्याभ्रराग- वैश्रसिकरागः। *आव॰ ३८७*।

सन्ध्याविराग- सन्ध्यारूपो विरुद्धस्तिमिररूपत्वाद्रागः। *जीवा॰ २६६*।

सन्न- निगम्नः। *उत्त॰ २९१*। सन्नः-सन्नकः खिन्नः। *प्रश्न॰ ६२*। सञ्ज्ञा। *आव॰ ४१८*। संज्ञानं-संज्ञा-अनुस्मरणं इदं तदिति ज्ञानम्। *दशवै॰ १२५*।

सन्नद्ध- सन्नद्धः-सन्निहतिकया कृतसन्नाहः। *भग॰ १९३*। सन्नद्धः-कृतसन्नाहः। *ज्ञाता॰ २२१*। सन्नद्धः-सन्नहन्या-दिना कृतसन्नाहः। *प्रश्न॰ ४७*। सन्नद्धः। *आव॰ ३४४*। शरीरारोपणात् सन्नद्धः। *राज॰ ११८*।

सन्नसुत्त- सञ्ज्ञासूत्रम्। *बृह॰ २०१* अ।

सन्नहनी- सन्नद्धाः-कृतसन्नाहाः। *प्रश्न॰ ४७*।

सन्नहिया- प्रतिहार्यम्। *व्यव॰ २५९* आ।

सन्ना- सञ्ज्ञान-सञ्ज्ञा-विषयाभिष्वङ्गजनितसुखेच्छा परिग्रहसञ्ज्ञा वा। *आचा॰ १४८*। संज्ञा- चैतन्यम्। *स्था॰ २७७*। सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञा-व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालभावी मति-विशेषः, आहारभयाद्युपादिका वा चेतना सञ्ज्ञा, अभिघानं वा सञ्ज्ञेति। *स्था॰ २१*। सन्नाः-विषण्णा निमग्नाः। *आचा॰ ११३*। सञ्ज्ञा-ईहापोहविमर्शरूपा। *सूत्र॰ ३६७*। सञ्ज्ञा-परिभाषिकी। *दशवै॰ ९६*। संज्ञा-अर्थावग्रहरूपं ज्ञानम्। *भग॰ ५९*। सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञा-पूर्वोपलब्धेऽर्थे तदुत्तरकाल-पर्यालो-चना। *सूत्र॰ ३६८*। सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञा-आभोग इत्यर्थः, मनोविज्ञानमित्यन्ये सञ्ज्ञायते वा आहाराद्यर्थी जीवोऽनयेति सञ्ज्ञा वेदनीयमोहनीयोदयाश्रयाज्ञानदर्शनावरणक्षयोपश-माश्रया च विचित्रा आहारादिप्राप्तये क्रियैवेत्यर्थः। *स्था॰ ५०५*। सञ्ज्ञा-पुरीषोत्सर्जबुद्धिः। *औप॰ १९७*। सञ्ज्ञा-व्यावहारिकार्थावग्रहरूपा मतिः। *भग॰ ७६३*। सञ्ज्ञानं-सञ्ज्ञा व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालभवी मतिविशेषः। *नन्दी॰ १८७*। देवादीनां यथावत्परिज्ञानम्। *बृह॰ ५१* आ। सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञाभूतभवद्भविभावस्वभावपर्यालोचनम्, सञ्जायते सम्यक् परिच्छिद्यते पूर्वोपलब्धो वर्त्तमानो भावी च पदार्थो यया सा वा, विशिष्टा मनोवृत्तिरिति। *प्रज्ञा॰ ५३३*। सञ्ज्ञा-सम्यग्द-र्शनम्। *भग॰ ४२*। सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञा-आभोग इत्यर्थः, मनो-विज्ञानमित्यन्ये, सञ्ज्ञायते वाऽनयेति सञ्ज्ञा-वेदनीयमोह-नीयोदयाश्रया ज्ञानदर्शनावरणक्षयोपशमाश्रया च विचित्राहा-रादिप्राप्तये क्रियैव। *भग॰ ३१४*। सञ्ज्ञा-प्रज्ञापाया अष्टमं पदम्। *प्रश्न॰ ६*। सञ्ज्ञा-पुरीषम्। *पिण्ड॰ ८३*। सञ्ज्ञा-अन्तःकरणवृत्तिः। *सूत्र॰ १२९*। सञ्ज्ञा-सम्यग्दर्शनम्। *प्रज्ञा॰ ३३४*। सञ्ज्ञा-सञ्ज्ञानं, आभोगः, सञ्ज्ञायतेऽन-याऽयं जीवो वेति, उभयत्रापि वेदनीयमोहोदयाश्रिता ज्ञाना-वरणदर्शनावरणक्षयोपशमश्रिता च विचित्राऽऽहारादि प्राप्ति क्रिया। *प्रज्ञा॰ २२२*।

सन्नाइ- स्वज्ञातिः- अत्यन्तसुहृत्। *उत्त॰ १३०*।

सन्नाखंध- सञ्ज्ञास्कन्धः-सञ्ज्ञाननिमित्तोऽग्राहणात्मकः। *प्रश्न॰ ३१*।

सन्नाड- सञ्ज्ञाकुलः। *आव॰ ३७०*।

सन्नाभूमिः- सञ्ज्ञाभूमि-। *आव॰ २९१*।

सन्नायग- सञ्ज्ञातकः। *आव॰ ४२२*।

सन्नायपल्लो- सत्रज्ञातपल्लो स्वज्ञातीयस्थानम्। *उत्त॰ १११*।

सन्नासिद्धि- सञ्ज्ञासिद्धिः-संज्ञासम्बन्धः। *दशवै॰ ७१*।

सन्नि- सहनी-श्रावकः। *बृह॰ ५१* आ।

सन्निकास- सन्निकाशं-सदृशम्। *ज्ञाता॰ २२२*। सन्निकाशः- प्रकाशः। *जीवा॰ २०७*। सन्निकाशः-समप्रभम्। *जीवा॰ २५०*।

सन्निधापनी- मुद्राविशेषः। *जम्बू॰ ११*।

सन्नाय- सन्निनादः-सन्नहयत इत्यादिषु समो भृशार्थस्यापि दर्शनादतिगाढध्वनी। *उत्त॰ ४९०*।

सन्निनाय- सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियः सन् भूतः नारकत्वं गतः सञ्ज्ञिभूतः। *प्रज्ञा॰ ३३४*। सञ्ज्ञिभ्य उत्पन्नः सञ्ज्ञिभूतः। *प्रज्ञा॰ ५५७*। सञ्ज्ञीभूताः-सञ्ज्ञा-मिथ्यादर्शनं तद्वन्तः सञ्ज्ञिनः सञ्ज्ञिनो भूताः सञ्ज्ञित्वे गताः संज्ञीभूताः। *भग॰ ११*। सञ्ज्ञीभूतः पर्याप्तकीभूतः। *भग॰ ४२*। सञ्ज्ञा-सम्य-ग्दर्शनं सा यस्यास्तीति सञ्ज्ञो स भूतः-यातः-सञ्ज्ञित्वं प्राप्त इति

सञ्ज्ञिभूतः *प्रज्ञा॰ ३३४।*

सन्निय- सञ्ज्ञिनः सङ्केतितः। *उत्त॰ ९८।*

सन्निर- सन्निरं-पत्रशाकम्। *दशवै॰ १७६।*

सन्निरुद्ध- सन्निरुद्ध-अत्यन्तसंक्षिप्तः संक्षिप्तः। *उत्त॰ २८३।*

सन्निरोह- सन्निरोधः एकस्थानोपवेशनम्। *बृह॰ ७* आ।

सन्निवाइए- सन्निपाती-मेलकस्तेन निवृत्तः सन्निपातिकः। *स्था॰ ३७८।* सन्निपातः-औदायिकादिभावानां द्व्यादि-संयोगस्तेन निवृत्तः सान्निपातिकः। *भग॰ ६४९।* सन्निपातः-पूर्णिमानक्षत्रात् अमावास्यायाममावास्यानक्ष-त्राच्च पूर्णिमायां नक्षत्रस्य नियमेन सम्बन्धः। *जम्बू॰ ५१३।* सन्निपातः-अमावास्यापौर्णमासी। *सूर्य॰ ९।*

सन्निवातिते- सन्निपातः-संयोगो द्व्योस्त्रयाणां वा वातो निदानमस्येति वातिकः। *स्था॰ २६५।*

सन्निवाय- सन्निपातः-संयोगः। *सूर्य॰ ५।* सन्निपातः-मेलापकः। *सूत्र॰ ३८६।* सन्निपातः-मेलकः। *स्था॰ ३७८।* संन्निपातः-अपरारस्थानेभ्यो जानानामेकत्र मीलनम्। *भग॰ ४६३।* सन्निपातः-अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मील-नम्। *औप॰ ५७।*

सन्निविट्ठ- सन्निवेसः पाटकः। *राज॰ २।*

सन्निवेश- नगरम्। *प्रश्न॰ ५९।* तथाविधप्राकृतलोकनिवासः। *व्यव॰ १६८* अ।

सन्निवेशन- सन्निविष्टं पाटकः। *औप॰ २।*

सन्निवेस- सन्निवेशः-यात्रासमागतजनावासो जनसमागमो वा। *आचा॰ २८५।* सन्निवेशः- यत्र प्रभूतान भाण्डानां प्रवेशः। *आचा॰ ३२९।* सन्निवेश-स्थानम्नां। *आचा॰ २३४।* सन्निवेशः- घोषादिः। *अनुयो॰ १४२।* संनिवेशः-यत्र प्रभू-तानां भाण्डानां प्रवेशः स। *स्था॰ २९४।* सन्निवेशः-घोष-प्रभृतिः। *औप॰ ७४।* सन्निवेसः-कटकादीनामावासः। *ज्ञाता॰ १४०। भग॰ ६६२।* सन्निवेशः-तथाविधप्राकृत-लोकनिवासः। *राज॰ ११४।*

सन्निसन्न- सङ्गततया निषण्णः, सुखासीन इत्यर्थः। *भग॰ ३२४।*

सन्निहिंकाडं- सन्निधीकर्तुं-सञ्चयीकर्त्तुम्। *प्रश्न॰ १५३।*

सन्निहि- घृतगुडादिस्थापनम्। *भग॰ २००।* सन्निधीयते नरकादिष्वात्माऽनयेति सन्निधिः। *दशवै॰ १९८।* सन्निधिः-सम्यग्-एकीभावेन निधीयते-निक्षिप्यतेऽनेनाऽऽत्मा नरकादिष्विति। सन्निधिः-प्रातरिदं भविष्यतीत्याद्यभि-सन्धितोऽतिरिक्ताशनादिस्थापनम्। *उत्त॰ २६९।*

सन्निहिय- संनिहितं-सानिध्यम्। *भग॰ ६५३।*

सन्निहियपाडिहेर- सन्निहितप्रातिहार्यः। *आव॰ ६२।*

सन्निडिया- सन्निहिता देवताऽधिष्ठिता। *आव॰ ७५८।*

सन्नी- प्रज्ञापनाया एकत्रिंशत्तमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।* सञ्ज्ञी-अवधिज्ञानी, जातिस्मरः, सामान्यतो विशिष्टमनः पाटवोपेतो वा। *प्रज्ञा॰ २५३।* सञ्ज्ञी विशिष्टावधिज्ञानी। *प्रज्ञा॰ ३०४।* सञ्ज्ञिनी। *आव॰ ३५८।* सञ्ज्ञी-विशिष्टस्मरणादिरूपमनो-विज्ञान-भाक्। *प्रज्ञा॰ ५३३।* सञ्जी-सिद्धपुत्रः। *व्यव॰ २००* अ। सञ्ज्ञा-देवगुरुधर्मतत्त्वानां यत्परिज्ञानं सा विद्यते यस्य सः संज्ञी-श्रावकः। *बृह॰ ५१* आ। श्रावकः। *बृह॰ ७८* आ।

सन्नीनाण- सञ्ज्ञिज्ञानं-सम्यग्दृशः स्मृतिरूपमतिभेदात्मकम्। *उत्त॰ ४५२।*

सन्नीभूय- सञ्ज्ञीभूतः पर्याप्तकीभूतः। *प्रज्ञा॰ ३३४।*

सपक्ख- समानपक्षं-समपार्श्वम्। *सम॰ ५९।* स्वपक्षः-संयतवर्गः। *आव॰ १२०।* स्वपक्षः-साधुसाध्वीवर्गः। *बृह॰ २१५* आ। स्वपक्षः-पार्श्वस्थादिवर्गः। *बृह॰ ५* आ। सञ्जता। *निशी॰ २२७* आ। स्वपक्षः-संयतः। *बृह॰ ११४।* सावगादि। *निशी॰ ९८* आ। स्वपक्षः। *पिण्ड॰ ६७।* सपक्षं-समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमुत्पतने तत् सपक्षम्। *जीवा॰ ३९१।*

सपक्खि- पक्षाणां दक्षिणवामादिपार्श्वानां सदृशता समता सप-क्षमित्यव्ययीभावस्तेन समपार्श्वतया समानीत्यर्थः। *स्था॰ १२५।* समानाः पक्षाः-पार्श्वा दिशो यस्मिन्। तत्सपक्षं, सदृशा-पक्षैरिति सपक्षमित्यव्ययीभावो वेति। *स्था॰ २५१।* समाः सर्वे पक्षाः- पार्श्वाः पूर्वापरदक्षिणोत्तरा यत्र स्थाने तत्सपक्षम्। *भग॰ १६७।* सपक्षं-समान् दिग्। *भग॰ ५७६।* समानाः पक्षाः-पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमुत्पतने तत् सपक्षम्। *प्रज्ञा॰ १०५।* स्वपक्षम्। *अन्त॰ २१।* सह पक्षैरिति सपक्षं सर्वेषु पक्षेषु पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपे-ष्वित्यर्थः। *सूर्य॰ २९०।*

सपगास- सपकाशं सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति सहितम् *बृह॰ १४५* अ।

सपच्चवाय- सप्रत्यपायं- व्याधादिप्रत्यपायबहुलम्। *आव॰ ३८४*।

सपच्चवाया- सप्रत्यपाया सम्भाव्यमानापाया। *पिण्ड॰ १५८*।

सपच्छाग- सपटलम्। *औप॰ १७५*।

सपच्छागा- सड वाहाया निषाद्यया हस्तप्रमाणया भवति। *ओघ॰ २१७*।

सपज्जाय- स्वपर्यायः। *भग॰ ३६३*।

सपडाय- सलघुध्वजः। *जम्बू॰ ३७*।

सपडिच्छग- तेणस्स वा जो पडिच्छति। *निशी॰ ४५*।

सपडिच्छगपडिच्छगो- पडिच्छगस्स जो पुणो अन्नो पडिच्छाति। *निशी॰ ४५* अ।

सपडिदिसं- सप्रतिदिक्-समानविदिक्। *भग॰ ५७६*। समानाः-प्रतिदिशो विदिशो यस्मिंस्तत्सप्रतिदिक्। *स्था॰ २५१*। समानाः प्रतिदिशो-विदिशो यत्र तत् सप्रतिदिक्। *प्रज्ञा॰ १०५*। प्रतिदिशो- विदिशो यत्र तत् सप्रतिदिक्। *प्रज्ञा॰ १०५*। प्रतिदिशां-विदिशां सप्रतिदिक्। *स्था॰ १२५*। समाः-सर्वाः प्रतिदिशो यत्र तत् सप्रतिदिक्। *भग॰ १६७*। सप्रतिदिक्। *अन्त॰ २१*। समानप्रतिदिक्तया अत्य-र्थमभिमुखादिक्। *अन्त॰ १४*। समानाः प्रतिदिशो-विदिशो यत्र तत् सप्रतिदिक्। *जीवा॰ ३९१*।

सपडिवक्ख- सप्रतिपक्षम्। *स्था॰ १८४*। सप्रतिपक्षः-सापवादः। *ओघ॰ १४७*।

सपयं- पारचियं। *निशी॰ ३९* आ।

सपरक्कमो- जो भिक्खवियारं अन्नं गामं वा गंतुं समत्थो। *निशी॰ ५३* अ।

सपरिच्छिन्नः- परिवारोपेतः। *व्यव॰ ८८* अ।

सपरियार- सपरिचारः-परिचारणासहितः। *प्रज्ञा॰ ५४८*।

सपर्या- पूजा। *आव॰ ८४०*।

सपांसुलिग- सपार्श्वास्थी। *प्रश्न॰ ५७*।

सपाउया- स्वकीयपादुका। *भग॰ ४७९*।

सपाहुडिया- ठावणलेवणादिकरणं। *निशी॰ २३०* आ।

सपिंडरस- सपिण्डरसं अतीवरसाधिकं खर्जूरादि। *पिण्ड॰ १६८*।

सपिप्पलीयं- सपिप्पलीकं अपरसंस्कारकद्रव्यसमन्वितम्। *सूत्र॰ ३९९*।

सपिराश्रवत्व- लब्धिवेशषः। *स्था॰ ३३२*।

सपिल्लिय- सशिशुः। उक्त॰ *१२१*।

सपिसल्लय- सह पिसल्लयेन-पिशाचेन वर्त्तत इति सपिसल्लयः। *प्रश्न॰ २५*।

सपुज्ज- सत्पूज्यः-सन पूजार्हः। सती वा पूजा यस्य सः। *उत्त॰ २५३*।

सपुरोहडं- प्रायोग्यविचारभूमिकम्। *बृह॰ १८१* आ।

सपुव्वावर- सपूर्वावरं सह पूर्वेण-पूर्वाह्णकर्त्तव्येनापरेण च अपराह्णकर्त्तव्येन, पूर्वं यत्क्रियते स्नानादिकं तथा परं च यत्क्रियते विलेपनभोजनादिकं तेन सह वर्त्तत इति। *सूत्र॰ ३२५*। सह पूर्वं यस्य येन वा सपूर्वं, तच्च तदपरं च सपू-र्वापरः- पूर्वापरसमुदायः। *जीवा॰ २९०*। पूर्वापरसमुदायः। *जम्बू॰ ६०*। सह पूर्वेण पदपरं तत् सपूर्वापंरसङ्ख्यानम्। *जम्बू॰ ७४*। पूर्वं चापरं च पूर्वापरं सह तद् येन सः सपूर्वापरः। *जीवा॰ १३७*। सह पूर्वेणेति सपूर्वं, सपूर्वं च अपरं च सपूर्वापरं पूर्वापरमीलनम्। *सूर्य॰ २६७*। सपूर्वापरं-सङ्ख्यानम्। *जीवा॰ २१५*।

सपेहा- स्वप्रेक्षा-स्वेच्छा चक्षुः पक्ष्मनिपातः। *भग॰ १८४*।

सपेहाए- सम्प्रेक्ष्य-पर्यालोच्य। *आचा॰ १०७*। सम्प्रेक्ष्य, सम्यगालोच्य। *उत्त॰ २८१*। सम्प्रेक्षया-सम्यग् बुद्ध्या स्वपेक्षया वा। *उत्त॰ ३६४*।

सप्तधातु- रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रलक्षणः। *प्रज्ञा॰ २५*।

सप्तशतार- एतदभिधान नयचक्राध्ययनम्। *उत्त॰ ६८*।

सप्प- सर्पः इति यथोऽसावेकदृष्टिर्भवत्येवं गोचारगतेन संयमैकदृष्टिता भवितव्यमित्यर्थसूचकत्वादिति, अथवा यथा द्रागस्पृशन् सर्पो बिलं प्रविशत्येवं साधुनाऽप्यनास्वादयता भोक्तव्यमिति साधोरुपमानम्। *दशवै॰ १८*। सर्पः-सर्पप्रधाना विद्या। *आव॰ ३१८*।

सप्पएसं- सप्रदेशं, प्रदेशो निकरः, शुद्धपुद्गलसमुहमयः। *आव॰ ६६९*।

सप्पएसो- नियतदेशाभिग्रहः। *मरण॰ २०*।

सप्पखेल्लावग- सर्पक्रीडकः। *आव॰ ५३५*।

सप्पगती- गुंजालिया। *निशी॰ ७०* आ।

सप्पभ- सप्रभं-स्वरूपतः प्रभावत्। *प्रज्ञा॰ ८७*। सप्रभं-स्वरूपतः प्रभावान्। *जीवा॰ १६१*।

सप्पभा- त्रयोदशमतीर्थकृत्शीबिका। *सम॰ १५१*। स्वरूपतः प्रभावती सप्रभा। *जम्बू॰ २१*। सप्रभा-देवानन्दक-त्वादिप्रभावयुक्ताः, अथवा स्वेन आत्मना प्रभान्ति न परत इति स्वप्रभाः। *स्था॰ २३२*।

सप्पसर- सप्रसरं-अनेकधा स्फारयन्। *दशवै॰ ४४*।

सप्पसुगंधा- बीजरुहावनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४*।

सप्पसुघंधा- साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

सप्पह- सप्रभां सप्रभावां, अथवा स्वेन-आत्मना प्रभाति शोभते प्रकाशते वेति स्वप्रभम्। *सम॰ १३८*।

सप्पहासो- अतीवसहासो। *दशवै॰ १२५*।

सप्पि- सर्पी पीठसर्पी, स पाणिगृहीतकाष्टः सर्पतीति। *प्रश्न॰ १६२*।

सप्पिआस- सर्पिराश्रवः लब्धिविशेषः। *औप॰ २८*।

सप्पिवासव- सपिपासम्। *आव॰ १८९*।

सप्पिसल्लग-सप्पिसल्लकः-यः सह पिसल्लकेन पिशाचकेन वर्त्तते सः, ग्रहगृहीत इति। *प्रश्न॰ १६२*।

सप्पुरिस- किंपुरुषेन्द्रः। *स्था॰ ८५*। गान्धर्वेन्द्रविशेषः। *जीवा॰ १७४*। सत्पुरुषः दक्षिणनिकाये षष्ठो व्यन्तरेन्द्रः। *भग॰ १५८*।

सफा- वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४*।

सफाए- कुहणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

सफुसिए- प्रवृत्तप्रवर्षणबिन्दुः। *ज्ञाता॰ २४*।

सफुसिय- सोदकबिन्दुः। *भग॰ ४६८*।

सफेणगावत्त- आवत्तने फेनविनिर्गमो भवति सफेनकावर्त्तः। *राज॰ ४९*।

सबर- शबरः अनार्यविशेषः। *भग॰ १७०*। वनचरकः। *प्रश्न॰ १५*। शबरः-म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न॰ १४*। म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

सबरनिवंसणियं- शबरनिवसनकं-तमालपत्रम्। *उत्त॰ १४२*।

सबरी- शबरीः-धात्रिविशेषः। *ज्ञाता॰ ३७*। *भग॰ ४६०*। शबरी-धात्रिविशेषः। *ज्ञाता॰ ४१*।

सबल- करकर्मकरणादि, शबलभेदाः *२१*। "तंजह उ हत्थकम्मं कुव्वते *१* मेहुणं च सेवंते *२*। राइं च भुंजमाणे *३* आहाकम्मं च भुंजंते *४*।।*१*।। तत्तो य रायपिंडं *५* कीयं *६* पामिच्च *७* अभिहडं *८* छेज्जं *९*। भुंजंते सबले ऊ पच्च-क्खियऽभिक्खभुंजइ *१०* य ।।२।। छम्मासब्भंतरओ गणा-गणं संकमं करेंते *११* य। मासब्भंतरतिण्णि य दगलेवा ऊ करेमाणो *१३*। पाणाइवायउट्टिं कुव्वते *१४* मुसं वयंते *१५* य ।।४।। गिणहंते य अदिन्नं *१६* आउट्टि तह अणंतरहियाए। पुढवी य ठाणासेज्जं निसीहियं वावि चेतेइ ।।५।। एवं ससणिद्धाए ससरक्खाचित्तमंतसिललेलुं। कोलावासपहट्ठा कोल घुणा तेसि आवासो ।। ६ ।। संडसपाणसवीओ जाव उसंताणए भवे तहियं। ठाणाइ चेयमाणो सबले आउट्टिआए *१७* उ ।। ७।। आउट्टि *१८* मूलकंदे पुप्फो य फले य बीय-हरिए च। भुंजंते सबलेए तहेव संवच्छरस्संतो ।। ८ ।। दस *१९* दगलेवे कुव्व तहमाइट्ठाण दस य वरिसंतो। *२०* आउ-ट्टिय सीउदगं वग्घारियहत्थमत्ते य ।। ९ ।। दव्वीह भायणेण व दीयंतं भत्तपाण घेतूणं। भुंजइ *२१* सबलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ।।*१०*।।" *आव॰ ६५५*। सबलः-नरके चतुर्थः परमाधार्मिकः। *आव॰ ६५०*। सबलः-चतुर्थः पर-माधार्मिकः। *सूत्र॰ १२४*। सबलः-पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु चतुर्थः। *उत्त॰ ६१४*। सबलः-सदंष्ट्रदेवकृतोपसर्गनिवारकः। *आव॰ १९९*। शब्बलः-भल्लः। *प्रश्न॰ ४८*। 'सबलेति चावरे' त्ति शबल इति चापरः परमाधार्मिक इति प्रक्रमः स चान्त्रवसालृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णत्तश्च शबलः कर्बुर इत्यर्थः। *सम॰ २९*। शबलं-कर्बुरं चारित्रं यैः क्रिया-विशेषेण भवति स शबलस्तद्योगात्सुधुरपि। *सम॰ ३९*। शबलः-करकर्मकरणादिकः क्रियाविशेषः। *आव॰ ६५५*। चित्तविचित्तं। *निशी॰ ५१* आ। शबलं-कर्बुरं, द्रव्यतः पटादिभावतः सातिचारं चारित्रम्। *स्था॰ ५११*। शबलः-चित्तलः। *ओघ॰ २११*। शबलः-क्रियाविशेषः। *उत्त॰ ६१५*।

सबलत्त-शबलत्वं-श्वित्रलक्षणं सहजम्। *आचा॰ १२०*।

सबलीकरणं- शबलीकरणम्। *ओघ॰ २२५*।

सव्वभाव- सत्तां भावः सद्भावः-जीवादिस्वरूपम्। *आव॰ ५२७*। सद्भावः। परमार्थः। *दशवै॰ ७९*। सद्भावः। *दशवै॰ ४२*। सद्भावः। *आव॰ २१३*। सतो भावः सद्भावः तथ्यः।

आव॰ ७६७। सद्भावः। *आव॰ ३५७*। सद्भावः-तत्त्वं सम्यग्दर्शनम्। *ओघ॰ ४७*। तद्भावः तत्त्वं, सम्यग्दर्शनम्। *ओघ॰ ४७*।

सब्भावगिहंतर- सद्भावगृहान्तरं-गृहद्वयमध्यम्। *बृह॰ २३*।

सब्भावठवणा- यत्र पुनस्त एवाक्षास्त्रिप्रभृत एकत्र स्थाप्यन्ते तदा सद्भावस्थापना। *ओघ॰ १२९*।

सब्भावदायणा- सद्भावदायणा। *ओघ॰ २२५*।

सब्भावपच्चक्खाण- सद्भावेन-सर्वथा पुनःकरणासम्भवात्प-मार्थेन प्रत्याख्यानं सद्भावप्रत्याख्यानं सर्वसंवररूपा शैले-शीति। *उत्त॰ ५८९*।

सब्भावपयत्थ- सद्भावेन-परमार्थेनानुपचारेणेत्यर्थः पदार्था-वस्तूनि सद्भावपदार्थः। *स्था॰ ४४६*।

सब्भावसावओ- सद्भावश्रावकः। *आव॰ ८१३*।

सब्भाविय- साद्भाविकः-पारमार्थिकः निरुपचरितोऽर्थः, अहिंसादिः। *दशवै॰ ६३*।

सब्भिंतरबाहिर- सर्वाभ्यन्तरान्मण्डलात्परतः तावन्मण्डलेषु सङ्क्रमणं यावत् सर्वबाह्यं मण्डलं सर्वबाह्याच्च मण्डलाद-र्वाक् तावन्मण्डलेषु सङ्क्रमणं यावत् सर्वाभ्यन्तरमिति साभ्यन्तरबाह्यम्। *सूर्य॰ २७६*।

सब्भिंतरबाहिरियं- सहाभ्यन्तरेण मध्यभागेन बाहिरिकया च प्राकाराद्बहिर्निगरदेशेन या सा। *ज्ञाता॰ १०१*।

सब्भूत- सद्भूतः-सत्ता प्रकारेण भूतः-यतः सद्भूतः। *ज्ञाता॰ १७५*।

सब्भूयमसब्भूय- सद्भूते-परमाणौ असद्भूतं-अर्धादि *१*, असद्भूते-सर्वगात्मनि सद्भूतं चैतन्यं *२*, सद्भूते-परमाणौ सद्भूतं निष्प्रदेशत्वं *३*, असद्भूते सर्वगात्मनि असद्भूतं कर्तृ-त्वमिति *४*, सद्भूतमसद्भूतम्। *भग॰ १०५*।

सभए- नास्तिकादिसमयप्रतिपादनपरमध्ययनं समयः, सत्रकृतांगे प्रथममध्ययनम्। *सम॰ ३१*। जीवतस्स वि रण्णो बीहिगेहिं समंततो अभिदुयं जं जच्चिरं सभयं। *निशी॰ ७१* अ।

सभणय- अचलपुरीयः कौटुम्बिः। *मरण॰*।

सभयं- चोराकूलेत्पर्यः। *निशी॰ ४६* आ।

सभा- स्थानम्। *आचा॰ ४१३*। आस्थायिका। *भग॰ ४८३*। सभा। *भग॰ २३७*। भारतादिकथाविनोदेन यत्र लोकस्तिष्ठति सा सभा। *अनुयो॰ २४*। सभा। *आव॰ ३८९*। आगम-नगृहम्। *स्था॰ १५७*। सभा-महाजनस्थानम्। *प्रश्न॰ १२६*। भगवत्यां दशमशतके सुधर्म्भसभाप्रतिपादकी षष्ठोद्दे-शकः। *भग॰ ४९२*। सभा-जनोपवेशनस्थानम्। *ज्ञाता॰ ७९*। कोष्टकसभा। ओप॰ ८२। ग्रामजनसमवायस्थानम्। *व्यव॰ ३६२* आ। सभा-पुस्तकवाचनभूमिर्बहूजनसमा-गमस्थानं वा। *अनुयो॰ १५९*। ग्रामप्रधानानां नगरप्रधानां यथासुखमवस्थानहेतुर्मण्डपिका। *राज॰ २३*। बहुजनोपवे-शनस्थानं शाला वा। *बृह॰ १०७* आ। सभ्यस्थानम्। *निशी॰ ६९* आ। *भग॰ ६१७*। एकत्रोपविष्टपुरुष-समुदायः। *बृह॰ १२४* आ। प्रतिभवनविमानभाविनीसु-धर्मसभादिका। *प्रश्न॰ १३५*।

सभाओवासा- सभावकाशा। *आव॰ ६३*।

सभाव- स्वो भावः-स्वभावः। *आव॰ ५९२*। सहजभावः। *निशी॰ ५४* आ।

सभावहीणं- स्वभावहीनं यद्वस्तुनः स्वभावतोऽन्यथा वचनम्। सूत्रे एकोनविंशतितमो दोषः। *आव॰ ३७४*।

सभाविय- स्वस्मिन् भावे भवः स्वभाविकः। *सूत्र॰ ७*।

सभिक्खु- उत्तराध्ययनेषु पञ्चदशममध्ययनम्। *उत्त॰ ९*।

सभिक्खुगं- उत्तराध्ययनेषु पञ्चदशममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

सभिन्नश्रोतृत्वं- युगपत्सर्वशब्दश्रावितेत्यर्थः। ऋद्विविशेषः। *स्था॰ ३३२*।

सभूमिभाग- शतद्वारनगरस्य वायव्यकोणे उद्यानम्। *भग॰ ६८९*।

सभूयं- समीपे भूमौ। *आव॰ ३९८*।

सभोइआ- स्वाधीनभर्तुका। *बृह॰ ५७* आ।

समं- यत्र लुठनं न भवति। *ओघ॰ १२२*। तालवंशस्वरादिसभानुगतम्। *जम्बू॰ ४०*। पूर्णम्। *सूर्य॰ १०४*। तालवंशस्वरादिसमनुगतं सम्मम्। *स्था॰ २९६*। समं-पादैरक्षरैश्च समम्। *स्था॰ ३९६*। समं-पादैरक्षरैश्च समम्। *स्था॰ ३९७*। परिपूर्णः। *जीवा॰ ३२२*।

समंजरीपल्लवपुप्फचित्त- सह मञ्जरीभिः प्रतीताभिः

पल्लवैश्च-किशलयैर्यानि पुष्णाणि-कुसुमानि तैश्चित्रः-कर्बुरः मञ्जरीप-ल्लवपुष्पाचित्रः। *उत्त॰ ३००*।

समंतओ- समन्ततः-सर्वासु विदिक्षु। *प्रज्ञा॰ ३५६*। समन्ततः-सर्वासु विदिक्षु। *प्रज्ञा॰ ३५६*। विदिक्षु। *जीवा॰ १८१*। समन्ततः। *आव॰ २१६*।

समंता- समन्ततः-सामरस्त्येन। *जीवा॰ ३२७*। विदिक्षु। *औप॰ ६*। सर्वात्मप्रदेशेषु सर्वेषु वा विशुद्धस्यार्थकेषु। *नन्दी॰ ८५*। विदिक्षु। *विपा॰ ५०*।

समंतो- समन्ततः-सामस्त्येन। *जम्बू॰ ५६*।

सम- यत्र चतुर्ष्वेपि पादेषु समान्यक्षराणि। *स्था॰ ३९७*। स्थूल-न्यायमाश्रित्य त्रिंशन्मुहूर्तभोग्यं क्षेत्रम्। *स्था॰ ३६८*। समः-मध्यस्थः-आत्मानमिव परं पश्यतीत्यर्थः। *आव॰ ३२९*। रागादिरहितः। *स्था॰ ३२३*। ज्ञानदर्शनचारित्राख्यो मोक्षमार्गः। *आचा॰ २२१*। समः-रागद्वेषविरहितः। रागद्वेष-वियुक्तः। *आव॰ ८३१*। *उत्त॰ ५६७*। समं-सर्वम्। *भग॰ ८३*। समश्रेण्या समम्। *सूर्य॰ २६१*। जस्स चक्कागारो भंगो समो। *निशी॰ ५४१* अ। समः रागद्वेवियुक्तः। *आव॰ ८३१*। समः रागद्वेषविरक्तः। *उत्त॰ ५६७*। समं त्रिविधे पद्ये प्रथमम्। *दशवै॰ ८८*। सप्तसागरोपमस्थिकं देवविमानम्। *सम॰ १३*। समं-तालवृंशस्वरादिसमनुगतम्। *अनुयो॰ १३२*। रागद्वेषान्तरालवर्त्ती समः-मध्यस्थः। *आव॰ ३६४*। श्रमः-अध्वादिखेदः। *स्था॰ १३*। समं-अनुकूलम्। *सूत्र॰ ६५*। समं-तालवंशस्वरादिसमनुगतम्। *जीवा॰ १९४*। समाः-वर्षाणि। *जम्बू॰ ८९*। समः-सर्वः। *भग॰ १६७*।

समइच्छिमाणे- समतिक्रामन्। *भग॰ ४८३*।

समइय- सम्यग्-दयापूर्वकं जीवेषु गमने समयः सोऽस्या-स्तीति समयिकम्। *आव॰ ३६४*।

समए- समयः-अवसरः। *सूर्य॰ २९४*। समयः-चरकचीरि-कभिक्षुपण्डुरङ्गणां सिद्धान्तः। तृतीयः कुडङ्गः। *आव॰ ८५६*। समयः-परमनिरुद्धकालः। *स्था॰ २४*। समयः-क्षणः। *भग॰ २११*। समयः-कालः कर्मलघुतासमयः। *आव॰ ४४१*। समयः-अवसरवाची। *जम्बू॰ ३*।

समओ- समयः-अवसरः। *सूर्य॰ १*। समयः-सम्यगयनं-परिणतिविशेषः स्वभाव इति। *सूत्र॰ १*। समयः सूत्रकृता-ङ्गस्य प्रथममध्ययनम्। *उत्त॰ ६१४*। समगः-सङ्केतः। *दशवै॰ ४२*।

समकडग- समकटकं-नगरम्। *उत्त॰ ३७९*।

समकरण- माध्यस्थपरिणामः। *उत्त॰ ११५*।

समक्खित्त- समाख्यातः-निर्धारितः। *आव॰ ३१०*।

समखित्त- यावत् प्रमाण क्षेत्रमहोरात्रेण गम्यते नक्षत्रैस्ताव-त्क्षेत्रप्रमाणं चन्द्रेण 'सह' योगं यद् गच्छति तत्तत्क्षेत्र समक्षेत्रम्। *सूर्य॰ १७७*।

समखेत- त्रिशन्मुहूर्त्तभोग्यं तदानक्षत्रं। *बृह॰ १४८*। आ। समक्षेत्रम्। *आव॰ ६३४*। समक्षेत्रां-समं-स्थूलन्यायमा-श्रित्य त्रिंशन्मुहूर्तभोग्यं क्षेत्रं-आकाशदेशलक्षणं यस्य तत्। *स्था॰ ३६८*।

समगं- समकं एककालमेव। *सूर्य॰ १७२*। समकम्। *ओघ॰ १४९*।

समग्ग- समग्र युक्तः-गीतार्थः। *ओघ॰ २२२*। समग्रत्वं अही-नधनपरिवारतया। *ज्ञाता॰ १३२*। समग्रं-द्रव्यभाण्डोपकर-णादि। *सूर्य॰ २९२*।

समग्गा- समग्रा-सहिता। *जम्बू॰ ३४८*। समग्रासम्पूर्णा-आपूर्यमाणा। *जम्बू॰ २९३*।

समग्घो- समर्घः अल्पार्थः। *उत्त॰ २०९*।

समचउक्कोणसेढिय- समचतुष्कोणसंस्थितः। *सूर्य॰ ६९*।

समचउरंस- समचतुरस्रं-समं नाभेरुपरिअधश्च सकलपुरुष-लक्षणोपेतावयवतया तुल्यं तच्च-तच्चतुरस्रं च-प्रधानं समचतुरस्रम्। समाः-शरीरलक्षणोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्च-स्रोऽस्रयः यस्य तत् समचतुरस्रम्। *भग॰ ११*। समाः शरीरलक्षणशास्त्रोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयः - अन्युनाधिकाश्चतस्रोऽप्यस्रयो यस्येति पूर्ववत्। *जम्बू॰ १५*। समं-तुल्यं अधः कायोपरिकाययोर्लक्षणोपपेततया तच्च तच्चतुरस्रमिव चतुरस्रं च-प्रधानलक्षणोपपेततयैव समचतु-रस्रम्। *औप॰ १६*। समाः शरीरलक्षणशास्त्रोक्तप्रमाणावि-संवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयो यस्य तत् समचतुरस्रम्। समाः-अन्यूनाधिकाश्चतस्रोऽप्यस्रयो यत्र तत्। विस्तारोत्सेधयोः समत्वात् समचतुरस्रम्। *सूर्य॰ ४*। समाः-शास्त्रोक्तलक्ष-णाविसंवादिन्यश्चतुर्दिग्वर्तिनः अवयवरूपाश्चतस्रोऽस्रयो यत्र तत् समचतुरस्रं स्थानम्। *अनुयो॰ १०१*। तुल्यारोहपरिणाहं सम्पूर्णाङ्गावयवं

स्वाङ्गुल्याऽष्टशतोच्छ्रयं समचतुरस्रं, चतुर-स्रत्वात्तस्य चतुरस्रम्। *भग॰ ६४९*। समाः-शरीरलक्षणो-क्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयो यस्य तत् समचतुरस्रम्। *स्था॰ ३५७*। समचतुरस्रं-तुल्यं संस्थानविशेषः। *आव॰ ३३७*। समाः-शरीरलक्षणः-शास्त्रोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्च-तस्रोऽस्र यो यस्य तत् समचतुरस्रं, अस्रयस्त्विह चतुर्दिग्वि-भागोपलक्षिताः शरीरावयवाद्रष्टव्याः, अन्ये त्वाहुः समा-अन्यूनाधिकाश्चतस्रोऽप्यस्रयो यत्र तत् समचतुरस्रम्। *राज॰ ५६*। विस्तारोत्सेधयोः समत्वात् समचतुरस्रम्। *राज॰ ५७*। उच्छ्रयपरिधिभ्यां तुल्यम्। *बृह॰ २४४आ*। समाः
सामुद्रिकशास्त्रोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयः। चतुर्दि-ग्विभागोपलक्षताः शरीरावयवा यत्र तत् समचतुरस्रम्। *जीवा॰ ४२*।

समचउरससंठिया- समचतुरस्रसंस्थिता चन्द्रसूर्यस्थितौ एका प्रतिपत्तिः। *सूर्य॰ ६९*।

समचतुरंसत्तं- समचतुरस्रत्वं उर्ध्वकायाधःकाययोः समग्रस्व-स्वलक्षणतया तुल्यत्वम्। *प्रश्न॰ ८२*।

समचतुरंससंठाणं- समचतुरस्रसंस्थानं, चन्द्रादिविमानरूपाणं संस्थाने विकल्पः। *सूर्य॰ ३६*। यदुदयादसुमतां समचतुर-स्रसंस्थानमुपजायते तत् समचतुरस्रसंस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ४७२*। मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि आङ्गो-पाङ्गानि च यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत् समचतुरस्रसंस्थानम्। *समः १५०*। समं-नाभेरुपरि अधश्च सकलपुरुषलक्षणोपे-तावयवतया तुल्यं तच्च तच्चतुरस्रं च प्रधानं समचतुरस्रम्, अथवा समाः-शरीरलक्षणोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽ–स्रयो यस्य तत् समचतुरस्रम्। अस्रयस्त्विह चतुर्दिग्विभा - गोपलक्षिताः शरीरावयवाः इति, अन्वेत्वाहुः-समाः-अन्यू-नाधिकाः चतस्रोऽप्यस्रयो यत्र तत्समचतुरस्रम्, अस्रयश्च पलङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं आसनस्य ललाटोपरि-भागस्य चान्तरं दक्षिणस्कधस्य वामजानुनश्चान्तरं वामस्क-न्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरमिति, अन्ये त्वाहुः-विस्तारो-त्सेधयोः समत्वात्समचतुरस्रं तच्च तत् संस्थानं च आकारः समचतुरस्रसंस्थानम्। *भग॰ ११*।

समचक्कवालसंठिय- समचक्रवालसंस्थितः-चन्द्रादिविमान-रूपाणां संस्थाने एको विकल्पः। *सूर्य॰ ३६*।

समचित्त- समचित्तः रागद्वेषरहितचितः। *दशवै॰ ७९*।

समच्छेय- समच्छेदः। *आव॰ ६४५*।

समजाल- समज्वालः- पिठरोपरिगामि ज्वालाकलापोऽग्निः, वह्नेः षष्ठो भेदः। *पिण्ड॰ १५२*।

समजोउञ्झय- समा ज्योतिषा अग्निना भूतः समज्योतिर्भूतः। *भग॰ १६६*।

समज्जिणंसु- समर्जिवन्तः गृहीतवन्तः। *भग॰ ९३९*।

समट्ठ- समर्थः-उपपन्नः। *प्रज्ञा॰ ५९९*। समर्थः-उपपन्नः। *सूर्य॰ २६७*। *ज्ञाता॰ ६२*।

समण- यथा मन न प्रियं दुःखं प्रतिकूलत्वात्, ज्ञात्वैवमेव सर्वजीवानां दुःखप्रतिकूलत्वम्, न हन्ति स्वयं न घातयत्य-न्यैः। च शब्दाद् घ्नन्तं नानुमन्यतेऽन्यम्, इत्यनेन प्रकारेण समम्, अणति-तुल्यं गच्छति यस्तेनासौ श्रमणः। *दशवै॰ ८३*। श्रमणः-सर्वजीवेसु समत्वेन सममणतीति समणः। *अनुयो॰ २५६*। श्रमणः-साधुः। *राज॰ १२८*। श्रमणः-लिङ्गमात्रधारी। *औप॰ ७५*। श्रमणः-तपोयुक्तः। *स्था॰ ५२१*। श्रमणं-शाक्याजीवकपरिव्राट्तापसनिर्ग्रन्थानां अन्यतमम्। *आचा॰ ३१४*। समं मनोऽस्येति श्रमणः-निर्ग्रन्थः। *उत्त॰ ५२८*। श्राम्यतीति श्रमणः-तपस्वी। *आचा॰ ४०३*। श्राम्यति-तपस्यतीति श्रमणः, इदं चान्तिमजिनस्य सह सम्पन्नं नामान्तरमेव। *समः २*। श्रमणः-श्रामण्यमनुचरता धर्ममायावस्थामास्थितः। *उत्त॰ ५७१*। श्रमणः-शाक्यादिः। *स्था॰ ३१२*। श्राम्यति-तप-स्यतीति श्रमणः, सह मनसा शोभनेन-निदानपरिणामलक्ष-णपापरहितेन च तपसा वर्त्तत इति समनसः, समानं-स्वज-नपरजनादिषु तुल्यं मनो यस्य स समनसः। समिति समतया शत्रुमित्रादिष्वणति-प्रवर्त्तत इति समणः। *स्था॰ २८२*। श्रमणः-श्राम्यति-मुक्त्यर्थं खिद्यत इति साधुः। *उत्त॰ २९२*। श्रमणः-शाक्यादिः। *ओघ॰ २२३*। श्रमणः-पाख-ण्डिकः। *आचा॰ १८५*। शमनं-औषधम्। *व्यव॰ ९१अ*। श्रमणः-श्राम्यति-तपस्यति इति श्रमणः, प्रव्र-ज्यादिवसादारभ्य

सकलसावद्ययोगविरतो गुरुपदेशादनश-नादियथाशक्त्याऽऽप्राणोपरमात्तपश्चरति। *दशवै॰ २३।* श्राम्यतीति श्रमणः सममना वा। *सूत्र॰ २९८।* श्रमणः-निर्ग्रन्थादिः। *सूत्र॰ ३९।* समिति-समतया शत्रुमित्रा-दिष्वणति प्रवर्त्तत इति समणः। श्रमयति-तपस्यतीति श्रमणः। सह मनसा शोभनेन निदानपरिणामलक्षणपापरहितेन च चेतसा वर्तत इति समना, तथा समानं-स्वजनपरजना-दिषु तुल्यं मनो यस्य स समना। *स्था॰ २८२।* श्रमयि-तपसा खिद्यत इतिकृत्वा श्रमणः। समं तुल्यं मित्रादिषु मनः-अन्तः-मरणं यस्य स समनाः सर्वत्र वासीचन्दनकल्पः। *सूर्य॰ २६३।* नास्ति यस्य कश्चित् द्वेष्यः प्रियो वा सर्वेष्वेव जीवेषु यः सः सम् अणतिगच्छति इति समणः। *आव॰ ३६६।* श्रमणः-तीर्थिकः वाल इव रागद्वेषकलितः। *सूत्र॰ ३८३।* सममनाः नास्ति तस्य कश्चिद् द्वेष्यः प्रियो वा सर्वे-ष्वेव जीवेषु तुल्यमनस्त्वात्, एतेन भवति सममनाः, समं मनो यस्येति सममनाः। *दशवै॰ ८३।* शोभनं धर्मध्यानादि-प्रवृत्तं मनोऽस्येति सुमनः। *आव॰ ३६५।* श्रमणः-निर्ग्रन्थः। *सूत्र॰ १४३।* श्रमणः सममनस तथाविधवधेऽपि धर्मं प्रति प्रहितचेतता। *उत्त॰ ११४।* श्रमणः-साधुः। *भग॰ १४०।* श्रमणः-वृद्धा-वासः। *आव॰ ७९३।* 'श्रमु तपसि खेदे च'ति वचनात् श्राम्यति-तपस्यतीति श्रमणः, अथवा सह शोभनेन मनसा वर्त्तत इति समनाः, शोभनत्वं च मनसो व्याख्यात स्तव-प्रस्तावात्, मनोमात्रसत्त्वस्यास्तत्वात्, संगतं वा-यथा भवत्येवमणति-भाषते समो वा सर्वभूतेषु सन् अणति अनेकार्यत्वाद्धातूनां प्रवर्त्तत इति श्रमणः। *भग॰ ७।* योऽनि-श्रितादिगुणायुक्तः, दान्तः शुद्धो द्रव्यभूतो निष्प्रतिकर्मतया व्युत्सृष्टकायः सः श्रमणः। *सूत्र॰ २६४।* श्रमणः-ततः भवति पापमनाः, स्वजने च जने च समः समश्च मानापमानयोरिति श्रमणः। *दशवै॰ ८३।* श्रमणः तपसि। *आचा॰ ३०७।* महावीरविभोर्नाम। *आचा॰ ४२२।* श्रमणः-यथोक्तकारी। *सूत्र॰ ४२५।* श्रमणः-परिव्राजकविशेषः। *सूत्र॰ ३४।* श्रमणः-उरगसमः-परकृतविलनिवासित्वादा-हारानास्वादनात्संयमै-कदृष्टित्वाच्च, गिरिसमः-परिसह-पवनाकम्प्यत्वात्, ज्वलनसमः-तपस्तेजः प्रधानत्वात् तृणादिष्विव सूत्रार्थेष्वतृप्तिः, एषणायाशनादौ चाविशेषप्र-वृत्तेरिति, सागरसमो गम्भीरत्वाज्ज्ञानादिरत्नाकरत्वात् स्वमर्यादानतिक्रमच्च, नभस्तलसमः सर्वत्र निरालम्बन-त्वात्, तरुगणसमः-अपवर्गफलार्थिसत्वशकुनालथत्वात् वासीचन्दनकल्पत्वाच्च, भ्रमरसमः-अनियतवृत्तित्वात्, मृगसमः-धरणिसमः-सर्वस्वेदसहिष्णुत्वात्, जलरूहसमः कामभोगोद्भवत्वेऽपि पङ्कजलाभ्यामिव तदूर्ध्ववृत्तेः, रविसमः धर्मास्तिकायादिलोकमधिवृत्य विशेषेण प्रकाशकत्वात्, पवनसमः-अप्रतिबद्धविहरित्वात्, इत्थमुरगादिसमश्च यतो भवति ततः श्रमणः। *दशवै॰ ८३।* श्रमणः निर्ग्रस्थः- शाक्यादिः। *दशवै॰ १७३।* शमनं-चिकित्सा। *आव॰ ६१०।* सभावम्। *प्रश्न॰ १३६।* श्रमणः-साधुः। *भग॰ १४१।* श्राम्यति तपस्यति इति श्रमणः। *दशवै॰ ८२।* श्राम्यति तप-स्यति इति श्रमणः। प्रव्रज्यादिवसादारभ्य सकलसावद्ययो-गविरतौ गुरूपदेशादनशनादि यथाशक्त्याऽऽप्राणोपरमात्तप-श्चरति "यः समः सर्वभूतेषु, त्रसेषु स्थावरेषु च। तपश्चरति शुद्धात्मा श्रमणोऽसौ प्रकीर्तितः।" *दशवै॰ २३।*

समणग- श्रमणकः। *आव॰ ५५८।*

समणधम्म- श्रमणधर्मः-साधुधर्मः। क्षान्त्यादिकः। *आव॰ ५७२।*

समणपडिलेहिया- श्रमणप्रतिलेखिता। *दशवै॰ ४८। दशवै॰ २३।*

समणभूए- श्रमणो-निर्ग्रन्थस्तद्वद्यस्तदनुष्ठानुकरणात् स श्रम-णभूतः, साधुकल्प, एकादशमी श्राद्धप्रतिमा। *सम॰ १९।* श्रमणभूतः-श्रावकस्यैकादशमी प्रतिमा। *आव॰ ६४६।*

समणभूओ- अनुभूतवान्। *संस्ता०।*

समणवणीमत- श्रमणाः-पञ्चधा-निर्ग्रन्थाः शाक्यास्तापसा गैरिका आजीविकाश्चेति अनेऽपि तापसावनीपकादयः। *स्था॰ ३४१।*

समणविब्भंत- श्रमणो भूत्वा विविधं भ्रान्तो-भग्नः-श्रमणवि-भ्रान्तः। *आचा॰ २५४।*

समणसड्ढ- श्रमणश्राद्धः-चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते

वसन्तपुरे जिनदत्तसार्थवाहपुत्रः। *आव॰ ३९९।*

समणसमयकेउ- श्रमणसमयकेतुः, साधुसिद्धान्तचिह्नभूतः। *आव॰ ८४७।*

समणसेज्ज- श्रमणशय्या-साधुवसतिः। *आव॰ ७९५।*

समणा- सह मनसा शोभनेन निदानपरिणामलक्षणपापरहितेन च चेतसा वर्त्तत इति समनसः, तया समानं-नमो येषां ते समनसः। *स्था॰ २८२।* समना समं मनोऽस्येति भवति समं मनोऽस्येति निरुक्तविधिना समना। *अनुयो॰ २५६।* श्रमणाः-पञ्चधाः, निर्ग्रन्थाः शाक्यास्तपसा गैरिका आजीविकाश्चेति। *स्था॰ ३४२।* शक्रदेवेन्द्रस्याग्रमहिषीनां राज-धानी। *स्था॰ २३१।*

समणाणुकया- श्रमणेभ्योऽनुकम्पा श्रमणानुकम्पा। *दशवै॰ ६७।*

समणी- प्रशमनः। *आव॰ २३९।*

समणुगम्ममाण- समनुगम्यमानः-जात्यन्तर्भावेन स्वत एव सूत्रतः। *जीवा॰ १३६।*

समणुगाहि- समनुग्राह्यभावः परेण सूत्रत एव। *जीवा॰ १३६।*

समणुचिंत्तिज्जमाण- समनुचिन्त्यमानः-तथा तथा तन्त्र-युक्तिभिः। *जीवा॰ १३६।*

समणुचिन्ना- समनुचीर्णा-आसेविता। *प्रश्न॰ १०७।*

समणुण्ण- संभोतितो। *निशी॰ २३७* अ। समनोज्ञः-एकसामाचारीप्रतिबद्धः। *ओघ॰ १५६।* अणुभती। *निशी॰ ६९* आ।

समणुण्णा- पुरः कर्म्मकृतं गृह्णतामपकायविराधना अनुमतिः। *बृह॰ २८७* आ। उज्जयविहारी। *निशी॰ १५१* आ। समनोज्ञाः एकसम्भोगिका आचार्याः। *व्यव॰ ४८* आ। समनुज्ञा-तस्यैव साधोरनुज्ञा। *ओघ॰ ४४।*

समणुन्न- समनोज्ञः-साम्भोगिकः। *ओघ॰ ५४।* समनोज्ञः-उद्युक्तविहारी। *आचा॰ ४०३।*

समणुन्ना- समनोज्ञा-लोकसम्मताः उद्युक्तविहारिणः। *आचा॰ २५०।* समनोज्ञाः। *आचा॰ ३५२।* समिति-सङ्गता औत्स-र्गिकगुणयुक्तत्वेनोचिता आचार्यादितया अनुज्ञासमनुज्ञा। *स्था॰ १३९।*

समणुपेहिज्जमाण- समनुप्रेक्ष्यमाणः अनुप्रेक्षया अर्थालोचन-रूपया। *जीवा॰ २३६।*

समणुबद्ध- समनुबद्धः-अविरहितः। *प्रश्न॰ ४१।*

समणुवासिज्जासि- समनुवासयेद्-भावयेद्ञ्जयेत् सम्यग्अपु-नरागमनेनान्विति-यथोक्तानुष्ठानात्याश्चादात्मना समनुवास-येद्-अधिष्ठापयेद्। *आचा॰ १११।*

समणोवास- श्रमणोवाश्रयः साधुवसतिः। *भग॰ २८१।*

समणोवासओ- श्रमणोपासकः-श्रावकः। *आव॰ ८१८।*

समणोवासग- श्रमणान्-साधूनुपास्ते इति श्रमणोपासकः-श्रावकः। *स्था॰ २३६।*

समणोवासय- विरिष्टोपदेशार्थं श्रमणानुपासते-सेवते इति श्रमणोपासकः। *सूत्र॰ ३३६।*

समण्णागत- समन्वागतः-समनुप्राप्तः समागमनं समन्वाहारः। *स्था॰ १८८।*

समण्णेइ- समन्वेति समनुच्छति। *ज्ञाता॰ १६५।*

समतलपत्तिया- समतले द्वयोरपि भूवि विन्यस्तत्वात् पदेपादौ यस्याः सा। *ज्ञाता॰ २०९।*

समता- समशत्रुमित्रता क्वचिदरक्तद्विष्टता वा। *उत्त॰ २२५।*

समताल- समास्ताला-हस्ततालाउपचारात् तद्रवो यस्मिस्तत्समतालम्। *स्था॰ ३१६।* समतालम्। *ज्ञाता॰ २८।*

समतालपडुक्खेव- मुरजर्कासिकादिगीतोपकारकातोद्यानां ध्वनिः प्रत्युत्क्षेपः नर्तकीपदप्रक्षेपलक्षणो वा प्रत्युत्क्षेपः, समौ गीतश्वरेण तालप्रत्युत्क्षेपौ यत्र तत् समतालप्रत्युत्क्षेपम्। *अनुयो॰ १२२।*

समतिच्छमाणी- समतिक्रामन्ती। *ज्ञाता॰ १३३।* समतिक्रान्ती। *ज्ञाता॰ २१२।*

समतुरंगेमाण- समाश्लिष्यन् अन्योन्यमनुप्रविष्यन्। *भग॰ १६७।* समौ-तुल्यौ तुरङ्गस्य अश्वस्य समोत्क्षेपणं कुर्वन् समतुरंगायमानः। *भग॰ ६२। जीवा॰ ११७।* आश्लिष्यन्तः। *ज्ञाता॰ १३४।*

समतुल्ल- समतुल्यः-सदृशः। *स्था॰ ६८।*

समत्त- समस्तः-सर्वः। *औप॰ ६५।* सम्यक्त्वं- आचार-प्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कन्धस्य चतुर्थमध्ययनम्। *प्रश्न॰ १४५।* आचाराङ्गस्य चतुर्थममध्ययनम्। *सम॰ ४४।*

समत्तदंसिणो- समत्वदर्शिनः-रागद्वेषरहिताः

सम्यक्त्वदर्शिनः वा सम्यक् तत्त्वं सम्यक्त्वं तद्दर्शिनः परमार्थदृशः। *आचा॰ १४४*।

समत्तपारायण- समस्तपारायणः। *आव॰ ३००*।

समत्तमाउह- समाप्तायुधः-संपूर्णतपःप्रभृतिखड्गाद्यायुधः। *दशवै॰ २३८*।

समत्थ- समर्थः। *ओघ॰ ६६*। सङ्गतप्रयोजनः। *भग॰ १७६*। *व्यव॰ २६१* आ।

समत्थखल्लगा- उपानदसम्पूर्णे पादं स्थगयति सा समस्तख-ल्लका। *बृह॰ २२२* आ।

समत्थसद्दो- युक्तवाचकः-वीर्ययुक्त इत्यर्थः। *निशी॰ १७३* आ।

समनुज्ञा- अतः केषाञ्चिद् गुणानामभावेऽप्यनुज्ञा समग्रहगुण-भावे तु समनुज्ञा। अथवा स्वस्य मनोज्ञा-समानसमाचारी-कतया अभिरुचिता स्वमनोज्ञाः सह वा मनोज्ञैर्ज्ञानाभिरिति समनोज्ञः-एकसम्मोगिकाः साधवः। *स्था॰ १४०*।

समन्तादनुपतन्ति- प्रमत्तसंयतानामन्नपानं प्रति अनाच्छादिते सम्पातिमाः सत्वा विनश्यन्ति। *आव॰ ६१३*।

समन्नावए- समन्वागतः उद्युक्तविहारी। *आचा॰ ३५४*। समन्वागतः-समनुप्राप्तः। *जीवा॰ १२२*।

समन्नागय- समन्वागतः गुहाप्राप्तः। *जम्बू॰ ३९*।

समन्नेइ- समन्वेति समनुगच्छति। *आव॰ ३२१*।

समपज्जवसिए- समपर्यवसितः-समपर्यवसानः। *सूर्य॰ २०८*।

समपद- यत्र द्वावपि पादौ समौ नैरन्तर्येण स्थापयति तत् स्थानम्। *उत्त॰ २०५*।

समपय- समपादं-द्वावपि पादौ समं निरन्तरं स्थापयति, लोकप्रवहे पञ्चमं स्थानम्। *आव॰ ४६५*।

समपाइया- समपादिका। *स्था॰ २९९*। समपादं-योधानां चतुर्थं स्थानम्। द्वावपि पादौ समौ दक्षिणवामतो पसार्य ऊरुपसारयति यथा मध्ये मंडलं भवति अन्तरा चत्वारः पादास्तत्मंडलं द्वावपि पादौ समौ निरंतरं यतस्स्थापयति। जानुनीऊरू चातिसरले करोति तत् समपादम्। *व्यव॰ ४६* आ।

समपाद- शरीरन्यासविशेषः। *स्था॰ ३*। ओघस्थाने पञ्चमः। *आचा॰ ८९*। जं पुण तेसु चेव जाणूरुसु आयातेसु समपादट्ठितौ जुञ्झति *तन्दु॰*। *निशी॰ ९०* आ।

समपादपुता- उपवेशनविशेषः। *बृह॰ २००* अ। यस्यां समौ पादौ पुतौ च स्पृशतः सा। *स्था॰ २९९*। समौ-समतया भूलग्नौ पादौ च पुतौ च यस्यां सा। *स्था॰ ३०२*।

समपेज्जा- समाप्नुयात्। *आव॰ २९२*।

समप्पउ- समाप्यताम्। *आव॰ ३२२*। सरतु-समाप्यताम्। *आव॰ ७२३*।

समप्पभ- यत्र सप्तसागरोपमस्थितिकः देवः। *सम॰ १३*।

समप्पेंति- समाप्नुतः प्रविशतः। *जम्बू॰ २५६*।

समभर- अविषमः जलसमुदायो यत्र स समभरः सर्वथा भृतं वा समभरः। *भग॰ ८३*।

समभरघड- समं-परिपूर्णो भरो-भरणं यस्य सः समभरः-परिपूर्णभृतः सश्चासौ घटश्च समभरघटः। *जीवा॰ ३२२*।

समभिगच्छति- भवनिस्तरणकारणतया प्राप्नोति। *स्था॰ ३०६*।

समभिजाणमाण- सम्यगभियानं आसेवनापरिज्ञया आसेवमानः। *आचा॰ २८२*।

समभिजाणहि- समभिजानीहि-आसेवनापरिज्ञा समनुतिष्ठ, गुरुसाक्षिगुहितप्रतिज्ञानिर्वाहकोवः। *आचा॰ १६९*।

समभिजाणिज्जा- समभियानीयात् आसेवनपरिज्ञया आसेवेति। *आचा॰ २७८*।

समभिपडित्तते- समभिपतितुं-आक्रमितुम्। *अन्त॰ २१*।

समभियति- समागच्छन्ति। *बृह॰ ९१* आ।

समभिरूढ- समभिरूढः-वाचकं वाचक प्रति वाच्यभेदं सम-भिरोहयतिआश्रयति यः सः समभिरूढः। *स्था॰ १५३*। समभिरूढः। -दृष्टिवादे सूत्रे एकोनविंशतितम भेदः। *सम॰ १२८*। समभिरूढ-नानार्थेषु नानासंज्ञा सभमिरोहणात् समभिरूढ। *स्था॰ ३९०*। समभिरूढः-नयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२७*। समभिरूढः नानाऽर्थेषु नानासंज्ञा समभिरोहणात् समभिरूढः। *स्था॰ ३९२*। समभिरूढः-शब्दनयस्य द्वितीयो भेदः। *उत्त॰ ७७*।

समभिलति- वसहिमागच्छति। *निशी॰ १७५* आ।

समभूभाग- संकक्तादिदोषरहितः सुखविहारः क्षेत्रः समो वा। *आचा॰ २२१*।

सममागच्छइ- समं-अविषमं आगच्छति-निष्क्रामति सममागच्छति अविषमं निष्क्रामति। *भग॰ ९०*।

समय- राजसमयः-नीतिशास्त्रः। *व्यव॰ १६९* आ। समयः-अवसरः। *ज्ञाता॰ १८*। समयः- निर्द्धर्मप्रणीतः। *पिण्ड॰ ७१*। समयः-कालद्रव्यम्। *प्रज्ञा॰ ४२९*। समयः-अवसरः भिन्नमुहूर्त्तावशेषकालः। *प्रज्ञा॰ ६०६*। समयः-अहोरात्रादि-कालस्य-निर्विभाग भावः। *सूर्य॰ २९२*। समयः-सिद्धान्तः। *ओघ॰ ३६*। समयः-अवसरः। *स्था॰ २१३*। समयः-सिद्धान्तः। *ओघ॰ १२८*। समयः-सांख्यादीनां सिद्धान्तः। *स्था॰ १५१*। समयः-सिद्धान्तः। *सम॰ ११०*। समयः परमनिकृष्टकालः। *आव॰ २५७*। समय-क्षणः। *भग॰ १५१*। समयः-कालविभागः। *भग॰ ८१*। समयः-कालः। *भग॰ १४६*। समयः-तरङ्गवल्यादिकः। *दशवै॰ ११४*। समताः-माध्यस्थम्। *उत्त॰ ६३*। कालः। *भग॰ ६६*। पदातिसमाचारः। *भग॰ १९४*। समयप्रसिद्ध-पटशाटिकापाटनदृष्टान्तप्रज्ञापनीयस्वरूपः। परमनिकृष्टका-लविशेषः। समयः। *जम्बू॰ ९०*। समयः-परमनिरुद्वका-ललक्षणः। *उत्त॰ ६५७*। समयः-जैनादिसिद्धान्तः। *स्था॰ १७४*। समयः-अवसरः। *आचा॰ २८४*। अवसरवाचकता। *जम्बू॰ १५२*। समयः-विवक्षितः विशिष्टः कालः। *आचा॰ ४२५*। समयः-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे प्रथममध्ययनम्। *आव॰ ६५१*। सर्वेषां कालप्रमाणानामाद्यः परमसूक्ष्मोऽभेद्यो निरवयव उत्पलपत्रशतव्यतिभेदाद्युदाहरणोपलक्षेतः समयः। *स्था॰ ८५*। समकं-सममेव समकं-सरसविरसादिष्वङ्गा-दिविशेषरहितम्। *उत्त॰ ६१*। सामान्यतः कालः। *प्रज्ञा॰ ४४५*। समयः-आचारः। *राज॰ ११३*। समयः-सिद्धान्तः समाचारः। *प्रश्न॰ ११८*। समयः-सिद्धान्तार्थः। *प्रश्न॰ ८६*। समकं एककालम्। *ओघ॰ २०५*। स्वभावः-समता। समयः। *आचा॰ १६६*। समता-समभावः समशत्रुमित्रता। *आव॰ १५३*। समयः-आचारः- अनुष्ठानम्। *आचा॰१५३*। समयः-संकेतः प्रस्तुतभङ्गकरचनव्यवस्था। *अनुयो॰ ७६*। सभक-युगपत्-एककालम्। *दशवै॰ १२८*।

समयओ- समयतः-आचारतः आचरेण। *जीवा॰ २६०*।

समयकय- समयजं-अन्वर्थरहित समय एव प्रसिद्धम्। *पिण्ड॰ ४*।

समयक्खित्त- समयक्षेत्रं-समयः-कालस्तदुपलक्षितं समक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः। *स्था॰ २५१*।

समयखेत्त- कालोपलक्षितं क्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रम्। *सम॰ ६९*। सूर्यादिक्रियाव्यङ्ग्यः समयो नाम कालद्रव्यमस्ति तत्स-मयक्षेत्रं मानुष्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ४२९*।

समयनिबद्धं- मनसा निबद्धसङ्केतं यथा प्रतिबोधनीया वयं परस्परेणेति, समकनिबद्धां वा सहितैर्वा उपात्ता जातिस्तां देवाः अनुत्तरेणेति, समकनिबद्धां वा सहितैर्वा उपात्ता जातिस्तां देवाः अनुत्तरसुराः सन्तः। *ज्ञाता॰ १४७*।

समयपरन्ना- समयप्रतिज्ञा समाचाराभ्युपगमः सिद्धान्ताभ्यु-वगमः वाउ *११५*।

समयविरुद्ध- स्वसिद्धान्तविरुद्धम्। *अनुयो॰ २६२*। स्वसिद्धा-न्तविरुद्धम् सूत्रे चतुर्विंशतितमो दोषविशेषः। *आव॰ ३७४*।

समयशास्त्र- जैनबौद्धादिसिद्धान्तशास्त्रम्। *प्रश्न॰ ६४*।

समयसब्भाव- समयसद्भावं सिद्धान्तार्थमिति हृदमम्। *आव॰ ६०२*।

समया- समता रागद्वेषाकरणलक्षणा। *आचा॰ ३८६*। समता-सामायिकप्रथमपर्यायः। *आव॰ ४७४*।

समयासी- समदर्शी। *गच्छा॰*।

समर- समरः-जनमरकयुक्तो यः सङ्ग्रामः-रणः। *प्रश्न॰ ४३*। समरः-सममरिभिर्वर्त्तत इति समरः द्रव्यतः जनसंहारकारी सङ्ग्रामः, भावतः भावत्तु स्त्रीणामरिभूतत्वाद् ज्ञानादिजीव-स्वतत्त्वघातिनः। *उत्त॰ ५७*। समरं सम एव तदगणनया सृष्टास्पृष्टावस्थयोरसुलभा एव समन्तादरयः शत्रवो यस्मि-न्निति संग्रामशिरोविशेषणम्। *उत्त॰ ९१*। खरकुटी। *उत्त॰ ५७*। समरः-संग्रामः। *आव॰ ५५७*।

समरकणग- समरकणकः संग्रामवाद्यविशेषः। *जम्बू॰ २१२*।

समरवहिय- सङ्ग्रामे हतः। *भग॰ ३२२*।

समर्थना- भजना सेवना च। *आव॰ ३३९*।

समल्लीण- सम्यगए लीनस्तदासन्नः। *राज॰ ९*।

समवगूढ- समवगाढः संश्लिष्टः। *जम्बू॰ ३००*। *नन्दी॰ १०३*।

समवतार- शास्त्रीयोपक्रमे षष्ठः। *आव॰ ५६।* शास्त्रीयउपक्रमः। *आचा॰ ३।* शास्त्रोपक्रमे भेदः। *स्था॰ ४।* लागवार्थ प्रतिद्वारं समवतारणाद्वारेण प्रदर्शितः एव। *आव॰ ५२।*

समवया- समवया। *आव॰ ३८८।*

समवसरणं- पर्युषणम्। *बृह॰ २७७* आ।

समवसरन्ति- अवतरन्ति। *स्था॰ २६८।*

समवसृता- अवष्टब्धा। *उत्त॰ ४९३।*

समवाई- समवायः संश्लेषः एकीभावेनापृथण्णमनम्। *आव॰ २७८।*

समवाए- समवायः-मेलकः। *आचा॰ ३२८।* समवायः-गोष्ठ्यादिमेलकः। *आव॰ १२९।*

समवाय- समिति-सम्यक् वेत्याधिकेन अयनमयः-परिच्छेदो जीवाजीवादिविविधपदार्थसमार्थस्य यस्मिन्नसौ समवायः। समवयन्ति वा-समवतरन्ति समिलन्ति नानाविधा आत्मा-दयो भावा अभिधेयतया यस्मिन्नसौ समवायः। *सम॰ १।* *निशी॰ २६८* आ।

समवासितक- आसन्नः। *आव॰ ८३५।*

समसंहतं- समप्रमाणः सन् संहतः समसंहतः। *जीवा॰ २७४।*

समसण्णा- समसञ्ज्ञः-तुल्यबुद्धिः। *आव॰ ७९९।*

समसहिया- सहिताः। पिंड *४५।*

समहिट्ठाए- समधिष्ठाता गृहपतिना निक्षिप्तभरः। *आचा॰ ४०३।* समधिष्ठाता-प्रभुनियुक्तः। *आचा॰ ३७०।*

समा- समा सामुद्रिकशास्त्रोक्तप्रमाणलक्षणाविसंवादिनी। *प्रज्ञा॰ ४१२।* वरिसा। *निशी॰ ८१* आ। संवत्सराः। *व्यव॰ २५१।* शरीरलक्षणशास्त्रोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यः। अन्यूनाधिकाः। *जम्बू॰ १५।* *आव॰ १६३।* *सूर्य॰ ९५।* सामुद्रिकशास्त्रोक्तप्रमाणाविसंवादिती। *जीवा॰ ४२।* समा-उत्सर्पिणयवसर्पिणी। *आव॰ ३८।*

समाइ- समानि ज्ञानादीनि। *स्था॰ ३२३।*

समाइण्ण- समाचीर्ण-सामाचरितम्। *भग॰ २१६।*

समाइण्णा- समाकीर्णा-व्याप्ता। *उत्त॰ २५२।*

समाउट्टिंसु- समावृत्ताः-प्रहृवीभूताः। *सूत्र॰ २८०।*

समाउल- समाकुलः-सम्मिश्रः। *जीवा॰ २०८।* समाकुलः-आकीर्णः-परिबृंहितः। *उत्त॰ ४९८।*

समाएस- समादेशं विभागौद्देशिकचतुर्थभेदः। *पिण्ड॰ ७९।*

समागम- समागमः-संयोगः-एकीभवनम्। *अनुयो॰ १६१।* समागमः-परस्परं सम्बद्धतया विशिष्टौऽकपरिणामः। *अनुयो॰ ४२।* समागमः-संयोगः-एकीभवनम्। *जम्बू॰ ९०।* मीलकः। *उत्त॰ ५००।*

समागम्म- समागम्य-यद्यस्योचितं तत्तथैव ज्ञात्वा। *उत्त॰ ५०३।*

समाचारी- यतिजनेतिकर्तव्यतारूपाम्। *उत्त॰ ५३३।*

समाज- समूहः। *उत्त॰ ३५१।*

समाण-समानः-सम्भोगिकः। *आचा॰ ३५५।* दृष्टिवादेऽष्ट-विंशतिसूत्रभेदे षष्ठः। *सम॰ १२८।* आनतकल्पेऽष्टादशसा-गरोपमस्थितिकः देवः। *सम॰ २५।* सह। *उत्त॰ ४०७।* सन्। *स्था॰ ११९।* समानः-साधारणः। *स्था॰ २४३।* समाधीवान्। *निशी॰ १४६* अ।

समाणइत्ता- समाप्य-बुद्ध्यवलोकनेन समाप्तिं नित्वा। *आव॰ ७८१।*

समाणणाति- परिसमाप्तिं नयतीत्यर्थः। *निशी॰ २१०* आ।

समाणत्तं- समाज्ञप्तम्। *आव॰ ४०८।*

समाणधंमिय- प्रवचनं प्रतिपन्नः। *निशी॰ ७३* आ।

समाणा- सन्निहिता। *बृह॰ २५१* आ।

समाणितो- समानीतः समाप्तिं नीतः। *व्यव॰ ११३* आ।

समाणियं- समापितः। *बृह॰ १३९* आ। समापितम्। *उत्त॰ १६०।* परिसमाप्तिः। *आव॰ २७१।*

समाणेइ- समापयति निष्ठां नयति। *आव॰ ५२७।*

समानयति- करोति। *ओघ॰ २२७।*

समाणेउं- संपूर्य। *निशी॰ ३५१* आ।

समाणेत्ता- प्रतिपत्तिविशेषेण सन्माननयित्वा। *स्था॰ १११।*

समाणेरि- समानां। *व्यव॰ २२४* आ।

समादाण- समादानं-कर्मोपादानहेतुः। *जीवा॰ १२१।*

समादीया- समादयः-समप्रारम्भाः। *सूर्य॰ २०८।*

समादेशिकं- श्रमणानुदिश्यादेशं निर्ग्रथानधिकृत्य समादेशम्। *बृह॰ ८३* अ।

समाधिः- मात्रकम्। *आव॰ २६८।* *आचा॰ ४०९।*

समाधिप्रतिमा- प्रतिमाविविशः। *सम॰ ९६।*

समाधी- समाधानं समाधिः-समता सामान्यतो रागाद्यभावः। *स्था॰ ४७३।*

समाधीतं- सम्मं आहितं जस्स सो चितसमाहि-समाधितं

आरुहितं जहा समाहितं भारं देवदत्तो आरुहेति समाहितं घडं गेण्हइ सोभणेण पगारेणेति वा। *दशवै॰ १४७*।

समान- एकम्। *आचा॰ ५९*।

समाना- समानाः जङ्घाबलपरिक्षीणतयैकस्मिन्नेव क्षेत्रे तिष्ठन्तः। *आचा॰ ३३६*।

समाय- समवायः चतुर्थाङ्गम्। *स्था॰ ४४८*। समवायः-चतुर्थं अङ्गम्। *सम॰ ११४*। समयः कालविभागलक्षणः। *जम्बू॰ ९८*। समो रागद्वेषरहितत्वाद् आयोगमनं समायः। समानां- ज्ञानदर्शणचारित्राणामायो- लाभः समायः। *प्रज्ञा॰ ६३*। साङ्गत्येनैकीभावेन वा आयोगमनं प्रवर्त्तनं समायः समो-रागद्वेषविरहितः। स चेह प्रस्तावाच्चित्तपरिणामस्तस्मिन्नायो –गमनम्। *उत्त॰ ५६७*। समाजः-पथिकसमूहः। *उत्त॰ ६०५*। समानां-समस्यरागादिरहितस्याऽऽयो-गुणानां लाभः, ज्ञानादीनामायः समायः। *स्था॰ ३२३*। समायः-कलविभागः। *स्था॰ ७६*।

समायरिंसु- विपाकानुभावः। *भग॰ ९३९*।

समायार- समाचारः अनुष्ठानम्। *आचा॰ ६४*। समाचारः-शिष्ट जनसमाचरितः क्रियाकलापः। विशे॰ ८४१।

समारंभ- समारम्भः-उपार्ज्जनोपायः। *आचा॰ १३०*। समा-रम्भः-परितापः। *भग॰ ३३५*।

समारंभइ- समारम्भाते-परितापयति। *भग॰ १८४*।

समारंभकरण- समारम्भकरणं-पृथिव्यादि उपमर्द्दनं तस्य-कृतिः-करण स एव वा करणमित्याररम्भकरणमेव, तेषामेव सन्तापकरणण्। *स्था॰ १०८*।

समारंभति- समारंभते-उपद्रवयतः। *भग॰ ३२७*।

समारंभाविज्जा- समारंभेत-प्रवर्त्तयेत्। *दशवै॰ १४७*।

समारण- आकर्षणम्। *ओघ॰ १४४*।

समारभत- समारभतः-प्रवर्त्ततः। *उत्त॰ २४४*।

समारभिज्जा- समारभेयाः-व्यपरोपयेः। *आचा॰ १६४*।

समालद्ध- समालभ्य-परिधायः। *उत्त॰ २०८*।

समालब्भ- गृहीत्वा। *बृह॰ २५५* अ।

समालभामो- समालभामः। *आव॰ ६५*।

समालहण- समालभनम्। *दशवै॰ १०८*।

समालहेति- समानलभते। *आव॰ १२३*।

समावडियं- समापतितं-जातम्। *आव॰ ८२५*।

समावडिया- समापतिता। *उत्त॰ ८७*।

समावत्ती- समापत्तिः-भवितव्यता। *दशवै॰ ३५*। समापत्तिः-भवितव्यता। *उत्त॰ ८९*। समौ पत्ती। *आव॰ २२४*। भवि-तव्यता। *उत्त॰ ३५६*।

समावन्न- समापन्नः-युक्तः। *उत्त॰ २५१*। समापन्नः-शङ्कागृहीतः। *आचा॰ ३३२*।

समावन्नग- समापन्नकः-आश्रितः। *स्था॰ ३९*।

समास- समासः-लेखनकल्पः। *बृह॰ २६८* आ। समास-संकोचनम्। विशे॰ ६४४। समासः-सङ्क्षेपः। *दशवै॰ १५*। शोभनमसनं समासः। *आव॰ ३६४*। संखेवो पिंडार्थः। *निशी॰ ६३* आ।

समासअ- समासतः-सामान्येन। *आचा॰ ५१*।

समासिज्जंति- समस्यन्ते-प्रक्षिप्यन्ते। *नन्दी॰ २२९*।

समासेडं- संलिख्य। *बृह॰ २७२* अ।

समासोद्देश- सङ्क्षेपोद्देशः। *आव॰ १०६*।

समाहतः- शृङ्गादार्वाद्यन्तरवस्तुमयेनाङ्गुलीकोशकेन समाहतम्। *अनुयो॰ १३२*।

समाहय- समाहतः-अभिभूतः। *प्रश्न॰ ६२*।

समाहरइ- समाहरति-आनयति। *आचा॰ ३५४*।

समाहाण- समाधानं-विषयाद्यौत्सुक्यनिवृत्तिलक्षणं स्वास्थ्यम्। *अनुयो॰ १४०*। समाधानं-स्वास्थ्यम्। *आव॰ ५९३*।

समाहारा- द्वादशमा रात्री। *जम्बू॰ ४९१*। दक्षिणरूचकवास्तव्या प्रथमा दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१*। द्वादशमा रात्री। *सूर्य॰ १४७*। दक्षिणरुचकवा-स्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२२*।

समाहि- समाधिं-मरणसमाधिम्। *आचा॰ २९०*। समाधिं-इन्द्रियप्रणिधानम्। *आचा॰ २५०*। समाधिं-शरीरसमानम्। *आचा॰ ३१३*। समाधानं समाधिः-प्रशस्तभावलक्षणः। *स्था॰ ६५*। समाधिः-समाधानं प्रशान्तता। *सम॰ १७*। समाधिः-समता सामान्यतो रागाद्यभावः। *स्था॰ ४७४*। समाधिः प्रशमवाहिता ज्ञानादिर्वा। *स्था॰ १८१*। समाधिः चित्तस्वास्थ्यं-शुभचित्तैकाग्रता। *उत्त॰ २९६*। समाधिः समाधानं समाधिः-परमार्थत आत्मनो हितं सुखं स्वास्थ्यम्। *दशवै॰ २५६*। समाधिः-चेतसः स्वास्थ्यम्। *उत्त॰ ६६*।

कायकी। *निशी॰ १९४अ*। समाधानं समाधिः। *आव॰ ५०७*। समाधिः-अनाकुलत्वम्। *दशवै॰ २७६*।

समाहिए- समाहितमनः-विस्रोतसिकारहितः। *आचा॰ ३०७*। सम्यगाहितं-व्यवस्थापितम्। *आचा॰ २९२*।

समाहिओ- उपधानादिषु सदभिप्रायः। *व्यव॰ २३६*।

समाहिगय- समाधिगतः। *उत्त॰ ८९*।

समाहिजोग- समाहियोगो समाधिः-चित्तस्वास्थ्यं तत्प्रधानो योगः-शुभमनोवाक्कायव्यापारः समाधियोगः, समाधिर्वा शुभचित्तैकाग्रता योगः-प्रथमेव प्रत्युपेक्षादिको व्यापारः समाधियोगः। *उत्त॰ २९६*। समाधियोगः-ध्यानविशेषः। *दशवै॰ २४६*।

समाहिज्जइ- समाधीयते सम्यगाख्यायते। *सूत्र॰ ३२७*।

समाहिठाण- समाधिस्थानं-उत्तराध्ययनेषु षोडशममध्यय-नम्। *उत्त॰ ६*। उत्तराध्ययने षोडममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

समाहितमण- समाहितमना-समं तुल्यं रागद्वेषानाकलितं आहितं-उपनीतमात्मनि मनो येन सः। समेन वा-उपशमेन अधिकं मनो यस्य स समाधिकमनः। *प्रश्न॰ १११*।

समाहिपाण- उदरमलशोधकम्। भक्तः।

समाहिबहुल- समाधिबहुलः-चित्तस्वास्थ्यप्रचुरः। *प्रश्न॰ १२८*।

समाहिय- समाहतः-गृहीतः। *आचा॰ २८२*। समाहितः-उपयुक्तः। *आचा॰ ४३०*। समाहितः-समाधिप्राप्तः। *भग॰ ९२४*। समाहितः-बद्धः। *उत्त॰ ५०७*। समाहितः-उपश-मितः। *आचा॰ २८४*।

समाहियच्च- समाहिताच्चः, सम्यगाहिता-व्यवस्थापिता अच्चा-शरीरं येन स समाहिताच्चः नियमित्तकायव्यापार इत्यर्थः। अर्चा-लेश्या सम्यगाहिता-जनिता लेश्या येन स समाहिताच्चः अतिविशुद्धाध्यवसाय इत्यर्थः। *आचा॰ २८४*।

समाहियाण- सम्यगाहिताः तपःसंयम उद्युक्ताः समाहिताः-अनन्यमनस्काः। *आचा॰ २३३*।

समाहिवीरय- णाम- मणादीणं परिसंमणादि समाहाणमुप्प-ज्जति। *निशी॰ १९अ*।

समाही- समाधिः-गुर्वादीनां कार्यकरणेन स्वस्थतापादनम्। *आव॰ ११९*। समधिः-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे दशम-मध्ययनम्। *आव॰ ६५१*। भरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां सप्तदशमतीर्थकुन्नाम। *सम॰ १५४*। समाधिः-सूत्रकृताङ्गस्य दशममध्ययनम्। *उत्त॰ ६१४*। समाधिः। *प्रश्न॰ १४६*। समाधिः-समता। अहिंसायास्तृतीयं नाम। *प्रश्न॰ ९९*। समाधिः-चेतसः स्वास्थ्यम्। योगसङ्ग्रहे त्रयोदशम योगः। *आव॰ ६६४*। समाधानं समाधिः-चेतसः स्वास्थ्यं-मोक्ष-मार्गेऽवस्थितिः। *आव॰ ६५३*। सूत्रकृताङ्गे दशममध्ययनम्। *सम॰ ३१*।

समिंति- मिलता। *आव॰ ८४२*।

समिअ- समितः-सुप्रत्युपेक्षितादिक्रमेण सम्यक् प्रवृत्तः। *औप॰ ३५*।

समिइ- सम-एकीभावेनेतिः समितः-शोभनैकाग्रपरिणामचेष्टा। *आव॰ ६१५*। समिति, मीलनम्। *जम्बू॰ ९०*। समितिः-नैरन्तर्येण मीलनम्। *अनुयो॰ ४२*।

समिइओ- समितिकः-उत्तराध्यनेषु चतुर्विंशतितमम-ध्ययनम्। *उत्त॰ ९*।

समिइम- समितिमः भाण्डादिकः। *पिण्ड॰ ७३*।

समिई- समितिः-सम्यक्-सर्ववित्प्रवचनानुसारितया इतिः आत्मनः चेष्टा समितिः, तान्त्रिकी सञ्ज्ञा ईर्यादिचेष्टासु पञ्चसु। *उत्त॰ ५१४*। समितिः-ईर्यासमित्यादिका प्रवि-चाररूपा। *सूत्र॰ २४४*। समितिः-सम्यक्प्रवृत्तित्वः। अहिं-साया अष्टात्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*। समितिः-सम्यक्सर्व-वित्प्रवचनानुसारितया इतिः समितिः-आत्मनःचेष्टा। *उत्त॰ ५१४*। मर्यादा। *व्यव॰ २५४*।

समिए- सम्यगितः-सम्यग्भावं गता समितिभिः समितो वेति। *आचा॰ ३१०*। समितः-सम्यगितः-संयत इत्यर्थः। *आचा॰ ३२६*। सम्यग्वा इतो मोक्षमार्गे समितः। *आचा॰ १६१*। समितो-दत्तावधानः पुरतः युगमात्रभूभागन्यस्तदृष्टिगामी। *आचा॰ ४२८*। समितः-उपयुक्तः। *जम्बू॰ १०८*। समितिः-सम्यक्प्रवृत्तिः। *भग॰ १२२*।

समिओ- समितयः-प्रवीचाररूपाः पञ्च। *आव॰ ५७२*। समितः आर्यसमितः। *आव॰ ४१२*।

समिक्ख- समीक्षते पर्यालोचयति अङ्गीकुरुते वा। समैक्षिष्ट समीक्षितवान्। *उत्त॰ ३०५*। समीक्ष्य-आलोच्य। *उत्त॰ २६४*।

समिक्खति- समीक्षते-परीक्षते। *उत्त॰ १७३*।

समित- समितं उपपन्नम्। *सूर्य॰ ९२*। अट्टकः। *बृह॰ २६७*।

समितदंसण- समतामितं-गतं दर्शनं-दृष्टिरस्येति समितद-र्शनः, समदृष्टिरित्यर्थः। *आचा॰ २५६*।

समितसूरिः- पादलेपनरुपयोगदृष्टान्ते आचार्याः। *पिण्ड॰ १४२*।

समिता- कणिक्का। *निशी॰ ६३ अ*। कणिक्का। *बृह॰ २५१ अ*। समिका-उत्तमत्वेन स्थिप्रकृतितया समवती, स्वप्रभोर्वा कोपौत्सुक्यादिभावान् शमयत्युपादेयवचनतयेति शमिका, शमिता वा-अनुद्धता। चमरस्य प्रथमा पर्वत्। *भग॰ २०२*। शमिका-शक्रदेवेन्द्रस्य अभ्यन्तरिका। पर्षत्। *जीवा॰ ३९०*। समिताः-योगद्वारविवरणे सूरयः। *पिण्ड॰ १४४*। समिताः-आधायाः परावर्तितद्वारे आचार्याः। *पिण्ड॰ १००*। चमरासुरेन्द्रस्य आभ्यन्तरिका पर्षत्। *जीवा॰ १६४*। असुरकुमारस्य अभ्यन्तरा परिषत्। *स्था॰ १२७*।

समिति- समितं मर्यादाम्। *व्यव॰ २५४ अ*। समितिः-मीलनम्। *भग॰ २७६*। समितिः-बहू मीलनम्। *अनुयो॰ १६१*। समितिः-सङ्गता प्रवृत्तिः। *सम॰ ११*। समितिः सम्यक्प्रवृत्तिः। *प्रश्न॰ १०४*। समितिः-समित्यध्ययनाभि-हिता क्रिया-कायिक्याधिकरणिकीप्राद्वेषिकीपारितापनिकी-प्राणातिपातरूपा। *उत्त॰ ६१३*।

समितिमा- मण्डकाः-पूपलिका वा। *बृह॰ २५१ आ*। शुष्कमण्डकाः। *बृह॰ १२९ अ*।

समिती- समितिः कणिक्काः। *बृह॰ ४९ अ*। सम्-एकीभावेनेतिः-प्रवृत्तिः समितिः-शोभनैकाग्रमरिणामस्य चेष्टेत्यर्थः। *स्था॰ ३४३*।

समितीओ- उत्तराध्ययने चतुर्विंशतितममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

समिद्ध- समृद्धिः-पुरान्तःपुरकोशकोष्ठागारबलवानरूपाः सम्पदः। *सम॰ १२८*। समृद्धं-निष्पन्नम्। *व्यय॰ २५५*। समृद्धः धनधान्यादियुक्तः। *औप॰ १*। समृद्धः धनधान्या-दिविभूतियुक्तः। *भग॰ ७*। समिद्धः-वैश्रमणस्य पुत्रस्था-नीयो देवः। *भग॰ २००*। समृद्धः-धनधान्यादिविभूतियुक्तः। *सूर्य॰ १*। समृद्धः-सनधान्यादियुक्तः। *ज्ञाता॰ १*।

समिद्धी- समृद्धिहेतुत्वेनैषाऽपि समृद्धिः। अहिंसाया एकोनविं-शतितमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*।

समियं- सम्यक् सपरिमाणं वा। *भग॰ १०४*। सप्रमाणम्। *भग॰ १८३*। सन्ततम्। *भग॰ २५३*। समितं, पूर्णं, युगपत्। *उत्त॰ २०९*। निरन्तरम्। *स्था॰४७१*। समितं-रात्रौ दिवसस्य च पूर्वापरयाः प्रहरयोः सपरिमाणम्। *भग॰ ८३*। समितः भाषासमितः। *आचा॰ ३८६*। मण्डकः। *पिण्ड॰ ८३*।

समियदंसण- शतिमदर्शनः शमितं दर्शनं प्रस्तावन्मिथ्यान्वा-त्मकं येन सः, सम्यक् इतं-गतं जीवादिपदार्थेषु दशनं दृष्टिरस्येति सम्यग्दृष्टिः सन् समितदर्शनः। *उत्त॰ ३६४*। समितदर्शनः-सम्यग् इतं-गतं-दर्शनं यस्य स समितदर्शनः सम्यग्दृष्टिरित्यर्थः। *आचा॰ २४३*। शमितं-उपशमं नीतं दर्शनं-दृष्टिर्ज्ञानमस्येति शमितदर्शनः, उपशान्ताध्यवसाय इत्यर्थः। *आचा॰ २५६*।

समिया- शमिनो भावः शमिता-समता। *आचा॰ २९२*। सम्यक् समिता वा शमोऽस्याऽस्तीति शमी तद्भावः शमिता। *आचा॰ २०५*। सम्यक् प्रतिपन्नाः। *आचा॰ १८७*। समिता, गोधूमम्। *जम्बू॰ १०५*। समितयः, अभ्यन्तरादिपर्षदः। *जम्बू॰ २७८*। सम्यगिति प्रशंसार्थो निपातस्तेन सम्यक् ते व्याकर्त्तुं वर्त्तन्ते अविपर्यासास्त इत्यर्थः, समञ्चतीति वा सम्यञ्चः, समिता वा सम्यक् प्रवृत्तयः श्रमिता वा अभ्या-सवन्तः। *भग॰ १४०*। पिष्टम्। *निशी॰ १५१ अ*। कणिक्का। *ज्ञाता॰ २२९*।

समियाए- समितया सम्यग्वा समतया वा व्यवस्थितः। *आचा॰ ३०९*।

समियायरियो- वयरसामिमाउलो। *निशी॰ १०३ अ*।

समिरिय- समरीचि बहिर्विनिर्गतकिरणजालम्। *प्रज्ञा॰ ८७*।

समिरिया- समरीचिका- सकिरणा वस्तुस्तोमप्रकाशकरी। *जम्बू॰ २१*। सह मरीचिभिः किरणैर्ये ते तथा। *स्था॰ २३२*।

समिल्ल- द्रव्यपूतिनिरूपणे नगरम्। *पिण्ड॰ ८३।*

समिह- समिधः अश्वत्थादिवृक्षाणां प्रतिशाखाखण्डम्। *पिण्ड॰ १२९।*

समिहाउ- इन्धनभूताः काष्ठिकाः। *अन्त॰ ११।*

समिहाओ- समिधः काष्ठिकाः। *भग॰ ५२०।*

समिहाकट्ठ- समित्काष्ठं हवनोपयोगीनीन्धनानि समिधस्तद्रूपं काष्ठम्। *जम्बू॰ ३९२।*

समीकरणया- समकरणाय। *प्रज्ञा॰ ६०२।*

समीरिअ- समीरितं प्रेरितम्। *दशवै॰ २३८।*

समीहिए- समीहितः कल्पितः। *उत्त॰ २७४।*

समुआण- समुदानं भावभैक्ष्यम्। *दशवै॰ १८६।* समुदानं-उचितभिक्षालब्धम्। *दशवै॰ २५३।*

समुआणचारिया- समुदानचर्या अनेकत्र याचितभिक्षाचरणम्। *दशवै॰ २८०।*

समुइ- प्रकृतिः। *बृह॰ २९५* आ।

समुइ- देशीवचनत्वादभ्यासः। *बृह॰ २२०* आ। स्वभावः। *व्यव॰ २१६* आ।

समुइओ- व्याप्तः। *महाप्र॰।*

समुइय- समुदितं, सम्यक्प्रकारेण उदयं आप्तम्। *जम्बू॰ १७५।*

समुक्कसति- समुत्कर्षति समुत्कर्षं याति। *आव॰ ३६५।*

समुक्कसे- समुत्कर्षति गर्वमायाति। *दशवै॰ २६८।*

समुक्कसेज्जा- समुत्कर्षयेत्-धनदानादिनोत्कृष्टं कुर्यात्। *स्था॰ ११७।*

समुक्खित्त- समुत्क्षिप्तः निसर्गार्थमाकृष्टः। शरधिः। *ज्ञाता॰ २३७।*

समुग्ग- समुद्गकंतत्पिधानयः सन्धिः। *प्रश्न॰ ८०।* समुद्गकः- पक्षिविशेषः। *जम्बू॰ ११०।* समुद्गः एतदभिधानभाजनविशेषः। *औप॰ २०।* समुद्गः अविद्यमानमुद्गोऽपि कर्पूराद्याधारविशेषः। समुद्गः। *अनुयो॰ १४१।*

समुग्गका- समुद्गकाः चूलिकागृहाणि। *जम्बू॰ ४८।*

समुग्गपक्खि- समुद्गपक्षी समुद्गकारपक्षवान् पक्षिविशेषः। *उत्त॰ ६९९।*

समुग्गपक्खो- गच्छतामपि समुद्गकवत् स्थितौ पक्षौ समुद्गकपक्षौ तद्वन्तः समुद्गकपक्षिणः। *प्रज्ञा॰ ४९।* गच्छतामपि समुद्गकवत्स्थितौ पक्षौ तद्वान् समुद्गकपक्षी। *जीवा॰ ४१।* समुद्गकवत् पक्षौ येषां ते समुद्गकवत् पक्षौ येषां ते समुद्गकपक्षिणः। *स्था॰ २७३।*

समुग्गय- समुद्गकः-भाजनविशेषः। *सम॰ ६४।* समुद्गकं-संपुटरूपभाण्डम्। *जम्बू॰ ५३३।* समुद्गकः-सूतिका-गृहम्। *जीवा॰ २०४।* समुद्गकः पक्षिविशेषः। *जीवा॰ २७०।* समुद्गकः शूचिकागृहम्। *राज॰ ६२।*

समुग्घात- समुद्घातः शरीराद्बहिर्जीवप्रदेशप्रक्षेपः। *स्था॰ २८८।*

समुग्घाय- हननं-घातः सम्-एकीभावेन उत्-प्राबल्येन ततश्चैकीभावेन प्राबल्येन च घातः। समुद्घातः। *भग॰ १२९।* समुद्घातः-प्रज्ञापनायाः षट्त्रिंशत्तमं पदम्। *प्रज्ञा॰ ६।* सम्-एकीभावेन उत्-प्राबल्येन घातः समुद्घातः। *जीवा॰ १७।* समुद्घातः-जीवव्यापारः। *ज्ञाता॰ ३४।* मारणान्तिकस-मुद्घातः। *भग॰ ९६३।* त्रयोदशशतके समुद्घातप्रतिपादनार्थो दशमोद्देशकः। *भग॰ ५९६।*

समुग्घायपद- समुद्घातपदं, प्रज्ञापनायाः षट्त्रिंशत्तमं पदम्। *भग॰ १२९।*

समुच्चयबंध- सङ्गतः-उच्चयापेक्षया विशिष्टतर उच्चयः समुच्चयः स एव बन्धः समुच्चयबन्धः। *भग॰ ३९५।*

समुच्छद- समिति सामस्त्येन निरन्वयात् उदिति-उर्द्ध क्षणा-दुपरी भवनात् छेदो-नाशः समुच्छेदस्तं वेत्ति तत्त्वधियेति समुच्छेदः। *उत्त॰ १५२।*

समुच्छय- समुच्छ्रयं-अन्तः कार्मणशरीरं बहिरौदारिकम्। *उत्त॰ २५४।*

समुच्छा-प्रसूत्यनन्तरं सामस्त्येन प्रकर्षच्छेदः विनाशः। *आव॰ ३११।*

समुच्छिन्नकिरिए- समुच्छिन्ना क्षीणा क्रिया-कायिक्यादिका शैलेशीकरणे निरुद्धयोगत्वेन यस्मिंस्तत्तथा समुच्छिन्नक्रिया। *औप॰ ४४।* समुच्छिन्ना-क्षीणा कायिक्यादिका क्रिया शैलेशीकरणे निरुद्धयोगत्येन अस्मिंस्तत्तथा। *स्था॰ १९१।*

समुच्छिया- समुक्षिका- प्रातर्गृहाङ्गणे जलच्छटकदायिका। *ज्ञाता॰ ११७।* *उत्त॰ ४९२।*

समुच्छिहिति- समुच्छेत्स्यति सम्यग्-निरवशेषतया उच्छे-त्स्यति-उच्छेदं यास्यति-क्षयं प्राप्स्यतीति सामस्त्येनोत्-प्राबल्येन सेत्स्यति वा सिद्धिं यास्यति।

सूत्र० ३७३।

समुच्छे- समुच्छिन्द्यात् अपनयेत। *सूत्र० ६५।*

समुच्छेदवाती- समुच्छेदं-प्रतिक्षणं निरन्वयनाशं वदति यः स समुच्छेदवादी। *स्था० ४२५।*

समुज्जया- समुद्यता-उत्पादिता। *व्यव० ३५२ अ।*

समुज्झुतो- समुद्युक्तो-अप्रमादी। *व्यव० १३१ आ।*

समुट्ठाई- समतिष्ठते अभ्युद्यतमनुष्ठानं करोति। *आचा० १०१।*

समुट्ठाण- सम्यक् सङ्गतं प्रशस्तं वोत्थानं समुत्थानम्। *आव० ३७८।*

समुट्ठाणसुय- समुपस्थानं-भूयस्तत्रैव वासनं तद्धेतुः श्रुतं समुपस्थानश्रुतम्। *नन्दी० २०७।*

समुट्ठाय- सम्यगुत्थाय-अभ्युपगम्य। *आचा० ५४।* समुत्था-यप्रतिपद्य। *आचा० ११३।*

समुट्ठिए- सम्यक् सततं सङ्गतं वा संयमानुष्ठानेनोत्थितः, नानाविधशस्त्रकर्म्मसमारम्भोपरतः समुत्थितः। *आचा० १३०।*

समुट्ठिय- समुत्थितः-सञ्जातः। *उत्त० ५४३।* समुद्धतं-उत्क्षिप्तम्। *प्रश्न० ७६।* समवस्थितः-आश्रितः। *जीवा० २०७।* समवस्थितः-आश्रितः। *जम्बू० ५२।*

समुता- मंडवगोत्रे द्वितीयो भेदः। *स्था० ३९०।*

समुत्तइओ- गार्वितः। *पिण्ड० १३४।*

समुत्थाय- उत्पद्य, कथञ्चिद्भूत्वा वा। *आव० २४२।*

समुदय- समुदयः-समुदायः, उदयवर्तित्वं वा। *प्रश्न० ६३।* समुदयः, सम्यगुदयः। *जम्बू० १८४।* समुदायः वृन्दम्। *भग० २७६।* समुदयः वृन्दम्। *जम्बू० ९०।*

समुदाचार- समुदाचारः-समाचारः स प्रमोदो वाऽऽचारः। *भग० ५६०।* समुदाचारः-समाचारः। *विपा० ४८।*

समुदाण- समुदान समग्रमुपादानं। *आव० ६१४।* समुदानं भैक्ष्यम्। *अनुत्त० ४।* समुदानं-भैक्षम्। *भग० १३९।* समुदान-भैक्ष्यम्। *प्रश्न० १०६।* सुलभप्रायोग्यद्रव्यम्। *बृह० २ आ।* भिक्खा। *निशी० ११४ आ।*

समुदाणकम्म- प्रयोगकर्मणैकरूपतया गृहितानां कर्मवर्गणानां सम्यग्मूलोत्तरपकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशबन्धभेदेनाङ्-मर्या-दया देशसर्वोपघातिरूपतया तथा स्पृष्टनिधत्तनिकाचिताव-स्थया च स्वीकरणं समुदानं तदेव कर्म समुदानकर्म। *आचा० ९४।*

समुदाणकिरिया- समुदानक्रिया-यत्कर्म प्रयोगगृहीतं समुदा-यावस्थं सत्प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशरूपतया यया व्यव-स्थाप्यते सा। *सूत्र० ३०४।* समुदानक्रिया-कर्म्मोपादानम्। *स्था० ३१७।* प्रयोगक्रिययैकरूपतया गृहीतानां कर्म्मवर्ग्ग-णानां समिति सम्यक् प्रकृतिबन्धादिभेदेन देशसर्वोपघाति-रूपतया च आदानं स्वीकरणं समुदानं निपातनात्तदेव क्रिया-कर्म्मेति समुदानक्रिया। *स्था० १५३।*

समुदाणिंतो- भिक्षयन्-भिक्षां भ्राम्यन्। *आव० ४३४।*

समुदाणिय- समुदानानि-भिक्षास्तेषां समुहः-समुदानिकम्। *उत्त० ४३६।*

समुदान- भिक्षणः। *स्था० २१३। व्यव० ३३० अ।*

समुदायाणिज्जइ- थोवंथोवं पडिवज्जइ। *दशवै० ८६।*

समुदायारं- समुदाचारः-आचारः। *आव० ७१०।* समुदा-चारः-यत्किञ्चननुष्ठानम्। *सूत्र० ३२९।*

समुद्गपक्षी- खचरतिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिये तृतीयो भेदः। *सम० १३५।*

समुद्घात- सम्यक्-समन्ततः उत्-प्राबल्येन हननं-इत श्चेतश्चात्मप्रदेशानां प्रक्षेपणं समुद्घातः। *आचा० ८५।* शरीराद्वहिर्जीवप्रदेशप्रक्षेपलक्षणम्। *भग० ३९९।* सम्-एकी-भावेनोत्-प्राबल्येन च घातं-निर्जरणं समुद्घातः। *सम० १२।*

समुद्घोषाः- जैनाचार्याः। *पिण्ड० ९९।*

समुद्द- समुद्रः नागादिनामासमुद्रः। *जीवा० ३२१।* समुद्रः-अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। *अन्त० १।* समुद्रः अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य तृतीयमध्ययनम्। *अन्त० ३।* समुद्रः। *प्रज्ञा० ७१। स्था० ८६।*

समुद्दगंभीरसमा- गाम्भीर्येण-अलब्धामध्यात्मकेन गुणेन समा गाम्भीर्यसमाः समुद्रस्य गाम्भीर्यसमाः समुद्रगाम्भीर्यसमाः। *उत्त० ३५३।*

समुद्ददत्त- चतुर्थवासुदेवपूर्वभवनाम। *सम० १५३।* समुद्रदत्तः मायोदाहरणे पूर्वभवे धनपतिः। साकेतपुरेऽशोकदत्तेभ्युपुत्रः। *आव० ३९४।* समुद्रदत्तः-पुरुषोत्तमवासुदेवपूर्वभवः। *आव० १६३।* समुद्रदत्तः-

सौर्यपुरे मत्स्यबन्धः। *विपा॰ ७९।*

समुद्ददत्ता- समुद्रदत्ता सौर्यपुरे समुद्रदत्तमत्स्यबन्धभार्या। *विपा॰ ७९।*

समुद्दनाम- समुद्रनाम नारायणवासुदेवधर्माचार्यः। *आव॰ १६३।* अष्टमवासुदेवस्य धर्माचार्यः। *सम॰ १५३।*

समुद्दपालिज्ज- समुद्दपालीयं-उत्तराध्ययनेषु एकविंशतितम-मध्ययनम्। *सम॰ ६४। उत्त॰ ९०९।*

समुद्दलिक्खा- समुद्रलिक्षा-समुद्रोद्भवा लिक्षा। *जीवा॰ ३१।* द्वीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१।*

समुद्दवायस- चर्मपक्षीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९। भग॰ ६२७।* समुद्रवायसः चर्मपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१।*

समुद्दविजए- चतुर्थचक्रीपिता। *सम॰ १५२।* समुद्रविजयः-मघवपिता। *आव॰ १६२।* नेमिनाथपिता। *सम॰ १५१।* समुद्रविजयः-नेमिनाथपिता। *आव॰ १६१।* समुद्रविजयः-सौर्यपुरनृपतिः। *उत्त॰ ४८९।*

समुद्दविजओ- समुद्रविजयः शौचोदाहरणे शौर्यपुरे राजा। *आव॰ ७०५।*

समुद्दविजय- द्वारवत्यां दसाईः। *ज्ञाता॰ २०७।* दशार्हमुख्यः। *ज्ञाता॰ ९९।* समुद्रविजयः दशार्हविशेषः। *अन्त॰ २।*

समुद्दा- समुद्राः। *अनुयो॰ १७१।*

समुद्दिट्ठ- समुद्दिष्टम्। *आ॰ ८५७।* समुद्दिष्टः-भक्तः। *उत्त॰ १०८।* समुद्दिष्टः भुक्तः। *आव॰ ५३६।*

समुद्दिट्ठा- सिद्धाः। *आव॰ ७२७।*

समुद्दिसण- समुददीशनम्। *ओघ॰ ८१।*

समुद्दिसिउं- समुद्देष्टुम्। *आव॰ ८५९।* समुद्देष्टुं-अत्तुम्। *आव॰ ११५।*

समुद्दिस्स- समुद्दिश्य-आश्रित्य। *उत्त॰ २७२।* समुद्दिश्य-आश्रित्य। *आचा॰ २७१।*

समुद्देस- समयप्रसिद्धं साङ्केतिकं नाम। *पिण्ड॰ ६। प्रज्ञा॰ ४४७।*

समुद्देशकम्मं- द्वादशविधे विभागोद्देशके यः चरमत्रिकं तत्र प्रथमः। *बृह॰ ८३* अ।

समुद्देशनाचार्यः- सूत्रस्य समुद्देशनाचार्यः। *स्था॰ २९९।*

समुद्देशिक- पाषंडिन उद्दिश्य क्रियमाणं समुद्देशम्। उद्दिष्टं कृतं कर्म्म च-उद्दिष्टचतुर्विधमौदेशिकं समुद्देशिकम्। *बृह॰ ८३।*

समुद्देसो- समुद्देशः- व्याख्या अर्थप्रदानम्। *व्यव॰ २६* अ। *निशी॰ २५६* आ। सामण्णेणं पासहीणं। *निशी॰* पह॰ *२३०* आ। विसेसओ समुद्देसो, जहा अमुगगणिस्स दाहामो वायगस्स वा। *निशी॰ १०८* अ। स्थिरपरि-चितं कुर्विदमिति गुरुवचनविशेषः एव समुद्देशः। *अनुयो॰ ४।*

समुद्देसणायरिय- सूत्रस्य समुद्देशनाचार्यः। *दशवै॰ ३१।*

समुद्देसिय- समुद्देशिकं विभागौद्देशिके द्वितीयो भेदः। *पिण्ड॰ ७९।*

समुद्धायमाणक- उद्वावनं-प्रहाराय मसुत्तिष्ठन्। *प्रश्न॰ ५१।*

समुद्धारो- अण्णुण्णा। *निशी॰ ८९* अ।

समुद्दः- सह मुद्रया-मर्यादया वर्तत इति समुद्रः प्रचुरजलोप-लक्षितः क्षेत्रविशेषो वा। *अनुयो॰ ९०।*

समुद्दविजयः- वसुदेवज्येष्ठभ्राता। *प्रश्न॰ ९०।* अन्धकवृष्णिः। *दशवै॰ ९७।*

समुन्नइओ- माणाभिभूतो। *निशी॰ १००* आ।

समुपस्थान- भूयस्तत्र वासनम्। *नन्दी॰ २०७।*

समुपेहिआ- संप्रेक्ष्य सम्यग्दृष्टया। *दशवै॰ २२३।*

समुप्पण्ण- समुत्पन्नं-लब्धसत्ताकं जातम्। *जम्बू॰ २७७।*

समुप्पेहमाण- सम्यगुत्प्रेक्षमाणं पश्यतो अनित्यताघ्रातमिदं शरीरमित्येवमनवधारयन्। *आचा॰ २०६।*

समुब्भूय- सम्मुखभूतां एकहेलोत्पन्नम्। *स्था॰ १८७।*

समुयाण- समुदानं-भक्षम्। *ज्ञाता॰ १८८।* समुदानं-भिक्षाम्। *ओघ॰ ७९।*

समुयाणकिरिया- समुदानक्रिया-विंशतिक्रियामध्ये सप्तदशम। समुदायोऽष्टकर्माणि, तेषां यथोपादानं क्रियते सा समुदान-क्रिया। *आव॰ ६१२।*

समुयाणिअ- भिक्षातिचारः। *ओघ॰ १७५।*

समुल्लासिया- प्रहरणविशेषः। *ज्ञाता॰ २३९।*

समुवट्ठिया- समुपस्थिता-उभयत्र पद्यता। *उत्त॰ ५१२।*

समुविंति- समुपयान्ति प्राप्नुवन्ति, उत्पद्यन्ते। *दशवै॰ २४७।*

समुविट्ठ- सम्यक्-परस्परानाबाधया उपविष्टः समुपविष्टः। *जीवा॰ १९४।*

समुवेक्खमाण- समुत्प्रेक्षमाणो-निरूपयन्-व्यापारयन्। *ज्ञाता॰ ११।*

समुव्वहन्त- समुद्वहन् कुर्वन्। *अनुयो॰ १३१।*

समुसरणं- समवसरणम्। *आव॰ १५७।*

समुस्सय- समुच्छ्रयः-संघातः। *दशवै॰ १९८।* समुच्छ्रयं-शरीरकं कर्म्मोपययं वा। *आचा॰ १९३।*

समुस्सिणोमि- समुच्छ्रणोमि- आदेरारभ्यापूर्वं करोमि संसारं वा करोमीत्येवं प्राञ्जलिस्वनतोत्तमाङ्गः सन् अनशनादिन निमन्त्रयेत्। *आचा॰ २७१।*

समुहागय- परस्परसंमुखस्थितः। सन्मुखागतः। *जीवा॰ १९४।*

समुहिया- श्वमुखिका-कौलेयकः। *भग॰ ६७३।*

समूलडाल- समूलशाखम्। महाप॰।

समूहणंग- समूषणकंत्रि कटुकं तस्याङ्गं-सुण्ठीपिप्पलीमरीच-द्रव्यम्। *उत्त॰ १४२।*

समूसवियं- समुच्छ्रितं हर्षातिरेकादूर्ध्वीकृतम्। *प्रश्न॰ ४९।*

समूसिय- समुच्छ्रितका उद्धर्वीकृतः। *प्रश्न॰ ५१।*

समूहति- परिभावयति। *व्यव॰ १५०* अ।

समृद्धः-चूर्णद्वारविवरणे सुस्थितसूरिशिष्यः। *पिण्ड॰ १४३।* समृद्धं-ऋद्धिविशेषकारणम्। *स्था॰ २४७।*

समेमाणा- शाम्यन्तो-गार्ध्येनात्यर्थमासेवां कुर्वन्तः। *आचा॰ १८०।*

समेमाणे- समागच्छन्। *आचा॰ २६५।*

समोअर- सम्यग्-अविरोधेनावरणं-वर्तनं समतारोऽविरो-धवृत्तिता। *अनुयो॰ ५९।*

समोच्छुओ- समास्तृतः व्याप्तः। *आव॰ ३४६।*

समोत्यरंत- समवस्तृणं-महीपीठमाक्रामन्। *ज्ञाता॰ २५।*

समोभंगो- हीरविरहितः। *निशी॰ १४१* अ।

समोयार- समवतारः प्रतिद्वारमधिकृताध्ययनसमवतार-लक्षणः। *स्था॰ ५।* समावतारः-योजना। *पिण्ड॰ ७६।*

समोसढ- साधूचित्तचवग्रहः। *ज्ञाता॰ ३९।* समवसृतः-आगतः। *आव॰ ८१९।* समवसृतः-स्थितः-धर्मदेशनार्थं वा प्रवृत्तः। *दशवै॰ १९१।* समवसृतः। *आव॰ ३९२।*

समोसरण- समवसरणं-वसतिः। *औप॰ ६१।* जिनस्नपनर-थानुयानपट्टयात्रादिषु यत्र बहवः साधवो मिलन्ति तत्सम-यसरणम्। *सम॰ २३।* समवसरणं-आगमविचाररूपम्। *सूत्र॰ ३४१।* समवसरणं-त्रयाणां त्रिषष्ठ्यधिकानां प्रवा-दिशतानां मतपिण्डनरूपम्। *सम॰ ३२।* सम्यग्यात्रावगाह-नान्नत्र तत्रमिलितानां समवसरणं कुलगणसङ्घान्यतमस मवायः। *बृह॰ ६१* आ। ण्हाणं। *निशी॰ २३९* आ। समवसरणं-सम्यग् एकत्र गमनम्। *ओघ॰ १४६।* समव-सरणं-विविधमतमीलकः। *स्था॰ २६८।* समवसरणं-स्नात्रादि। *ओघ॰ ५४।* समवसरणः-साध्वागमः। *आव॰ ५७७।* समवसरणं-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे द्वादशममध्य-यनम्। *आव॰ ६५१।* *ओघ॰ १६१।* समवसरणः-सूत्रकृ-ताङ्गस्य द्वादशममध्ययनम्। *उत्त॰ ६१४।* साधुसमुदाय-विषयः। *पिण्ड॰ ९१।* समवसरणं-बहूनामेकत्र मीलनम्। *राज॰ १३३।*

समोसरणा- समवसरन्ति नानापरिणामा जीवाः कथञ्चित-तुल्यतया येषु मतेषु तानि समवसरणानि, समवसृतयो वाऽन्योन्यभिन्नेषु कथञ्चित्तुल्यत्वेन क्वचित्केषाञ्चिद्वादिनाम-वतारः समवसरणानि। *भग॰ ९४४।*

समोसियग- प्रातिवेश्मिकः। *निशी॰ १४* अ। *निशी॰ २११* आ।

समोसीइयं- समवसृतम्। *आव॰ ३६७।*

समोहए- समवहतः-कृतमारणान्तिकसमुद्घातः। *भग॰ ७३०।*

समोहणंति- समुपहन्यते-समुपहतो भवति समुपहन्ति वा-क्षिपति प्रदेशानिति गम्यते व्यापारविशेषपरिणतो भवतीति भावः। *ज्ञाता॰ ३१।* भज्जंति। *निशी॰ १३३* आ।

समोहणइ- समुपहन्यते समुपहता भवति समुपहन्ति वा प्रदे-शान् वा विक्षिपति। *भग॰ १५४।* समवहन्यते समवहतो भवति। *जीवा॰ २४३।*

समोहन्नइ- समवहन्ति-समुद्रघाताय प्रयतते। *प्रज्ञा॰ ६०२।*

समोहया- समुद्घाते वर्तमानाः कृतदण्डाः। *भग॰ ७६४।*

सम्पन्नजोव्वण- मातृपितृपरिपालनामपेक्षन्तः। *सम॰ ७०।*

सम्पानक- पूपः। *आव॰ ४५८।*

सम्पूर्ण-कृत्स्नम्। आय॰ ५००।

सम्बध्नति- गृह्यमाणतयैव स्पृशति। *उत्त॰ २२६।*

सम्बाध- यात्रासमागतप्रभूतजननिवेशः। *राज॰ ११४।*

सम्बुद्धि- आमन्त्रणी। *अनुयो॰ १३४।*

सम्भवन्तः- वर्त्तमानः। *आचा० २५२।*

सम्भवानुमान- अनुमानविशेषः। *आचा० २३।*

सम्भोग- सं-एकीभूय समानसमाचारणां साधूनां भोजन सम्भोगः। *सम०२२।*

सम्भोगार्थ- नाम यत्रोपसम्पन्नस्ततोऽपि विसम्भोगकारणे सदनलक्षणे सत्यप्रकामतीति। *स्था० ३८२।*

सम्मं- वीतरागोक्तेन विधिना सम्यग्। *दशवै० २५७।* सम्यग्-प्रशंसार्थः। समञ्चति जीवादीनवैपरित्येनावगच्छतीति सम्यक्। *उत्त० १५१।* सम्यग्भावं विनयमित्यर्थः *स्था० ३९९।* सम्यग्-यथौचित्यम्। *स्था० ३३२।* समञ्चतीति सम्यक्-अविपरीतम्। मोक्ष-सिद्धिं प्रतीत्यानुगुणमित्यर्थः। *स्था० १५९।* शर्मः। *अनुयो० १४६।* सम्यक्-अविपरीत्तम्। *नन्दी० १०६।*

सम्मं उवउत्त- सम्यगुपयुक्तः-यः पूर्वापरानुसन्धानपाटवोपेतः श्रुतज्ञानेन पर्यालोच्यार्थान् भाषते स। *प्रज्ञा० २५२।*

सम्मं बुद्ध- सम्यग्बुद्धः-अविपरीतबोधवान्। *उत्त० ४४६।*

सम्मइ- स्वकीयमतिः-स्वमतिः। *आचा० २०।*

सम्मओ- सन्मृतः। महाप०।

सम्मट्ठ- कचवरापनयनेन समृष्टम्। *जीवा० २४६।*

सम्मत- आधायाः प्रामित्यद्वारविवरणे देवराजपुत्रः। *पिण्ड० ९८।*

सम्मति- आधायाः प्रामित्यद्वारविवरणे देवराजदारिका। *पिण्ड० ९९।*

सम्मत्त- सम्यक्त्वं-सामायिक-द्वितीयपर्यायः। *आव० ४७४।* सम्यक्त्वं-मिथ्यात्वमोहनीयक्षयोपशमादिसमुत्थो जीवप-रिणामः। *प्रश्न० १३२।* सम्यक्त्वं-सम्यग्बोधिरूपम्। *प्रश्न० १०३।* सम्यकत्वसमत्वम्। *आचा० २७८।* सम्यक्त्व-प्रज्ञापनायामेकोनविंशतिमं पदम्। *प्रज्ञा० ६।* सम्यक्त्वं-आचाराङ्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। *उत्त० ६१६।* सम्यक्त्वं अचलं विधेयं, न तापसादीनां कष्टतपःसेविनामष्टगुणैश्वर्य-मूद्वीक्ष्य दृष्टिमोहकार्य इति प्रतिपादनपरं सम्यक्त्वम्। *स्था० ४४४।*

समत्तकिरिया- सम्यक्त्वक्रिया-सम्यग्दर्शनयोग्याः कर्मप्रकृतीः सप्तसप्ततिसङ्ख्या यया बध्यति सा। *सूत्र० ३०४।*

सम्मत्तपज्जव- सम्यक्त्वपर्यवः-सम्यक्त्वरूपपरिणामविशेषः। *ज्ञाता० १७६।*

सम्मत्तवेदणिज्ज- जिनप्रणीततत्त्वश्रद्धानात्मकेन सम्यक्त्व-रूपेण यद्वेद्यते तत्सम्यक्त्ववेदनीयम्। *प्रज्ञा० ४६८।*

सम्मत्तसद्दहण-सम्यक्ततत्त्वश्रद्धानं परमार्थसंस्तवादिभिः सम्यक्त्वमस्तीति श्रद्धीयत इत्यर्थः। *प्रज्ञा० ६०।*

सम्मत्ताभिगमी- सम्यक्त्वाधिगामी-सम्यक्त्वप्राप्तवान्। *प्रज्ञा० ५४७।*

सम्मत्ताराहणा- अहिंसायाश्चतुर्दशं नाम, सम्यक्त्वं-सम्यग्बो-धिरूपमाराध्यते यया सा सम्यक्त्वाराधना। *प्रश्न० ९९।*

सम्मदिट्ठी- सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः, सम्यग् अविपरीता दृष्टिः। योगसङ्ग्रहे द्वादशसमयोगः। *आव० ६६४।* सम्यग्-अविपरिता दृष्टिः-जिनप्रणीतवस्तुतत्त्वप्रतिपत्तिर्यस्य स सम्यग्दृष्टिः। *जीवा० १८।*

सम्मद्दंसण- सम्यग्दर्शनं-मिथ्यात्वमोहनीयकर्माणुवेदनोपश-मक्षयोपशमसमुत्थ आत्मपरिणामः। *भग० ३५०।*

सम्मद्दिट्ठिया- सम्यग्-अविपरीता दृष्टिः-दर्शनं-रूचिस्त-त्त्वानि प्रति येषां ते सम्यग्दृष्टिः। *स्था० ३०।*

सम्मद्दिट्ठी- सम्यक्-अविपरीता दृष्टिः-जिनप्रणीतवस्तुप्रति-पत्तिर्येषा ते सम्यग्दृष्टी। *नन्दी० १०५।* सम्यग्-अविपरिता दृष्टिः-जिनप्रणीतवस्तुतत्त्वप्रतिपत्तिर्यस्य स सम्यग्दृष्टिः,स चान्तरकरणकालभाविना औपशकिसम्यक्त्वेन सास्वादन-सम्यक्त्वेन विशुद्धदर्शनमोहपुञ्जोदयसम्भवति क्षयोपशमिक-सम्यक्त्वेन सकलदर्शनमोहनीयक्षयसमुत्थक्षायिकसम्य-क्त्वेन वा द्रष्टव्यः। *प्रज्ञा० ३८७।*

सम्ममणुप्पवातित्ता- सम्यगनुप्रवाचयिता पाठयति। *स्था० ३०१।*

सम्ममिच्छदिट्ठि- सम्यक् च मिथ्या च दृष्टिर्येषां ते सम्यग्मि -थ्यादृष्टयः, येषामेकस्मिन्नपि च वस्तुनि तत्पर्याये वा मति-दोर्बल्यादिना एकान्तेन सम्यक् परिज्ञानमिथ्याज्ञानाभावतो न सम्यक्श्रद्धानं नाप्येकान्ततो विप्रतिपत्तिः ते सम्यग्मिथ्या -दृष्टयः। *नन्दी॰ १०६।*

सम्ममिच्छदिट्ठी- सम्यग्मिथ्यादृष्टिः-सम्यक्त्वं प्रतिपद्यमानः प्रायः सञ्जाततत्त्वरूचिः, भूतग्रामस्य तृतीयं गुणस्थानम्। *आव॰ ६५०।*

सम्मय- सम्मतम्। *स्था॰ ४८९।*

सम्मयसच्चा- सम्मतसत्या या सकललोकसाम्मत्येन सत्य-तया प्रसिद्धा। *प्रज्ञा॰ २६५।*

सम्मसुय- सम्यक्श्रुतं-भावश्रुतम्। *उत्त॰ ३४३।*

सम्मा- तेहिं वंदणादीहि वत्थपत्तादी य जो सव्वपगारेण कीरइ सो वा। *दशवै॰ ८८।* सन्मानः-पादप्रक्षालनादिकः। *ओघ॰ ७०।* सन्मानः-अभ्युत्थानादिः। *उत्त॰ ६६८।* सन्मानः-वस्त्रपात्रादिपूजनम्। *स्था॰ ४०८।* सन्मानः-वस्त्रादिपूजनम्। *सम॰ ६५।* सन्मानः-मानसः प्रीतिविशेषः। *जम्बू॰ ३९८।* सन्मानः-स्तुत्यादिभिर्गुणोन्निकरणम्। मानसः-प्रीतिविशेषो वा। *आव॰ ७८७।* सन्मानः-वस्त्रपा-त्रादिलाभनिमित्तः। *दशवै॰ १८७।*

सम्माणणिज्ज- बहुमानविषयतया सम्माननीयः। *औप॰ ५।* सन्माननीयः। *आव॰ २६७।*

सम्माणवत्तिया- सन्मानप्रत्ययं-स्तुत्यादिभिर्गुणोन्नतिकरण-निमित्तम्।*आव॰ ७८६।*

सम्मणेमो- उचितप्रतिपत्तिभिः सन्मानयामः। *भग॰ ११५।*

सम्मामिच्छदिट्ठिया- सम्यग्मिथ्यादृष्टिकाः-जिनोक्तभावान् प्रत्युदासीनाः। *स्था॰ ३१।*

सम्मामिच्छाकिरिया- सम्यग्मित्थ्यात्वक्रिया तद्योग्याः प्रकृ-तीश्चतुःसप्ततिसङ्ख्यासख्या यया क्रियया बध्नाति सा। *सूत्र॰ ३०४।*

सम्मामिच्छादिट्ठी- एकान्तसम्यग्रूपमिथ्यारूपप्रतिपत्ति-विकलः सम्यग्मिथ्यादृष्टिः। *जीवा॰ १८।*

सम्मावाओ- सम्यग्वादः-एकादिविरहेण यथावद् वदनम्। *आव॰ ३६४।*

सम्मावात- सम्यग्-अविपरीतो वादः-सम्यग्वादः। *स्था॰ ४९१।* सम्यग्-अविपरीततत्त्वानां वादः सम्यग्वादः-अस्तित्त्वम्। अविपरीततत्त्वानां वादः सम्यग्वादः-अस्ति-त्त्वम्। *स्था॰ २११।*

सम्मावाद- सम्यग्वादः। *दशवै॰ १११।*

सम्मेय- सम्मेतः-सम्मेतशिखरम्। *आव॰ ८२७।*

सम्मोहणंति- समवघ्नन्ति-आत्मप्रदेशान्विक्षिपन्ति। *जम्बू॰ २४१।*

सम्यक्त्व- देशकालसंहननरूपं यथाशक्तियथावदनुष्ठानं सम्यक्त्वम्। *पिण्ड॰६९।*

सम्यग्निर्याण- मारणान्तिकोपसग्र्गनिपाते सति अदिनमनस्केन सम्यग्निर्याणम्। *आचा॰ २५९।*

सयं- स्वयमात्मनालिङ्गानपेक्षम्। *भग॰ ४५५।* स्वयं-आत्मना स्वरूपेण। *ज्ञाता॰ १३१।* सकृत्-एकवारम्। *ओघ॰ १८१।* सकृत्-एकैकं वारम्। *सूर्य॰ ११।*

सयंजए- शतञ्जयः-त्रयोदशमदिवसनाम। *जम्बू॰ ४९०।*

संजल- द्वितीय इन्द्रलोकपालस्य वरुणस्यविमानम्। *भग॰ १९४।* अतीतायामवसर्पिण्यां प्रथमकुलगरः (भारहे वा०) *सम॰ १५०।*

सयंपभ-आगामिन्यामुत्सर्णिण्यां भारतवर्षे चतुर्थकुलकरः। *सम॰ १५३।* जम्बूभरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्थती-र्थकरः। *सम॰ १५३।* स्वयंप्रभः चतुषष्ठितममहाग्रहः। *जम्बू॰ ५३५।* अतीतायामुत्सर्पिण्यां चतुर्थकुलकरः (भारहे वासे) *सम॰ १५०।* आगामिन्यामुत्सर्पीण्यां चतुर्थकुलकरः। *स्था॰ ३९८।* अतीतायामुत्सर्पीण्यां चतुर्थकुलकरः। *स्था॰ ३९८।* रत्नबहुलतया स्वयमादित्यादिनिरपेक्षा प्रभा-प्रकाशो यस्याऽसौ स्वयम्प्रभः मेरुः। *जम्बू॰ ३७५।* षष्ठषष्ठीतममहाग्रहः। *स्था॰ ७९।* स्वयम्प्रभा। *सूर्य॰ ७८।*

सयंपभा- स्वयंप्रभा निर्नामिका या पूर्वभवः श्रेयांसजीवः, इशाने श्रीप्रभविमाने ललिताङ्गपत्नी। *आव॰ १४६।*

सयंभु- स्वयम्भूः, तृतीयवासुदेवः। *सम॰ ९४।* स्वयम्भुः-तृतीयवासुदेवः। *आव॰ १५९।* कुन्थुनाथप्रथमशिष्यः। *सम॰ १५२।* सनत्कुमारमाहेन्द्रे षट्सागरोपमस्थितको देवः। *सम॰ १२।*

सयंभूमहावर- स्वयम्भूमहावरः स्वयम्भूरमणे समुद्रे

परार्धादि-पतिर्देवः। *जीवा॰ ३७०।*

सयंभूमरमण- सन्तकुमारमाहेन्द्रे षट्सागरोपमस्थितिको देवः। *सम॰ १२।*

सयंभुरमणभद्र- स्वयम्भूरमणभद्र स्वयंभूरमणे द्वीपे पूर्वार्धाधि-पतिर्देवः। *जीवा॰ ३७०।*

सयंभू- स्वयं भवतीति-स्वयम्भूः विष्णुरन्यो वा। *सूत्र॰ ४२।* स्वयं भवतीति सव्यम्भूर्देवः। *सूत्र॰ १४९।*

सयंभूरमण- स्वयम्भूरमणः, द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३७०।* द्वीपसमुद्रौ। *जीवा॰ ३२१।* स्वयम्भूरमणः-स्वयम्भूरमणाभिधानः समुद्रः। *उत्त॰ ३५३।* स्वयम्भूरमणः-महासागरः। *आव॰ ५६७।*

सयंभूरमणमहाभद्द- स्वयम्भूरणमहाभद्रः-स्वयम्भूरमणे द्वीपेऽपरार्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३७०।*

सयंभूरुप्पुणा- स्वयम्भूरूक्पूर्णाः। *चतु॰।*

सयंमएल्लओ- स्वयं म्लानः-मृतः। *आव॰ २८७।*

सयंवसि- स्वयंवशः। *मरण॰।*

सयंसंबुद्ध- स्वयंसम्बुद्धः-स्वयं-आत्मनैव नान्योपदेशतः सम्यग्बुद्धो हेयोपादेयवस्तुतत्त्वं विद्वानिति स्वयंसम्बुद्धः। *सम॰ ३।* स्वयं-अपरोपदेशेन सम्यग्वरबोधिप्राप्त्या बुद्धो-मिथ्यात्वनिद्रापगमसम्बोधेन स्वयंसम्बुद्धः। *जीवा॰ २५५।*

सय- शतं-शतशब्देन अध्ययनानि उच्यन्ते। *सम॰ ८९।* शतभिषक्। *सूर्य॰ २११।*

सयइ- स्वदते स्वादु प्रतिभाति, स्रवति-निर्गच्छति। *सूत्र॰ ३२६।*

सयइत्ति- स्वदतीति उपकारे न वर्त्तते। *आचा॰ ३५६।*

सयक्कऊ- शतक्रतुः शतं क्रतवः-प्रतिमा-अभिग्रहविशेषाः, श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपः, कार्तिकश्रेष्ठिभवापेक्षया यस्याऽसै इन्द्रः। *भग॰ १७४।*

सयक्कतू- शतक्रतुः-इन्द्रः, शतं कृतानि प्रतिमानामभिग्रह-विशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्त्तिकश्रे-ष्ठिभवापेक्षया यस्यासौ। *प्रज्ञा॰ १०१।*

सयग्गसो- शतपरिमाणः शतपृथक्कृतम्। *भग॰ ९०५।*

सयग्गह- स्वयं-आत्मना दत्तं गृह्यते-यत्तत् स्वयं ग्राह्यम्। *प्रश्न॰ १५४।*

सयग्घि- शतघ्न्यः-शतानामुघातकारिण्यः *सम॰ १३८।* शतघ्न्यो महायष्ट्यो महाशिलामय्यः याः पातिताः शतानि पुरुषाणां घ्नति। *ज्ञाता॰ २।* शतघ्नी-महायष्टिः महाशिला वा, या पतिता ता पुरुषाणां शतं घ्नति सा। *जीवा॰ १६०।* शतघ्नन्तीति-शतघ्नयः। *उत्त॰ ३११।* शतघ्नी-महायष्टि महाशिला वा। *औप॰ ३।* शतघ्न्यो-महायष्टयो-महाशिला वा। *जम्बू॰ ७६।* शतघ्न्यः-महायष्टयो महाशिला वा साः पातिताः सत्यः पुरुषाणां शतानि घ्नन्ति। *प्रज्ञा॰ ८६।*

सयज्जल- भरतेऽतीतायामुत्सर्पीण्यां प्रथम कुलकरः। *स्था॰ ५१८।*

सयज्जलकूड- शतज्जलकूटं विद्युत्प्रभवक्षस्कारे कूटम्। *जम्बू॰ ३५५।*

सयण- शयनं-पर्यङ्कादि। *दशवै॰ २१८। भग॰ २३८।* स्वजनः पितृव्यादिः। *जम्बू॰ २७०।* शयनं-संस्तारकादि। *दशवै॰ २८१।* शयनं-शय्या। *प्रश्न॰ १३८।* शयनं-पर्यङ्कादि। *सूत्र॰ १०६।* शयनं-पर्यङ्कतूलीप्रच्छदपटोपधानयुक्तम्। *सूत्र॰ ८७।* स्वजनः पितृव्यादिः। *जम्बू॰ १४९।* शयनं-शय्या। *प्रश्न॰ ८।* शयनं-संस्तारको वसतिर्वा। *आव॰ ७९५।* शयनः-तुल्यादिशयनीयः। *ज्ञाता॰ १२।* स्वजनः मातापित्रादिकः। *आव॰ ८२।* स्वजनः-पितृव्यादिः। *आचा॰ १००।* स्वजनः-मात्रादिकः। *आव॰ ३६६।* स्वजनः-पितृपितृव्यादिः। *सम॰ १२८।* स्वजनः-पितृपितृव्यादिः। *भग॰ ४८३।* शयनं- संस्तारकादौ तिर्यक् शरीरनिवेशनम्। *उत्त॰ ६०९।* स्वजनः। *आव॰ ३६६।* स्वजनः। *औप॰ १०३।* शयनं-शय्यते यस्मिनिति शयनम्। *आचा॰ ३०२।* शयनं-आश्रयस्थानम्। *आचा॰ ३०८।* शयनं-पल्यङ्कादि। *उत्त॰ २६२।* शयनं-फलकसंस्तारकादि। *उत्त॰ ४२३।* शयनः-वसतिः। *आचा॰ ३०७।*

सयणविहि- शयनं-शय्या पल्यङ्कादिस्तद्विधिः अथवा शयनं स्वप्नं तद्विषयको विधिः। *जम्बू॰ १३७। ज्ञाता॰ ३८।*

सयणा- जे गुणदोसविहण्णु। *दशवै॰ ११५।*

सयणासण- शयनासनं-शय्याफलकादि। *आचा॰ ३८।*

सयणिज्ज- शयनीयं-शय्या। *आव॰ ५०५।* शयनीयम्।

आव॰ ५१४।

सयणिज्जग- स्वजनः। *ओघ॰ २०।* सज्ञातीयः। *उत्त॰ १५०।*

सयणिज्जय- स्वजनः। *आव॰ ३४५।*

सयनि- दीर्घकायप्रसारणेन शेते-वर्त्तते। *जीवा॰ २०१।*

सयदुवार- द्वादशमअममतीर्थकृदुत्पत्तिस्थानम्। *अन्त॰ १६।* शतद्वारं नगरविशेषः। *अन्त॰ १६।* शतद्वारं-नगरं धनपतिराजधानी। *विपा॰ ३९। भग॰ ६७८।*

सयदेव- अचलपुरीयकौटुम्बिकः। *मरण॰ ।*

सयधणू- जम्बूवैरवते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यामष्टमकुलकरः। *सम॰ १५३।* निरयावल्यां पञ्चमवर्गे द्वादशममध्ययनम्। *निर॰९।*

सयनं- त्वग्वर्तनम्। *निशी॰ २४७* अ।

सयपत्त- कमलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३। ज्ञाता॰ ९६।*

सयपाग- शतपाकं-रूपकानां शतेन मूल्यतः पच्यते। *स्था॰ ११८।* शतपाकं-शतेनौषधीनां पक्वं, शतवारा वा। *बृह॰ १०९* आ। शतपाकं शतकृत्वोऽपरापरौषधिरसेन कार्षापणानी शतेन यत्पक्वं तत्तैलम्। *जम्बू॰ ३९४।*

सयपुप्फा- शतपुष्पा। *उत्त॰ १४२।* वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।*

सयपोरागकिमि- शतपर्वकृमिः इक्षुपर्वकृमिः। *जीवा॰ ११७।*

सयबल- शतबलराजा। *आव॰ ११६।*

सयभत्ति- शतभक्तिः-शरसङ्खाविच्छित्तिः। *औप॰ ६७।*

सयभिसया- त्रयोविंशतितमनक्षत्रम्। *स्था॰ ७७।* शतभिषक्। *सूर्य॰ १३०।*

सयय- सततं-अनवरतम्। *भग॰ १९।*

सयरह- जम्बूभरते अतितायामवसर्पिण्यां दशमकुलकरः। *सम॰ १५०।* भरतेऽतीतायामुत्सर्पीण्यां दशमकुलकरः। *स्था॰ ५१८।*

सयराह- झटिति। *अनुयो॰ १७५।* अकस्मात् हेलयेत्यर्थः। *औप॰ १०१।* युगपदर्थाभिधायकं त्वरितार्थाभिधायकं वा देशीवचनम्। *आव॰ १५०।* एकहेलया। *प्रश्न॰ ४९।*

सयरिसह- शतवृषभः। *सूर्य॰ १४६।*

सयरी- शतरी-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।*

सयल- सकलम्। *उत्त॰ ६७९।*

सयलकसिण- एकपुरं एकतलं चर्म। *बृह॰ २२* आ। घनमसृणनिरुपहतं वस्त्रम् सदसियागं वस्त्रम्। *बृह॰ २२६* आ।

सयलग- शकलम्। *आव॰ ४२५।*

सयवत्त- शतपत्रम्। *प्रज्ञा॰ ३७।*

सयवसह- त्रयोविंशतितममुहूर्तनाम शतवृषभः। *जम्बू॰ ४९१।*

सयवाइय- त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*

सयसाहस्सीय-लक्षम्।*सम॰ १०४।*

सयसिक्कर- शतशर्करम्। *आव॰ २७३।*

सया- सदा-सर्वदा। *भग॰ ८३।*

सयाउ- स्वयम्।*आव॰ ६८३।* जम्बूभरतेऽतीतायामवसर्पी-ण्यां द्वितीयकुलकरः। *स्था॰ ५१।*

सयाऊ-जम्बूभरतेऽतीतायामवसर्पीण्यां द्वितीयकुलकरः। *सम॰ १५०।*

सयाजला- सदा-सर्वकालं जलं-उदकं यस्या सा सदाजला। *सूत्र॰ १४०।*

सयाणिओ- शतानीकः कौशाम्बीनगराधिपतिः। *आव॰ २२२।* शतानीकः-कौशाम्बीनगराधिपतिः। *आव॰ ६३।*

सयाणीए- शतानीकः-कौशाम्बीनृपः। *विपा॰ ६८।*

सयाणीय- उदायनपीता मृगावतीभर्ता। *भग॰ ५५६।*

सयाली-आगामी एकोनविंशतितमतीर्थकृतत्पूर्वभवनाम। *सम॰ १५४।*

सयावरणं- सदावरण- शोभार्थं दंशमशकादिरक्षार्थं वा प्रच्छादानपटः। *जम्बू॰ २३६।*

सयासवा- आश्रवति-ईषत्क्षरति जलं यैस्ते आश्रवाः-सुक्ष्म-रन्ध्राणि सन्तो विद्यमाना सदा वा-सर्वदा शतसङ्ख्या वाऽऽश्रया यस्यां साः सदाश्रवाः शताश्रवा। *भग॰ ८३।*

सयासुक्ख- सदासौख्यः-उपवर्गो नित्यसुखः। *आव॰ ८५२।*

सरंढ- भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६।* भुजपरिसर्पः तिर्यगयोनिकः। *जीवा॰ ४०।*

सरंष- शरम्बः-भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

सर- स्वरः-गाम्भीर्यादिगुणोपेतः। *उत्त॰ ४८९।* स्वरः-शब्दः षड्जादिः। *स्था॰ ४२७।* स्वरः-शिवादिरुतरुपः। *उत्त॰ ४१७।* स्वरं-जीवाजीवादिकाश्रितस्वरस्वरूपफलाभि धायकं शास्त्रम्। *सम॰ ४९।* सरः-स्वतः सम्भवो जलाश-

यविशेषः। *प्रश्न॰ १३४*। गोशालकशतके गोशालकेन प्ररू-पितकालविशेषः। *भग॰ ६७४*। केवलं पुष्पावकीर्णं सरः। *प्रज्ञा॰ ७२*। सरः-स्वयं सम्भूतजलाशयविशेषः। *भग॰ २३८*। सरः। *प्रश्न॰ ८*। सरः-केवलं पुष्पप्रकरवद्विप्रकीर्णं सरः। *प्रज्ञा॰ २६७*। सरः-स्वयंसम्भूतो जलाशयविशेषः। *अनुयो॰ १५९*। सरः-स्वभावजो जलाशयविशेषः। *प्रश्न॰ १६०*। सरः-स्वभावनिष्पन्नम्। *उपा॰ १०*। *स्था॰ ८६*। स्वरः-सकलजनादेयत्वप्रकृतिगम्भीरतादिगुणालङ्कृतो ध्वनिः। *अनुयो॰ १५८*। पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। स्वरः-शब्दः षड्जदिर्वा। *प्रश्न॰ ८२*। सरकः गुडधातकीसिद्धं मद्यम्। *प्रश्न॰ १६३*। स्वरं-स्वरविषयम्। *आव॰ ६६*। एगं महापमाणं सरं। *निशी॰ ७०* आ। सरः-स्वयंसम्भू-तजलाशयविशेषः। *भग॰ ३७३*। जलाशयविशेषः। *ज्ञाता॰ ६३*। शरः-बाणः। *ज्ञाता॰ २३७*।

सरअ- शरकः निर्मन्थनकाष्टः। *भग॰ ५२०*।

सरऊ- महानदी। *स्था॰ ४७७*।

सरओ- अविणासिदव्वं, चिरमवि अच्छइ न विणस्सइ सो। *निशी॰ २६९* आ।

सरकंचुओ- सरकञ्चुकः। *नन्दी॰ ८९*।

सरक- वंशमयच्छिक्का शिक्काकृतिः। *जीवा॰ २६६*।

सरक्ख- सरजस्कः-कापालिकः। *ओघ॰ १३५*। सरजस्कलिङ्गः भौतलिङ्गः। *आव॰ ६२८*। भस्म। औघ॰ *१३३*। सरजस्कं-पृथ्वीरजोऽवगुण्ठितम्। *दशवै॰ २२८*। सरजस्कं-भस्म। *पिण्ड॰ १९*। सरजस्कः-क्षारः। *बृह॰ २७३* अ। पंसू। *दशवै॰ ६८*। सरजस्कं-अतिश्लक्ष्णतया भस्मकल्पम्। *पिण्ड॰ १४९*।

सरक्खखरंडिय- स्वभस्मखरण्टितम्। *आव॰ ३२१*।

सरक्खग- सरजस्कः भौताः। औघ॰ *८९*।

सरक्खसूई- सरक्षासूची, रक्षा सूची चेत्यर्थः। *पिण्ड॰ १७*।

सरक्खा- कापालिकादयः। *बृह॰ २५४* आ। रक्खा। *निशी॰ ३५७* आ।

सरक्खि- सरजस्कः-सरक्षाको वा। *पिण्ड॰ २१*।

सरग- सरगं-शरकाभिः कृतं सूर्यादि। *आचा॰ ३५७*। शरकः। *ज्ञाता॰ २४२*। शरकं-शरप्रतिप्रकृतितीक्ष्ण-मुखमग्न्युत्पा-दकं काष्ठविशेषम्। *जम्बू॰ ३९२*। *निर॰ २७*। सरकः-मदिरापात्रम्। *जम्बू॰ १०१*।

सरजस्क- मतविशेषः। *आचा॰ ३२१*। मतविशेषः। *आचा॰ ४०३*। शैवाः। *आव॰ ५९*।

सरजस्कपीणिपादत्व- चतुर्दशममसमाधिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४*।

सरड- सरटः-जन्तुविशेषः। *आव॰ ४१८*। सरटोदाहरणं-औपपातिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १५२*। शरटः। *आव॰ ७११*। सरदः-कृकलाशः। *प्रश्न॰ ८*। सरटः। *आव॰ ६४९*। भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*। सरटः-कृकलाशः। *ओघ॰ १२६*।

सरडीभूतं- आमम्। *निशी॰ १२६* अ।

सरडु- सलादुः कोमलम्। *पिण्ड॰ १९*।

सरडुफल- अबद्धास्थिकफलम्। *बृह॰ १७९* आ।

सरडूय- अरटअबद्धास्थिकफलम्। *बृह॰ १७९* अ।

सरणं- उवस्सए ठाणं। *दशवै॰ ५१*। शरणं-त्राणमज्ञानोप-द्रवोपहतानां तद्रक्षास्थानं, तच्च परमार्थतो निर्वाणम्। *सम॰ ४*। शरणं-संसारकान्तारगतानामतिप्रबलरागादिपीडितानां समाश्वासनस्थानकल्पं तत्त्वचिन्तारूपमध्यवसानम्। *राज॰ १०९*। गमनम्। *ज्ञाता॰ ७१*। शरणं-तृणमयावसरिकादि। *अनुयो॰ १५९*। शरणं-संसारकान्तारगतानामतिप्रबलरागादि-पीडितानां समाश्वसनस्थानकल्पं, तत्त्वचिन्तारूपमध्यवसा-नम्। *जीवा॰ २५५*। शरणम्। *जीवा॰ २६९*। शरणं तृणम-यम्। *जम्बू॰ १०७*। शरणं-आश्रयः। *आव॰ ५७१*। शर-णम्। *प्रश्न॰ ८*। शरणं-आश्रयः। *उत्त॰ ६५*। शरणं-स्मर-णम्। *औप॰ २२*। शरणं-तृणमयावसरिकादिकम्। *भग॰ २३८*।

सरणद- सरणं-संसारकान्तारगतानामतिप्रबलरागादिपीडि-तानां समाश्वसनस्थानकल्पं तत्त्वचिन्तारूपमध्यवसानं ददा-तीति शरणदः। *जीवा॰ २५६*।

सरणदए- शरणं-त्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानां तद्रक्षास्थानं, तच्च परमार्थतो निर्वाणं, तद्दयत इति शरणदयः। *सम॰ ४*। शरणं-त्राणं नानाविधोपद्रवोपद्रुतानां तद्रक्षास्थानं, तच्च परमार्थतो शरणदयः-निर्वाणदायकः महावीरः। *भग॰ ७*।

सरणाए- शरणाय-निर्भयस्थित्यर्थम्। *आचा॰ १०८*।

सरण्ण- शरणे साधुः शरण्यः, रागादिपरिभूताश्रितसत्ववत्सलः रक्षको वा। *आव॰ ५८२*।

सरते- शरत्। *सूर्य॰ २०९*।

सरत्थभ- शरस्तम्बः। *आव॰ ३५१*।

सरद- शरत्-मार्गशीर्षादिः। *भग॰ ४६२*। कार्त्तिकमार्गशीर्षो। *ज्ञाता॰ १६*।

सरदहतलायसोसणया- सरोह्रदतडागशोषणता, चतुर्दशमं कर्मादानम्। *आव॰ २९*।

सरदुअ- बद्धट्ठियं। *निशी॰ १५७* आ।

सरदुप्फल- तरुण अवद्धट्ठियं वा जाव कोमलं वा सरदुप्फलं भण्णति। *निशी॰ १४२* अ।

सरपंति- पङ्क्तिभिर्व्यवस्थापितानि सरांसि। *अनुयो॰ १५९*। *स्था॰ ८६*। एकैकपङ्क्त्या व्यवस्थितानि सरांसि यत्र सा सरःपङ्क्तिः। *प्रज्ञा॰ २६७*। सरःपङ्क्तिः। *भग॰ २३८*।

सरपंतिओ- बहूनि केवलकेवलानि पुष्पाकीर्णकानि सरांसि एकपङ्क्त्या व्यवस्थितानि सरःपङ्क्तिः सललितास्ता बहव्यः सरःपङ्क्त्यः, तथा येषु सरःषु पङ्क्त्या व्यवस्थि-तेषु कूपोदक प्रणालिकया संचरति सा सरःपङ्क्तिः। *राज॰ ७८*।

सरपंतिय- सरःपङ्क्तिः। *आचा॰ ३८२*।

सरपंतिया- बहूनि सराणि एक पङ्क्त्या व्यवस्थितानि सरःपङ्क्तिस्ता पङ्क्त्यः सरःपङ्क्त्यः। *प्रज्ञा॰ ७२*। सरः पङ्क्तिका- सरसां पद्धतिः। *ज्ञाता॰ ६३*।

सरपंती- एगं महाप्रमाणं सरं, ताणि चेव बहूणि पंतीठियाणि पत्तेय बहुयुत्ताणि सरपंती। *निशी॰ ७०* आ।

सरभ- शरभः आटव्यमहाकायः। *भग॰ ५४२*। सरभः-परासरः। *प्रश्न॰ २१*। शरभः-अष्टापदः। *जम्बू॰ ४३*। द्विखुरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५*। सरभः-परासरः । *भग॰ ४७८*। सरभः-महकाय आटव्यपशुविशेषः, परासरः यो हस्तिनमपि पृष्ठे समारोपयति। *प्रश्न॰ ७*। परासरः-द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८*। सरभः-आटव्यमहाकायपशुः। *राज॰ ३६*।

सरभस- सहर्षम्। *ज्ञाता॰ १६५*।

सरमंडल- स्वरमण्डलं-षड्जादिस्वरसमूहम्। *स्था॰ ३९७*। *स्था॰ ३९४*। स्वरमण्डलं-षड्जादिस्वरसमूहम्। *अनुयो॰ १३३*।

सरमाण- स्मरन् चिन्तयन्। *ज्ञाता॰ १६५*।

सरय- शरत्-कार्तिकमार्गशीर्षो। *ज्ञाता॰ ३*।

सरल- वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*। सरलः-देवदारुः। *जम्बू॰ ९८*।

सरलक्खण- स्वरलक्षणं कालस्वरगम्भीरस्वरादिकम्। *सूत्र॰ ३१८*।

सरलमनस्क- औत्पातिक्यां दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १५७*।

सरलवण- वनविशेषः। *जीवा॰ १४५*।

सरवण- सन्निवेशविशेषः। *आव॰ १९९*। सन्निवेशविशेषः। *भग॰ ६६०*।

सरस- रुधिरप्रधानं पद्गजचर्म। *ज्ञाता॰ १३४*। अभिमानरसोपेतम्। *ज्ञाता॰ १६६*। सरसः-सरच्छायः। *जीवा॰ २२७*। रक्तचन्दनः। *जम्बू॰ ७६*। शृङ्गारः रसोपेतं निरुहपतो वा स्वो रसो यत्र तत्। *औप॰ ५४*। उक्कुट्ठो। *निशी॰ ५५* आ। आर्द्रम्। *प्रज्ञा॰ ९१*।

सरसपउम- सरसपद्मा-सरसमुखस्थगनकमलः। *ज्ञाता॰ १२*।

सरसवहिय- सरसं-अभिमानरसोपेतं वधितो-हतो यः। *ज्ञाता॰ १६६*।

सरसर- अनुकरणशब्दः तेन तादृशं शब्दं कुर्वाणौ कपाटौ। *जम्बू॰ २२४*।

सरसरपंतिआ- एकस्मात्सरसोऽन्यत्र ततोऽपि अन्यत्र कपाटसञ्चारकेनोदक सञ्चरति यत्र सा सरःसरः पङ्क्तिः। *अनुयो॰ १५९*।

सरसरपंतिय- सरःसरःपङ्क्ति-परस्परसंलग्नसरः। *आचा॰ ३८२*।

सरसरपंतिया- यासु सरःपङ्क्तिषु एकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन्न-न्यस्मादन्यत्रैवं सञ्चारकपाटकेनोदकं संचरति तासु बहुविधास्तरुपल्लवाः प्रचूराणि पानीयतृणानि च यस्य भोगतया स तथा। *ज्ञाता॰ ६७*। येषु सरस्सु पङ्क्तया व्यवस्थितेषु कूपोदकं प्रणालिकया सञ्चरति सा सरःसरःपङ्क्तिः। *जीवा॰ १९७*। सरःसरः पङ्क्तिकः – सरःपङ्क्तिःषु एकसरसः अन्यस्मिन् अन्यस्मादन्यत्र सर्वसंचारकपारकेनोदकं संचरति सा सरःसरः पङ्क्तिका। *भग॰ २३८*। येषु सरःसु षड्क्त्या

व्यवस्थितेषु कूपोदकं प्रणालिकया संचरति सा सरःसरः-पङ्क्तिः। ता बहवः सरःसरःपङ्क्तियः। *प्रज्ञा० ७२*। येषु सरस्सु पङ्क्त्या व्यवस्थितेषु कूपोदकं प्रणालि-कया सञ्चरति सा। *प्रज्ञा० २६७*। यत्रैकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन् अन्यस्मादन्यत्र सञ्चारकपारकेनोदकं सञ्चरति सा सरः-सरःपङ्क्तिकाः। *प्रश्न० १६०*।

सरसरपंती- ताणि चेव बहूणि अन्नोन्नकवाडसंज्जुताणि। *निशी० ७०* आ।

सरसि- सरसी-महत्सरः। *औप० ९३*।

सरसिगाल- अलर्कशृगालः। *मरण०*।

सरस्यः- महंति सरांसि। *ओघ० १५९*।

सरस्वती- वापीनाम। *जम्बू० ३७०*। ज्ञाताधर्मकथाटीकायां टीकाकर्तृकृतनमस्कारा। *ज्ञाता० २५३*।

सरस्सई- सरस्वती धनावहराज्ञी। *विपा० ९४*। गीतरतेः तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग० ५०५*।

सरस्सती- गीतरतीन्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *स्था० २०४*। धर्मकथायां पञ्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता० २५२*।

सरस्सर- अनुकरणशब्दः। *ज्ञाता० २१९*।

सरहस्स- सरहस्यः-ऐदम्पर्ययुक्तः। *ज्ञाता० ११०*।

सरा- स्वराः शब्दविशेषः। *स्था० ३९४*। स्वरान्। *स्था० ३९७*।

सरागसंजय- सरागसंयतः-अक्षीणानुपशान्तकषायः। *प्रज्ञा० ३४०*।

सराव- शरावम्। *आचा० ३५७*।

सरासण- शरासनं-धनुः। *भग० १९३*। शरा अत्यन्तेक्षिप्य-न्तेऽस्मिन्निति शरासनः-इषुधिः। *जीवा० २५९*। शरासनं-इषुधिः। *राज० ११८*।

सरासणपट्टिए- शरासनपट्टिका धनुर्दण्डः। *जम्बू० २१९*। शरासनपट्टिका-धनुर्दण्डो, बाहुपट्टिका। *भग० ३१८*।

सरासणपट्टिया- शरासनपट्टिका-धनुर्यष्टिः। अथवा शरासन-पट्टिका धनुर्धरप्रतीता। *भग० १९३*।

सरासणपट्टी- शरासनपट्टिका-धनुर्यष्टिर्बाहुदण्डिका वा। *विपा० ४७*।

सरासणवट्टिया- शरासनं-धनुस्तल्लक्षणा पट्टिका, अथवा शरासनपट्टिका। *ज्ञाता० ८५*।

सरासन- इषुधिः। *जीवा० ३५९*।

सरिआगुम्मा- सरिकागुल्मा। *जम्बू० ३३९*।

सरिओ- सृतः। *आव० २९२*।

सरिक्ख- सरजस्कः। *ओघ० २१५*।

सरित्तए- सदृक्त्वक् सदृशच्छवी। *भग० ९४*।

सरित्तया- सदृशच्छवी। *ज्ञाता० ३९*।

सरिवन्न- तुल्यवर्णः। *आव० ४४३*।

सरियं- सरातोऽतिसरियं। *निशी० २५४* आ। मुक्तावली। *प्रश्न० ७०*।

सरिष्यति- पूर्तिर्भविष्यति। *पिण्ड० ८८*।

सरित- सादृश्यं लक्षणम्, अन्यघटसदृशः पाटलिपुत्रको घट इति। *आव० २८१*। *ज्ञाता० १८५*। सदृशम्। *ओघ० १४६*।

सरिसव- सर्षपः-सिद्धार्थकः। *स्था० ४०६*। सर्षपः। *आव० ८५४*। सर्षपः-धान्यविशेषः। *अनुयो० १९२*। हरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। औषधिविशेषः। *प्रज्ञा० ३२*। सिद्धार्थकः। *भग० २७४*। वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*। *निशी० १२०*।

सरिसवय- सदृशवयसः। *निर० २४*।

सरिसवया- एकत्र सदृशवयसः-समानवयसः अन्यत्र सर्षपाः सिद्धार्थकाः। *ज्ञाता० १०७*।

सरिसवा- एकत्र प्राकृतशैल्या सदृशवयसः समानवयसः। अन्यत्र सर्षपाः-सिद्धार्थकाः। *भग० ७५८*।

सरिसव्व- सदृग्वयः-समानयौवनः। *भग० ९४*।

सरिसव्वया- सदृग्वयसाः समानकालकृतावस्थाविशेषाः। *ज्ञाता० ३९*।

सरीरंग- शरीराङ्ग-शिर-उर-उदर-पृष्ठ-बाहू-ऊरू चेत्यादि रूपम्। *उत्त० १४३*। शरीराङ्गं-शरीरस्य शिराद्याष्टाङ्गानि। *उत्त० १४३*।

सरीर- शरीरः, कौकुचिके द्वितीयो भेदः। *स्था० ३७३*। शरीरं-बोन्दिः-तनुः। *प्रज्ञा० १०८*। शरीरं-शरीरयोगः। *प्रज्ञा० २५७*। शरीरं-प्रज्ञापनायां द्वादशमं पदम्। *प्रज्ञा० ६*। शरीरं- कायः। *आव० ७६७*। शीर्यते-अनुक्षणं चयापचयाभ्यां विनश्यतीति शरीरम्। *स्था० ५५*। शरीरं-विशीर्यते उत्पत्तिसमयतः प्रमृति पुद्गलवचटनाद्विनश्यतीति औदारिकादिपञ्चमेदभिन्नम्। *उत्त० १६७*। शरीरं-तृतीयाप-रिज्ञा। *व्यव० ३९१* अ। भगवत्यां

चतुर्दशशतके तृती-योद्देशकः। *भग॰ ६३०।*

सरीरअणुवातो- वज्जरिसहणारायसंघयणातिगो। *न॰ १४९* अ।

सरीरकरण- शरीरं च तत्करणं च तां तां कियां प्रतिसाधकत-मत्वेन शरीरकरणम्। *उत्त॰ २०१।*

सरीरकाओ- शरीरकायः-औदारिकादिशरीरमाश्रित्य कायः। *आव॰ ७६७।*

सरीरकुक्कुइओ- हस्तादिना प्रस्तरादिक्षेपकः। *बृह॰ २४७।*

सरीरचिंता- शरीरचिन्ता। *आव॰ ४२०।* शरीरचिन्ता। *उत्त॰ २२०।*

सरीरठीइ- शरीरस्थितिः। *आव॰ ४३०।*

सरीरपच्चक्खाण- शरीरस्य प्रत्याख्यानं अभिष्वङ्गप्रतिवर्जत-पपरिज्ञानं शरीरप्रत्याख्यानम्। *भग॰ ७२७।*

सरीरपरिमंडण- शरीरपरिमण्डनं-केशश्मश्रुसमारचनादि। *उत्त॰ ४२९।*

सरसरबीय- शरीरबीजं-सप्तधातवः। *उत्त॰ ४७५।*

सरीरमेत्तीओ- पुरुषमात्रो। *सम॰ १५६।*

सरीरय- शरीरकं-शरीरमेव जरादिभिरभिभूयमानतयाऽनु-कम्पनीयम्। *उत्त॰ ३३८।*

सरीरसक्कारपोसह- शरीरसत्कारपौषधः-पौषधस्य द्वितीयो भेदः। *आव॰ ८३५।*

सरीराणुगए- शरीरानुगतं-अचित्तस्य चतुर्थो भेदः। *ओघ॰ १३३।*

सरूवि- सरूपी-संस्थानवर्णादिमान् सशरीरः। *स्था॰ ३९।*

सरो- शरो। *बृह॰ १७८* अ।

सर्ज- क्षारविशेषः। *भग॰ ३०६।*

सर्जकषाय- नोकर्मद्रव्यकषायः। *आव॰ ३९०।*

सर्प्पच्छत्र- भूमिस्फोटकविशेषः। *आचा॰ ५७।*

सर्वकाङ्क्षा- सर्वाण्येव दर्शनानि शोभनानीत्येवमनुचिन्तनम्। *प्रज्ञा॰ ६१।*

सर्वजघन्य- परिहारतया मासिकम्। *व्यव॰ १४६* अ।

सर्वतोधार- शास्त्रविशेषः। *दशवै॰ २०१।*

सर्वतोभद्र- दशषु दिक्सु प्रत्येकमहोरात्रकायोत्सर्गरूपा अहो-रात्र दशकप्रमाणा प्रतिमा। *स्था॰ ६५।* अक्षभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

सर्वशङ्का- किमस्ति आर्हतो मार्गो नवेति। *आचा॰ ४३।* प्राकृतनिषेद्धत्वात् सकलमेवेदं परिकल्पितं भविष्यतीति शङ्कः। *दशवै॰ १०२।* सकलोऽस्तिकायजातः सर्वशङ्काः। *आव॰ ८१४।*

सर्वानुभूती- वीरदेवकुशिष्यमुक्ता तेजोलेश्या सहकोऽणगारः। *जम्बू॰ २२४।*

सलक्खण- लक्ष्यते तदन्यव्यपोहे नावधार्यते वस्त्वनेनेति लक्षणं स्वं च तल्लक्षण च स्वलक्षणम्। *स्था॰ ४९२।* सलक्षणः-लक्षणज्ञः-कविः। *दशवै॰ ८७।*

सलणय- शरणकम्। *उत्त॰ १३७।*

सललिय- यत्स्वरघोलनाप्रकारेण ललितीव तत् सह तेन सललितम्। यद्वा श्रोत्रेन्द्रियस्य शब्दस्पर्शनमतीव सूक्ष्म-मुत्पादयति सुकुमारमिव च प्रतिभासते तत् सललितम्। *जीवा॰ १९४।* सललितः-समाधूर्यः। *औप॰ ५६।*

सललियविल्लहलगई- सललिता-मृद्वी वेल्लहला-स्फीता गतिर्यस्याः सा सललितवेल्लहलगतिः। *आव॰ ५६६।*

सलागपडिया- आवकहिगा। *निशी॰ ४५* आ।

सलागा- लोक्यत्ते केवलिना दृष्यन्त इति लोका व्याख्यादिह वक्षमाणः शलाकापल्यरूपः। *अनुयो॰ २३६।* शलाका-कीलरूपा। *प्रश्न॰ ५७।* शलाका। *आव॰ २२७। निशी॰ २५६* आ।

सलागापल्ल- शलाकापल्यः-जम्बूद्वीपप्रमाणो द्वितीयः पल्यः। *अनुयो॰ २३७।*

सलागाहत्यगं- शिलाकहस्तकं-सरित्पर्णादिशलाकसमुदायं-सम्मार्जनीम्। *राज॰ २३।*

सलाहिओ- श्लाधितः। *आव॰ १९८।*

सलिंग- स्वलिङ्ग-रजोहरणादि। *निशी॰ ९२* आ। स्वलिङ्गः। *ओघ॰ २१६।*

सलिंगी- रजोहरणादिसाधुलिङ्गवान्। *प्रज्ञा॰ ४०६।*

सलिलं- सलिलं-पानीयं लावण्यम्। *जम्बू॰ २३६।*

सलिलबिल- भूनिर्झरः। *जम्बू॰ १६८।* सलिलविलंभूनि-र्झरः। *भग॰ ३०७।*

सलिला- गङ्गादिमहानदी। *प्रश्न॰ ९६।* सलिलं-जलमस्या-मस्तीति नदीः। *उत्त॰ ३५२।*

सलिलावती- विजयविशेषः। *ज्ञाता॰ १२१। स्था॰ ८०।*

सलिलासय- विजयविशेषः। *प्रश्न॰ १४।*

सलिलुल्ललोहिय- सलिलार्द्ररुधिरम्। *मरण॰।*

सलुद्धरण- शल्योद्धरणम्। *ओघ॰ २२५*।

सलेड्डुग- समूलः। *आव॰ २१२*।

सलेड्डुवाय- *भग॰ ६६५*।

सलेसमिस्स- श्लेषमिश्रं-श्लेषद्रव्यविमिश्रतम्। *जीवा॰ २६*।

सलोग- समानो लोकोऽस्येति सलोकः। *उत्त॰ २५१*।

सलोद्ध- सहोढं-सलोद्ध्रम्। *राज॰ १४०*।

सलोमहत्थ- लोममयप्रभाजनकयुक्तम्। *औप॰ ११*।

सल्ल- शल्यं-पापानुष्ठानम्, तज्जनितं वा कर्म। *सूत्र॰ २६१*। शल्यते-बध्यते अनेनीत शल्यम्। *स्था॰ १४९*। शल्यं-मायादि। *आव॰ ७७९*। शल्यमिव शल्यं-कालान्तरेऽप्यनि-ष्टफलविधानं। प्रत्यवन्ध्यतया। *उत्त॰ २३३*। शल्यम्। *आव॰ ३४८*। शल्यः *आव॰ ७६५*।

सल्लइ- गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*। सेल्लकी-गजप्रिया। *प्रज्ञा॰ ३१*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*।

सल्लइकुसुम- सल्लकीकुसुमम्। *जीवा॰ १९१*।

सल्लइपत्तय- सल्लकी वृक्षविषेशस्तस्य पत्रकं-दलम्। *ज्ञाता॰ ११६*।

सल्लइय- शल्यकितः-शुष्कपत्रतया सञ्जातशलाकः। *ज्ञाता॰ ११६*।

सल्लई- शल्लकी। *जीवा॰ ३५५*।

सल्लकहत्त- शल्यहत्त्यं राज्यस्य हत्या-हननमुद्धारः तत्प्र-तिपादकं शस्त्रम्। *विपा॰ ७५*।

सल्लकी- गुच्छविशेषः। *आचा॰ ३०*।

सल्लग- सल्लगः-शोभनं लगनं-संवरण-इन्द्रियसंयमरूपं सल्लगः तद्भावः सल्लगत्वं, शल्यवच्छल्यं-मायानुष्ठानमकार्यं तद्गायति कथयतीति शल्यगं शल्यगत्वम्। *सूत्र॰ ३२३*। शल्यकः-शल्यवान् शूलादिशल्यभिन्न इति। *प्रश्न॰ १६२*।

सल्लगत्तण- मायादिशल्यकर्तनम्। *भग॰ ४७१*। शल्यानि मायादीनि कृन्ततोति शल्ककर्तनम्। *ज्ञाता॰ ४९*। कृन्त-तीति कर्त्तनं शल्यानि-मायादीनि तेषां कर्त्तनं-भवनिब-न्धनमायादिशल्यच्छेदकमित्यर्थः। *आव॰ ७६०*।

सल्लरोहणी- शल्यरोहिणी-औषधीविशेषः। *आव॰ ३४८*।

सल्लहता- शल्यस्य हत्या-हननमुद्धारः शल्यहत्या तत्प्रतिपा-दकं तन्त्रमपि शल्यहत्या। *स्था॰ ४२७*।

सल्ला- भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।

सल्लीपति- शल्लीपतिः-पाटलीपुत्रे नन्दः। *आव॰ ४३३*।

सल्लुद्धरण- शल्योद्धरणं यन्त्रप्रयोजकः-कष्टकोद्धारः। *विपा॰ ८१*।

सल्लुद्धरणी- शल्योद्धरणी-औषधीविशेषः। *आव॰ ३४८*।

सवंगसुन्दरी- सर्वाङ्गसुन्दरी मायायां वैकल्पिकदृष्टान्तः। *आव॰ ३९३*। सर्वाङ्गसुन्दरी मायोदाहरणे पूर्वभवे धनश्री-गंजपुरनगरे इभ्यश्रावकशङ्खस्य दुहिता। *आव॰ ३९४*।

सवउहुत्तो- सपक्षम्। *उत्त॰ १३९*।

सवक्कसुद्धि- सद्वाक्यशुद्धि स्ववाक्यशुद्धिं वा सवाक्यसिद्धं वा। *दशवै॰ २२३*।

सवग्ग- सर्वग्रो गुणि। *व्यव॰ ३४८* आ।

सवट्ठ- सर्वार्थविमानम्। *आव॰ १७७*।

सवण- एकविंशतितम नक्षत्रम्। *स्था॰ ७७*। श्रुयतेऽनेनेति श्रवणम्। *नन्दी॰ १७४*। श्रवणः। *सूर्य॰ १२९*। श्रवणः-व्यक्तगणधरस्य जन्मनक्षत्रम्। *आव॰ २५५*। श्रवणं-धर्मस-म्बद्धं यतिः। *आव॰ ३४१*। श्रवणम्। *भग॰ ११५*। श्रवणः-तपस्वी। *उत्त॰ १४५*।

सवणफल- सिद्धान्तः-श्रवणफलम्। *भग॰ १४१*।

सवणया- श्रवणस्य-श्रवणशब्दस्य भावः प्रवृत्तिनिमित्तं शृतिरेव श्रवणता श्रवणमेवेत्यर्थः। *प्रज्ञा॰ ३९९*।

सवणा- श्रवणौ कर्णौ। *जम्बू॰ ११३*।

सवणुगह- श्रवणं-धर्मसम्बद्धं अवग्रहः-धर्मावधारणं श्रवणावग्रहः श्रवणः वा तपस्विनस्तेषामवग्रहः सुन्दरा एत इत्यवधारणं श्रवणावग्रहः। *उत्त॰ १४५*।

सवणोग्गह- श्रवणावग्रह यत्यवग्रहः। *आव॰ ३४१*।

सवत्त- सपत्नः-विरोधी। *दशवै॰ १९५*।

सवत्तग- सापत्न्यम्। *आव॰ ४५२*।

सवत्तिणी- सपत्नी। *आव॰ ८२४*।

सवत्तिसमाण- समानः-साधारणः-पतिरस्याः सपत्नी, यथा सा सपत्न्या ईर्ष्यावशादपराधान् वीक्षते एवं यः साधुषु दूष-णदर्शनतत्परोऽनुपकारी च स अभिधीयत इति सपत्नी-समानः। *स्था॰ २४३*।

सवन- कर्मसु प्रेरणम्। *सूर्य॰ १६९*।

सवनसंवत्सर- सवनं-कर्म्मषु प्रेरणं, तत्प्रधानः। संवत्सरा सवनसंवत्सरः। *सूर्य॰ १६९*।

सवन्न- सवणः-सदशीकरणम्। *स्था॰ ४९७।*

सवरि- शबरी वस्त्ररहिता। भिल्ली, कायोत्सर्गे षष्ठो दोषः। *आव॰ ७९८।*

सवलद्धा- आश्वस्तः। *आव॰ ६६५।*

सवह- शपथः। *ज्ञाता॰ २९।*

सहसाविया- सपथशापिता। *आव॰ २१३।*

सवाय- स चायं भगवान्। सह वादेन सवादं, सद्वाचं वा, शोभनभारतीकं वा। *सूत्र॰ ४०९।*

सवास- स्वकीय सहवासः। *बृह॰ १९२* आ।

सवि- सर्वे। *बृह॰ ८५* आ।

सविज्जा- स्वविद्या परलोकोपकारिणी केवलश्रुतरूपा। *दशवै॰ २०७।*

सविज्जुए- सविद्युत्कः। *ज्ञाता॰ २४।*

सविट्ठा- श्रविष्ठा-धनिष्ठ। *सूर्य॰ १११।* श्रविष्ठा-धनिष्ठा। *जम्बू॰ ५०६।*

सविभव- समृद्धियुक्तं-महाधनम्। *ज्ञाता॰ २३२।*

सविम्हओ- सविस्मयः-साश्चर्यः। *आव॰ ५८७।*

सवियार- सविचारं चेष्ठात्मकविचारसहितं मरणानशनतपः। *उत्त॰ ६०१।* बद्धस्य च हस्ताद् गृह्यते यदि स सविचारो भवति-परिष्वषित्तुं शक्नोति। *ओघ॰ १६५।* सपराक्रमसं-लेखनावतः। *भक्त॰।* विच्छिन्नो-सविस्तरः। *बृह॰ ३०६।*

सविलियं- सव्रीडम्। *ज्ञाता॰ १६५।*

सविसए- स्वः-स्वकीयो विषयः स्पृष्टावगाढानन्तरावगाढाख्यः स्वविषयः। *भग॰ २१।* स्वविषयं-स्वोचिताहार-योग्यम्। *जीवा॰ २०।*

सविसयनियय- स्वविषयनियतत्त्वं-असहायत्वम्। *आव॰ ५३१।*

सविसेसं- सादरं-साहिगयरं। *निशी॰ १४* आ।

सविसेसयरं- सविशेषतरं-अतिरिक्ततरम्। *ओघ॰ २१०।*

सवीरिए- सवीर्यः उत्थानादिक्रियावान्। *भग॰ ९५।*

सवेंटया- सवृन्तिका तुम्बोच्चत्वमानदण्डयुत्तां पात्रकेसरिका। *बृह॰ २०२* आ।

सवेला- संजता। *निशी॰ ५०* अ।

सव्वंति- सर्वतः-सर्वासु दिक्षु। *भग॰ ७८।*

सव्व- सर्वं-कात्स्न्नम्। *आचा॰ १३१।* सर्वं क्षेत्रम्। *भग॰ ७८।* सर्वः, सार्वः-अर्हन्, श्रव्यः-श्रवणार्हः, सव्यः-दक्षिणम्। *भग॰ ४।* सर्वं-समस्तः। *भग॰ १४९।* सर्वतन्त्रः। *बृह॰ ३१* आ। सर्व्वशब्दोऽपरिशेषवाची। *प्रज्ञा॰ ३८।*

सव्वउत्तरगुणपच्चक्खाण- सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानं दशविधम-नागतमतिक्रान्तम्। *आव॰ ८०४।*

सव्वओ- सर्वतः-समन्तादथवा दिक्षु विदिक्षु च। *स्था॰ १७७।* सर्वतः दिक्षुः। *जीवा॰ १८१।* सर्वतः-सर्वदिक्षु। *भग॰ ७७।* सर्वतः-सर्वासु दिक्षु। *जम्बू॰ ५६।* सर्वादिक्षु। *विपा॰ ५०।* सर्वासु दिग्विदिक्षु। *नन्दी॰ ८५।* सर्वतः। सर्वासु दिक्षु। *प्रज्ञा॰ ३५६।* सर्वतः-सर्वदिक्षु। *औप॰ ६।* सर्वः-सर्वात्मप्रदेशः। *भग॰ २२।* सर्वतः-सर्वप्रकारेण द्रव्यादिना। *आचा॰ १७२।*

सव्वओधार- सर्वतः-सर्वासु दिक्षु धारेव धारा-जीवनासि-काशक्तिरस्येति सर्वतोधारम्। *उत्त॰ ६६६।*

सव्वओभद्द- महाशुक्रे षोडशसागरोपमस्थिकदेवविमानम्। *सम॰ ३२।* दृष्टिवादे सूत्रभेदे विंशतितमो भेदः। *सम॰ १२८।* सर्वतोभद्र-ईशानेन्द्रलोकपालस्य यमस्य तृतीयं विमानम्। *भग॰ २०३।* सर्वतोभद्रः। *औप॰ ५२।* सर्वतोभद्रः। *जम्बू॰ ४०५।* सर्वतोभद्रा प्रतिमाविशेषाः। *आव॰ २१५।*

सव्वओभद्दसण्णिवेस- सर्वतोभद्रसन्निवेशः। *जम्बू॰ २०९।*

सव्वओभद्दा- सर्वतोभद्रा यस्यां दशसु दिक्षु प्रत्येकमहोरात्रं कायोत्सर्गं करोति। ओप॰ ३०। सर्वतोभद्रा प्रतिमाविशेषः। *आव॰ २१५।*

सव्वकंखा- सर्वकाङ्क्षा सर्वाण्येव दर्शनानि काङ्क्षति। *दशवै॰ १०२।*

सव्वकज्ज- सर्वकार्यः सन्धिविग्रहादिः। *ज्ञाता॰ ११।*

सव्वकाम- सर्वकामः वैश्रणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग॰ २००।*

सव्वकामगुणिअं- सकलसौन्दर्यसंस्कृतम्। *आव॰ ४४७।*

सव्वकामगुणिय- सर्वे कामगुणा- अभिलाषविषयभूता रसादयः सञ्जाता यत्र तत्सर्वलाभगुणितम्। *भग॰ ६६२।* प्रथमपरिपाट्यां च पारणकं सर्वकामगुणिकं, सर्वे काम-गुणाः-कमनीयपर्याया विकृत्यादयो विद्यन्ते यत्र तत्तथा, द्वितीयायां निर्विकृतं तृतीयायामलेपकादि चतुर्थ्यामाचा-म्लमिति, प्रथमपरिपाटीप्रमाणं चतुर्गुणं सर्वप्रमाणं भवतीति। *ज्ञाता॰ १२२।* सर्वे कामगुणा-अभिलषणीयपर्याया रूपर-सगन्धस्पर्शलक्षणाः सन्ति

सञ्जाता वा यत्र तत् सर्वकाम-गुणिकं सर्वकामगुणितं वा। *ज्ञाता० १५३*। सर्वे कामगुणा-अभिलषणीया रसादिगुणाः सञ्जाता यस्मिन् तत्तथा सर्व-रसोपेतम्। *अन्त० २६*। सर्वकामगुणितं-सकलसौन्दर्य-संस्कृतम्। *प्रज्ञा० ११२*। सर्वे कामगुणाअभिलषणीया रसादिगुणाः सञ्जाता यस्मिन् तत् सर्वरसोपेतम्। *अन्त० ५६*।

सव्वकामविरत्तया- सर्वकामविकरक्तता, योगसङ्ग्रहे द्वाविं-तितमो योगः। *आव० ६६४*।

सव्वकामसमिद्ध- सर्वकामसमृद्ध, षष्ठो दिवसः *जम्बू० ४९०*। सर्वकामसमृद्धः, षष्ठमदिवसनाम। *सूर्य० १४७*।

सव्वकामिय- सर्वकामैर्निवृत्तं तत्प्रयोजनं वा सर्वकामिकं षड्र -सोपेतम्। *उत्त० ५२३*। सर्वाणि कामानि-अभिलषणी-यवस्तूनि यस्मिंस्तत् सर्वकाम्यम्। *उत्त० ४२३*।

सव्वक्खरसन्निवाइ- सर्वाक्षरसन्निपातो सर्वे च तेऽक्षरसन्नि-पाताश्च-तत्संयोगाः सर्वेषां वाऽक्षराणां सन्निपाताः सर्वाक्षर-सन्निपातास्ते यस्यं ज्ञेयतया सन्ति। *भग० १२*। श्रव्याणि श्रवणसुखकारीणि अक्षराणि साङ्गत्येन नितरां वदितुं शीलं यस्य सः श्रव्याक्षरसन्निवादी। *भग० १२*।

सव्वक्खरसन्निवाइणो- सर्वाणि-समस्तानि यान्यक्षराणिअ-कारादीनि तेषां सन्निपातनं-तत्तदर्थाभिधायकतया साङ्गत्येन घटनाकरणं सर्वाक्षरसन्निपातः स विद्यते-अधिगमविषयतया येषां तेऽमी सर्वाक्षरसान्निपात्तिनः। *उत्त० ३४४*।

सव्वक्खरसन्निवाई- अक्षराणां सन्निपाताः-संयोगाः सर्वे च ते अक्षरसन्निपाताश्च सर्वाक्षरसन्निपाताः ते यस्य ज्ञेयानि। *सूर्य० ५*। सर्वेषामक्षराणां अकारादीनां सन्निपातां-द्वयादि संयोगाः। अनन्तत्वादनन्ता अपि ज्ञेयानि। *सूर्य० ५*। सर्वेषामक्षराणां अकारादीनां सन्निपातां-द्वयादिसंयोगाः। अनन्तत्वादनन्ता अपि ज्ञेयतया विद्यन्ते येषां ते। *जम्बू० १५४*।

सव्वक्खरसन्निवात- सर्व्वे-अकारादि अक्षरसन्तिपाताः-अकारादिसंयोगा विद्यन्ते ते तथा विदितसकलवाङ्मयः। *स्था० १७८*।

सव्वखुड्डागा- सर्वदीपसमुद्रेभ्यः क्षुल्लको-लघुरायमविष्क-म्भाभ्यां सर्वाक्षुल्लकः। *सूर्य० १३*।

सव्वग- सर्वाग्रं उत्सेधः। *जीवा० ३२५*।

सव्वगुणाधाण- सर्वगुणाधानं-अशेषगुणस्थानम्। *आव० ६११*।

सव्वजणिगा- सर्वजननी। *मरण०*।

सव्वजस- सर्वयशः-वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग० २००*।

सव्वजिणसासाणगाइं- सर्वैजैर्नैः शिष्यन्ते-प्रतिपाद्यन्ते यानि तानि सर्वजिनशासनानि तान्येव कप्रत्यये सर्वजिनशासन-कानि। *प्रश्न० १०२*।

सव्वजुइ- सर्वद्युतिः-यथाशक्तिविस्फारितं शरीरतेजः। *जीवा० २४५*।

सव्वजुइए- आभरणादिसम्बन्धिन्या सर्वयुक्त्या-उचितचेष्टा-वस्तुघटनालक्षणया सर्वद्युत्या। *भग० ४७६*।

सव्वजोणिया- सर्वयोनिकाः-सर्वगतिभाजः। *आचा० ३०४*।

सव्वज्जु- सर्वर्जुः संयमः, सद्धर्मो वा, तं सर्वर्जुकं सत्यम्। *सूत्र० ३६*।

सव्वज्जुणसुवन्नमयी- सर्वात्मना श्वेतसुवर्णमयी। *प्रज्ञा० १०७*।

सव्वट्ठ- सर्वार्थाः सर्वे तेऽर्थाश्च सर्वार्थाः-पञ्चप्रकाराः कामगुणास्तत्सम्पादकाः वा द्रव्यनिचयाः। *आचा० २९५*। सर्वार्थः-एकोनत्रिंशत्तममुहूर्तनाम सर्वार्थः। एकोनत्रिंशत्तम-मुहूर्तनाम। *सूर्य० १४६*। *जम्बू० ४९१*। सर्वे-शयना-दिभिरर्थः प्रयोजनमस्येति सर्वार्थः-क्षत्रियः भ्रष्टराजाः। *उत्त० १८३*।

सव्वट्ठसिद्ध- अनुत्तरोपपातिके भेदविशेषः। सर्वार्थसिद्धः। *प्रज्ञा० ६९*। सर्वार्थसिद्धः-विमानविशेषः। *आव० १२०*।

सव्वड्ढी- सर्वर्द्धिः परिवारादिका। *जीवा० २४५*।

सव्वणाणावरणिज्ज- सर्वं ज्ञानं-केवलाख्यमावृणोतीति सर्व-ज्ञानावरणीयम्, केवलावरणं हि आदित्यलक्षणस्य केवल-ज्ञानरूपस्य जीवस्याच्छादकतया सान्द्रमेघवृन्दकल्पमिति। *स्था० ९७*।

सव्वणुभई- जम्बूभरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां पञ्चमतीर्थकृत्। *सम० १५३*।

सव्वणोज्जुत्तो- श्रामण्योद्युक्तः। *मरण०*।

सव्वण्णाण- सर्वज्ञानम्। *स्था० १५४*।

सव्वतो- सर्वतः-सर्वासु दिक्षु। *जीवा० ३२७*।

सव्वतोभद्द- सर्वतोभद्रं नगरम्। *विपा॰ ८९।* सर्वतोभद्रं जितशत्रुराजधानी। *विपा॰ ६८।* दिग्दशकाभिमुखस्याहोरा-त्रप्रमाणः कायोत्सर्गः सा सर्वतोभद्रा। *स्था॰ १९५।*

सव्वतुय- सर्वतुकं सर्वर्त्तुभावि। *जीवा॰ १७२।*

सव्वत्थ- सर्वार्थः-रूचके द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८।*

सव्वदंसी- सर्वं समस्तं गम्यमानत्वात्प्राणिगणं पश्यति आत्म-वत्प्रेक्षत इत्येव शीलः अभिभूय रागद्वेषौ सर्वं वस्तु समतया पश्यतीत्येवं शीलो वा सर्वदर्शी, सर्वदंशी सर्वदर्शी, सर्व दशति-भक्षयतीत्येवं शीलो वा। *उत्त॰ ४१४।*

सव्वदरिसणावरणिज्ज- सर्वदर्शनावरणीयं-निद्रापञ्चकं केवलदर्शनावरणीयम्। *स्था॰ ९७।*

सव्वदरिसी- सर्वस्य वस्तुस्तोमस्य सामान्यरूपतया ज्ञायकत्वेन सर्वदर्शी। *भग॰ ७।* सर्वदर्शी। *जीवा॰ २५६।*

सव्वदुक्ख- सर्वदुःखं आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविक-लक्षणम्। *उत्त॰ २६६।* सर्व्वदुःखः-नरकादिगतिभाविः शरीरमानसः क्लेशः। *उत्त॰ २९२।*

सव्वदुक्खप्पहीण- सर्वदुःखप्रक्षीणः-मोक्षगतः। *भग॰ १११।* सर्वदुःखप्रहीणः-मोक्षः तत्कारणम्। *आव॰ ७६१।*

सव्वदुक्खप्पहोणट्ठा- प्रकर्षेण हानिं गताति-क्षीणानि वा सर्वदुःखानि यस्मिन् यदि वा सर्वदुःखानां प्रहीणं-पक्षीणं वा यस्मिन् यच्च सिद्धक्षेत्रमेव सदर्थयन्त इवार्थयन्ते सर्वार्थे-च्छोपरमेऽपि तद्गामितया ये ते तथाविधाः। प्रहीणानि वा सर्वदुःखान्यर्थाश्च-प्रयोजनानि तेषां ते यथाविधाः। *उत्त॰ ५६९।*

सव्वदुक्खप्पहिणमग्ग- सर्वदुःखप्रक्षीणमार्गः-सकलाकर्म-क्षयोपायः। *ज्ञाता॰ ४९।*

सव्वद्धा- सर्वाद्धा-अतीतानागतवर्तमानकालस्वरूपा। *अनुयो॰ १००।*

सव्दध- सर्वं दधातीति सर्वधं-निरविशेषवचनम्। *आव॰ ४७७।*

सव्वधत्ता- सर्व-जीवाजीवारव्यं वस्तु धत्तं निहितमस्यां विवक्षायामिति सा सर्वधं-निरविशेषवचनं सर्वध्मातं-आगृहीतं यस्यां विवक्षायां सा सर्वधत्ता। *आव॰ ४७७।*

सव्वधम्मा- सर्वधर्मा-अष्टै प्रवचनमातरः। *आव॰ ५४८।*

सव्वधम्माइक्कमणा- प्रवचनमातृणां लङ्घनं यस्यां सा सर्वधर्मातिक्रमणा, आशातनाभेदः। *आव॰ ५४८।*

सव्वन्नू- सर्वस्य-वस्तुस्तोमस्य विशेषरूपतया ज्ञायकत्वेन सर्वज्ञः। *भग॰ ७।* सर्वज्ञः। *जीवा॰ २५६।*

सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा- सर्वप्राणभूतजीवसत्वः सुखा-वहा, सर्वेषां प्राणभूतजीवसत्वानां सुखावहा उपद्रवकारि-त्वाभावत्, इषत्प्राग्भाराय द्वादशमं नाम। *प्रज्ञा॰ १०७।*

सव्वपरिन्नाचारी- सर्वपरिज्ञाचारी विशिष्टज्ञानान्वितः सर्वसंव-रचारित्रोपेतः। *आचा॰ १४७।*

सव्वप्पग- सर्वत्राप्यात्मा यस्यासौ सर्वात्मको लोभः। *सूत्र॰ ३४।*

सव्वप्पणया- सर्वात्मना सर्वैरात्मप्रदेशैः। *प्रज्ञा॰ ५०३।* सर्वात्मना-सर्वात्मप्रदेशैः। *भग॰ २२।* *भग॰७६२।*

सव्वपभा- सर्वप्रभा उत्तररुचकवास्तव्या षष्ठी दिक्कुमारी महत्तरिका। *आव॰ १२२।*

सव्वप्पाणभूतजीवसत्तसुहावह- सर्वे-विश्वे ते च ते प्राणाश्च द्वीन्द्रियादयो भूताश्च-तरवः जीवाश्च-पञ्चेद्रियाः सत्त्वाश्च-पृथिव्यादया इति, तेषां सुखं, शुभं वा आहतीति सर्वप्राण-भूतजीवसत्वसुखावहः *स्था॰ ४९१।*

सव्वफालितामए- सर्वं निरवशेषं स्फटिकविशेषमणिमयं सर्वस्फटिकमयम्। *जीवा॰ ३७९।*

सव्वकालियामए- सर्वं निरवशेषं स्फटिकविशेषमणिमयं सर्वस्फटिकमयं चन्द्रविमानम्। *सूर्य॰ २६२।*

सव्वफालियामय- सर्वसफटिकमयं सर्वात्मना स्फटिकमयम्। *जीवा॰ १७४।*

सव्वफालिहमय- सर्वस्फटिकमयं सर्वात्मना स्फटिकमयम्। *प्रज्ञा॰ ९९।*

सव्वबंध- जीवो यदा प्राक्तनं शरीरकं विहायान्यद् गृहणाति तदा प्रथमसमये उत्पत्तिस्थानगतान् शरीरप्रायोग्यपुद्गलान् गृहणात्येवेत्यं सर्वबन्धः। *भग॰ ४००।*

सव्वबल- सर्वबलं-सामास्त्यः स्वस्वहस्त्यादिसैन्यम्। *जीवा॰ २४५।*

सव्वबाहिरिया- सर्वबाह्या। *सूर्य॰ ६७।*

सव्वब्भंतर- सर्वाभ्यन्तरः। *सूर्य॰ ११।*

सव्वभंतरिए- सर्वाभ्यन्तरकः। सर्वात्मना-सामस्त्येना-भ्यन्तरः। *जीवा॰ १७७।*

सव्वब्भंभरिया- सर्वाभ्यन्तरिका। *सूर्य॰ ६७।*

सव्वभंडिओ- सर्वभाण्डिकः। *उत्त॰ १२३।*

सव्वभत्ती- सर्वभक्तिः सर्ववस्त्रप्रकारः। *स्था॰ ४४९।*

सव्वभाव- सर्वभावः शक्त्यनुरूपम्। *दशवै॰ २३०।* साक्षा-त्कारः। *स्था॰ ३४१।* सर्वप्रकारः स्पर्शरसगन्धरूपज्ञानं घटमित्यर्थः। *स्था॰ ५०६।* सर्वमेव साक्षात्कारः-चक्षुप्र-त्यक्षः। *भग॰ ३४२।*

सव्वभावविऊ- भाव्येकादशमजिनः। *सम॰ १५३।*

सव्वभावा- सव्वपज्जया। *दशवै॰ १२९।*

सव्वभासाणुगामी- सर्वभाषानुगामी सर्वभाषाः-आर्यानार्या-मरवाचः अनुगच्छन्ति अनुकुर्वन्ति तद्भाषाभाषित्वात् स्वभा-षयैव वा। सर्वभाषाः-संस्कृतप्राकृतमागध्याद्या अनुगमयन्ति –व्याख्यायन्तीत्येवं शीला ये ते तथा। *औप॰ ३४।*

सव्वभूयप्पभूय- सर्वभूतेष्वात्मभूतः सर्वभूतात्मभूतः यः आत्मवत् सर्वभूतानि पश्यति। *दशवै॰ १५७।*

सव्वभूमिया- सर्वभूमिका-मन्त्रिअमात्यादिस्थानकः। *ज्ञाता॰ ११।*

सव्वमूलगुणपच्चक्खाण- सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानं, पञ्चमहा-व्रतानि। *आव॰ ८०४।*

सव्वरतणा- देवेन्द्रस्य राजधानी। *स्था॰ २३१।*

सव्वरयण- सर्वरत्नं सर्व्वरत्ननामा निधिः। *स्था॰ ४४८।* मानुष्योत्तरपर्वते तृतीयाः कूटः। *स्था॰ २२३।* सर्वर-त्नाख्यः महानिधिः। *जम्बू॰ २५८।*

सव्वरयणामय- सर्वरत्नमयं सर्वात्मना-सामस्त्येन नत्वेकदे-शेन रत्नमयं समस्तरत्नमयं वा। *प्रज्ञा॰ ८७।*

सव्वरसालू- सर्वरसाढ्यम्। *आव॰ ४३४।*

सव्वरहस्सिओ- सर्वराहस्थिकः भाण्डविशेषः। *आव॰ ४११।*

सव्वलोहिय- सकललोहमयी। *आव॰ ६८५।*

सव्ववडु- सर्वबहुः। *आव॰ ४०८।*

सव्वविभूई- सर्वविभूतिः-स्वस्याभ्यन्तरवैक्रियकरणादिबाह्य-रत्नादिसम्पद्। *जीवा॰ २४५।*

सव्वविभूसा- सर्वविभूषा यावच्छक्तिस्फारोदार शृङ्गारकरणम्। *जीवा॰ २४५।*

सव्वविससमुदओ- सर्वविषसमुदयः सर्वव्यसनैकराजमार्गः। *आव॰ ५६७।*

सव्ववेतालीओ- सर्ववैतालिकः। *आव॰ २५५।*

सव्वसंभम- प्रमोदकृतौत्सुक्यम्। *भग॰ ४७६।* सर्वोत्कृष्टः सम्भ्रमः सर्वसम्भ्रमः। *जीवा॰ २४५।*

सव्वसमण्णागयपण्णाण- सर्वसामान्यागतप्रज्ञानः। सर्वाव-बोधविशेषानुगतः। अविपरीतज्ञानः सर्वद्रव्यपर्यायज्ञानः, अशेषज्ञेयज्ञानः, मोक्षानुष्ठानकर्त्तृज्ञानः। *आचा॰ ७९।*

सव्वसमाहिवत्तियागार- सर्वसमाधिकारः। *आव॰ ८५३।*

सव्वसमुदय- सर्वसमुदायः-स्वस्वाभियोग्यादिसमस्तपरिवारः। *जीवा॰ २४५।* पौरादिमीलनम्। *भग॰ ४७६।*

सव्वसामंतोवणिवाइया- सर्वसामन्तोपनिपातिकी, यत्र सर्वतः-समन्तात् पेक्षकानामागमो भवति सा क्रिया। *आव॰ ६१३।*

सव्वसाहू- सर्वे सामायिकादिविशेषणाः प्रमत्तादयः पुलाका-दयः वा जिनकल्पिकप्रतिमाकल्पिकयथालन्दकल्पिकप-रिहारविशुद्धिकल्पिकस्थविरकल्पिकस्थितकल्पिकता स्थि-तकल्पिकस्थितास्थितकल्पिककल्पातीत भेदाः, प्रत्येकबु-द्धस्वयम्बुद्धबुद्धबोधितभेदाः भारतादिभेदाः, सुषमदुःष-मादिविशेषिता वा साधवः सर्वसाधवः। *भग॰ ४।* ये सर्वेभ्यो जीवेभ्यो हिताः सार्वाः ते च ते साधवश्च। सार्वस्य वा अर्हतः साधवः सार्वसाधवः। सर्वान् वा शुभयोगान् साधयन्ति-कुर्वन्ति सार्व्वान् वा अर्हतः साधयन्ति-आराधयन्ति प्रति-ष्ठापयन्ति वा दुर्नयनिराकरणादिति सर्व्वसाधवो वा। श्रव्येषु श्रवणार्हेषु वाक्येषु साधवः-निपुणाः। सव्यसाधवः ये सव्येषु दक्षिणेसु अनुकूलेषु कार्येसु साधवोनिपुणाः श्रव्यसाधवः वा सव्यसाधवः। *भग॰ ४।*

सव्वसिणाण- सर्वस्नानम्। *दशवै॰ ११७।*

सव्वसिद्धा- सर्वसिद्धा चतुर्थीरात्रिनाम। *सूर्य॰ १४८।*

सव्वसुत्तमहोदही- सर्वसूत्राणां महोदधिरिवः महोदधिः साम-त्स्येन तदाधारतया तत्सम्बोधनं सर्वसूत्रमहोदधिः। *उत्त॰ ५११।*

सव्वसूयगा- सर्वसूचकाःस्वनगरं पुनरागच्छन्ति

पुनर्यान्ति तत्र ये सूचिकाः तैः श्रुतं द्रष्टं सर्वमनुसूचकेभ्यः कथयन्ति। *व्यव॰ १७०* आ।

सव्वसो- सर्वप्रकारेण। *निशी॰ २७* अ।

सव्वाणंद- जम्बवैरवते आगामिन्यां षोडशमतीर्थकृत्। *सम॰ १५४*।

सव्वाण- वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग॰ २००*।

सव्वाणुभूती- गीशालकेन तेजोलेश्यया दग्धमुनिः। *भग॰ ६७७*।

सव्वाणुलोम- सर्व्वानुलोमता। *व्यव॰ २२*।

सव्वादरा- सर्वादरः समस्तयावच्छक्तितोलनम्। *जीवा॰ २४५*।

सव्वायर- सर्वोचितकृत्यकरणरूपः। *भग॰ ४७६*।

सव्वारक्खिओ- एताणि सव्वाणि जो रक्खति सो। *निशी॰ १९४* आ।

सव्वावं- सर्वात्मना सर्वेण वाऽऽतपेनापत्तिः-व्याप्तिर्यस्य क्षेत्रं सर्वं, सर्वेणातपेनापो-व्याप्तिर्यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वापम्, सामान्यः सर्वेणातपेन व्याप्तिर्नं तु प्रतिप्रदेशं। सह व्यापेन आतपव्याप्त्या यत्तत्सव्वयापम्। *भग॰ ७८*। सर्वस्याऽपि तस्याः पुष्करिण्याः सर्वप्रदेशेषु। *सूत्र॰ २७२*। सर्वस्मिन्। *सूत्र॰ ३५०*। सर्वेऽपि। *आचा॰ २३*। सर्वस्मिन्नपि। *आचा॰ २७४*।

सव्वेसणा- सर्वेषणा-सर्वा या आहाराद्युद्गमोत्पादनग्रासै-षणारुपा। *आचा॰ २४३*।

सव्वोवघायसमुदाणकिरिया- सर्वोपघातसमुदानक्रिया यत्र सर्वप्रकारेणौद्रयविनाशं करोतीति। *आव॰ ६१५*।

सव्वोसहि- सर्व एव विड्मूत्रकेशनखादयो विशेषाः खल्वौष-धयो यस्य, व्याध्युपशमहेतव इत्यर्थः। *आव॰ ४७*। सर्व एव खेलजल्लविप्रुड्केशरोमनखादयः औषधिः सर्वौषधिः। *औप॰ २८*।

सव्वोसही- सर्वौषधिः सिद्धार्थकः। *जीवा॰ २४४*।

सव्वोसहे- सर्व-विड्मूत्रादिकमौषधं यस्य सा सर्वौषधः रोगोपशमसमर्थः। *प्रज्ञा॰ ४२५*।

सव्वोही- सर्वावधिः। *प्रज्ञा॰ ५३८*।

ससंकप्पविकप्पणास- स्वसंकल्पविकल्पनाशः। स्वस्यआ-त्मनः सङ्कल्पः-अध्यवसायस्तस्य विकल्पा-रागादयो भेदास्तेषां नाशः-अभावः। *उत्त॰ ६३८*।

ससउ- सुकुमालियावद्धभाउ। *निशी॰ २५८* अ। ससओ जितशत्रुराजपुत्रः भसकभ्राता। *निशी॰ २५८* अ। *बृह॰ ११३* अ।

ससक्ख- सगारीए। *दशवै॰ ८८*।

ससक्खा- सचित्तेण आरण्णरएण वितिभिण्णा ससक्खा। *निशी॰ ८२* आ।

ससणिद्धा- ईसिं उल्ला ससणिद्धा। *निशी॰ ८२* आ।

ससमयसुत्तं- स्वसमयसूत्रं 'करेमि भंते' इत्यादि। *बृह॰ २०१* अ।

ससरुहिर- शशरुधिरम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

ससा- शशकाः। *ज्ञाता॰ ६५*। *निशी॰ १०४* आ। स्वसा। *पिण्ड॰ १४०*।

ससार- ससारः-ज्ञानदर्शनचारित्रसारवान्। *ओघ॰ १८७*।

ससारनिविट्ठ- ससारनिविष्टः। *ओघ॰ १८७*।

ससि- षष्ठं स्वप्नम्। *ज्ञाता॰ २०*।

ससिगुत्त- शशीगुप्तः-चन्द्रगुप्तः। *व्यव॰ २५६* अ।

ससिणद्ध- सस्निग्धं-यद्बिन्दुरहितमात्रम्। *ओघ॰ १७०*। सस्निग्धं- तोयेन उदकार्द्रम्। *ओघ॰ १६८*। सस्निग्धं-ईषल्लक्ष्यमाणजलखरण्टितम्। *पिण्ड॰ १४९*। बिंदू ण संभति तं। *निशी॰ ३८* अ। सस्निग्धं ईषदुदकयुक्तम्। *दशवै॰ १७०*। सस्निग्धं-बिन्दुरहितम्। *दशवै॰ १७०*। सस्निग्धं-बिन्दूरहितम्। *बृह॰ २८३* आ।

ससिणिद्धा- सस्निग्धा-आद्रा। *आचा॰ ३३७*। शीतोदक-स्तिमिता। *आचा॰ ३४२*। सस्निग्धा-गलदुदकबिन्दुः। *आचा॰ ३४६*।

ससिरविगहोवराग- शशिरविग्रहोपरागः-शशिरव्योः राहुलक्षणेन ग्रहणम्। *प्रश्न॰ ३९*।

ससिरीय- सश्रीकः-सशोभाकः। *जीवा॰ १३९*।

ससिवी- वल्लीविशेषः। प्रज्ञान॰ ३२।

ससिहार- शशिहारः। *औप॰ ९१*।

ससी- चन्द्रः । *भग॰ ५७७*। शशी-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*। शसनं-शशः शशोऽस्यास्तीति शशी, सह श्रिया वर्त्तते इति सश्री। *सूर्य॰ २९२*।

ससुंठि- वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२*।

ससुर- श्वसुरः। *आव॰ ३४९*।

ससेण- सशासनः भरताज्ञासहितः। *जम्बू॰ २२०*।

सस्सामिवयण- स्वं च स्वामी च स्वस्वामीनौ तयोर्वचनं प्रतिपादनं तत्र स्वस्वामिवचनः-स्वस्वामिसम्बन्धः। *स्था॰ ४२८।*

सस्साविणी- साश्राविणी सहाश्रावि: जलप्रवेशान्वितः। प्रक्रमात्सन्धिः। *उत्त॰ ५०९।*

सस्सिओ- सास्यकः-कृषीबलः। *बृह॰ २३२अ।*

सस्सिरिए- सश्रीकं-सशोभम्। *भग॰ १२५।*

सस्सिरिय- शोभायुक्तः। *भग॰ ४८२।*

सस्सिरीय- स्वश्रीः आत्मसम्पद्। *भग॰ ४८२।* सश्रीकसशोभन्। *सूर्य॰ २६४।*

सह- सहः-सहिष्णुः, भारते वर्षे पञ्चमो मनुष्यभेदः। *भग॰ २७६।* युक्तः। *उत्त॰ ३६४।* स्वयमात्मनैव। *उत्त॰ ३०६।* सम्बन्धवाची। *आचा॰ २०।* युगपदेव। *समः ११७।*

सहकारिकारण- चक्रचीवराद्यनेकधा कारणम्। *स्था॰ ४९४।*

सहजातग- सहजातः। *आव॰ ३४३।*

सहजायया- सहजातौ जन्मदिनस्यैकत्वात्। *ज्ञाता॰ ९१।*

सहज्जिय- सखी। *आव॰ ४१९।*

सहते- स्थानाविचलनतः क्षमते। *भग॰ ४९८।*

सहत्थपाणाइवायकिरिया- स्वहस्तेन स्वप्राणान् निर्वेदादिना परप्राणान्। वा क्रोधादिना अतिपातयः स्वहस्तप्राणातिपात-क्रिया। *स्था॰ ४१।*

सहत्थपारियावणिया- स्वहस्तेन स्वदेहस्य परदेहस्य वा पारितापनं कुर्वतः स्वहस्तपरितापनिकी। *स्था॰ ९१।*

सहदारदरिसिणो- सह दारान् पश्यन्तीत्वेवंशीलाः सहदार-दर्शिनः, एककालकृतकलत्रस्वीकाराः समानवयस इति। *उत्त॰ ३७७।*

सहदारदरसी- सहदारदर्शिनौ समानयौवनारम्भत्वात्। *ज्ञाता॰ ९१।*

सहदेव- पाण्डुराजपञ्चमपुत्रः। *ज्ञाता॰ २०८।*

सहदेवि- सहदेवी-सनत्कुमारमाता। *आव॰ १६१।*

सहदेवी-औषधिविशेषः। *उत्त॰ ४१७।* चतुर्थचक्रीमाता। *समः १५२।*

सहपंसुकीलिया- सहपांशुक्रीडितकौ समानबालभावात्वात्। *ज्ञाता॰ ९१।*

सहभाव- इंदियाणं पत्तेयं जो जस्स विसयो सो सहभावो। *दशवै॰ ७६।*

सहवड्ढिया- सहवृद्धौ समेतयोर्वृद्धिमुपगतत्वात्। *ज्ञाता॰ ९१।*

सहवासिय- सहवासिकं-प्रतिवेश्मिकम्। *सूत्र॰ ३२०।*

सहसंबवर्ण- सहस्राम्रवनम्। *आव॰ १३७।* हस्तिनागपुर उद्यानम्। *भग॰ ५३५।* हस्तिनागपुरे वायव्यकोण उद्यानम्। *भग॰ ५१४।* सहस्राम्रवनं-काकन्दीनगर्यामुद्यानविशेषः। *उत्त॰ २।* हस्तकल्पायामुद्यानम्। *ज्ञाता॰ २२६।* नागपुर उद्यानम्। *ज्ञाता॰ २५२।*

सहसंबुद्ध- सह आत्मनैव सार्द्धं अनन्योपदेशतः। सहआत्मा नैव सम्यग्-यथावद् बुद्धो हेयोपादेयोपेक्षणीयवस्तु तत्त्वं विदितवानिति सहसम्बुद्धः। *भग॰ ७।* सहसम्बुद्धः-स्वयमेव स्वयमेव सम्यग्बोद्धव्यस्य बोधात्। *औप॰ १४।*

सहसंमइयाए- सहसा तत्क्षणमेव मत्या-प्रातिभबोधावध्या-दिज्ञानेन सह वा ज्ञानेन ज्ञेयं सच्छोभनया मित्थात्वकलङ्का-ङ्करहितया मत्या। *आचा॰ २२७।*

सहसंमुइय- सहात्मन या संगता मतिः स सहसम्मतिः परोपदेशनिरपेक्षतया जातिस्मरणप्रतिभादिरूपया। *उत्त॰ ५६४।*

सहसक्करणं- जाणमाणस्य परायत्तत्वेत्यर्थः। *निशी॰ ३०अ।*

सहसक्कार- सहसाकारः-असमीक्षितपूर्वापरदोषः सहसाक-रणम्। *आचा॰ १०२।* सहसाकारः-अकस्मात्करणः। *स्था॰ ४८४।* सहसाकारः-आकस्मिकक्रिया। *भग॰ ९१९।*

सहसक्खे- सहस्रमक्ष्णं यस्यासौ इन्द्रः सहस्राक्षः। *प्रज्ञा॰ १०१।*

सहसदाण- अप्रतर्कितदानम्। *ओघ॰ १९५।*

सहसम्मइ- सहसम्मत्या सह-आत्मना या सङ्गता मतिः सा सहसम्मतिः। *प्रज्ञा॰ ५६६।*

सहसरूया- सूलविसूइया। *निशी॰ ५२अ।*

सहसलाह- सहसलाभः-विशिष्टस्य कथञ्चिल्लाभः। *आव॰ ६४२।*

सहसा- प्रकाण्ड एव। *आव॰ ७८४।* सहसा-तत्क्षणम्। *दशवै॰ ४४।* एककालम्। *जीवा॰ २६७।* पुव्वावरं

अणालोचेउं। *निशी॰ १३६* आ। आकस्मिकम्। *ओघ॰ १५४*। सहसा-एककालम्। *जम्बू॰ १०२*। अवितर्क्य। *प्रश्न॰ ३०*। अप्रतर्कितम्। *ओघ॰ २२६*।

सहसाअब्भाक्खाण- सहसा-अनालोच्याभ्याख्यानं-असद्दोषारोपणं सहसाऽभ्याख्यानम्। *उपा॰*।

सहसाकारेह- सहसात् कारयत- आशु पञ्चत्वं नयत। *आचा॰ २७३*।

सहसागार- सहसाकारः सत्यकल्पनायः भिक्षादोषविशेषः। *आव॰ ५७५*।

सहसारर- सहस्रारः पुरुषोत्तमवासुदेवागमनस्थानम्। *आव॰ १६३*।

सहसावत्तासियाणि- सहसाऽवत्रासितानि- पराङ्मुखतादेः सपदि त्रासोत्पदकान्यक्षिस्थानगर्भे घट्टनादीनि। *उत्त॰ ४२८*।

सहसि- सहसा भयाभावेन। *ज्ञाता॰ ७१*।

सहसुद्दाह- सहसा-अकस्माद् उद्दाहः-प्रकृष्टौ दाहः सहसो द्दाहः सहस्राणां वा लोकस्योद्दाहः। *स्था॰ ५०८*।

सहस्सपत्र- जलजम्। *प्रज्ञा॰ ३७*।

सहस्सपाकतैल- सहस्रपाकतैलम्। *आचा॰ ३१३*।

सहस्साम्रवणं- द्वारकायां उद्यानम्। *अनुत्त॰ ४९२*।

सहस्संबवण- सहस्राम्रवणं-हस्तिनापुरे उद्यानम्। *विपा॰ ९२*। सहस्राम्रवणं-हस्तिनापुरे उद्यानम्। *भग॰ ७६७*। उद्यानविशेषः। *ज्ञाता॰ १५२*। पोलासपुर उद्यानम्। *उपा॰ ३९*।

सहस्स- सहस्रं अनंतसङ्ख्यायाम्। *आव॰ ४०७*।

सहस्सकार- पूर्वमदृष्ट्वा क्षिप्ते पादे यत्पुनः पश्येत् न च शक्नोति निवर्त्तितुं पादं तत् सहसात्कारः, अतिचारविशेषः। *आव॰ ५६४*।

सहस्सक्ख- सहस्रमक्ष्णां यस्यासाविन्द्रः सहस्राक्षः। *भग॰ १७४*। पञ्चानां मन्त्रिशतानां सहस्रमक्ष्णां भवतीति तद्यो-गादसौ सहस्राक्षः *उपा॰ २६*। सहस्राक्षःसहस्रलोचनः। *उत्त॰ ५*।

सहस्सपत्त- सहस्रपत्रम्। *प्रज्ञा॰ ३७*। जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

सहस्सपाग- सहस्रेणौषधीनां सहस्रं वा वाराः पक्कम्। *बृह॰ २०९ अ*। सहस्रपाकैः-शतकृत्वोऽपरापरौषधिरसेन कार्षापणानां शतेन वा तच्छतपाकमेवं सहस्रपाकमपि। *जम्बू॰ ३९४*। सहस्रपाकं तैलविशेषः। *आव॰ ११६*।

सहस्सब्भक्खाण- सहसाभ्याख्यानम्। *आव॰ ८२०*।

सहस्साणीय- उदायनस्य पितृपिता। *भग॰ ५५६*।

सहस्सार- सहस्रारः कल्पोपगवैमानिके भेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९*।

सहसारवडिंसग- आनतकल्पे अष्टादशसागरोपमस्थितिक-देवविमानं। *सम॰ २५*। सहस्रारावतंशकः। सहस्रारदेव-लोकस्य मध्येऽवतंसकः। *जीवा॰ १९२*।

सहा- सभा चातुर्वैद्यादिशाला। *३६६*। सखा-बालवयस्यः। *स्था॰ २४५*। सखा-समानखादनपानोगाढतमस्नेर्-स्थानम्। *जीवा॰ २८१*। सभा। *औप॰ ४१*। सहाः। *जम्बू॰ ३१३*। सहाः। *जम्बू॰ १२८*। सभा। आस्थायिका। *जम्बू॰ १४४*। सखा-समानखादनपानो गाढतमस्नेहास्पदम्। *जम्बू॰ १२३*। सभा। *जम्बू॰ ३८८*। सभानाम ग्रामनगरादीनां तद्वासिलोकास्थायिकार्यमागन्तुकशयनार्थं च कुड्याद्या-कृतिः। *आचा॰ ३०७*।

सहाकार- विशेषितग्रहणशक्तिलक्षणः। *स्था॰ ९३*।

सहाकिच्च- सहायकृत्यं-मित्रादिकृत्रं सहायकर्म्म। *ज्ञाता॰ १९१*।

सहामि- तदुत्पत्तावभिमुखतया। *स्था॰ २४७*।

सहाय- सहायः-साहाय्यकारी। *ज्ञाता॰ ८८*। सहायः-सहचरः। *स्था॰ २४५*।

सहायकिच्च- सहायकृत्यम्। *आव॰ ३४६*।

सहायत्तं- सहायत्व साधूनां नमस्कारार्हत्वे हेतुः। *आव॰ ३८३*। सहायत्वं अर्हदादीनां नमस्कारार्हत्वे हेतुः। *आव॰ ३७३*।

सहायपच्चक्खाण- सहायाः-साहाय्यकारिणो यतयस्तत्प्रत्याख्याने तथाविधयोग्यताभाविनाऽभिग्रहविशेषरूपः। *उत्त॰ ५८१*।

सहावो- स्वभावः यद् मुद्गादीनां राद्धिस्वभावमितरद्वा स। *प्रश्न॰ ३५*। स्वभावः। *प्रश्न॰ ३५*। स्वभावः-स्वरूपः। *उत्त॰ ६८५*।

सहावफुल्ल- स्वाभावफुल्लं प्रकृतिविकसितम्। *दशवै॰ ७३*।

सहावसिद्ध- स्वभावसिद्धं-आत्मार्थं कृतम्। उद्गमादिदोष

रहितम्। *दशवै॰ ७३*।

सहि- सखा-मित्रम्। *जम्बू॰ १४९*। सहिः। *स्था॰ २४७*।

सहिए- सहितः महाग्रहः। *जम्बू॰ ५३४*। सहितः सम्यग्दर्शनादिभिरन्यसाधुभिः। *उत्त॰ ४१४*। स्वस्मै हितः स्वहितः। *उत्त॰ ४१४*। सह हितेन वर्त्तत इति सहितः, सहितो-युक्तो वा ज्ञानादिभिः। स्वहितः-आत्महितो वा। *सूत्र॰ ६९*। सह हितेन वर्त्तत इति सहितः। *आचा॰ ६२६*।

सहिओ- कालोचितस्वाध्यायप्रतिलेखनातपः सहितः। *व्यव॰ २३६*।

सहिण- श्लक्ष्णं-सूक्ष्मम्। *आचा॰ ३९४*। श्लक्ष्णं-सूक्ष्मम्। *आचा॰ ३९४*। सहिष्णुः। *बृह॰ ७० अ*।

सहिणकल्लाण- श्लक्ष्णं-सूक्ष्मं तत् वर्णच्छव्यादिभिश्च कल्याणं शोभनं वा सूक्ष्मकल्याणम्। *आचा॰ ३९४*।

सहिय- सीहतः-मिलितः। *उत्त॰ ७०६*। संहतम्। *औप॰ ४७*। सहितः-समुदितः। *जीवा॰ १९४*।

सहिया- सहिता-सन्तता नत्वपान्तरालव्यवच्छिन्ना। *जीवा॰ २७१*।

सहिष्णु- समर्थः। *भग॰ २७८*।

सहीण- स्वाधीनं स्ववशम्। *दशवै॰ २२५*।

सहु- सहिष्णुः-निष्ठुरशरीरम्। *उपा॰*।

सहू- सहूः समर्थः। *ओघ॰ ४२*। समर्थः। *आव॰ ७७८*। सहिष्णुः। *आव॰ ८५८*।

सहे- सहते-क्षमते। *आव॰ ५६८*।

सहेज्ज- सहेत। *ज्ञाता॰ १७३*।

सहो- सहः-समर्थः सहायादिगुणयुक्तः। *आव॰ ५३७*।

सहोढ- सलोप्त्रः। *पिण्ड॰ ११३*। समोषम्। *ज्ञाता॰ ८६*। सलोप्त्रः। *निशी॰ १२८ अ*। सलोप्त्रः। *बृह॰ १५४ अ*। सहोढ-सलोप्त्रम्। *निशी॰ १०७ अ*।

सांकायिक- भारोद्वहनयन्त्रम्। *निर॰ २६*।

सांगइओ- साङ्गतिकः-सङ्गतिमात्रघटितः। *जीवा॰ २८१*।

सांतर- सान्तरः-सावकाशः-बृहदन्तरालः। *ओघ॰ ८२*।

सांतरा- पत्नी। *व्यव॰ ८५ अ*।

सांभरक- दीपसत्को रूपकः। *बृह॰ २२७ अ*।

सांमोही- सम्मोही, गुढात्मनो देवविशेषास्तेषामियं साम्मोही। *बृह॰ २१२ आ*।

सांयात्रिकः- सांयात्रिकः। *आचा॰ २४७*।

सांशयिक- मिथ्यात्वे पञ्चमभेदः। *स्था॰ २७*।

साइ- सादि नाभीतोऽधश्चतुरस्रलक्षणयुक्तमुपरि च न तदनुरूपं संसाथानम्। *भग॰ ६५०*। अविश्रमः। *ज्ञाता॰ २३८*। सह आदिना-नाभेरधस्तनभागेन यथोक्तप्रमाणलक्षणेन वर्त्तते इति सादि। तृतीयं संस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ४१२*। सादि उत्से-धबहुलं संस्थानम्। *आव॰ ३३७*। स्वातिः माया। दशा॰ *२७२*।

साइजोग- अविश्रम्भसम्बन्धः सातिशयेन वा द्रव्येण निरति-शयस्य योगस्तत्प्रतिरूपकरणम्। *भग॰ ५७३*।

साइजोगजुत्त- सादियोगयुक्तः अशुभमनोयोगयुक्तः। द्वाविं-शतितममोहनीयस्थानम्। *आव॰ ६६१*।

साइज्जइ- स्वदत्ते-अनुमन्यते। *भग॰ ६८४*। आसादयति प्रतिगृह्णाति। *व्यव॰ २२३ अ*।

साइज्जण- सातये-सङ्गोपये। *बृह॰ २२१ अ*।

साइज्जणय- स्वदनता। *भग॰ ९२४*।

साइज्जणया- सेवा। *स्था॰ १४९*।

साइज्जणा- अणुमोयणा। *निशी॰ १३४ अ*। दुविहा कारावणे अणुमोदणे च। *निशी॰ १०३ आ*।

साइज्जह- स्वदध्वः-अनुमन्यध्वः। *भग॰ ३८१*।

साइज्जिज्जा- आस्वादयेत्। *आचा॰ ३९८*।

साइज्जित्तए- स्वादयितुं-भोक्तुम्। *औप॰ ९५*।

साइज्जिस्सामि- स्वादयिष्यामि-उपभोक्ष्ये। *आचा॰ २८२*। स्वादयिष्यामि-अभिलषिष्यामि। *आचा॰ २८१*।

साइज्जेज्ज- स्वादयेत् सत्यङ्कारदानतः स्वीकुर्यात्। *भग॰ २२९*। अभ्युपगच्छत्। *आचा॰ ३३१*।

साइतंकार- सत्यङ्कारफ। *आव॰ ७०३*।

साइम- स्वादनं स्वादः तेन निर्वृत्त स्वादिमम्। *स्था॰ १०९*। स्वादिमं स्वाद्यत इति स्वादिमं कर्पूरलवङ्गादि। *आचा॰ २६५*। स्वादिमं कक्कोललवङ्गादि। *आव॰ ८११*। स्वादिमं –गुडताम्बुलपुगफलादि, स्वादयति गुणान्-रसादीन् संयम-गुणान-रसादीन् वेति। *आव॰ ८५०*। स्वाद्यं-ताम्बुलादि। *दशवै॰ १४९*।

साइयंकार- सप्रत्ययम्। *पिण्ड॰ १२८*।

साइयसंठित- उत्तराषाढानक्षत्रसंस्थितिः। *सूर्य॰ १३०*।

साइया- सादिताः-खेदं प्रापिताः। *बृह॰ ३०१ आ*।

साइसंठाणा- सादिसंस्थानं। तृतीयं संस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ४७२*। नाभितोऽधः

सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणाविसंवादिनो यस्योपरि च यत्तदनुरूपं न भवित तत्सादिसंस्थानम्। *समः १५०*।

साइसंपओग- सहानिशयेन संप्रयोगः सातिशयेन द्रव्येण कस्तूरिकादिनाऽपरस्य द्रव्यस्य संप्रयोगः सातिसम्प्रयोगः। *सूत्र० ३३०*। सातिसम्प्रयोगः-विगुणद्रव्यस्य द्रव्यान्तरमी-लनेन गुणोत्कर्षभ्रमोत्पादनम्। *प्रश्न० ९७*।

साई- स्वातिः। *स्था० ७७*। भावीत्रयोविंशतितमतीर्थकृन्नाम। *समः १५*। स्वातिः-वायुभूतेर्जन्मनक्षत्रम्। *आव० २५५*।

साईकारावण- सत्यङ्कारः। *आव० ६८५*।

साउणिय- शकुनान् हन्तीति शाकुनिकः। *प्रश्न० १३*। शकुनेन चरतीति शाकुनिकः। *प्रश्न० १३*। शकुनेन-श्येनादिना मृगयां करोतीति शाकुनिकः। *प्रश्न० ३७*। शाकुनिकः शकुनेन चरति पापर्धिं करोति शकुनान् वा घ्नन्तीति शाकुनिकः। *अनुयो० १३०*।

साए- हस्तविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

साएअ- साकेतं-चन्द्रावतंसकनगरम्। *आव० ३६६*।

साएए- अनुत्तरोपपातिके पञ्चमवर्गे नगरम्। *अनुत्त० ८*। नगरविशेषः। *अन्त० २३*।

साएय- साकेतं-नगरविशेषः। *अनुयो० ८*। वारत्तते नगरम्। *अन्त० २३*। साकेतं-मूलगुणप्रत्याख्याने शत्रुञ्जयरा-जधानी। *आव० ७१५*। साकेतं-साकेतात्समकटकभ्रान्तः। *उत्त० ३७९*। साकेतं-अलोभोदाहरणे पुण्डरीकराजधानी। *आव० ७०१*। दुरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। साकेतं-नगरं, यत्र कुरूटोत्कुरूटौ दोषार्त्तेतरोपाध्यायौ कालं गतौ। *आव० ४६५*। केतं-चिह्नं सह केतेन वर्त्तते सकेतं-सचिह्नम्। *भग० २९७*। साकेतं-कोशलजनपदे आर्यक्षेत्रे नगरम्। *प्रज्ञा० ५५*।

साकड्ढंते- समाकर्षयन्। *भग० १७५*।

साकार- साकारत्वं विच्छिन्नवर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम्। *समः ६३*।

साकारपस्सी- साकारपश्यत्ता। *प्रज्ञा० ५३१*।

साकेअ- साकेअं-अभिनन्दनस्य प्रथमपारणकस्थानम्। *आव० १४६*।

साकेत- नगरविशेषः। *दशवै० २८१*।

साकेय- साकेतं नगरविशेषः। *आव० ६२*। कुरूदत्तपुत्रप्रति-मास्थितस्थानम्। *उत्त० १०६*।

साखा- शाखा। *उत्त० ३००*। शाखा-विडिमा। *जीवा० ३६३*।

साखापारओ- शाखापारगः। *आव० ३००*।

साग-शाको-वस्तुलादिभर्जिका। *स्था० ११०*। शाकः-तक्रसिद्धः। *स्था० ११९*। वृक्षविशेषः। *उत्त० ६५४*। शाकः वत्थुलभर्ज्जिकादिः। *पिण्ड० २२*। वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*। शाकः-तक्रसिद्धः। *भग० ३२६*। शाकः-वस्तुलादि। *उपा० ५*। सौवस्तिकशाकः। *उपा० ५*। शाकः-तक्रसिद्ध-शाकः। *प्रश्न० १६३*। शाकः-वस्तुलादिभर्जिका, शाकः-तक्रसिद्धः। *सूर्य० २९३*।

सागओ- स्वागतः। *आव० १८९*।

सागड- शाकटं-गन्त्रीविशेषाणां समूहः। *भग० ६७१*।

सागतए- आलिङ्गनम्। *आव० ३४९*।

सागपत्त- शकपत्रम्। *प्रज्ञा० ३६७*। सर्गपत्रं-वृक्षविशेषपर्णम्। *प्रश्न० ८*।

सागय- स्वागतम्। *आव० ६७२*। स्वागतं-शोभनमागमनम्। *भग० ११६*।

सागयमणुरागय- शोभनत्वानुरूपत्वलक्षणधर्मद्वयोपेतमागमनम्। *भग० ११७*।

सागरंगमा- सागरं-समुद्रं गच्छतीति सागरङ्गमा-समुद्रपातिनी। *उत्त० ३५२*।

सागर- सागरः-दत्तवासुदेवधर्माचार्यः। *आव० १६३*। बलदे-ववासुदेवयोः पूर्वभवधर्माचार्यः। *समः १५३*। अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य तृतीयमध्ययनम्। *अन्त० १*। सागरः-इन्द्र-दत्तराजस्य दासचेटः। *उत्त० १४८*। सागरः-अयं क्वचि-त्काले प्रचुरसलिलो भवति क्वचित्पूनर्मर्यादावस्थ एव उप-माविषयः। *ओघ० ६९*। ईशानकल्पे सागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः २*। द्वादशमं स्वप्नम्। *ज्ञाता० २०*। सागरः-अन्तकृद्दशानां द्वीतीयवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। *अन्त० ३*। सागरः-तितिक्षोदाहरणे चतुर्थो दासचेटः। *आव० ७०२*। सागरः-दासचेटः। *आव० ३४३*।

सागरकंत- ईशानकल्पे सागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः २*।

सागरकूट- वक्षस्काराधिपतिवासकूटम्। *जम्बू० ३३७*।

सागरखमण- सागरक्षपणः। *उत्त॰ १२६*। प्रज्ञादृष्टान्तः। *मरण॰*।

सागरचंद- सागरचन्द्रः-चन्द्रावतंसकस्य सुदर्शनाराज्ञ्या ज्येष्ठपुत्रः युवराजा। *आव॰ ३६६*। सागरचन्द्र-निषधपुत्रः। *आव॰ ९४*। बारवर्ती बलदेवपुत्तस्य पुत्तो। *बृह॰ ३० अ*। सूच्युपसर्गसहः। *मरण॰*।

सागरचंदा- मुनिचन्द्रगुरवः-सागरचन्द्राः आचार्याः। *उत्त॰ ३७५*।

सागरचित्तकूड- सागरचित्रकूटं- नन्दनवने कूटः। *जम्बू॰ ३६७*।

सागरतरङ्ग- नाट्यविशेषः। *जम्बू॰ ४१४*।

सागरदत्त- सागरदत्तः-भद्रबलदेवपूर्वभवः। *आव॰ १६३*। सागरदत्तः- पाटलखण्डनगरे सार्थवाहः। *विपा॰ ७४*। सागरदत्तः-ब्रह्मदत्तपत्न्या दीर्घशिखायाः पिता। *उत्त॰ ३७९*। तृतीयबलदेवपूर्वभवनाम। *सम॰ १५३*। चम्पायां सार्थवाहः। *ज्ञाता॰ २००*। गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणाल-यपुरे श्रेष्ठी। *पिण्ड॰ ६८*।

सागरदत्ता- कुन्थुनाथशीबिका। *सम॰ १५१*।

सागरप्रविभक्ति- द्वादशमो नाट्यभेदः। *जम्बू॰ ४१६*।

सागरप्रविभक्तिनागप्रविभक्त्यभिनयात्मकः- सागरनाग-प्रविभक्तिनामा द्वादशमो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६*।

सागरबोद- सागरपोतः-परलोकफलविषये सार्थवाहः। *आव॰ ८६३*।

सागरमह- उत्सवविशेषः। *आचा॰ ३२८*।

सागरवर- स्वयम्भूरमणः। *आव॰ ५१०*।

सागरवूह- सागरव्यूहः-सागराकारः सैन्यविन्न्यासः। *प्रश्न॰ ४७*। सागरव्यूहः-चेटकस्य व्युहरचना। *आव॰ ६८४*।

सागरसरिनामधेज्जा- सागरसदृशनामधेयः। सागरोपमः। *आव॰ १७१*।

सागरोवम- कालमानविशेषः। *स्था॰ ८६*। सागरेणोपमा यस्मिंस्तत्सागरोपमः। ठाणा। ९०। पल्योपमानां दशभिः कोटाकोटाभिरेकं व्यावहारिकं सागरोपमम्। *अनुयो॰ १८०*। सागरोपमं-कालमानविशेषः। *अनुयो॰ १००*। सागरोपमः। *भग॰ २७५*। सागरोपमः-कालमानविशेषः। *भग॰ २१०*। सागरोपमः दुर्लभपारत्वात् सागरेण-समुद्रेणोपमा यस्य तत्सागरोपमं, असङ्ख्यकालत्वम्। *जम्बू॰ ९२*। कालविशेषः। *भग॰ ८८८*। सागरोपमं-पल्योपमानां दशकोटीकोट्यः। *जीवा॰ ३४५*।

सागार- आक्रियन्त इत्यकाराः प्रत्याख्यानापवादहेतवोऽना-भोगाद्यास्तैराकारैः सहेति साकारम्। *स्था॰ ४९८*। साकारः-विशेषग्राहकः। *भग॰ ३५५*। प्रत्याख्यानापवाद-हेतवोऽनाभोगादय आकारास्तैः सह साकारः। *आव॰ ८४०*। सागारः-सागारिकः। *ओघ॰ ५०*।

सागारठवंति- सविकल्पं कुर्वन्ति। *ओघ॰ ६९*।

सागारपासणया- साकारपश्यता। *ओघ॰ १५५*। सागारिकः शय्यातरः। *पिण्ड॰ ९७*।

सागारिअ- सागारिकं-मेहनम्। *आव॰ २२०*। सागारिकः-शय्यातरः। *ओघ॰ ७२*।

सागारिअसंघट्टण- सागारिकसंस्पर्शः। *ओघ॰ ९०*।

सागारिए- सागारिको-वसतिस्वामी। *बृह॰ १८३ आ*। सागारिकः-सागारयुक्तः। *बृह॰ ३९ अ*। सागारिकः-शय्यातरः। *ओघ॰ १३८*। सागारिकः स्तेनादिकः। *ओघ॰ ११२*।

सागारिओ- सेज्जातरो। *निशी॰ १५२ आ*। सेज्जा-तरो। *निशी॰ २२५ आ*। सेज्जायरो। *निशी॰ ७३ आ*।

सागारिक- शय्यातरः। *आव॰ १५६*। मैथुनम्। *बृह॰ २०१ अ*। मैथुनम्। *बृह॰ ५१*।

सागारकड- सागारकृतं-यस्त्वनात्मार्थीकतम्। *व्यव॰ २७१*। *बृह॰ ८८ आ*।

सागारिकावग्रह- शय्यातरावग्रहः, तृतीयोऽवग्रहः। *आव॰ १५६*।

सागारिगा- सद्दपडिबद्धा वसहीए ठिता। *निशी॰ ६७ अ*। जत्थ वसहीए ठियाणं मेहणुब्भवो भवति सा सागारिगा, अहवा जत्थ इत्थी पुरिसा वसंति से सागारिका। *निशी॰ १ अ*।

सागारित- अगारं-गृहं सह तेन वर्त्तत इति सागारः, स एव सागारिकः-शय्यातरः। *स्था॰ ३११*।

सागारिय- सागारिकं-मैथुनम्। *आचा॰ ३०२*। सागारिकः-शय्यातरः। *सूत्र॰ १८१*। मैथुनम्। *आचा॰ २००*। सागा-

रिकम्। *दशवै॰ ५७*। सागारिकः-स्थानदाता। *सम॰ ४०*। सहागारेण-गेहेन वर्त्तत इति सागरः स एव सागारिकः। *भग॰ ७००*। सागारिकः- *आव॰ ८५३*। अंगादाणं। *निशी॰ ३३* अ। उत्प्राव्राजनभयं। *बृह॰ ४४* अ। मेहुणं। *निशी॰ २१७* अ। सागारिकम्। *आव॰ ७३९*।

सागारियपसंग- मैथुनम्। *बृह॰ २०८* अ।

सागारियपिंड- सागारिकपिण्डं सागारिकः-शय्यातरस्तस्य- पिण्डं-आहारं, यदि वा सूतकगृहपिण्डं जुगुप्सितं वर्णापस-द्पिण्डं वा। *सूत्र॰ १८१*।

सागारिया- सागारिकाः सज्ञातकाः। *बृह॰ ३८* अ।

सागारियागार- सागारिकाकारः। *आव॰ ८५३*।

सागारोवउत्त- आकारः-प्रतिनियतोऽर्थग्रहणपरिणामः, सह आकारेण वर्तते इति साकारः स चासावुपयोगश्च साकारोप-योगः। *प्रज्ञा॰ ५२६*।

सागेय- कौशलाजनपदे राजा, साकेतः। *ज्ञाता॰ १३०*। नगरविशेषः। *अन्त॰ २३*। साकेतं-यत्र सम्यक्त्ववान् चन्द्रावतंसको नाम राजा। *उत्त॰ ३७५*। सिद्धौ नगरम्। *अन्त॰ २३*। साकेतं नगरं, यत्र अशोगदत्तेभ्यस्य पूत्रौ जातौ। *आव॰ ३९४*।

सागेयनगर- महाकालिन्दायाः पूर्वभववास्तव्या नगरी। *ज्ञाता॰ २५२*।

सागेयनयर- नगरविशेषः। *आव॰ २५३*।

साङ्ख्य- शास्त्रविशेषः। *आव॰ ३७५*।

साचि- शाल्मलीतरुः। *जीवा॰ ४३*।

साचिव्य- प्राधान्यम्। *नन्दी॰ ९०*।

साची- शाल्मलीतरूः। *प्रश्न॰ ४१२*।

साडग- एगदेशखंडस्स पढणं। *निशी॰ २३२* अ।

साडगग्गहणा- परिहाणं जुवलं वासं। *निशी॰ ३२९* आ।

साडण- सातनं-उदराद्बहिःकरणम्। *निर॰ ११*। शातनं शातनकरणं यस्य शङ्खोदाहरणम्। *आव॰ ४६२*।

साडणा- शातना-गर्भस्य खण्डशो भवनेन पतनहेतुः। *विपा॰ ४२*।

साडय- शाटकं-वस्त्रमात्रम्। *भग॰ ४७६*। शाटकम्। *आव॰ ३०६*। शाटकं-वस्त्रमात्रम्। *जम्बू॰ १६१*। शाटिकः। *आव॰ ३९४*।

साडीकम्म- शाटककर्म शाकटिकत्वेन जीवति। *आव॰ ८१९*।

साडुअ- अबद्धास्थिफलम्। *आव॰ ६८४*।

साडेतूण- शाटयित्वा। *आव॰ ८३१*।

साडोल्लए- उत्तरीयवस्त्रम्। *ज्ञाता॰ २३५*।

साड्ढी- श्रद्धा-धर्म्मेच्छा सा विद्यते यस्यऽसौ श्रद्धावान्। *आचा॰ २२३*।

साणं- स्वेषां आत्मीयानाम्। *प्रज्ञा॰ ८९*। श्वानं-मण्डलम्। *दशवै॰ १६७*। श्वानः-कौलेयकः। *प्रश्न॰ ७*। *ज्ञाता॰ ९४*। दिशाचरविशेषः। *भग॰ ६५९*।

साणए- सणसूत्रमयं वस्त्रं सानकम्। *बृह॰ २०१*।

साणत- सणसूत्रमयं सानकम्। *स्था॰ ३३८*।

साणवणीमत- वणीमगे चतुर्थो भेदः। *स्था॰ ३४१*।

साणावच्छादारासंघट्टणा- श्वानवत्सदारकसंघट्टना। *आव॰ ५७५*।

साणिय- साणयं-साणवत्कलनिष्पन्नम्। *आचा॰ ३९३*।

साणी- सवणक्केहिं विज्जइ। *दशवै॰ ७७*। शाणीअत-सीवल्कजा पटी। *दशवै॰ १६६*।

साणुक्कोस- सानुकोशः सदयः। *प्रश्न॰ ७४*। सानुक्रोशः-सकरुणः। *उत्त॰ ४९१*।

साणुक्कोसया- सानुकोशता। *आव॰ ६५*। सानुकम्पता। *भग॰ ४१२*।

साणुणाति- आरामे गंभीरे जत्थ वा खेत्ते पडिसद्दो भवति तं साणुणाति। *निशी॰ ९९* आ।

साणुप्पओ- चउभागावसेसचरिमाए उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहेयव्वाउत्ति ततो कालस्स पडिक्कमति ततो पडिले-हेति एस साणप्पओ। *निशी॰ २१९* अ।

साणुप्पग- प्रत्यूषवेलायां सानुप्रगः। *बृह॰ ३०१* अ।

साणुवीय- अविध्वस्तयोनिबीजम्। *आचा॰ ३४८*।

साणुलट्ठिय- सानुलष्ठं-ग्रामविशेषः। *आव॰ २१५*।

साणेति- मंदपादो शुक्लपादो वा। *निशी॰* प्रव *३२४* आ।

साणिण- सावगं। *निशी॰ २११* अ।

सात- आह्लादः। *जीवा॰ १२३*।

सातवाहण- शातवाहनः प्रतिष्ठाननगरे राजा। *व्यव॰ १९३*।

सातसोक्ख- सातसौख्यं अभिमानमात्रजनितमाह्लादम्। *जीवा॰ १२३*।

सातागारव- सातागौरवं-सुखशीलता। *सूत्र॰ १७३*।

सातासात- क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवतः साता-साते। *प्रज्ञा॰ ५५६।*

साति- सादि-सह आदिना-नाभेरधस्तनभागेन यथोक्तप्रमा-णलक्षणेन वर्त्तत इति सादि, तृतीयं संस्थानं उत्सेधबहुलम्। *जीवा॰ ४२।* शाल्मलीतरुरिव यत्संस्थानम्। *जीवा॰ ४२।*

सातिचार- छेदोपस्थापनिकचारित्रे द्वितीयो भेदः, मूल-प्रायश्चित्तप्राप्तस्य भवति। *स्था॰ ३२३।*

सातिज्जणा- अणुमोयणे कारावणे। *निशी॰ ११५* आ।

सातिदत्त- स्वातिदत्तः ब्राह्मणविशेषः। *आव॰ २२५।*

सातियंकार- सत्यङ्कारः। *आव॰ ३४३।*

सातिरेगअउणंद्विपोरिसी- सातिरेकैकोनषष्टिपौरूषी सूर्य-उद्गमसमये अस्तगमनसमये छाया। *सूर्य॰ ९१।*

साती- सातिः-अविश्रम्भः, मृषावादस्य त्रयोदशं नाम। *प्रश्न॰ २६।* स्वातीनक्षत्रम्। *सूर्य॰ १३०।* सादिः-आदिरिहोत्से-धाख्यो नाभेरधस्तनो देहभागो गृह्यते तेनादिना शरीरलक्ष-णोक्तप्रमाणभाजा सह वर्त्तत यत्तत् सादिः, उत्सेधबहुलं परिपूर्णोत्सेद्यमित्यर्थः। *स्था॰ ३५७।*

सात्त्विक- अभिनयविशेषः। *जम्बू॰ ४१४।*

सादिज्जति- परिभुंजति। *निशी॰ १०८* आ।

सादिय- सहादिना- मायया वर्त्तत इति सादिकं समायम्। *सूत्र॰ १७३।*

सादिव्वं- सादिव्यं सदेवत्वम्। *उत्त॰ ३२३।* सादेव्यम्। *उत्त॰ १०८।* देवताप्रातिहार्यम्। *पिण्ड॰ १२५।* सादिव्यं-देवस-न्निधानम्। *उत्त॰ ८५।* सह दिव्यः सादिव्य तच्च गन्धर्वन-गरादि दिव्यकृतम्। *आव॰ ७३१।*

सादिसंपयोगपरा- अवीसत्थहियया। *दशवै॰ १५४।*

सादी- सह आदिना-नाभेरधस्तनकायलक्षणेन वर्त्तत इति सादिः। *अनुयो॰ १०२।*

सादीणगंगा- सप्त महागंगा प्रमाणा। *भग॰ ६७४।*

सादेति- लभति। *निशी॰ २८०* अ।

सादेव्वं- पादेव्यं-सान्निध्यम्। *प्रश्न॰ ११५।* से दिव्येण सादेव्वं दिव्वकंतम्। *निशी॰ ७०* अ।

साधर्मिक- संयतः। *आव॰ १५६।*

साधम्मिकावग्रह- अवग्रहे पञ्चमो भेदः। *आचा॰ १३४।* साध-र्मिकावग्रहः-संयतावग्रहः। *आव॰ १५६।*

साधारणस्थान- प्रपतातालम्बनम्। *आव॰ ५३४।*

साधारणा- धारणामेवार्थमुपयोगात् च्युतं जघन्यतोऽन्तर्मुहू-तादुत्कर्षतोऽसङ्ख्येयकालात् परतो यत्स्मरणं सा साधारणा। *नन्दी॰ १७६।*

साधु- जैनसाधुः। *आव॰ ५९।* अर्हत्प्रणीतधर्मानुष्ठायी। *आचा॰ ३६१।*

साधुकार- साधुकारः। *आव॰ ३४५।*

साधुकृतं- सुष्ठुकृतम्। *नन्दी॰ १६४।*

साधुगरहिणिज्ज- साधुगर्हणीयः। *उत्त॰ ३३०।*

साधुरक्षितगणि- क्षमाश्रमणविशेषः, मित्रवाचनकक्षमाश्रमणा-देशवान्। *व्यव॰ १००* आ।

साधू- णिग्गंथो। *निशी॰ ९८* अ।

साधूपसम्पत्- ज्ञानादिहेतोयदपरं गणं गत्वोपसम्पद्यते, सा साधुविषया। *बृह॰ २२२* अ। *आव॰ २६७।*

साध्यविकलत्वादि- लक्षणदोषः। *स्था॰ ४९३।*

साध्यविरुद्ध- हेतौ भेदः। *स्था॰ २।*

सानुनासिकमनुनासं- नासिकाविनिर्गतस्वरानुगतम्। *जीवा॰ १९४।*

सान्तन- सभूपतिप्रासादः। *जम्बू॰ २०९।*

साफल्ल- साफल्यं-कालान्तरफलप्रदानलक्षणम्। *दशवै॰ १३४।*

साबर- मन्त्रविशेषः। साबरः-साधनरहितो मन्त्रविशेषः। *आव॰ ४११।*

साब्भाविए- सद्भावेन निरुपचरितसकलदुःखक्षयाय। *दशवै॰ ६३।*

साभरगा- देशीवचनात् रूपक-। *बृह॰ १०३* अ। रूवगो। *निशी॰ १६७* अ।

साभाविय- जं अप्पणो अद्धारद्धं। *निशी॰ १४२* अ। स्वाभाविकश्रमणोऽन्यो वा प्रथममागच्छति तस्मै यदग्रपि-ण्डादि दीयते तत् स्वाभाविकम्। *व्यव॰ १६०* अ।

साभावियहंसा- साद्भाविकः-अकैतवकृतो घर्षोघर्षणम्। *ज्ञाता॰ २१९।*

साभिण्णाण- साभिज्ञानम्। *आव॰ ९२।*

सामंत- गिहसमीवं। *दशवै॰ ७५।* सामन्तं-समीपम्। *ज्ञाता॰ ८।* सामन्तं-सन्निकृष्टम्। *भग॰ १३।* सामन्त-सन्निकृष्टम्। *जम्बू॰ १६।*

सामंतरज्ज- सामन्तराजः। *आव॰ ७१२।*

सामंतरायपुत्त- सामन्तराजपुत्रः। *आव॰ ५५७।*

सामंतोवणिवाइया- सामन्तोपनिपातिकी, विंशतिक्रियाभध्ये नवमी। *आव॰ ६१२।*

सामंतोवणिवातियं- सामान्यतोविनिपातिक, तृतीयोऽभि-नयविधिः। *जीवा॰ ४४७।*

साम- श्यामः-तृतीयः परमाधार्मिकः। *सूत्र॰ १२४।* नरके तृतीयः परमाधार्मिकः। *आव॰ ६५०।* यस्तु रज्जुहस्तम-हारादिना शातपातनादि करोति, वर्णतश्च श्यामः स श्यामः, तृतीयपरमाधार्मिकः। *समः २८।* पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु तृतीयः। *उत्त॰ ६१४।* परस्परोपकारप्रदर्शनगुणकीर्तनादिना शत्रोरात्मवशीकरणम्। *ज्ञाता॰ ११।* श्यामा-प्रियङ्गुः *ज्ञाता॰ २६।* गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* सामः-प्रियवचनम्। *विपा॰ ६५।*

सामइए- समये-समाचारे सिद्धान्ते वा भवः सामयिकः सामायिक वा। ओप॰ ८२।

सामइत- सामायिकः-कुटुम्बिविशेषः। *सूत्र॰ ३८६।*

सामइय- सामयिकः-त्रिपिटकादिसमयवृत्तिः। *दशवै॰ १२७।*

सामकरिल्ल- श्यामा-प्रियङ्गुः। *अनुत्त॰ ४।*

सामकोट्ठ- ऐरवते तीर्थकृत्। *समः १५३।*

सामग- तृणविशेषः। *सूत्र॰ ३०९।*

सामगादी- बीया। *निशी॰ २५५अ।*

सामग्गिय- सामग्र्य-सम्पूर्णः। *आचा॰ ३४०।* सामग्र्य-समग्रता। *आचा॰ ३२६।*

सामणिय- श्रामण्यं-श्रमणभावः चरणपरिणामगर्भः। *दशवै॰ २२३।*

सामण्णं- आणपाणेन्द्रः। *स्था॰ ८५।*

सामण्णपुव्वग- श्राम्यतीति श्रमणः तद्भावः श्रामण्यं, तस्य पूर्वकारणं श्रामण्यपूर्वं तदेव श्रामण्यपूर्वकम्। दशवैकालि-कस्य द्वितीयमध्ययनम्। *दशवै॰ ८२।*

सामण्णोवणिवाइअं-सामान्योपनिपातिकं अभिनयविशेषः। लौकमध्यावसानिकम्। *जम्बू॰ ४१२।*

सामत्थ- मन्त्रः। *ज्ञाता॰ ५२।* सामर्थ्यं-बलम्। *ज्ञाता॰ २११।* णिव्वाधितो। *निशी॰ २४आ।* धितिसरीर-सत्ती। *निशी॰ १आ।* सामर्थ्यं-प्रज्ञाबलम्। *दशवै॰ ४४।* सामर्थ्यं-मन्त्रणम। *प्रश्न॰ ५३।*

सामत्थण- स्वभटैः सह पर्यालोचनम्। *पिण्ड॰ ४७।* संप्रधारणम्। *निशी॰ ८०अ।* पर्यालोचनम्। *बृह॰ ३। बृह॰ १९२। बृह॰ ९। बृह॰ ७२।*

सामत्थयति- संप्रधारयति। *व्यव॰ ३६५अ।*

सामत्थियं- विचारितम्। *निशी॰ २९८आ।*

सामत्थेऊण- विचार्य। *व्यव॰ २४८।*

सामन्त- सन्निकृष्टम्। *सूर्य॰ ५।*

सामन्तोवणिवाइया- समन्तात्-सर्वत उपनिपातो-जनमीलकस्तस्मिन् सामन्तोपनिपातिकी। *स्था॰ ४२।* अश्वादिरथादिकं लोके श्लाघयति हृष्यतो आश्वादिपतेरिति। *स्था॰ ३१७।*

सामन्न- श्रामण्यं-व्रतम्। *निर॰ २२।* सामज्ञः। *औप॰ २०४।*

सामन्नरए- श्रामण्यरतः। *भग॰ १२३।*

सामन्नलक्खणं- सामान्यलक्षणं, यथा सिद्धत्वं सिद्धानां सद्द्रव्यजीवमुक्तादिधर्मैः सामान्यमिति। *आव॰ २८१।*

सामलया- श्यामलता-पियङ्गुलता। *ज्ञाता॰ २३१।* लताविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* श्यामलता-लताविशेषः। *जीवा॰ १८२।*

सामला- श्यामला-श्यामा। *ज्ञाता॰ २३१।*

सामलि- शाल्मली-वृषविशेषः। *जीवा॰ २७३।* तृतीयभवण-वासिनश्चैत्यवृक्षः। *स्था॰ ४८७।* शाल्मलीवृक्षविशेषः। *प्रश्न॰ १४।*

सामली- शाल्मली- वृक्षविशेषः। *प्रश्न॰ ८२।*

सामवेद- सामवेदः, चतुर्णां वेदानां तृतीयः। *भग॰ ११२।*

सामवेय- सामवेदः-तृतीयो वेदः। *ज्ञाता॰ १०५।*

सामस्त्यं- निरवशेषम्। *प्रज्ञा॰ ५८२।*

सामहत्थि- भगवत्यां दशमशतके चतुर्थोद्देशकः। *भग॰ ४९२।*

सामहत्थी- महावीरविभोः शिष्यः। *भग॰ ५०१।*

सामा- महासेनराजपुत्रसिंहसेनस्य देवी। *विपा॰ ८२।* त्रयोद-शमतीर्थकृतमाता। *समः १५१।* श्यामा-विमलनाथमाता। *आव॰ १६०।* श्यामा-प्रियङ्गुः। *प्रज्ञा॰ ३६०।* चुलणीगा-थापतेर्भार्या। *आव॰ ३१।* श्यामा-प्रियङ्गुः। *अनुत्त॰ ४।* श्यामा रात्रिः। *औप॰ १४१।* श्यामाः-प्रियङ्गुः। *जम्बू॰ ३३।* तृतीयजिनप्रथमशिष्या।

सम॰ १५२। श्यामाअतसी। *उत्त॰ ३५१*। श्यामाकौ-ध्यानविशेषः। *राज॰ ३२*।

सामाइअ- यः सर्वभूतान्यात्मवत् पश्यति स रागद्वेषवियुक्तः समः तस्याऽऽयः-प्रतिक्षणं ज्ञानादिगुणोत्कर्षप्राप्तिः समायः, समो हि प्रतिक्षणमपूर्वः ज्ञानदर्शनचरणपर्यायै र्भवाटवीभ्रमण-हेतुसंक्लेशविच्छेदकैर्निरूपमसुखहेतुभिः सम्युज्यते समायः, समायः प्रयोजनमस्याध्ययनस्य ज्ञानिक्रियासमुदायरूपस्येति सामायिकम्। *अनुयो॰ ४४*। समायेन निर्वृत्तं समाये भवं वा सामायिकं, यद्वा समानां-ज्ञानदर्शनचारित्राणामायो-लाभः समायः समाय एव सामायिकम्। *प्रज्ञा॰ ६३*।

सामाइअकड- सामायिकं-सावद्ययोगपरिवर्जननिर्वद्ययोगा-सेवनस्वभावं कृतं-विहितं देशतो येन स सामायिककृतः, आहिताग्न्यादिदर्शनात् क्तान्तस्योत्तरपदस्वं, तदेवमप्रति-पन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्य प्रतिदिनमुभयसन्ध्यं सामा-यिककरणं मासत्रयं यावदिति, श्राद्धस्य तृतीया प्रतिमा। *सम॰ १९*।

सामइयं कुज्जा- सामायिकं कुर्याद्-मध्यस्थो भूयात्। *आव॰ ३३०*।

सामाइय- समो-रागादिरहितस्तस्य अयो-गमनं प्रवृत्तिरि-त्यर्थः समायः, समाय एव समाये भवं समायेन निर्वृत्तं सामायस्य विकारो-अंशो वा समायो वा पहयोजनमस्येति सामायिकम्। *स्था॰ ३२३*। सामायिकं-संयमविशेषः। *स्था॰ १६७*। सामायिकं-चारित्रविशेषः। *भग॰ ९०९*। समानां-ज्ञानादीनां आयो-लाभः समायः स एव सामायि-कम्। *स्था॰ ६५*। सामायिकं-एकान्तोपशान्तिगमनम्। *आव॰ ३६४*। समभावरूपम्। *भग॰ १००*। सामायिकं-समशत्रुमित्रभावः। *सूत्र॰ २६५*। सामायिकं सामानां-ज्ञान-दर्शनचारित्राणां आयः समायः, समाय एव सामयिकम्। *आव॰ ७९*। सामायिकं इति रागद्वेषान्तरालवर्ती समः- मध्यस्थ उच्यते, 'अयगता'विति अयनं, अयः-गमन-मित्यर्थः समस्य अयः समायः स एव सामायिकम्। *आव॰ ३६४*। सामायिकप्रतिमा-श्रावकस्य तृतीया प्रतिमा। *आव॰ ६४६*। समो-रागद्वेषवियुक्तो यः सर्वभूतान्यात्मवत्पश्यति तस्य आयः-प्रतिक्षणमपूर्वापूर्वज्ञानदर्शनचारित्रपर्यायणां निरूपमसुखहेतुभूतानामधः कृतचिन्तामणिकल्पद्रुमोपमानां लाभः समायः स प्रयोजनमस्यानुष्ठानस्येति सामायिकम्। *उपा॰ ९*।

सामामइयकप्पठिती- समानि ज्ञानादीनि तेषामायो-लाभः समायः स एव सामायिकं-संयमविषयः तस्य तदेव वा कल्पः-करणमाचार इति सामायिककल्पः। *स्था॰ १६७*।

सामाइया- सामाजिकाः-सहवृत्तयो लोकाः। *उत्त॰ ३५१*।

सामाए- श्यामाकी-धान्यविशेषः। *जम्बू॰ ३३*।

सामाग- श्यामाकः गृहपतिविशेषः। *आव॰ २२७*। गाथापति-विशेषः। *आचा॰ ४२४*।

सामाचार्युपक्रमकालः- उपक्रमस्य प्रथमो भेदः। *ओघ॰ १*।

सामाण- सहस्सारे सप्तसागरोपमस्थिकं देवविमानम्। *सम॰ ३३*। सामानः औदीच्याणपन्निव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ९८*।

सामाणा- लोकोत्तरपुरुषाः सूत्रार्थोभयदानादिना यथोत्तरमु-पकारविशेषकारी सामाना प्रामकृतत्वात् सामानाः। *स्था॰ ११३*।

सामाणिअ- सामानिकः-इन्द्रसमानर्द्धिकः। *सम॰ ३९*।

सामाणिओ- सामानिकः-सन्निहितः, अप्रवसितः। *आव॰ ३२९*।

सामाणिय- समानया-इन्द्रतुल्या ऋद्ध्या चरतीति सामा-निकः। *भग॰ १५४*। सामाणियः-सामानिकः इन्द्रसमाना-युष्कादिभावः। *औप॰ ५३*। इन्द्रसमानर्द्धयः। *स्था॰ ११७*।

सामाणीअ- समाने-विजयदेवसदृशे आयुर्द्युतिविभवादौ भवः सामानिकः। *जम्बू॰ ६१*।

सामातिअ- सामाजिकः। *निशी॰ १०७* आ।

सामान्नदिट्ठं- सामान्यतो दृष्टार्थयोगात् सामान्यदृष्टम्। *अनुयो॰ २१६*।

सामान्य- उपसर्जनीकृत तुल्यरूपाः प्रधानीकृततुल्यरूपाः समतया प्रज्ञायमानाः सामान्यमिति व्यपदिश्यन्ते। *स्था॰ १३*। एकं नित्यं निरवपयं सवंगं सामान्यम्। *स्था॰ ३७*।

सामान्यवादी- सर्वमेवैकं प्रतिपद्यते। *स्था॰ ४२५*।

सामान्यविशेषः- अनुवृत्तव्यावृत्तावबोधहेतुभूतम्। *स्था॰ ३९१।*

सामान्याभिधान- देवदत्तभूक्ते सर्वं कुटुम्बं भुक्तमितिवत्, अन्यथा त्रयाणामित्यभिधेयं स्यात्, कालवृद्धयनुसारेण दर्शनात् चैवमभिधानं स्यान्। कालसामान्याभिधानम्। *आव॰ ३२।*

सामान्यार्थावग्रहः- अवग्रहे द्वितीयो भेदः। *नन्दी॰ १७४।*

सामायारी- समाचरणं समाचारः तद्भावः सामाचार्यं तदेव सामाचारी-संव्यवहारः। *स्था॰ ५००।* सोमाचारी-शिष्टाचीरतक्रियाकलापता। *आव॰ २५८।* समाचारी-उत्तराध्ययनेषु षट्विंशतितममध्ययनम्। *उत्त॰ ९।* समाचारी-समाचरणम्। *उत्त॰ ६६।* समाचारी-उत्तराध्ययनेषु षट्विंश-तितममध्ययनम्। *उत्त॰ ५३२।* उत्तराध्ययनेषु षट्विंशतित-ममध्ययनम्। *सम॰ ६४।*

सामायिइ- सामायिकं-सम्यक्त्वश्रुतदेशविरतिरूपम्। *उत्त॰ २५१।*

सामायिक- सामान्यसञ्ज्ञायामेवावतिष्ठते। *अनुयो॰ २२२।* बोधिः। *आव॰ ३४७।*

समासाए- श्यामाशः श्यामा-रजनी तस्यामशनं श्यामाशः तदर्थम्। *आचा॰ १३०।*

सामिआ- स्वामिकाः, अज्ञातस्वामिन इत्यज्ञातार्थे कप्रत्ययः। *जम्बू॰ २२०।*

सामित्तं- स्वामित्वं-नायकत्वम्। *जीवा॰ २१७।* स्वामित्व-स्वामिभावम्। *सम॰ ८६।* आत्मलाभः। *निशी॰ २१ आ।* स्वमित्वं-स्वस्वामिभावम्। *भग॰ १५४।* स्वमस्या-स्तीति स्वामी तद्भावः स्वामित्वं नायकत्वम्। *जम्बू॰ ६३।*

सामिधेय- समित्समूहः। *अन्त॰ ११।*

सामिय- स्वामिकः-अधिपतिः। *ज्ञाता॰ १६५।*

सामिलिणा- वच्छगोत्रे चतुर्थो भेदः। *स्था॰ ३९०।*

सामिलाल- स्वामिश्यालः। *उत्त॰ २७३।*

सामी- स्वामी नेता, प्रभुः। *आव॰ ६६१।* स्वामी-जगद्गुरू-र्भगवान् श्रीमहावीरः। *सूर्य॰ २।* स्वामी-ग्रामादिनायकः। *पिण्ड॰ १११।*

सामुच्छेइता- चतुर्थनिह्नवमान्यता। *स्था॰ ४१०।*

साभुच्छेइया- नारकादिभावानां प्रतिक्षणं समुच्छेदं-क्षयं विदन्तीति सामुच्छेदिकाः। *औप॰ १०४।*

सामुच्छेद- समुच्छदेम् धीयते तदेदी वा, क्षण चिभाव प्ररूपकः चतुर्थनिह्नवमतः। आव॰ २१९।

सामुच्छेदिक- निह्नवविशेषः-क्षणिकपक्षवान्। *उत्त॰ ४४४।*

सामुदाइया- कृष्णणस्य भेरीः। *ज्ञाता॰ २०८।*

सामुदाणिय- सामुदानिकं-भिक्षापिण्डम्। *आचा॰ ३३६।* भेरी विशेषः। *निर॰ ४०।*

सामुदायिकी- जनमीलकप्रयोजना। *ज्ञाता॰ १०१।*

समुद्द- सामुद्रं-छन्दोविशेषः। *सूत्र॰ २६२।* सामुद्रं-समुद्र-सम्बन्धिलवणम्। *दशवै॰ ११८।*

सामुद्दय- सामुद्रिक- समुद्रसम्बन्धी। *भग॰ २१२।*

सामुयाणिय- भैक्षम्। *आचा॰ ३३१।*

सामोसिओ- एगगामणिवासी। *निशी॰ १९ अ।*

साम्प्रतः- शब्दनयस्य प्रथमो भेदः। *उत्त॰ ७७।*

साम्भोगिक- समसुखदुक्खभाजः। *व्यव॰ ३०१ अ।*

सायंकार- सत्यङ्कारः। *उत्त॰ १४८।*

साय- आरणकल्पे विंशं सागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३८।* सातं-सुखम्, तृतीयगारवम्। *आव॰ ५७९।* विकालवेला। *सूर्य॰ १०६।* सन्ध्याकालः। *सूर्य॰ ४५।* सातं-सुखम् सातहेतुर्वा। *उत्त॰ ८९।* सातं सुखं शारीरं मानसं च इहोपचारान्निबंधनं कर्मेव। *उत्त॰ ६४३।*

सायणी- "हीनभिन्नस्वरो दीनो विपरीतो विचित्तकः। दुर्बलो दुःखितः स्वपति संप्राप्तो दशमीं दशाम्।।१।।"। *दशवै॰ ८।*

सायदुलह- सातगवेषकः। *मरण०।*

सायमंडु- वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२।*

सायरदत्त- सागरदत्तः-मायोदाहरणे साकेतपुरे धनावहजीवः अशोकदत्तेभ्यपुत्रः। *आव॰ ३९४।*

सायरव्यूह- सून्यस्य व्यूहविशेषः। *भग॰ ३१७।*

सायवाती- सातं-सुखमभ्यसनीयमिति वदतीति सातवादी। *स्था॰ ४२५।*

सायवाहण- । राया। *निशी॰ ३४० अ।*

सायसोक्ख- सातसौख्यं सातं-आह्लादरूपं सौख्यम्। *जीवा॰ ४०३।*

साया- साता-सुखम्। *आव॰ ५७९।*

सायाउल- साताकुलः-भाविसुखार्थं व्याक्षिप्तः। *दशवै॰ १६०।*

सायागारव- सातगौरवं-सुखप्राप्त्यभिमानाप्रात्तप्रार्थनद्वारेणा-त्मनोऽशुभावगौरवम्। *आव० ५७९।*

सायासुक्खपडिबद्ध- सातसौख्यप्रतिबद्धः-सातत्-पुण्य-प्रकृतेः सकाशान्यत्सौख्यं-सुखं गन्धरसस्पर्शलक्षणं विषयसम्पाद्यं तत्र प्रतिबद्धः तत्परो ब्रह्मचारी। *स्था० ४४५।*

सायासोक्ख- सातात्-सातवेदनीयोदयात् सौख्यं सुखम्। *ज्ञाता० १८०।* सातसौख्यं- आह्लादरूपं सौख्यम्। *जीवा० ४०३।*

सायि- सातिः-विश्रामः। *राज० ११५।*

सायिसंपओ- सातिसम्प्रयोगः-यः सातिशयेन द्रव्येण कस्तू-रिकादिना अपरस्य सम्प्रयोगः। *राज० ११५।*

सायेय- साकेतं नगरं, मित्रनन्दिराजधानी। *विपा० ९५।*

सारंग- सारङ्गं प्रधानदलम्, सारङ्गमदः-कस्तूरी। *जम्बू० १८३।* चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२।* चतुरिन्द्रियजन्तु-विशेषः। *जीवा० ३२।*

सारंभ- सरम्भः-वधसङ्कल्पः। *भग० ३३५।*

सारंभइ- संरभते-विनाशसङ्कल्पं करोति। *भग० १८३।*

सार- सारः-सफलः। *सम० १२२।* सारः-परमार्थः। *नन्दी० १५७, १६४।* सारः काष्ठमध्यम्। *स्था० १८६।* सारः- फलं प्रधानतरं वा। *आव० ६९।* सारः-प्रधान्यम्। *ओघ० २२२।* सारः-गर्भः। *जम्बू० ३८।* सारः-शुभपुद्गलोप-चयजः, शारीरः शक्तिविशेषः। *अनुयो० १५८।* अक्षय्यम्। *प्रश्न० ९२।* सारं-सामर्थ्यम्। *आव० ७८८।* सारः-सन्दोहः। *आव० ६१९।* सारः-शुभपुद्गलोपचयजन्यो धातुविशेषः। *जम्बू० १८२।* सारं-अभेद्यत्वेनाभङ्गुरम्। *जम्बू० २०१।* भ्रमरपत्रान्तर्गतो विशिष्टश्यामतोपचितः प्रदेशः। *जम्बू० ३२।* सारः-समूर्च्छिमभुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकः। *जीवा० ४०।* सारः-विवक्षितकर्मणः परमार्थः। *आव० ४२६।* सारः- सामर्थ्यं विभवो वा। *सूत्र० २७८।* कट्ठं। *निशी० १४१* अ। प्रधानः। *ज्ञाता० ६।* अर्थम्। *बृह० ४०* आ।

सारइए- शारदिकः-शरद्कालजातः। *ज्ञाता० १०१।*

सारइयं- शरदि भवं शारदम्। *उत्त० ३३८।*

सारए- सारकः स्मारको वा प्रवर्त्तकः विस्मृतस्य सूत्रादेः स्मारणात्। *भग० ११४।* सुष्ठ्वा जीवनमर्यादया संयमानु-ष्ठाने रतः स्वारतः। *आचा० १९३।* सारकः। अध्यापनद्वारेण प्रवर्तकः स्मारको वा, अन्येषां विस्मृतस्य स्मारणात्। *ज्ञाता० ११०।*

सारकंता- संध्याग्रामस्य पञ्चमी मुर्च्छना। *स्था० ३९३।*

सारकत्ताल- वलयविशेषः। *प्रज्ञा० ३३।*

सारक्खति- उचितोपचारकरणतः। संरक्षितः। *जम्बू० १२६।*

सारक्खण- संरक्षणा। *आव० ४०५।*

सारक्खणानुबंधि- संरक्षणानुबन्धिः-संरक्षणे-सर्वोपायैः परि-त्राणे विषयसाधनधनस्यानुबन्धो यत्र तत्। *स्था० १८९।*

सारक्खणिजं- संरक्षणीयम्। *आव० ९३।*

सारक्खमाणी- संरक्षयन्ती पालयन्ती। *ज्ञाता० ९१।*

सारक्खह- संरक्षय। *आव० ३७३।* संरक्षत। *आव० २०१।*

सारक्खामि- संरक्षामि। *भग० ६७३।*

सारक्खेत्ता- उपायेन चौरादिभ्यः संरक्षयिता। *स्था० ३८६।*

सारगल्ल- वनपस्तिविशेषः। *भग० ८०३।*

सारण- यादवविशेषः। *ज्ञाता० २१३।* सारणः-यादवापत्यः। *प्रश्न० ७३/* कृत्यं प्रति प्रवर्तनः। *उत्त० ५३५/* सारणः अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य सप्तममध्ययनम्। *अन्त० ३।* पश्न० ७३। कृत्यं प्रति प्रवर्तनः। *उत्त० ५३५।* सारणः प्रसर्पणं स्मारणम्। *ओघ० १५८।*

सारणा- चोदना। *आव० २७१।* शिक्षणा। *बृह० ११३।* आ। स्मारणा-विस्तृतेऽर्थे स्मारणा। *व्यव० ७२* अ।

सारणि- सारिणी। *आव० ५८१।*

सारदबलाहए- शाबदबलाहकः शरत्कालभावी बलाहकः। *प्रज्ञा० ३६३।*

सारद्दं- सार्द्रं-यद्बदिः शुष्काकारमप्यन्तर्मध्ये सार्द्रमास्ते। *सूत्र० ३८६।*

सारभंड- सारभाण्ड-महामूल्यवस्त्रादिः। *उत्त० ४५५।*

सारमंत- सारवत्-विशिष्टार्थयुक्तम्। *अनुयो० १३३।*

सारवं- सारवत् बहुपर्यायं सूत्रगुणः। *आव० ३७६।*

सारवंत- सारवत् बहुपर्यायं सूत्रगुणविशेषः। *आव० ३७६।* सारवद्-अर्थेन युक्तम्। *स्था० ३९७।* सारवत्-गोशब्दव-द्बहुपर्यायम्। *अनुयो० २६२।*

सारवए- सारपके-साराकारके *व्यव० २००।*

सारवणं- निष्क्रियं, संमार्जितं वा। *ओघ० ४१।* प्रमार्जनम्।

बृह॰ १५० आ।

सारविअ- संमार्जितः उपलिप्तः। *ओघ॰ ७५*। प्रमार्जितः। *ओघ॰ ९३*।

सारविय- प्रमार्जितः। *बृह॰ १०९*। सारवितः-संमार्जितः। *बृह॰ २४३* अ।

सारविया- संरक्षिता। *आव॰ ६७३*।

सारवेइ- गोपयति। *उत्त॰ १४८*। रक्षति। *आव॰ ७०३*।

सारवति- संरक्षति। *आव॰ ३४३*।

सारस- सारसः लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*। सारसः-दार्वाघाटः। *प्रश्न॰ ८*।

सारसत- प्रथमलोकान्तिकः। *स्था॰ ४३२*।

सारसवण्णा- सारसवर्णः *ज्ञाता॰ २३१*।

सारसा- लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*।

सारसी- सज्जग्रामे षष्ठी मूर्च्छना। *स्था॰ ३९३*।

सारस्वत- गणभेदः (मल्लसारस्वतः)। *बृह॰ २४४* अ। लोकान्तिकः। *स्था॰ ११७*।

सारस्सय- सारस्वतम्। *आव॰ १३५*। सारस्वतः-अर्चिवि-मानवासी प्रथमो लोकान्तिकदेवः। *भग॰ २७१*। प्रथमो लोकान्तिकः सारस्वतः। *ज्ञाता॰ १५१*।

सारही- सारथिः-शाकटिकः। *स्था॰ २४०*। सारथिः-प्रवर्त्तयिता। *उत्त॰ ४९१*।

सारा- त्रप्तिः। *व्यव॰ १७१* अ। भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।

साराणिता- दशविधप्रव्रज्यायां षष्ठी। स्मरणाद्या सा स्मार-णिका। *स्था॰ ४७३*।

सारि- सागारिकः। *बृह॰ ३८*आ। *व्यव॰ ३४४* अ।

सारिओ- सारितः-हिते प्रवर्त्तितः। *आव॰ ७९६*।

सारिका- आधायाः प्रामित्यद्वारविवरणे देवराजपत्नी। *पिण्ड॰ ९८*। पक्षिविशेषः। *उत्त॰ ४०९*।

सारिज्जताणं- सुघोषानन्दिघोषानां सारणम्। *राज॰ ५२*।

सारिणी- दीर्घिका। *जीवा॰ १९७*। *निशी॰ २* आ।

सारियं- सारितम्। *आव॰ ३१५*।

सारीकृतं- निगदितम्। *जीवा॰ २७०*।

सारुइ- मनसा संरुष्ठः। *भग॰ ३२२*।

सारुविया- सारुपिका-श्वेतवाससः। *बृह॰ १८५* अ।

सारुवी- मुंडसिरा दो सुक्किलवत्थधारी कच्छं णो बंधति भारिया से णत्थि भिक्खं हिंडइ वा ण वा, एरिसो सारुवो। *निशी॰ ११३* आ।

सारूविग- सुक्किलवत्थपरिहरिउं मुंडमसिहं धरेइ, अभज्जगो अपत्तादिसु भिक्खं हिंडइ, अण्णे भणंति पच्छाकडसिद्धपुत्ता चेव जे असिहा ते सारूविगा। *निशी॰ ८४* आ। *निशी॰ ११५* अ

सारेति- सारयति शिक्षयति। *व्यव॰ ३२८* आ। चोदयति। *निशी॰ २९०* आ।

सारेह- अन्वेषयत। *सूत्र॰ ९१*।

सालंकातणा- कौशिकगोत्रे तृतीयो भेदः। *स्था॰ ३९०*।

साल- आनतकल्पेऽष्टादशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३५*। एकशाटकपरिधानः। *बृह॰ २९५* आ। सालः- सर्ज्जः। *जम्बू॰ ९८*। सर्ज्जः-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*। शाला-शाखा। *जम्बू॰ २९*। शाखा-शारणम्। *आव॰ ७१६*। शालः-पृष्ठचम्पानगरनृपतिः श्रीवीरशिष्यः केवली-जातः। *उत्त॰ ३२१, ३२३*। शालः-पृष्ठचम्पानगर्यां राजा। *आव॰ २८६*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०३*। वर्धमानस्वा-मीचैत्यवृक्षः। *सम॰ १५२*। शाखः-प्रत्येकजीवः। *प्रज्ञा॰ ३१*। शालः-वृक्षविशेषः। *ज्ञाता॰ ९३*। अशितममहाग्रहः। *स्था॰ ७९*। तृतीयतीर्थकृच्चैत्यवृक्षम्। *सम॰ १५२*। शालः। *जम्बू॰ ५३५*। बाहिरा। छल्ली। *निशी॰ १२४*। शालः। प्राकारः। *प्रज्ञा॰ ८६*।

सालइयापिय- श्रावस्तीनिवासी सालयिकापिता। *स्था॰ ५०९*।

सालकोट्ठए- मेंढियग्रामे वायव्यकोणे चैत्यम्। *भग॰ ६८५*।

सालग- रसम्। *आचा॰ ४०५*। बाहिरछल्ली। *निशी॰ २३* आ। दीर्घशाखा। *आचा॰ ३५४*। शालकः पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

सालघरग-शालगृहकं-पट्टशालाप्रधानं गृहकम्। *जीवा॰ २००*। शालगृहकः-पट्टशालाप्रधानं गृहकम्। *जम्बू॰ ४५*।

सालज्जा- सलज्जा-शालार्या व्यन्तरीविशेषः। *आव॰ २१०*।

सालण- वीडंका। *निशी॰ १४४* अ।

सालणग- शालनकं-पुष्पफलप्रभृतिः। *जम्बू॰ १०५*।

सालतिय- शारदिकम्। *ज्ञाता॰ १९६*।

सालनक- शालनकं व्यञ्जनविशेषः। *सूर्य॰ २९३*।

सालभंजिआ- शालभञ्जिका। *जम्बू॰ ४९*।

सालभंजिया- शालभञ्जिका पुत्रिका। *भग॰ ४७७*। शालभ-

ञ्जिकापुत्रिका। *ज्ञाता० १२, ३८*। शालभञ्जिका-स्तम्भ-पुत्तलिका। *आव० २३१*। शालभञ्जिका-पञ्चाली। *जम्बू० ५१*। शालभञ्जिका पुत्रिका। *ज्ञाता० ३८*।

सालवण- शालदनं-उद्यानविशेषः। *आव० २१०*। *जीवा० १४५*।

सालवाहण- शातवाहनः, यस्य पृथिवीनामाग्रमहिषी। *व्यव० १६८अ*। प्रतिष्ठानपुरे राजा। *बृह० २७आ*। शाल-वाहनः-द्रव्यप्रणिधिविषये प्रतिष्ठानपराधिपतिर्बलकमृद्धः। *आव० ७१२*।

सालहीपिया- महावीरस्य दशमश्राद्धः। *उपा० १*।

साला- शाला-गृहविशेषः। *ज्ञाता० ३४*। शाखा-मध्यभाग-प्रभवा ऊर्ध्वगता शाखा। *जम्बू० ३३२*। शाला-शाखा। *जीवा० १८७*। शाला-शाखा। *ओघ० १६६*। शाला-गृहविशेषः। निर० २२। जत्थ विक्कइ सा साला, अहवा अक्कुडा साला। *निशी० ६९अ*। जे खंधओ निग्गया ते साला। *दशवै० १११*। शाला। *बृह० ६२अ*। *निशी० २६५ अ*। शाखा। *जीवा० २०७*। अटवी चोरप-ल्लीविशेषः। *विपा० ५५*। शाला-शाखा। *जीवा० २९४*। शाला-शाखा। *औप० ७*। शाला-भाण्डशालादिका। *प्रश्न० १३८*। शाखा। *प्रज्ञा० ३१*। शाला-गृहम्। *सूत्र० ३२४*। शाखा-मूलशाखाविनिर्गतशाखा। *जम्बू० ३२४*। शाखा-विडिमाऽपरपर्याया दिक्प्रसृता शाखामध्यभागप्रभवाऊर्ध्व-गता। *जम्बू० ३३२*। शाला-शाखा। *जीवा० २२८*।

सालाग– शालाक्यं शलाकायाः कर्म शालक्यं तत्प्रतिपादकं तन्त्रमपि शालक्यं। आयुर्वेदस्य द्वितीयाङ्गम्। *विपा० ७५*।

सालगिह– विक्केयं भंडं जत्थ छुढं चिट्ठति सा। *निशी० २६५अ*।

सालाती– शलाकायाः कर्म शालक्यं तत्प्रतिपादकं तन्त्रं शालक्यम्। *स्था० ४२७*।

सालि– शालि-औषधिः। *भग० ३०६*। शालिः-व्रीहिभेदः। *दशवै० १९३*। शाली। *आव० ५८१*। शालिः-कालमादिका-नामिति विशेषः शेषाणां व्रीहीणामिति। *स्था० १२४*।

सालिउद्देसए– षष्ठमशतस्य सप्तमोद्देशकः। *भग० ५३४*।

सालिणी– शालन्ते-शोभन्ते। *प्रश्न० १४०*।

सालिपिट्ठरासी– सालिपिष्टराशिः। *प्रज्ञा० ३६१*।

सालिभंजिका– शालभञ्जिका-पुत्तलिका। *राज० २८*।

सालिभद्द– शालिभद्रः-पूर्वभवे सबहुमानं साधवे पायस दाता। *स्था० ५१०*। *बृह० २६७अ*। शालिभद्रः-वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग० २००*। शालिभद्रः-श्रावस्त्यां इभ्यविशेषः। *उत्त० २८६*।

सालिभसेल्लसरसा– व्रीहिकणिशशूकसमाः। *उपा० २१*।

सालिम– शालिमं-शालिमयम्। *उत्त० ३६९*।

सालिवाहण– शालिवाहनः प्रतिष्ठानपूरे राजा। *आव० ८९*।

सालिसंपया– शालीसम्पत्। *आव० ५७७*।

सालिसए– सदृशकमतिनम्रत्वात्। *ज्ञाता० १३*। सालिसं, सदृशकम्। *जम्बू० २८५*। सदृशकम्। *जीवा० २३२*।

सालिसत्थियामच्छ– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा० ४४*।

सालिसीसय– शालिशीर्षः-ग्रामविशेषः। *आव० २०९*।

साली– शालीः-लोहितशाल्यादिः। *उत्त० ३१७*। शालिः-धान्यविशेषः, तृणपञ्चके प्रथमो भेदः। *आव० ६५२*। वलय-विशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। औषधिविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। तृण-विशेषः। *स्था० २३४*। कलमादिकः। *भग० २७४*। धान्य-विशेषः। *सूत्र० ३०९*।

सालीपिट्ठरासी– शालिपिष्टराशिः-शालिक्षोदपुञ्जः। *जीवा० १९१*।

सालीवन्न– शालिवर्णः शुक्लम्। *ज्ञाता० २३०*।

सालु– शालकः-उत्पलकन्दः भगवत्यां एकादशशतके द्वितीय-योद्देशकः। *भग० ५११*।

सालुअ– शालूकः-उत्पलकन्दः। *दशवै० १८५*। सालुकं-कन्दकौजलजः। जाला० ३४८।

सालुग– सालुकम्। *आव० ४०५*। उप्पलकन्दः। *दशवै० ८६*।

सालुगा– शालियवादीनां तुषाः। *बृह० १५८आ*।

सावइज्ज– स्वापतेयं, द्रव्यम्। *जम्बू० १४२*। स्वापतेयं-रजतसुवर्णादिद्रव्यम्। ज० १२२।

सावए– श्रावकः-प्रतिपन्नाणुव्रतः। *बृह० १२७अ*। श्रावकः –व्याख्यानविधौ दृष्टान्तः। *आव० ९६*।

सावएज्ज– स्वापतेयं द्रव्यम्। *भग० १६३*। स्वापतेयं द्रव्यम्। *अनुयो० २५४*।

सावकंखा– सहावकाङ्क्षया-घटिकाद्वयाद्युत्तरकालं भोजना-भिलाषरूपया वर्त्तत इति सावकाङ्क्षम्। *उत्त० ६००*।

सावकाश– प्रच्छन्नप्रदेशः। *ओघ॰ २०७।*

सावग– श्रावकः। *आव॰ ११६।* श्रावकः-ब्राह्मणः, वृद्ध-श्रावकः। *ज्ञाता॰ १९३।* श्रावकः-ब्राह्मणः। *अनुयो॰ २५।* शावकः-पुत्रकः। *नन्दी॰ ६४।* गिहियाणुव्वतो। *निशी॰ ३२५अ।* श्रावकः धर्मशास्त्रश्रवणाद् ब्राह्मणः। *औप॰ ९०।*

सावगरक्खस– श्रावकराक्षसः। *आचा॰ ७६।*

सावगा– श्रावकाः-श्रान्ति-पचन्ति तत्त्वार्थश्रद्धानं निष्ठां नयन्तीति श्राः, तथा वपन्ति-गुणवत्सप्तक्षेत्रेषु धनबीजानि निक्षिपन्तीति वास्तथा किरन्ति-क्लिष्टकर्म्मरजो विक्षिप-न्तीति कास्ततः कर्म्मधारये श्रावका इति। शृण्वन्ति जिन-वचनमिति श्रावकाः। *स्था॰ २८२।*

सावज्ज– सावद्यः सपापः, वर्जपाठान्तरः। पञ्चविंशतितमः पर्यायः। *प्रश्न॰ ७।* सावद्यं-गर्हितकर्मयुक्तम्। *प्रश्न॰ ३७।* शय्यायाः सप्तमप्रकारः। *बृह॰ ९३अ।*

सावज्जकड– सावद्यकृत्यम्। *आचा॰ ३९०।*

सावज्जबहुल– सावद्यबहुल आर्त्तध्यानानुगतम्। *दशवै॰ २०६।*

सावण– श्रावणः श्रविष्ठानक्षत्रेणोपलक्षितो मासः, श्राविष्ठेति वा। *सूर्य॰ १२१।* *ज्ञाता॰ १०७।*

सावणी– शाश्रयति-स्वापयति निद्रावन्तं करोति या, शेते वा यस्यां सा शायती शयनी वा। *स्था॰ ५१९।*

सावतेज्ज– स्वापतेयं-द्रव्यम्। *औप॰ २७।*

सावतेय– स्वापतेयं-धनम्। *जीवा॰ २८०।*

सावत्थि– श्रावस्तिः-संभवनाथजन्मभूमिः। *आव॰ १६०।* श्रावस्ती अलाभोदाहरणे नगरी। *आव॰ ७०१।* श्रावस्ती-श्रीमहावीरविहारक्षेत्रम्। *आव॰ २२१।* *उत्त॰ २८६।* श्रावस्ती-कृणालजनपदे आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५।* श्रावस्तिः –जमालिनिह्णवोत्पत्तिनगरम्। *उत्त॰ १५३।* श्रावस्तिः-केशीकुमारश्रमणस्थानम्। *उत्त॰ ४९८।*

सावत्थी– हलाहलकुंभकारवास्तव्या नगरी। *भग॰ ६७५।* श्रावस्तिः-जितशत्रुराजधानी। *उत्त॰ ११४।* श्रावस्तिः-कुम्भकारशालावती नगरी। *आव॰ २१४।* श्रावस्तिः-गोशा-लकमाणुसमांसमिश्रभोजनलाभस्थानम्। *आव॰ २०४।* जितशत्रुराजधानी। *उपा॰ ५३।* श्रावस्ती बहुरतनिह्णवोत्प-त्तिस्थानम्। *आव॰ ३१२।* श्रावस्तिः-संभवजिनस्य प्रथम-पारणकस्थानम्। *आव॰ १४६।* श्रावस्ती-यत्र जमाली पञ्चशतपरिवारो गतः। *आव॰ ३१२।* श्रावस्तिः-नगरी। *अन्त॰ २३।* प्रथमनिह्णवोत्पत्तिस्थानम्। *भग॰ ४८४।* श्रावस्तिः-भद्रकुमारवास्तव्यानगरी। तृणस्पर्शे दृष्टान्तः। *उत्त॰ १२२।* कोष्ठगचैत्यस्थानम्। यत्राहगतीगाथापतिः। *निर॰ २२।* यत्र सुप्रतिष्ठनामगाथापतिः। *निर॰ २३।* श्रावस्ती-स्वयम्भूवासुदेवनिदानभूमिः। *आव॰ १६३।* श्रावस्ती-मधवराजधानी। *आव॰ १६१।* श्रावस्तिः-स्कन्धकचरिते नगरी। *भग॰ ११२।* कुणालजनपदे नगरी। *ज्ञाता॰ १४०।* कृणालजनपदे नगरी। *राज॰ ११६।* नगरी-विशेषः। *ज्ञाता॰ २५३।* सुंभगाथापतिवास्तव्या नगरी। *ज्ञाता॰ २५१।* शुमनभद्रनगरम्। *अन्त॰ २३।* भगवत्यां द्वादशशतके प्रथमोद्देशके नगरी। *भग॰ ५५२।* *उत्त॰ ३८०।*

सावद्यं– सपापम्। *आव॰ ८३४।*

सावनमास– ऋतुमासपर्यायः। *स्था॰ ३४५।*

सावनसंवच्छर– सावनसंवत्सरः ऋतुसंवरः। *जम्बू॰ ४८७।*

सावनसंवत्सरः– कार्मणसंवत्सरपर्यायः। *स्था॰ ३४५।*

सावय– श्वापदम्। *आव॰ ६०१।* श्रावकः। *आव॰ ७९३।* अभ्युपेतसम्यक्त्वः प्रतिपन्नाणुव्रतोऽपि प्रतिदिवसं यतिभ्यः सकाशात् साधूनां-अनगारिणां च समाचारीं शृणोतीति श्रावकः। *आव॰ ८०५।* स्वापदः-व्याघ्रादिः। *ओघ॰ ६३।* स्वापदं-मकरग्राहादिः। *सम॰ १२७।* श्रावकः-शृणोति साधुसमीपे जिनप्रणीतां समाचारीमिति श्रावकः-श्रमणोपा-सकः। *अनुयो॰ ३०।* स्वापदसिंहादिः। *ओघ॰ २३।* स्वापदः-सिंहव्याघ्रादिः। *बृह॰ २६अ।* श्वापदः। *ज्ञाता॰ ६५।* श्वापदः सिंहव्याघ्रादिः। *बृह॰ २३१अ।* श्रावकः-अप्र-त्याख्यानकषायोदयवान्। *आव॰ ५३३।* श्वापदः। *आव॰ ६३३।* श्वापदः-हिंस्रजीवः। *जम्बू॰ ६६।*

सावयइ– श्रावयति-प्रकाशवति। *सूत्र॰ ४१३।*

सावसेस– सावशेषं-सोद्धरितम्। *उत्त॰ ५३९।*

सावस्सभ– सावश्रभं-पृष्ठतोऽवष्टम्भयुक्तमासनं, सिंहासन-मित्यर्थः सावस्सयम्। *बृह॰ २०२अ।*

सावाहा– संकटा। *ओघ॰ ९०।*

सावित्ता– इदं चेदं भविष्यतीत्येवंभूतवचांसि श्रावयन्तः। *भग॰ ४७९।*

साविट्ठा– श्राविष्ठा-श्रावणः। *सूर्य॰ १२१।*

साविय– श्रापितः-श्रमणोपलम्भितः, शापितः। *ज्ञाता॰ २९।*

साविया– श्राविका। *आव॰ ७९३।*

सावेंत– श्रावयन् शपन् वा। *औप॰ ६९।*

सावेंता– श्रावयन्ता, इदं चेदं च परुत् परारिभविष्यतीत्येवंभू-तवचांसि श्रवणविषयीकारयन्तः। *जम्बू॰ २६४।*

सास– मणिकारश्रेष्ठेः प्रथमो रोगः। *ज्ञाता॰ १८१।* शासं-शास्यमानम्। *उत्त॰ ६२।* शासत्-आज्ञापयन्। *उत्त॰ ६१।* श्वासः। *भग॰ १९७।*

सासअ– शाश्वतः-सर्वकालावस्थायी। *दशवै॰ १२९।*

सासए– मा भूदनेकसर्गापेक्षयैव नियतत्वमिति प्रलयाभावान् शाश्वतः। *स्था॰ ३३३।* शाश्वतः-प्रतिक्षणं सत्त्वात्। *स्था॰ ३३३।* शाश्वतः-प्रतिक्षणं सत्ताऽऽलिङ्गिसत्वादवस्थितः अनेन रूपेण नित्यत्वादिति। *स्था॰ ३३३।* आदित्योद्ग-तिरिव शश्वद्भवनात् शाश्वतः परैः क्वचिदप्यस्खलितः। *सूत्र॰ ३७०।* प्रतिक्षणस्थायी स्थिरमित्यर्थः। *भग॰ २४८।* शाश्वतं –प्रतिक्षणं सद्भावात्। *भग॰ ११९।* शाश्वतः-यावज्जीवमप-रिक्षयः। *आचा॰ २९५।*

सासओ– शाश्वतः-कर्मबीजाभावादनुत्पत्तिधर्मा। *दशवै॰ १५९।*

सासगंजण– पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९।*

सासग– सासकं-रत्नविशेषः। *जम्बू॰ २११।* सासको-बीयकनामा वृक्षविशेषः। *ज्ञाता॰ २४।* सासकः-धातुविशेषः। *उत्त॰ ६९९।* पारदः। *प्रज्ञा॰ २७।* पारदः। *जीवा॰ २३।*

सासण– शिष्यतेऽने-नेति शासनं-प्रतिपादकं निवृत्तिपथ-शासनम्। *नन्दी॰ ४७।* शास्यन्तेऽनेन जीवादिशासनं द्वादशा-ङ्गम्। *आव॰ ५४५।* शासनं-आज्ञा। *दशवै॰ २७७।*

सासणा– शासना-शिक्षणा। *प्रश्न॰ १०९।*

सासता– शाश्वती-शश्वद्भवनस्वभावा। *जीवा॰ १८३।*

सासय– शाश्वतः मोक्षः। *दशवै॰ २१३।* शाश्वतः-शश्वदन्यान्य-रूपतयोत्पन्नः। *उत्त॰ ४३०।* शाश्वतं-नित्यम्। *उत्त॰ २८९।* शाश्वतम्। *ज्ञाता॰ ५५।*

सासयचेइय– शास्वतचैत्यं सुरलोकादौ नित्यस्थायि। *बृह॰ २७६ आ।*

सासयवाई– शास्वता इव वदितुं शीलमस्येति शाश्वतवादी। शाश्वतवादी-आत्मनि मृत्युमनियतकालभाविनमपश्यत् शाश्वतवादी-निरूपक्रमायुष्को वा। *उत्त॰ २२४।*

सासया– शाश्वती-शश्वद्भवनस्वभावा। *जम्बू॰ २७।* शाश्वता आकालिकी। *आव॰ १५४।*

सासयाणंतत– शाश्वतानन्तकं-अनाद्यपर्यवसितं यज्जीवादि-द्रव्यमनन्तसमयस्थितिकत्वादिति। *स्था॰ ३४७।*

सासवणालिया– सर्षपकन्दलिका। *आचा॰ ३४८।*

सासवनाल– सर्षपभर्जिका। *बृह॰ ७७ अ।*

सासवनालिआ– सर्षपनालिका-सिद्धार्थमञ्जरी। *दशवै॰ १८५।*

सासहरा– श्वासधरा। *दशवै॰ ९।*

सासायण– सहैव तत्त्वश्रद्धानरसास्वादनेन वर्त्तते इति सास्वा-दनम्। *सम॰ २८।* सहैव तत्त्वश्रद्धानरसास्वादनेन वर्त्तत इति सास्वादनः। भूतग्रामस्य द्वितीयं गुणस्थानम्, प्रायः परित्य-क्तसम्यक्त्वः। *आव॰ ६५०।*

सासित– शासितः-शिक्षां प्रापितः। *आव॰ ८२२।*

सासियाओ– स्वाश्रया-स्वां-आत्मीयामुत्पत्तिं प्रत्याश्रयो यासु ताः स्वाश्रयाः। *आचा॰ ३२३।*

सासु– असवः-प्राणः वह असवो यस्य येन वा तत् सासुः-सचित्तमित्यर्थः। *व्यव॰ १९५ अ।*

सासेंता– शासयन्तः परेषां गानादीनी शिक्षयन्तः। ज॰ *२६४।*

सासेरा– यन्त्रमयीनर्तकी (देशी०)। *बृह॰ २३५ अ।*

सासेरी– (देशीवचनम्) यंत्रमयी नर्तकी। *व्यव॰ १९२ अ।*

साहंजनी– महाचन्द्रराजधानी। *विपा॰ ६५।*

साहंमियचेइय– साधर्म्मिकं चैत्यं-साधर्म्मिकाणामर्थाय यत्कृतं तत् साधर्म्मिकं चैत्यम्। *बृह॰ २७६ आ।*

साहइ– कथयति। *आव॰ २२३।* कथयति। *दशवै॰ ९७।* देशीवचनतः कथयति। *आव॰ २३९।*

साहट्टु– संहृत्य-शरीराभिमुखमाक्षिप्य। *आचा॰ ३७७*। संहृत्य –विधाय। *उपा॰ २३*। संहृत्य-अपनीय। *ज्ञाता॰ १४०*। संहृत्य-अपनीय। *सूत्र॰ १८१*। *आव॰ ७१३*। संहृत्य-विधाय। *विपा॰ ५३*।

साहण– साधनं-कारणम्। *आव॰ ५८९*। कथनम्। *पिण्ड॰ ८१*।

साहणण– संहननं-सङ्घातः। *भग॰ ५६८*।

साहणणाबंध– संहननं-अवयवानां सङ्घातनं तद्रूपो यो बन्धः स संहननबन्धः। *भग॰ ३९५*।

साहणति– संहन्यते-मिलति। *भग॰ १०४*।

साहणय– धर्मकथिनाऽऽचार्याय कथनीयं यदुतायमस्मद्व-सतिदाता। *ओघ॰ ९४*।

साहणिअ– एकत्र। *ओघ॰ ८३*।

साहणियति– एक्कतो काउं। *निशी॰ १३८* आ।

साहणिया– संहृत्य। *व्यव॰ ११२* आ।

साहण्णति– संहन्यते-सम्बध्यते। *स्था॰ ६३*।

साहत्थ– स्वहस्तः साक्षाद्। *उपा॰ ४६*।

साहत्थि– स्वहस्तः। *भग॰ १७८*।

साहत्थिय– स्वाहस्तिकी। विंशतिक्रियामध्ये एकादशी। *आव॰ ६१२*।

साहत्थिया– स्वहस्तेन निर्वृत्ता स्वाहस्तिकी। *स्था॰ ४२*। स्वहस्तगृहीतजीवादिना जीवं मारयतः। *स्था॰ ३१७*।

साहम्म– साहू। *निशी॰ २३४* आ।

साहम्मि– साधर्मिकः-श्रावकः। *ओघ॰ २४*। साधर्मिकः-श्रावकः श्राविका पुस्तकं श्रावकम्। *ओघ॰ २४*।

साहम्मिअ– साधर्मिकः-एकः प्रवचनतः न लिङ्गतः, एकः लिङ्गतो न प्रवचनतः, एको लिङ्गतोऽपि प्रवचनतोऽपि, एको न लिङ्गतो न प्रवचनतः। *दशवै॰ ३१*। साधर्मिकः-लिङ्गप्रव-चनाभ्यां समानधार्मिकः। *प्रश्न॰ १२६*।

साहम्मिणी– साधर्म्मिणी संयती। *बृह॰ ४७* आ।

साहम्मिय– साधर्मिकः-गीतार्थसमुदायविहारी संविग्नः। *सम॰ ४५*। साधर्म्मिकः-साध्वपेक्षया साधुः। *भग॰ ७०१*। समानो धर्म्मः सधर्म्मस्तेन चरतीति साधर्म्मिकः-साधुः। *स्था॰ ४७४*। साधर्म्मिकः। *आचा॰ ३५२*। साधर्म्मिकः-सामान्य-साधुः। *भग॰ ७२७*। साधर्मिकः-अपरसाधुः। *आचा॰ ३६५*। समानधर्म्मा लिङ्गता प्रवचनतश्चेति साधर्मिकः। *स्था॰ २९९*। साधर्मिकः-साधुः। *आचा॰ ४०३*।

साहम्मियउग्गह– साधर्मिकाणां-गीतार्थसमुदायविहारिणां सविग्नानामवग्रहो-मासादिकालमानतः पंचक्रोशादिक्षेत्ररूपः साधर्मिकावग्रहः। *सम॰ ४५*।

साहम्मी– जीवाद्यस्तित्ववादिनः कारुणिकश्चापि साधर्म्मिकः। *बृह॰ ५७* अ। साधर्मिकः-साधुः। *ओघ॰ ३८*।

साहम्मोवणीए– साधर्म्योपनीतं-साधर्म्येण उपनयो यत्र तत्। *अनुयो॰ २१८*।

साहय– संहतः-सुश्लिष्टः। *जीवा॰ २७४*। संहतं-सङ्क्षिप्तम-ध्यम्। *औप॰ २०*। संहतं-सङ्क्षिप्तम्। *प्रश्न॰ ८०*। संहतं-सङ्क्षिप्तमध्यम्। *जम्बू॰ १११*।

साहयइ– साधयति कथयति श्लाघते वा। *सूत्र॰ ३९४*।

साहयसो णंद– संहृतसौनन्दं-उर्द्ध्वीकृतमुसलाकृतिकाष्ठं, मध्ये तनु उभयोः पार्श्वयोर्बृहत्। *जीवा॰ २७०*। संहृतसौन-न्दं, उर्ध्वीकृतमुसलाकृतिकाष्ठं तच्च मध्ये तनु उभयोः पार्श्वयोर्बृहत्। संतं-सङ्क्षिप्तमध्यं सौनन्दं समायुधं मुसलविशेष एव मुसलम्। *जम्बू॰ १११*।

साहरइ– संहरति-निवेशयति। *जम्बू॰ २०२*।

साहरण– संहरणं-क्षेत्रान्तरात् क्षेत्रान्तरे देवादिभिर्नयनम्। *भग॰ ८९६*। बलावट्टंभकरणं। *निशी॰ ९६* अ। संहृत्य। *ओघ॰ ९२*।

साहरति– संहरति-भक्तभाजनात् भोजनभाजनेषु क्षिपति। *स्था॰ १४८*। *निशी॰ २३२* आ।

साहरह– संहरत-समानयत। *जम्बू॰ ३९४*।

साहरामि– आनेष्ये। *आव॰ ४५३*।

साहरिए– संहृतो-नीतः। *सम॰ ८९*।

साहरिज्जमाणचरए– संह्रियमाणचरकः। *ओघ॰ ३९*।

साहरित– संहृतः। *आव॰ ३४८*।

साहरित्तए– संहर्त्तुं-प्रवेशयितुम्। *भग॰ २१८*।

साहरित्ता– संहृदय। *आव॰ २१६*।

साहरिय– संहृतम्। *आचा॰ ३४५*। संहृतं-अविक्षिप्ततया धृतम्। *भग॰ ९२४*। संहृत-अन्यत्र क्षिप्तम्, पञ्चम उद्गम-दोषः। *पिण्ड॰ १४७*।

साहरेज्ज– साहरेत्-सङ्कोचयेत्। *भग॰ ६२१*।

साहल्लय– सफलता। *ओघ॰ ४१*।

साहस– साध्वसं भयम्। *बृह॰ २११* अ। अवितर्कितम्। *प्रश्न॰ १२९*।

साहसगतिः– तारापरिभोगे सुग्रीवरूपकारकः खेचराधिपवि-शेषः। *प्रश्न॰ ८९*।

साहसिए– साहसिकः-अवितर्कितकारी। *ज्ञाता॰ ७९*।

साहसिओ– अवितर्कप्रवर्तित इति साहसिकः। *प्रश्न॰ ५*।

साहसिय– साहसिकः-अकृत्यकरणपरः। *दशवै॰ २५१*। सहसा –अवितर्क्य भाषणे यो वर्त्तते सः साहसिकः। *प्रश्न॰ ३०*।

साहसीए– साहसिकः असमीक्षितकारी। *ज्ञाता॰ २३६*।

साहस्सिओ– सहसा-अपर्यालोच्य गुणदोषान् प्रवर्तत इति साहसिकः चौर्यादिकृदिति। *उत्त॰ ६५६*। सहसा-असमीक्ष्य प्रवर्त्तत इति साहसिकः भीमः। *उत्त॰ ५०७*।

साहा– शाखा-वृक्षडालरूपा। *दशवै॰ २२८*। शाखा-वृक्षडा-लम्। *दशवै॰ १५४*।

साहापारत– शाखापारगः। *उत्त॰ २२५*।

साहाभंग– शाखाभङ्गः-शाखैकदेशः। *दशवै॰ १५४*। शाखाभङ्गः पल्लवः। *आचा॰ ३४५*। *निशी॰ ६०* आ।

साहार– अनन्तवनस्पतिकायिकः। *बृह॰ ७१* आ। साधा-रण। *ओघ॰ १९०*।

साहारण– साधारणं-प्रकृतिपेलवस्य साधारणम्। *आचा॰ २९३*। साधारणः-तुल्यः। *ओघ॰ १८३*। कायपरीत्तः। *जीवा॰ ४४६*। साधारणः-तुल्यः। *ओघ॰ १८७*। साधारणं – बहूनां सामान्यम्। *आचा॰ ३५३*। समानं-तुल्यं प्राणापा-नाद्युपभोगं यथा भवति एवं आसमन्तादेकीभावेनानन्तानां जन्तूनां धारणं सङ्ग्रहणं येन तत्साधारणम्। *प्रज्ञा॰ ३०*। साधारणं-मण्डल्यां भोजनम्। *बृह॰ २५* आ। साधारणं-सामान्यम्। *आचा॰ ५९*। समानं एकं धारणं-अङ्गीकरणं शरीराहारादेर्यस्य स साधारणः। *आचा॰ ५९*। सङ्घाटिका-दिसाधर्मिकस्य सामान्यः साधारणः। *प्रश्न॰ १२८*।

साहारणणाम– साधारणनाम-यदुदयवशात् पुनरनन्तानन्तं जीवानामेक शरीरं भवति तत्साधारणनाम। *प्रज्ञा॰ ४७४*।

साहारणसरीरा– साधारणं-अनन्तजीवानामपि समानमेकं शरीरं येषां तेऽमी साधारणशरीराः। *उत्त॰ ६९१*।

साहारणा– साधारणा। *आव॰ २०८*।

साहारया– साधारा। *आव॰ २६३*।

साहि– गया। *निशी॰ ३०४* आ।

साहिका– गृहपङ्क्तिरूपा। *बृह॰ १४६* अ।

साहिगरण– सहाधिकरणेन साधिकरणाः युद्धार्थमुपस्थितः। *स्था॰ ३२९*।

साहिज्जई– कथ्यते। *दशवै॰ ११३*।

साहिज्जति– कथ्यते, प्ररूप्यते। *प्रज्ञा॰ ३६३*।

साहिज्जसु– अचीकथत्। *आव॰ १७५*।

साहियव्वं– कथयितव्यम्। *बृह॰ १२३* आ।

साही– गृहपङ्क्तिः। *बृह॰ १४९* आ। *निशी॰ १२७* आ। साहिका-गृहपङ्क्तिः। *बृह॰ १२* आ। साही-श्रेणिक्रमेण गृहपरिपाटिः। *बृह॰ ८०* अ। पाटकः। *व्यव॰ १०७* अ। जाया। *आव॰ ६९१*। वर्त्तनी। *पिण्ड॰ १०३*। शाखा-पाटकः-गृहाणां पङ्क्तिः। *आव॰ ६३६*। घरपंती। *निशी॰ १८७* अ। शाखा। *आव॰ ७४४*। सुहृत्-मित्रम्। *औप॰ ३३*। शोधिः-अकलुषहृदयः। *औप॰ ३३*। खडक्किका। *ओघ॰ १९८*।

साहीण– स्वाधीनः। *आव॰ २०८*। स्वाधीनः अस्तित्वेन स्वायत्तः। *ज्ञाता॰ १६*। स्वाधीनः-सन्निहितः। *ओघ॰ १४०*। कल्लशरीरो-भोगसमत्थो। *दशवै॰ ३७*। भत्तारो। *निशी॰ १०९* आ।

साहु– निर्वाणसाधकान् योगान्-सम्यग्दर्शनादिप्रधानव्यापारान् यस्मात्साधयतीति साधुः-विहितानुष्ठानपरः। *आव॰ ४४९*। साधयत्यपवर्गमिति साधुः। *दशवै॰ ७४*। साधुः-साधयति सम्यग्दर्शनादियोगैरपवर्गमिति साधुः। *दशवै॰ ७१*। साधुः सर्वोऽपि शिष्टः। *उत्त॰ ४७२*। साधुः। *आव॰ ४८४*।

साहुक्कार– *नन्दी॰ १६४*। साधुकारः। *आव॰ ३६०*। साधुकारः। *उत्त॰ १५०*।

साहुजोणीओ– साधुपाक्षिकः आत्मनिन्दकः। *निशी॰ ८६* आ।

साहू– यः ज्ञानादिशक्तिभिः मोक्षं साधयति यः, सर्वभूतेषु समतां धारयति यः, सहायकं संयमकारिणं धारयति स। *भग॰ ४*। *व्यव॰ १७०* अ। साधयतीति साधुः। *ओघ॰ ११*। साधुः-ज्ञानादिरूपाभिः। पौरुषेयीभिर्मोक्ष साधयतीति। *ओघ॰ ११*। निर्वाणसाधकान् योगान् साधयतीति साधुः।

आव॰ ५६९। साधयति पौरुषेयीभिः क्रियाभिरपवर्गमिति साधुः। *उत्त॰ ६९*। देससर्वविरताः। *आचा॰ २६०*।

साहेति– कथयति। *ओघ॰ ९०*। साधयति-रन्धयति। *भग॰ ५२०*।

सिं– अमीषाम्। *बृह॰ २१३ अ*। पूरणे। *उत्त॰ ३८७*। अस्य। *मरण॰*।

सिंखला– शृङ्खला मषीभाजनसत्का। *जीवा॰ २३७*। शृङ्खला। *जीवा॰ २०७*।

सिंग– शृङ्गं-विषाणम्। *प्रश्न॰ ८*। वाद्यविशेषः। *भग॰ २१६*। शृङ्गम्। *बृह॰ ६० अ*। शृङ्गं-यद् उत्तमाङ्गैकदेशेन वन्दते। कृतिकर्मणि चतुर्विंशतितमो दोषः। *आव॰ ५४४*। शिम्बः। *आव॰ ८२९*। शृङ्गं-ललाटवामदक्षिणपार्श्वस्पृद् वन्दनम्। *बृह॰ १३ अ*।

सिंगक्खोड– शृङ्गखोडः-शृङ्गप्रदेशः। *ओघ॰ ६८*। शृङ्गखोडः-अप्रशस्तप्रदेशः शृङ्गप्रदेशः। *ओघ॰ ६८*।

सिंगणं– प्रत्यभिज्ञानम्। *निशी॰ ११८ आ*।

सिंगणादित– सर्वेषु कायेषु मध्ये शृङ्गभूतं यत्कार्यं तत् शृङ्गना-दितम्। *बृह॰ ६० अ*।

सिंगणादियकञ्ज- श्रृङ्गनादित कार्यम्। उत्त० २५६

सिंगनादित- कज्ज-शृङ्गनादित कार्यम्। नंदी० २०७।

सिंगबेर– शृङ्गबेरं वनस्पतिकायिकविशेषः। *जीवा॰ २७*। शृङ्गबेरं-आर्द्रकं तथाप्रकारमामलकादि। *आचा॰ ३४८*। शृङ्गबेरम्। *प्रज्ञा॰ ३६५*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०४*। शृङ्गबेरं-कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१*। अनन्तकायभेदः। *भग॰ ३००*। साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३८*। शृङ्गबेरं-आर्द्रकम्। *दशवै॰ ११८*।

सिंगबेरचुण्ण– शृङ्गबेरचूर्णम्। *प्रज्ञा॰ २६६*।

सिंगभेय– शृङ्गभेदा-महिषादिविषाणच्छेदः। *ज्ञाता॰ ६*। *निशी॰ ५० आ*।

सिंगमाला– शृङ्गमाला। *जम्बू॰ ९८*। एकोरुकद्वीपे वृक्षवि-शेषः। *जीवा॰ १४५*।

सिंगाडय– शृङ्गाटक-त्रिकोणं स्थानम्। *जीवा॰ २५८*।

सिंगार– शृङ्गारः-अलङ्कारादिकृता शोभा, रसविशेषोऽपित-द्योगात् शृङ्गारः, शृङ्गारमिव शृङ्गारमतिशयशोभावाद्। *भग॰ ११८*। शृङ्गारो-मण्डनभूषणाटोपः। प्रथमरसः। *जम्बू॰ ५२*। शृङ्गारः-शृङ्गाररसपोषकः। *सूर्य॰ २९३*। शृङ्गारो-विभूषणादिभिर्मण्डनम्। *प्रज्ञा॰ ५५०*। शृङ्गारो शृङ्गाररूपः। *जीवा॰ २७६*। शृङ्गारो-मण्डनभूषणाटोपः। *जीवा॰ २०७*। कमनीयकामिनीदर्शनादिसम्भवो रतिप्रकर्मात्मकः शृङ्गारः। *अनुयो॰ १३५*। शृङ्गारः-मण्डनभूषणाटोपः। *राज॰ १२*। शृङ्गाररसोपेतः। *ज्ञाता॰ १६४*।

सिंगारकलुणा– शृङ्गारकरूणा-शृङ्गारमृदुः शृङ्गाररसेन करुणा-पादिका। *प्रश्न॰ १३९*।

सिंगारत्थं– शृङ्गारार्थं-विलासार्थम्। *उत्त॰ ४२९*।

सिंगारागार– शृङ्गारः-शृङ्गाररसपोषकः। आकारः-तन्निवेश-विशेषो यस्य स शृङ्गाराकारः। *सूर्य॰ २९३*।

सिंगारागारुचारुवेसा– शृङ्गारो-मण्डनभूषणाटोपः तत्प्रधान आकारो यस्यां सा तथा, चारुवेषाः-मनोहरनेपथ्याः, शृङ्गारस्य प्रथमरस्यागारमिव-गृहमिव चार वेषो यासां सा। *जम्बू॰ ४१*।

सिंगाल– सांगारं सरागम्। *बृह॰ १७८ अ*।

सिंगिया– शृङ्गिता। *आव॰ ९०*।

सिंगिरड– चतुरिन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

सिंगिरीडी– चतुरिन्द्रिपयजीवभेदः। *उत्त॰ ६९६*।

सिंगीरागारुव– हाराद्धहारादीया। *निशी॰ २७६ आ*।

सिंघ– सिंहः। *आव॰ १७४*।

सिंघाडए– राहोः प्रथमं नाम। *भग॰ ५७५*।

सिंघाडग– त्रिकोणजलजफलविशेषः। *स्था॰ १४५*। शृङ्गाटकं –त्रिकोण स्थानम्। *औप॰ ४*। *भग॰ २००*। शृङ्गाटकम्। *भग॰ २३८*। शृङ्गाटकं-शृङ्गाटकफलाकारं स्थानम्। *भग॰ १३७*। सिङ्घाटकं-सिङ्घाटकाभिधानफलविशेषाकारं स्थानं त्रिकोणमिति। *औप॰ ५७*। शृङ्गाटकं-नानाहट्टगृहाध्यासित-स्त्रिकोणो भूभागविशेषः। शृङ्गाटक त्रिपथसमागमः। *अनुयो॰ १५९*। शृङ्गाटकं-त्रिकोणं रथ्यान्तरम्। *स्था॰ २९४*। सिङ्घाटकः-आकारविशेषः। *आव॰ १३६*। *आचा॰ ३४८*। शृङ्गाटकं-सिङ्घाटकं सिङ्घाटकाकारं त्रिकोणं स्थानमिति। *प्रश्न॰ ५८*। जलजबीजं फलविशेषः तदाकृतिपथयुक्तं स्थानं –सिंघाटकम्। *ज्ञाता॰ २५*।

सिंघाण– नासिकानिष्क्रान्तं श्लेष्मः। *उत्त॰ ५१७*। सिङ्घानं-नासिकोद्भवः श्लेष्मा। *आव॰ ६१६*। सिङ्घानकं-नासिका-श्लेष्मा। *भग॰ १२२*। सिङ्घानः-

नासिकामलः। *जम्बू॰ १४८*। सिङ्घानो-नासामलः। *ज्ञाता॰ १०३*। नासिका-श्लेष्मा। *समः ११*। नासिकाश्लेष्मा। *भग॰ ८७*।

सिंघाणए– कृष्णपुद्गलः। *सूर्य॰ २८७*। सम्मूर्च्छिममनुष्यो-त्पत्तिस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ५०*।

सिंघाणय– सिङ्घानक-नासिकोद्भवं श्लेष्मा। *आव॰ ५६४*।

सिंघान– नासिकोद्भवः श्लेष्मा। *स्था॰ ३४३*।

सिंचामि– सिञ्चामि-उक्षामि-विध्यापयामि। *उत्त॰ ५०६*।

सिंझ– सिघ्म-क्षुद्रकुष्ठविशेषः। *भग॰ ३०८*।

सिंदिकंदय– सिन्दीकण्डकः। *आव॰ २२२*।

सिंदी– खर्जूरी। *आव॰ २२२*।

सिंदुवार– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*। निर्गुण्डिः। *ज्ञाता॰ २१८*। वृक्षविशेषः-शुल्ककुसुमवृक्षः। *भग॰ ४७६*। निर्गुण्डी। *जम्बू॰ ३५*।

सिंदुवारगुम्मा– सिंदुवारगुल्माः। *जम्बू॰ ९८*।

सिंदुवारमल्लदाम– सिन्दुवारमाल्यदामः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

सिंधवए– सैंधवम्। *व्यव॰ २०४अ*।

सिंधवओ– सैन्धवीयः। *आव॰ ४०८*।

सिंधु– देवविशेषः। *बृह॰ २५३आ*।

सिंधुकुंड– यत्र तु सिन्धुर्निपतति ततु सिन्धुकुण्डम्। *जम्बू॰ ८७*।

सिंधुदत्त– बहमदत्तराज्योर्वनराजीसोमयोः पिताः। *उत्त॰ ३७९*।

सिंधुदेवीकूड– सिन्धुदेवीकूटम्। *जम्बू॰ २९६*।

सिंधुसागरंत– सिन्धुसागरान्तः, सिन्धुनदीसङ्गतः। *जम्बू॰ २२०*।

सिंधुसेण– सिन्धुसेनः ब्रह्मदत्तराज्या वानीरायाः पिता। *उत्त॰ ३७९*।

सिंधुसोवीर– सिन्धुसौवीरः-जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*। यत्र वीतीभयनगरम्। *भग॰ ६१८*।

सिंधुसौवीर– यत्रोदायनराजा वीतभयनगरं च। *बृह॰ १६६*।

सिंधू– महानदी। *स्था॰ ४७७*।

सिंबलि– वृक्षविशेषः। *भग॰ २९०, ६८०, ६४८*। शाल्मलिः, वल्लादिफलम्। *दशवै॰ १७६*। सिम्बलिः-वृक्षविशेषः। *भग॰ २९०*।

सिंबलिकाली– शाल्मलीकालिका। *संस्ता॰*।

सिंबलिथालग– वल्लयादिफलीनां स्थाली, फलीनां वा पाकः। *आचा॰ ३५४*।

सिंबली– सीम्बली-वल्यादिफलिका। *भग॰ ६८४*।

सिंबवद्धण– शिम्बावर्द्धनं-ध्यानसंवरयोगविषये नगरम्। *आव॰ ७२२*।

सिंभकाल– श्लेष्मकालः। *आव॰ ६८९*।

सिंभाधियं– श्लेष्माधिक्यम्। *आव॰ ३०३*।

सिंभित– वाधिविशेषः। *स्था॰ २६५*।

सिंह– चतुर्दशमं स्वप्नम्। *ज्ञाता॰ २०*। सिंहः। *दशवै॰ १५७*। सिंहः-पञ्चाननः। *जीवा॰ २८२*। क्षुल्लकोदाहरणे सूरयः। *पिण्ड॰ १३४*। सिंहः-केशरीसिंहः। *जीवा॰ २७२*। क्रीड-नधात्रीदोषविवरणे सङ्गमस्थविराचार्यशिष्यः। *पिण्ड॰ १२५*।

सिंहकेसर– मोदकविशेषः। *आचा॰ ३०६*।

सिंहगिरि– सिंहगिरिः। *उत्त॰ ९६*।

सिंहगिरी– सिंहगिरिः-सोपारकनगरनृपतिः। *उत्त॰ १९२*। सिंहगिरिः-योगसङ्ग्रहे आलोचनादृष्टान्ते सोपारकपत्तना-धिपतिः। *आव॰ ६६५*।

सिंहनाए– सिंहनादः। *औप॰ ५९*।

सिंहनिषद्यायतनं– वार्धकीरत्नकृतं योजनायातं त्रिगव्यूतोच्छ्रितं सिंहानिषद्या। *आव॰ १६९*।

सिंहपरिसा– परं न तथासमर्थास्ते सिंहपर्षद् उच्यते। *बृह॰ १०२आ*।

सिंहभक्खिय– यद् एकदेशादारभ्य सिंहवत् तावद् भुज्यते यावत्सर्वं भोजनं निष्ठितं तत् सिंहभक्षितम्। *ओघ॰ १८७*।

सिंहमारक– कृतपापो व्यक्तिविशेषः। *आव॰ ५९०*।

सिंहया– दार्ढ्यस्थिरता। *भग॰ ५२७*।

सिंहरथ– मायापिण्डदृष्टान्ते राजगृहे राजा सिंहरथः। *पिण्ड॰ १३७*।

सिंहलदेशजः– सिंहल्यः। *जम्बू॰ १९१*।

सिंहली– देशविशेषः। *भग॰ ४६०*।

सिंहविक्रीडीत– तपोविशेषः। *व्यव॰ ११३आ*।

सिंहव्यापादक– बहुप्रायश्चित्तवान्। *व्यव॰ ३८६आ*।

सिंहासण– सिंहासनं-भद्रासनम्। *सूत्र॰ ३२५*।

सिंहासन– आसनम्। *उत्त॰ २६२*।

सि– श्रीः-सम्पदः। *ज्ञाता॰ ६५*। से तस्य। *ओघ॰ २१९*। से तस्य। *आव॰ ३६६*।

सिआ– स्यात्-कदाचित्। *दशवै॰ १७८*।

सिइ– निःश्रेणिः। *पिण्ड॰ १३६*।

सिउंढि– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

सिए– सितः-शुक्लः। *भग॰ १४५*।

सिकता– वालूका। *प्रज्ञा॰ ९९*। वालुका। *जीवा॰ १४०*।

सिक्कए– शिक्यकः। *जम्बू॰ ५८*।

सिक्कग– शिक्कगं दध्यादिभाजनानां दवरकमयमाकाशेऽ–वलम्बनं लोकप्रसिद्धं शिक्कगम्। *उपा॰ २२*। सिक्ककम्। *आव॰ १५*।

सिक्कय– सिक्ककम्। *आव॰ ६२१*। सिक्ककम्। *जीवा॰ २०६*। रूप्यमयं सिक्ककम्। *जीवा॰ २१४*।

सिक्कयणंतय– सिक्कगस्स एवं पिहणं। *निशी॰ १२१*।

सिक्खग– शिक्षकः-अभिनवप्रव्रजितः। *दशवै॰ ३९*। शिक्षकः-योऽधुना प्रव्रजितः। *दशवै॰ ३१*।

सिक्खा– शिक्षा-अक्षरस्वरूपनिरूपकं शास्त्रम्। *भग॰ ११४*। शिक्षा-अक्षरस्वरूपनिरूपकं शास्त्रम्। *औप॰ ९३*। शिक्षा-अभ्यासेः। *आव॰ ८३९*। शिक्षा-अक्षरस्वरूपनिरूपक शास्त्रम्। *ज्ञाता॰ ११०*। सूत्रार्थग्रहणम्। *प्रश्न॰ १४६*। शिक्षा –ग्रहणासेवनरूपा। *दशवै॰ १९२*। शिक्षा-कलाग्रहणम्। *प्रश्न॰ ११६*। शिक्षा-इच्छाभिच्छातहक्कारादिरूपा। *सूत्र॰ २४१*। शिक्षा-ग्रहणा 'सेवन' भेदभिन्ना। योगसङ्ग्रहे पञ्चमो योगः। *आव॰ ६६३*। शिक्षाया-व्रतासेवनात्मिका। *उत्त॰ २५१*। शिक्षा-धनुर्वेदः। *नन्दी॰ १५८*। शिक्षा ग्रहणशिक्षा आसेवन-शिक्षा च। *नन्दी॰ २१०*। शिक्षा-उपदेशः। अभ्यासः। *उत्त॰ ५०७*।

सिक्खापयवय– शिक्षापदव्रतं-अभ्यासस्थानव्रतम्। *आव॰ ८३९*।

सिक्खावण– शिक्षापनं-शिक्षणं प्रत्याचारवच्छुकसारिकादि-सुखेन मानुषभाषासम्पादनात्। *दशवै॰ १००*।

सिक्खावित्तए– शिक्षयितुं ग्रहणशिक्षापेक्षया सूत्रार्थौ ग्राहयितुं, आसेवनाशिक्षापेक्षया तु प्रत्युपेक्षणादि। *स्था॰ ५७*।

सिक्खावियं– सूत्रादिग्रहणतः शिक्षितम्। *ज्ञाता॰ ६०*।

सिक्खावेति– शिक्षयति-अभ्यास कारयति। *ज्ञाता॰ ३८*।

सिक्खासत्थं– शिक्षाशास्त्रम्। *आव॰ ४२२*।

सिक्खासील– शिक्षायां शीलः-स्वभावो यस्य शिक्षां वा शीलयति अभ्यस्यतीति शिक्षाशीलः-द्विविधशिक्षाभ्यासकृत्। *उत्त॰ ३४५*।

सिक्खिउ– शिक्षितस्य शिक्षितायां वा। *आव॰ ४२५*।

सिक्खिऊण– शिक्षित्वा-अधीत्य। *दशवै॰ १९०*।

सिक्खिओ– शिक्षितः-अत्र गृहीतसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रार्थोभयः। *सूर्य॰ २७६*।

सिक्खिज्ज– शिक्षेत्-व्यापारयेत्। *आचा॰ २६१*।

सिक्खित– आदित आरभ्य पठनक्रियया यावदन्तं नीतं तच्छिक्षितम्। *अनुयो॰ १५*।

सिक्खियं शिक्षितं– अभ्यस्तम्। *जम्बू॰ ३६५*।

सिक्खे– शिक्षते उपादत्ते। *दशवै॰ २४२*।

सिक्थ– मधूच्छिष्टम्। *दशवै॰ १७२*। *आचा॰ १२९*।

सिगालभुत्तं– शृगालभुक्तं शृगाल इवान्यत्रान्यत्र प्रदेशे भक्ष्यति तत् द्रावितरसमिति। *ओघ॰ १९२*।

सिग्ग– सिग्रः-*व्यव॰ १७२* अ। श्रान्तः। *ओघ॰ १००* (देशीपदमेतद्) परिश्रमः। *व्यव॰ १०* अ। सिग्रः परि-श्रान्तः। *बृह॰ २६८* अ। सिग्रः श्रान्तः। *बृह॰ २४७*।

सिग्गउ– श्रमः। *ओघ॰ २९*।

सिग्गाणि– सिग्रानि-भग्नानि। *बृह॰ ११९* आ।

सिग्घ– शीघ्रं वेगवत्। *भग॰ १६७*। शीघ्रम्। *ज्ञाता॰ २९*। शीघ्रत्वम्। *ज्ञाता॰ ९७*।

सिग्घया– शीघ्रता-लाघवविशेषः। *जम्बू॰ २३६*।

सिज्जंभव– शय्यम्भवः आर्यमणकेन कृतं दशवैकालिकश्रुता-राधनमिति हर्षश्रुमोचकः आचार्यः। *दशवै॰ २८४*। नि॰ *२७* आ।

सिज्जंस– श्रेयांसः- ऋषभजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव॰ १४७*। श्रेयांसः-पुरुषोत्तमवासुदेवधर्माचार्यः। *आव॰ १६३*। श्रेयांसः-प्रथमजिनभिक्षादाता। *सम॰ १५१*। सिद्धार्थरा-ज्ञोर्द्वितीयनाम। *आचा॰ ४२२*। श्रेयान्-समस्तभुवस्यैव हितकरः प्राकृतशैल्या छन्दसत्वाच्च श्रेयांसः, एकादशो जिनः। *आव॰ ५०४*। श्रेयांसः-गजपुरनगरयुवराजः। *आव॰ १४७*।

सिज्जा– शय्या-वसती। *आचा॰ ३०६*। शय्या-वसतिः। *आचा॰ ३२९*। शय्या-संस्तारकः। *आचा॰ ३६१*। शय्या-सर्वाङ्गिकी। *आचा॰ ३६९*। शय्या। *आचा॰ ३७६*। शय्यते यस्यां सा शय्या संस्तारकः। *स्था॰ २५१*। शय्या-आचा-

रप्रकल्पस्यैकादशो भेदः। *आव॰ ६६०*। शय्या-महती सर्वाङ्गप्रमाणा। *अनुयो॰ २०*। शय्या। *प्रज्ञा॰ ६०६*। शय्या-संस्तारकादिलक्षणा वा। *आव॰ ५७४*। शेरतेऽस्यामिति शय्या-उपाश्रयः, एकादशमपरीसहः। *उत्त॰ ८३*।

सिज्जावर– शय्यातरः-साधुवसतिदाता। *दशवै॰ ११७*।

सिज्जासंथार– शय्यासंस्तारकः-शय्या-वसतिस्तस्यां संस्तारकः शिलाफलकादिः। *उत्त॰ ४९८*।

सिज्जासण– शय्यासनं शयनीयविष्टरं वसत्यासनं वा। *सम॰ १५*।

सिज्जिरिआ– आचाराङ्ग एकादशममध्ययनम्। *सम॰ ४४*।

सिज्झइ– सिध्यति-अवाप्तचरमभवतया सिद्धिगमनयोग्यो भवति। *भग॰ ३४*। सिध्यति-निष्ठितार्थो भवति। *जीवा॰ २५६*। सिध्यति-निष्ठितार्थो भवति। *प्रज्ञा॰ १०८*। सिध्यति –निष्ठितार्थो भवति। *उत्त॰ ५८६*।

सिज्झति– आगमसिद्धत्वादिना सिध्यति। *उत्त॰ ५७२*। सिद्ध्यति-निष्ठितार्थो भवति। *प्रज्ञा॰ ६०५*। सिध्यति-अणिमादिसंयमफलं प्राप्नोति। *आव॰ ७६१*।

सिज्झया– सिज्झिका-प्रातिवेश्मिकस्त्रियः। *बृह॰ २७०*।

सिज्झिस्संति– सेत्सयन्ति-अष्टविधमहर्द्धिप्राप्तया भोत्स्यन्ते केवलज्ञानेन तत्त्वम्। *सम॰ ७*।

सिज्झेज्जा– सिध्येत्-समस्ताणिमैश्वर्यादिसिद्धिभाग् भवेत्। *प्रज्ञा॰ ४००*।

सिट्ठ– शिष्टम्। *आव॰ ६३*।

सिट्ठी– श्रेष्ठी-श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टभूषितोत्तमाङ्गः। *प्रज्ञा॰ ३२७*।

सिढिल– शिथिलः-अल्पपरिणामतया मन्दवीर्यः। संयमतप-सोर्घृतिद्राढिमरहितः। *आचा॰ २१३*।

सिढिलबंधण– श्लथबन्धनं, स्पृष्टता, बद्धता निधत्तता वा तेन बद्धः-आत्मप्रदेशेषु सम्बन्धितः। *भग॰ ३४*।

सिढिलभाव– शिथिलभावः, निर्लज्जः। *ज्ञाता॰ १६५*।

सिढिलीकय– शिथिलीकृतं-श्लथीकृतं, मन्दविपाकीकृतम्। *भग॰ २५१*।

सिणणिद्ध– स्निग्धा-चिक्कणा। *जम्बू॰ १११*। स्निग्धा-सतेजस्का। *जम्बू॰ ११४*।

सिणवल्ली– सेनापल्ली। *आव॰ ५३८*।

सिणाण– स्नानं-सुगन्धिद्रव्यसमुदयः। *आचा॰ ३६३*। स्नानं –अपत्यार्थं मन्त्रौषधिसंस्कृतजलाभिषेचनम्। *उत्त॰ ४१७*। स्नानं-शौचम्। *उत्त॰ ९०*। स्नानं-अङ्गप्रक्षालनम्। *दशवै॰ २०५*। स्नानम्। *आचा॰ ३९५*। तेल्लादिणा फासुगअफासु-गेण सव्वगातस्स सिणाणं। *निशी॰ ८९ अ*।

सिणाणवच्चसंलोए– स्नानवर्चः संलोकः। *आचा॰ ३४१*।

सिणात– क्षालितसकलघातिकर्ममलपटत्वात् स्नात इव स्नातः स एव स्नातकः सयोगोऽयोगो वा केवलीति। *स्था॰ ३३७*। स्नातकः-प्रधानः। *स्था॰ १९३*। स्नातको-मोह-णिजाइघातियचउकम्मावगतः। *उत्त॰ २५७*।

सिणाय– स्नात इव स्नातो-घातिकर्म्मलक्षणमलपटलक्षाल-नाद्, निर्ग्रन्थेषु पञ्चमभेदः। *भग॰ ८९०*।

सिणायग– स्नातकः षट्कर्माभिरतो वेदाध्यापकः। शौचाचार-परतया नित्यस्नायी ब्रह्मचारी। *सूत्र॰ ४००*। स्नातकः-बोधिसत्त्वः। *सूत्र॰ ३९७*।

सिणाविज्ज– स्नानं-सोत्तमाङ्गं कुर्यात्। *आचा॰ ३६३*।

सिणिजंतो– साधू। *निशी॰ २३८ अ*।

सिणिद्ध– स्निग्धः-शुभकान्तिः। *राज॰ ४*।

सिणेह– स्नेहो-अवश्यायः। *बृह॰ ८१ आ*। स्नेहस्वजना-दिषु प्रेमः। *उत्त॰ २६४*।

सिणेहकाय– स्नेहकायः अप्कायविशेषः। *भग॰ ८३*।

सिणेहपाण– स्नेहपानं-द्रव्यविशेषपक्वघृतादिपानम्। *ज्ञाता॰ १८१*।

सिणेहसुहुम– स्नेहसूक्ष्मं-अवश्यायहिममहिकाकरकहरतनु-रूपम्। *स्था॰ ४३०*। स्नेहसूक्ष्मं-अवश्यायहिममहिकाकर-कहरतनुरूपम्। *दशवै॰ २२९*।

सिण्हा– सिण्हा-अवश्यायः। *बृह॰ १८१ आ*। सिहना-अवश्यायः। *ओघ॰ २१३*।

सिण्हाए– सिस्तालकं फलविशेषः-सेफालकम्। *अनुत्त॰ ६*।

सिण्हाय– सिस्तालकं-फलविशेषः। सेफालकसिति प्रसिद्धम्। *अनुत्त॰ ६*।

सितं– बद्धम्। *प्रज्ञा॰ ११२*। बद्धमिहाष्टविधं कर्म। *उत्त॰ ४७२*। बद्धमष्टप्रकारं कर्मेन्धनम्। *प्रज्ञा॰ २*। हड। *निशी॰ ११८* आ।

सिति– उर्द्ध्वमधो वा गच्छतः। *व्यव॰ ४०८* आ।

सित्थ– मधुसित्थं, औपपातिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १५५*। सिक्थुः। *आव॰ ६९२*।

सित्थग– सिक्थकम्। *आव॰ ८४४*।

सित्थगकर– सिक्थकरः मधुसिक्थः। *आव॰ ४२१*।

सित्थू– सित्थुः। *जीवा॰ २६८*।

सिद्धंत–सिद्धं-अत्थं अन्तं णयतीति सिद्धन्तः। *बृह॰ ३१* अ। सिद्धान्तः –प्रतिष्ठितपरिच्छेदः। *अनुयो॰ १,३*। सिद्ध-प्रमाणप्रतिष्ठितमर्थमन्तं-संवेदननिष्ठारूपं नयतीति सिद्धान्तः। *अनुयो॰ ३८*।

सिद्ध– सितं-बद्धमष्टप्रकारं कर्मेन्धनं ध्मातं-दग्धं जाज्वल्य-मानशुक्लध्यानानलेन यैस्ते निरुक्तविधिना सिद्धाः, अथवा सेधन्ति स्म अपुनरावृत्या नीर्वृत्तिपुरीमागच्छन्, यदि वा सिध्यन्ति स्म निष्ठितार्था भवन्ति स्म, यद्वा सेधन्ते स्म शासितारोऽभवन् मङ्गलरूपतां वाऽनुभवति स्मेति सिद्धाः, अथवा सिद्धाः-नित्याः अपर्यवसानस्थितिकत्वात्, प्रख्याता वा भव्यैरुपलब्धगुणसन्दोहत्वात्। *भग॰ ३*। महाहिमवत् पर्वते कूटम्। नीलवर्षधरपर्वते कूटम्। *स्था॰ ७२*। सिद्धः-अशेषनिष्ठितकर्मांशः, परमसुखी, कृतकृत्यश्च। द्वितीयस्था-नकम्। *आव॰ ११९*। ज्ञानसिद्धः-केवली। *भग॰ २७६*। सिद्धं-सत्यं, प्रतिष्ठितं, अविचार्यम्। *दशवै॰ ३३*। सितं-बद्धमष्टप्रकारं कर्म्म घ्मातं-भस्मीकृतं येन सः सिद्धः। निर्दग्धकर्मेन्धनः मुक्त इति। *जीवा॰ ४३६*। सितं ध्मात-मेषामिति सिद्धाः कृत्यकृत्यः। *आव॰ ५०७*। सिद्धः सितं ध्मातमस्येति सिद्धाः निर्दग्धकर्मेन्धनः। *आव॰ ८८१*। सिद्धः –यो येन गुणेन परिनिष्ठितो न पुनः साधनीयः स सिद्ध उच्यते। *नन्दी॰ ११२*। सिद्धः-कृतार्थो जातः। *स्था॰ ३६*। सिद्ध्यति स्म-कृतकृत्योऽभवत् सेधति स्म वा-अगच्छत् अपुनरावृत्या लोकाग्रमिति सिद्धम्। सितं वा-बद्धं कर्म्म ध्मातं-दग्धं यस्य स निरुक्तान् सिद्धः-कर्म्मप्रपञ्चनिर्मुक्तः। *स्था॰ २५*। प्रतिष्ठितम्। *आव॰ ७८९*। प्रमाणप्रतिष्ठितम्। निष्ठितार्थम्। *प्रश्न॰ ११३*। रुक्मिवर्षधरे कूटम्। *स्था॰ ७२*। सिद्धः-शिखरिवर्षधरे कूटम्। *स्था॰ ७२*। सितं-बद्धं ध्मातं –भस्मीकृतमष्टप्रकारं कर्म्म येन स सिद्धः। *नन्दी॰ ११२*। सिद्धं-प्रतिष्ठितम्। *दशवै॰ १२६*। सिद्धपुत्रः। *बृह॰ २४६* अ। प्रतिष्ठितम्। *भग॰ २४३*। विंशतिस्थानके द्वितीयस्था-नकम्। *ज्ञाता॰ १२२*। *भग॰ १११*। वैताढ्यै कूटम्। *जम्बू॰ ३४*।। सिद्धपुत्तो। *निशी॰ ५२* अ। सिद्धः-निष्ठितार्थः। *उत्त॰ ६७*। सितं-बद्धमिहाष्टविधं कर्म तद् ध्मातं-भस्मसाद्भूतमस्येति सिद्धाः ध्यानानलनिर्दग्धाष्टकर्मे-न्धनः। *उत्त॰ ४७२*। सिद्धं-पक्वम्। *पिण्ड॰ ९५*। सिद्धा-यतनकूटं, सौमनसवक्षस्कारे कूटम्। *जम्बू॰ ३५३*। सिद्धः –निष्ठितार्थः। *जम्बू॰ १५८*। प्रख्यातं-प्रथितम्। *निशी॰ १४* आ। सिद्धं-कहियं। *निशी॰ ८२* आ।

सिद्धगंडिया– सिद्धगण्डिका सिद्धस्थानप्रतिपादनपरं प्रकरणम्। *भग॰ ४३*।

सिद्धजत्त– सिद्धयात्रः नाविकविशेषः। *आव॰ १३७*।

सिद्धत्थ– सिद्धार्थः-येन बलदेवः प्रतिबोधितः। *उत्त॰ ११७*। सिद्धार्थः-वीरविभोर्मातृस्वस्रेयः। *आव॰ १८८*। सिद्धार्थः-क्षत्रियकुण्डग्रामे क्षत्रियः। *आव॰ १७९*। सिद्धार्थः-मध्यमायां वणिग्। *आव॰ २२६*। आरणकल्पे विंशतितमसागरोपम-स्थितिकं विमानम्। *सम॰ ३८*। सिद्धार्थः-वर्द्धमानविभोः पिता। *आव॰ १६१*। जम्बूवैरवते आगामिन्यामुत्सर्पिणां दशमतीर्थकृत्। *सम॰ १५४*। सिद्धार्थः-सर्षपः। *अनुयो॰ २४*। महावीरस्वामिपिता। *सम॰ १५१*। सिद्धार्थः-पाटलषण्डन-गराधिपतिः। *विपा॰ ७४*। काष्यपगोत्रियक्षत्रियः, वर्द्धमान-स्वामिनः पिता। *आचा॰ ४२१*।

सिद्धत्थग– सिद्धार्थकः-सर्षपः। *भग॰ ५४२*।

सिद्धत्थगजाल– सिद्धत्थगादि जेण जालेण घेप्पंति तं सिद्ध-त्थगजालं। *निशी॰ ६१* अ। सिद्धार्थाः-सर्षपास्तेऽपि येन जलेन गृह्यन्ते तत्सिद्धार्थकजालम्। *बृह॰ २२१* अ।

सिद्धत्थगाम– गोशालकविहारभूमिः। *भग॰ ६६४*।

सिद्धत्थपुरं– सिद्धार्थपुरं-प्रथमशरदि स्थानम्। *आव॰ २१२*। सिद्धार्थपुरं-श्रीमहावीरविहारभूमी। *आव॰ २२०* सिद्धार्थ-पुरम्। *आव॰ २१४*। सिद्धार्थपुरं-श्रेयांसनाथस्य प्रथमपार-णकस्थानम्। *आव॰ १४६*।

सिद्धत्थय– सिद्धार्थकं भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६१।* सिद्धार्थक सर्षपप्रमाणस्वर्णकणरचितसुवर्णमणिमयम्। *जम्बू॰ १०६।*

सिद्धत्थवण– सिद्धार्थवनं-वनविशेषः। *आव॰ १८६।* सिद्धा-र्थवन-ऋषभप्रभोर्दीक्षावनम्। *आव॰ १३७।* सिद्धार्थवनम्। *भग॰ ३६।*

सिद्धत्था– चतुर्थतीर्थकृत्शिबिका। *सम॰ १५१।* सिद्धार्थाः-सर्षपाः। *बृह॰ २२१ अ।* आचार्यविशेषः। *निर॰ ४।* चतुर्थतीर्थकृन्माता। *सम॰ १५१।* सिद्धार्था-अभिनन्दन-माता। *आव॰ १६०।*

सिद्धत्थिया– सिद्धार्थिका। *प्रज्ञा॰ ३६४।* सिद्धार्थिका-सर्ष-पप्रमाणसुवर्णकणरचितसुवर्णमणिमयीकण्ठिका। *औप॰ ५५।*

सिद्धपव्वओ– सिद्धपर्वतः-सिद्धोपलक्षितः पर्वतः। तदधि-ष्ठायकदेवताविशेषः। *उत्त॰ ३२१।* सिद्धापर्वतः-अष्टापदः। *उत्त॰ ३२१।*

सिद्धपुत्त– सिद्धपुत्रः। *आव॰ ३९९।* सिद्धपुत्रः-औत्पातिकी-बुद्धौ दृष्टान्ते शतसहस्रविषये दृष्टान्तः। *आव॰ ४२२।* जो पुण मुंडो स सिहो सुक्कंबरो सभज्जगो सो सिद्धपुत्तो। *निशी॰ ३१ आ।* *निशी॰ ७६ अ।* *निशी॰ ११५ अ।* सिरमुंडं सिहं च धरेति भारिया से भवति वा ण वा। *निशी॰ ११३ आ।*

सिद्धपुत्तरूव– सिद्धपुत्ररूपः। *आव॰ ३९१।*

सिद्धपुत्र– अपूर्वश्रावकः। *स्था॰ २६०।* ज्ञाततत्प्रतिज्ञः औत्पत्तिकीबुद्धौ दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १५१।*

सिद्धपुत्रक– द्वौ शिष्यवान् निमित्तशास्त्रविद्। *नन्दी॰ १६०।*

सिद्धमणोरम– सिद्धमनोरमः-द्वितीयदिवसनाम। *जम्बू॰ ४९०।* द्वितीयदिवसनामः। *सूर्य॰ १४७।*

सिद्धमन्त्र– आर्यखपुटवत् विद्यासिद्धः। *दशवै॰ १०३।*

सिद्धशिला– यत्र विधायानशनं जग्मुः-शोभनां गतिं वाचंयमाः सा। *अनुयो॰।* *आव॰ ५।* *उत्त॰ ७२।*

सिद्धसिलं– सिद्धशैलम्। *आव॰ ४३७।*

सिद्धसिला– सिद्धशिला। *आव॰ ६८५।*

सिद्धसिलातल– यत्र साधवरतपःपरिकर्मितशरीराः स्वयमेव गत्वा भक्तपरिज्ञाद्यनशनं प्रतिपन्नपूर्वाः प्रतिपद्यन्ते प्रतिप-त्स्यन्ते च तत् सिद्धसिलातलम्। *अनुयो॰ २०।*

सिद्धसेण– खमासमणो। *निशी॰ ६६ आ।* खमासमणो पुव्वद्धस्स भणियं। *निशी॰ ७५ अ।* खमासमणो। *निशी॰ ४१ आ।*

सिद्धसेणियापरिकम्म– दृष्टिवादे परिकर्मे प्रथमो भेदः। *सम॰ १२८।* सिद्धश्रेणिकापरिकर्म। *नन्दी॰ २३९।*

सिद्धसेन– खमासमणो। *निशी॰ २६ अ।*

सिद्धा– सिद्धाः-भगवन्तोऽर्हन्तः, उत्पन्नकेवलज्ञाना न तु सिद्धाः सिद्धिगताः तेषां वचनयोगासम्भवात्। *जम्बू॰ ९४।* सिद्धाः-ज्ञानसिद्धाः। *अनुयो॰ १६२।*

सिद्धाइगुणा– सिद्धानामादौ-सिद्धत्वप्रथमसमय एव गुणाः सिद्धादिगुणाः। *सम॰ ५५।* सिद्धानामादित एव गुणाः सिद्धा-दिगुणाः। *प्रश्न॰ १४६।* सिद्धानां वा आत्यन्तिका गुणाः सिद्धातिगुणाः। *प्रश्न॰ १४६।* सिद्धादिगुणाः, सिद्धस्यादि-गुणाः यगपद्भाविनो न क्रमभाविन इत्यर्थः। *आव॰ ६७३।* सिद्धातिगुणाः संस्थानादिनिषेधरूपाः। *उत्त॰ ६१८।* सिद्धादिगुणाः-सिद्धाः-सिद्धिपदप्राप्तास्तेषामादौ प्रथमकाल एवातिशायिनो वा गुणाः। *उत्त॰ ६१८।*

सिद्धाइसयगुण– सिद्धातिशयगुणाः सिद्धानामतिशयगुणा न कृष्णा न नीला इत्यादयो येषां ते। *उत्त॰ ५८९।*

सिद्धायतण– सिद्धायतनम्। *राज॰ ९४।* सिद्धायतनं-सुधर्मा-सभायां उत्तरपूर्वस्यां स्थानम्। जीव॰ २३३। सिद्धायतनम्। *जीवा॰ ३५८।*

सिद्धाययण– सिद्धानि-शाश्वतानि सिद्धानां वा शाश्वतीनामर्ह-त्प्रतिमानामायातनं स्थानं सिद्धायतनम्। *जम्बू॰ ७७।* सिद्धायतनं सिद्धानि-शाश्वतानि सिद्धानां वा शाश्वतीनामर्ह-त्प्रतिमानामायतनं स्थानं सिद्धायतनम्। *स्था॰ २३२।*

सिद्धाययणकूड– मेरूत उत्तरपश्चिमायां सिद्धायतनकूटम्। *जम्बू॰ ३१३।* सिद्धायतनकूटं-निसढवक्षस्कारे कूटम्। *जम्बू॰ ३०८।* सिद्धायतनकूटं-विद्युत्प्रभवक्षस्कार पर्वते कूटम्। *जम्बू॰ ३५५।* सिद्धायतनकूटं-पद्मकूटवक्षस्कारे कूटम्। *जम्बू॰ ३४६।* सिद्धायतनकूटं-चित्रकूटवक्षस्कारपर्वते कूटम्। *जम्बू॰ ३४४।* सिद्धायतनकूटं शिखरीवर्षधरकूट-नाम। *जम्बू॰ ३८१।* सिद्धायतनकूटं एकशैलवक्षस्कारकू-टनाम। *जम्बू॰*

३४७।

सिद्धार्थ– महावीरपिता। *ज्ञाता० १२८*।

सिद्धार्थकम्मञ्जरी– सर्षपनालिका। *दशवै० १८५*।

सिद्धालए– सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नतयोपचारतः सिद्धानामा-लयः, सिद्धालयः, प्राग्भारायाः पञ्चमं नाम। *प्रज्ञा० १०७*। इसत्प्राग्भारयाः षष्ठनाम। *समः २२*।

सिद्धालत– सिद्धानामाश्रयत्वात् सिद्धाययः। *स्था० ४४०*।

सिद्धावास– सिद्ध्यावासः मोक्षवासनिबन्धनत्वम्। अहिंसा-याश्चतुस्त्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न० ९९*।

सिद्धि– सिद्धिः अशेषसंसारिकप्रपञ्चरहितस्वभावं अशेषद्वन्द्वो-परमलक्षणा वा। अणिमालघिमामहिमाप्राकाम्याभीशित्वं वशित्वं प्रतिघातित्वं कामावसायित्वमैश्वर्यलक्षणा। *सूत्र० ४६*। सिद्धिः-सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नत्वात्। ईषत्प्राग्भारायश्चतुर्थं नाम। *प्रज्ञा० १०७*। सिद्ध्यन्ति-निष्ठितार्था भवन्त्यस्यां प्राणिन इति सिद्धिः लोकान्तक्षेत्रलक्षणा। *आव० ४०६*। लोकाग्रक्षेत्रलक्षणा। *दशवै० १*। सिद्धः-सम्बन्धवाचकः इष्टा-र्थसम्बन्धः। *दशवै० ६३*। सिद्धः-लोकान्तक्षेत्रलक्षणा। जीव० *२५६*। सिद्धिः-अशेषकर्माशापगमेनात्मनः स्वरूपऽवस्था-नता। *प्रज्ञा० ६०४*। सिद्धिः-अणिमाद्यष्टप्रकाराः। *सूत्र० २९९*। सिद्धिः-परलोकः। *सूत्र० १६०*। सिद्धिः-अशेष-कर्मच्युतिलक्षणा। *सूत्र० ३८१*। सिद्धिकृतकृत्यता। *प्रश्न० १३३*। सेधनं सिद्धिः-हितार्थप्राप्तिः। *आव० ७६०*। इसत्प्राग्भारायाः पञ्चमं नाम। *समः २२*।

सिद्धिगंडिया– सिद्धिस्वरूपप्रतिपादनपरावाक्यपद्धतिरौप-पातिकप्रसिद्धाः। *भग० ५२१*।

सिद्धिगइनामधेयं– सिद्ध्यन्ति-निष्ठितार्था भवन्ति यस्यां सा सिद्धिः सा चासौ गमनत्वाद् गतिश्च सिद्धिगतिस्तदेव नामधेयं –प्रशस्तं नाम यस्य तत्तया सिद्धिगतिनामधेयः, महावीरः। *भग० ७*।

सिद्धिगती– सिद्धश्चासौ गतिश्चेति वा सिद्धिगतिः। *स्था० ३३४*।

सिद्धिमग्ग– सेधनं सिद्धिः-हितार्थप्राप्तिस्तत्मार्गः। सिद्धिमार्गः। *ज्ञाता० ४९*। हितार्थप्राप्त्युपायः। *भग० ४७१*।

सिद्धिमूल– चरणकरणम्। *आव० ५३३*।

सिद्धिवरा– सकलकर्म्मक्षयलभ्या भवसिद्धिरिति। *प्रश्न० ९८*।

सिद्धिविग्गहगई– सिद्धावविग्रहेण-अवक्रेण गमनं सिद्ध्यविग्र-हगतिः। *स्था० ४९७*।

सिद्धी– सिद्धिः-सिध्यन्ति-कृतार्था भवन्ति यस्यां सा सिद्धिः, सा च यद्यपि लोकाग्रं, तत्प्रत्यासत्त्येषत्प्राग्भाराऽपि। सिद्धिः-कृतकृत्यः, लोकाग्रमणिमादिका वा। *स्था० २४*। सिद्ध्यन्ति तस्यामिति सिद्धिः। *स्था० ४४०*। प्रसिद्धिः विपक्षे दोषदर्शनं सिद्धिः। *व्यव० १२८* आ। सिद्धिः-यद्यपि परमार्थतः सकलकर्मक्षयरूपा सिद्धाधाराऽऽकाशरूपा वा तथाऽपि सिद्धाधाराकाशदेशप्रत्यासन्नत्वेनेषत्प्राग्भारा पृथिवी सिद्धिरुक्ता। *भग० ११९*।

सिध्मः– अष्टम क्षुद्रकृष्टः। *प्रश्न० १६६*। क्षुद्रकुष्टः। *आचा० २३५*।

सिनाय– स्नातकः, निग्रन्थपञ्चके चतुर्थः। *व्यव० ४०२*।

सिन्धु– महानदी। *स्था० ७५*। कूटविशेषः। *स्था० ७१*।

सिन्धुराज– गर्भाधानपरिसाटनरूपमूलद्वारविवरणे राजा। *पिण्ड० ४५*।

सिन्धुविषय– अभिन्नवस्त्रप्रावरणे दृष्टान्तः। *बृह० २५३* अ।

सिन्धुसौवीर– उदायनराज्ञोः जनपदः। *प्रश्न० ८९*।

सिन्न– विश्रन्तः। *ओघ० ९६*।

सिप्प– स्थावरकायः। *स्था० २९२*। शिल्पं-तूर्णनादि साचार्यकं वा। *स्था० ३०४*। शिल्पं-रथकारकर्म्मप्रभृतिः। *बृह० ९२* आ। शिल्पं-यदाचार्योपदेशजं ग्रन्थनिबन्धाद्वो-पजायते सातिशयं कर्मापि तच्छिल्पम्। *आव० ४०८*। शिल्पं –आचार्योपदेशप्राप्यं चित्रादि। *प्रश्न० ९६*। शिल्पं-आवर्जक, प्रीत्युत्पादकम्। *पिण्ड० १२९*। शिल्पं-कुम्भकारक्रियादि। *दशवै० २४९*। शिल्पः तूर्णनसीवनप्रभृतिः। *पिण्ड० १२९*। आचार्योपदेशजं शिल्पम्। *जम्बू० १३६*। रहगारचुन्नगारादि। *निशी० ४४* अ। शिल्पं-चित्रपत्रच्छेदादिविज्ञानम्। *उत्त० ४२०*। शिल्पं-अङ्गमर्दनादि। *औप० ६५*। शिल्पं चित्रादि। *प्रश्न० ६४*। शिल्पं-साचार्यकं चित्रकर्मादि। *प्रश्न० ११७*। शिल्पं-क्रियासु कौशलम्। *जीवा० १२२*।

सिप्पसंपुडसंठित– सुक्तिकासंपुटसंस्थानसंस्थितः-उद्वेधज-लस्य जलवृद्धिजलस्य चैकत्रमीलनचिन्तायां शुक्तिकासंपुटा-कारसादृश्यम्। *जीवा॰ ३२५*।

सिप्पसय– शिल्पशतं, विज्ञानशतम्। *जम्बू॰ २५८*। शिल्प-शतम्। *जम्बू॰ १३६*।

सिप्पा– शिल्पा-नदीविशेषः। *आव॰ ४१६*।

सिप्पि– शिल्पिः। *व्यव॰ ३४३ आ*। शिल्पी-कुम्भकारा-दिकः। *औप॰ ४*।

सिप्पिय– तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। शुक्तयः। *उत्त॰ ६९५*। वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०२*।

सिप्पिसंपुडा– संपुटरूपा शुक्तिः। द्वीन्द्रियविशेषः। *जीवा॰ ३१*। द्वीन्द्रियविशेषः, संपुटरूपाः शुक्तयः। *प्रज्ञा॰ ४१*।

सिप्रा– उज्जैन्यां नदी। *नन्दी॰ १४५*।

सिबलि– मुद्गादीनां विध्वंस्ता फलिः। *आचा॰ ३५४*।

सिबिआ– शिबिका-कूटाकारेणाच्छादिता जम्पानविशेषः। *जम्बू॰ ३०*। जम्पानविशेषरूपा उपर्याच्छादिता कोष्ठाकारा। *जम्बू॰ ३७*।

सिबिया– शिबिका-कूटाकारेणाच्छादिता जम्पानविशेषः। *जीवा॰ १८९, २८२*। शिबिका जम्पानविशेषरूपा उपर्या-च्छादिता कोष्ठाकारा। *जीवा॰ १९२*। *आचा॰ ४२३*। शिबिका। *आव॰ ३६८*। सिमे-सीमानि। *गच्छा॰* ।

सिय–

प्रशंसाऽस्तित्वविवादविचारणाऽनेकान्तसंशयप्रश्नादि-ष्वर्थेषु। *प्रज्ञा॰ १८१*। स्यात्-कदाचित्। *आचा॰ ३०५*। स्यात्-कथञ्चित्। *जीवा॰ १८३*। स्यात्-कदाचिद्। *भग॰ ३५*। स्यात्-नियातोऽनेयान्तद्योती। *प्रज्ञा॰ ५६६*। स्यात् -कश्चित्। *प्रज्ञा॰ २४५*। सित्तं-धवलम्। *जीवा॰ ९७५*। सितम्। *भग॰ ८२*। सितं-शुक्लम्। *सूर्य॰ २६३*। सितः-बद्धः कर्मणा गृहपाशेन रागद्वेषादिनिबन्धनेन वेति गृहस्थो अन्यतीर्थिको वा। *आचा॰ ४३०*। स्युः। *भग॰ ७६८*। स्युर्भवन्ति। *भग॰ ३७१*। सितं-द्रव्यशस्त्रम्। *आचा॰ ७५*। सितं-चामरम्। *दशवै॰ १५४*। स्यात्-भवेत्। *भग॰ ८३*। श्रितं-आश्रितम्। *आचा॰ ७२*।

सियलाविज्जइ– शीतलीयते। *आव॰ ६२४*।

सिया– शिवा-सदा मङ्गलोपेतम्। *प्रज्ञा॰ ८६*। शिवा-समुद्र-विजयराज्ञी। *उत्त॰ ४८९*। शिवा-शक्रदेवेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *जीवा॰ ३६५*। शिवा-निरुपद्रवा। *प्रश्न॰ ७६*। शिबिका-कूटाकाराच्छादितो जम्पानविशेषः। *भग॰ १८७*। सिताः-सम्बद्धाः। *आचा॰ ३६*। अवधारणे। *निशी॰ ७२ अ*। आसंका। *दशवै॰ १३२*। स्यात्-कदाचित्। *आव॰ ३३९*। स्यात्-कदाचित्। *दशवै॰ ९४*। अवधारणे। *निशी॰ १३९ अ*। सिता-बद्धा। *जम्बू॰ ५३*।

सियाग– सुसाणो। *निशी॰ ७२ आ*।

सियाल– शृगालः। *आव॰ ३५१, ८५९*। सनखपदचतुष्पद-विशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५*। शृगालः-गोमायुः। *प्रज्ञा॰ २५४*।

सियालक्खइया– शृगालस्तु न्यग्वृत्त्योपात्तस्यान्यान्यस्थान-भक्षणेन वा खादिता तत्स्वभावो वा। *स्था॰ २७६*।

सिर– शिरः-शिरोजबन्धनम्। *औप॰ ७७*। शिरः-मस्तकम्। *प्रश्न॰ ६०*।

सिरत्ताण– शिरस्त्राणं प्रहरणविशेषः। *आव॰ ४८७*।

सिरमुह– शिरोमुखः-उर्द्ध्वमुखः। *प्रश्न॰ ४७*।

सिरविसुद्ध– शिरसि प्राप्तो यदि नानुनासिकस्ततः शिरोवि-शुद्धम्। *अनुयो॰ १३२*।

सिरसावत्त– शिरसाऽप्राप्तं-अस्पृष्टम्, अथवा शिरसि वा आवर्तः आवृत्तिरावर्ततः-परिभ्रमणम्। *भग॰ १२७*। शिरसाऽप्राप्तः शिरसा मस्तकेनाऽप्राप्तः-अस्पृष्टः। शिर-स्यावर्त्तः-शिरसि वा आवर्त्तत इति। *औप॰ २३*।

सिरसोसिरि– शिरः श्रियं सर्वोत्तमां केवललक्ष्मीम्। *उत्त॰ ४४९*।

सिरा– शिरा ग्रीवाधमनिः। *जीवा॰ ४४१*। शिरा-नाडी। *प्रश्न॰ ६०*।

सिराण्हारुजालओणद्धसंविणद्धं– सिरास्नायुजलावनद्धसंविन-द्धम्। *उत्त॰ ३२९*।

सिरापासणं– शिरादर्शनम्। *आव॰ ४२४*।

सिरोवेढ– शिरसि बद्धस्य चर्मकोशस्य संस्कृततैलापुरलक्षणः शिरोवस्तिः। *ज्ञाता॰ १८१*।

सिरावेह– शिरोवेधः-नाडीवेधनं-रुधिरमोक्षणम्। *ज्ञाता॰ १८१*। शिरोवेधः-नाडीवेधः। *विपा॰ ४१*।

सिरासयाइं– धमनीशतानि। *तन्दु॰* ।

सिरि– निरयावल्यां चतुर्थवर्गे प्रथममध्ययनम्। निर॰ *३७*। श्रीः-उत्तररुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२२*। श्रीः-उत्तररुचकवास्तव्या सप्तमी दिक्कुमारी

महत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१।*

सिरिउत्त– जम्बूभरते आगमिन्यामुत्सर्पिण्यां पञ्चमचक्री। *समः १५४।*

सिरिए– श्रीयकः-योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते कलकवंशप्रसूतस्य नवमनन्दराजमन्त्रिशकटालस्य लघुपुत्रः। *आव॰ ७०।*

सिरिओ– श्रीयकः-कल्पकवंशप्रसूतशकटाललघुपुत्रः। *आव॰ ६९३।*

सिरिकंत– महाशुक्र चतुर्दशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः २७।*

सिरिकंता– मरूदेवकुलकरभार्या। *स्था॰ ३९८।* मरूदेव-कुलकरभार्या। *समः १५०।* श्रीकान्ता-पारिणामिक्यामुदि-तोदयराज्ञी। *आव॰ ४३०।* श्रीकान्ता-अलोभोदाहरणे सार्थवाही। *आव॰ ७०१।* श्रीकान्ता-षष्ठकुलकरपत्नी। *आव॰ ११२।* श्रीकान्ता-दत्तराजकन्या। *विपा॰ ९५।* श्रीकान्ता, पुष्करिणीविशेषः। *जम्बू॰ ३३५, ३६०।*

सिरिकंदलग– एकखुरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५।* एकखुरचतुष्पदः। *जीवा॰ ३८।*

सिरिकूड– श्रीदेवीकूटम्। *जम्बू॰ २९६।*

सिरिगुत्त– परप्पवादि। *निशी॰ ९८* आ। श्रीगुप्तः-षड्डलूके कुत्रिकापणचर्चरीकारकः। *दशवै॰ ५८।*

सिरिगुत्ता– श्रीगुप्ताः-अन्तरञ्जिकायां आचार्याः। *उत्त॰ १६८।* श्रीगुप्ताः-आचार्यविशेषः। *आव॰ ३१८।*

सिरिघर– श्रीगृहं-भाण्डागारम्। *ज्ञाता॰ २१९।* श्रीगृहम्। *आव॰ ३५७।* श्रीगृहं-भाण्डागारम्। *आव॰ ९६। ज्ञाता॰ ५३।*

सिरिघरिओ– लोभोदाहरणे जिनदत्तः श्रावकस्थापितः श्रीगृहिकः। *आव॰ ३९८।*

सिरिचंद– जम्बवैरवते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां षष्ठतीर्थकृत्। *सूत्र॰ १५४।*

सिरिचंदा– श्रीचन्द्रा पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३३५, ३६०।*

सिरिणिलया– श्रीनिलया-पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३६०।*

सिरित– श्रीयकः-नन्दराजस्य अमात्यः। *उत्त॰ १०५।*

सिरितिलय– विमानविशेषः। *मरण॰ ।*

सिरिदाम– श्रीदामः-अनेकरत्नखचितं दर्शनसुभगम्। *आव॰ १८०।*

सिरिदामकंड– अच्युते विमानं, यत्र एकविंशतिस्थितिको देवः। *समः ३९।*

सिरिदामगंड– श्रीदामगण्डम्। *आव॰ १२४।*

सिरिदेवी– जम्बूभरते पञ्चमचक्रिमाता। *समः १५२।*

सिरिनिलया– श्रीनिलया-पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३३५।*

सिरिप्पभ– श्रीप्रभः-विमानविशेषः। *आव॰ ११६।* श्रीप्रभः-पुष्करोदे समुद्रे देवविशेषः। *जीवा॰ ३४९।* श्रीप्रभः-ईशाने विमानः। *आव॰ १६।*

सिरिभद्दा– श्रीभद्रा-पितृदत्तगाथापतिभार्या। *आव॰ २०५।*

सिरिभूई– जम्बूभरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां षष्ठचक्रवर्ती। *समः १५४।*

सिरिमंदिरकारउ– नपुंसकविशेषः। *निशी॰ ३२* आ।

सिरिमइ– श्रीमती-मायोदाहरणेकोशलपुरे नन्दनेभ्यपुत्री, या पूर्वभवे धनपतिश्रेष्ठिपत्नी। *आव॰ ३९४।*

सिरिमहिअ– महाशुक्रे चतुर्दशसागरोपमस्थितिको देवः। *समः २७।*

सिरिमहिआ– श्रीमहिता-पुष्करिणीनाम। *जम्बू॰ ३६०, ३३५।*

सिरिमाल– श्रीमालं नगरविशेषः। *आव॰ २९६।*

सिरिमाली– श्रीमाली-इन्द्रदत्तराजस्य ज्येष्ठपुत्रः। *उत्त॰ १४९।* श्रीमालिः तितिक्षोदाहरणे इन्द्रदत्तराज्ञो ज्येष्ठपुत्रः। *आव॰ ७०३।* श्रीमालिः इन्द्रदत्तराज्ञो ज्येष्ठकुमारः। *आव॰ ३३३।*

सिरियंदलग– श्रीकन्दलकः-एकखुरविशेषः। *प्रश्न॰ ७।*

सिरिय– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३।*

सिरिया– अरनाथमाता। *समः १५१।*

सिरिरुक्खा– श्रीवृक्षः-वत्सः। *जीवा॰ २३४।*

सिरिलि– सिरिलः-वनस्पतिविशेषः। *जीवा॰ २७।* अनन्त-कायविशेषः। *भग॰ ३००।*

सिरिलो– कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।*

सिरिवच्छ– अच्युतकल्प एकविंशतिसागरोपमस्थितिकं देव-विमानम्। *समः ३९।* श्रीवत्सः-सुष्ठुलाञ्छनः। *समः १५८।* श्रीवत्सं-यानविमानविकुर्वको देवः। *जम्बू॰ ४०५।* श्रीवत्सः-तीर्थङ्करहृदयेऽवयवविशेषाकारः। *औप॰ १०।* श्रीवत्सः-अष्टमङ्गलेषु षष्ठः। *जम्बू॰ ४१९।* श्रीवत्सः। *प्रश्न॰ ७७।* श्रीवच्छः-लाञ्छनविशेषः। *जम्बू॰ १११।* श्रीवत्सः। *औप॰ ५२।* श्रीवत्सः-जिनप्रतिमायां प्रसिद्धो वक्षोऽन्तः सुप्रमाणोन्नतमांसलप्रदेशविशेषः। *जम्बू॰*

१८३।

सिरिवच्छसंठाण– श्रीवत्ससंस्थानम्। *उत्त॰ २१५*।

सिरिवणं– श्रीवनं-पोलाशपुरे उद्यानविशेषः। *अन्त॰ २३*। सुप्रतिष्ठितनगरम्। *अन्त॰ २३*। श्रीवनं-भद्दिलपुरे उद्यान-विशेषः। *अन्त॰ ४*।

सिरिसंभूआ– श्रीसंभूता-षष्ठमरात्रिनामः। *जम्बू॰ ४९१*।

सिरिसंभूता– षष्ठमरात्रिः। *सूर्य॰ १४७*।

सिरिस– सप्तमतीर्थकृच्चैत्यवृक्षः। *सम॰ १५२*।

सिरिसोम– जम्बूभरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां सप्तमचक्री। *सम॰ १५४*।

सिरिसोमनस– महाशुक्रे चतुर्दशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ २७*।

सिरिहर– श्रीधरः-पुष्करोदे समुद्रे देवविशेषः। *जीवा॰ ३४९*।

सिरी– पद्महृदे श्रीः। *स्था॰ ७३*। श्रीः-शोभा। *जीवा॰ १८१*। पोलाशपुरे विजयस्य राज्ञी। *अन्त॰ २३*। श्रीः-वैश्रमणदत्तराज्ञी। *विपा॰ ८२*। श्रीः-षष्ठमचक्रिमाताः। *आव॰ १६१*। श्रीः-कुन्थुनाथमाता। *आव॰ १६०*। श्रीः-वीरकृष्णमित्रराज्ञी। *विपा॰ ९५*। श्रीः-वण्णिग्ग्रामे मित्रराज्ञी। *विपा॰ ४५*।

सिरीआ– श्रिया-वचनार्थशोभया। *स्था॰ ४६४*।

सिरीए– श्रीकः-मित्रराजस्य महाणसिकः। *विपा॰ ७९*। श्रीयकः। *उत्त॰ १०४*।

सिरीदाम– श्रीदामः-मथुरायां राजा। *विपा॰ ७०*। श्रीदामः। *ज्ञाता॰ १२५*।

सिरीदामगंड– श्रीदाम्नां-शोभावन्मालानां काण्डं-समूहः-श्रीदामकाण्डम्। *ज्ञाता॰ १२५, १३१*।

सिरीदेवी– श्रीदेवीः अर्जुनराजकन्या। *विपा॰ ९५*। श्रीदेवीः-प्रियचन्द्रराजकन्या। *विपा॰ ९५*।

सिरीस– शिरीषः-वृक्षविशेषः। *उत्त॰ ६१४*। शिरीषं-शिरीषाभिधानतरुकुसुमम्। *औप॰ ५६*। पंचमभवणवासिनां चैत्यवृक्षः। *स्था॰ ४८७*। शिरीषः-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*। वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३*।

सिरिसकुसुम– शिरीषकुसुमं-कुसुमविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६७*।

सिरीसकुसुमनिचत– शिरीषकुसुमनिचयः। *जीवा॰ १९२*।

सिरीसव– सरीसृपः गोधादिः। *ज्ञाता॰ ६३*।

सिरीसिव– सरीसृपः-भुजपरिसर्पः। *प्रश्न॰ ८*।

सिरोज– शिरोजः-बालः। *जीवा॰ २७४*।

सिरोधरा– शिरोधरा-ग्रीवा। *ज्ञाता॰ ९५*।

सिरोवत्थी– शिरोबस्तिः-शिरसि बद्धस्य चर्मकोशकस्य द्रव्यसंस्कृततैलाद्यापूरणलक्षणा। *विपा॰ ४१*।

सिलप्पवाल– शिलाप्रवाल-विद्रुमम्, शिला-मुक्ताशिलादि प्रवाल-विद्रुमम्। *भग॰ ३६८, ५७३*। विद्रुमम्। *भग॰ ४७०*। शिला-राजपट्टादिरूपा प्रवालं-विद्रुमम्। *भग॰ १६३*। शिलाप्रवालः-विद्रुमः। *जम्बू॰ ८१*। शिलाप्रवालं-प्रवालाङ्कुरः। *जीवा॰ १९१*। श्रिया युक्तं प्रवालं श्रीप्रवालं वर्णादिगुणोपेतम्। *सूत्र॰ २९२*। श्रीलप्रवालं-परिकर्मित-विद्रुमः शिलाप्रवालम्। *जम्बू॰ २१३*।

सिला– शिला-दृषत्। *प्रश्न॰ ३८*। करगा। *दशवै॰ ११९*। शिला। *मरण॰*। शिला-घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महान् पाषाणविशेषः। *प्रज्ञा॰ २७*। शिला-राजपट्टादिरूपा। *भग॰ १६३*। शिला-विशालपाषाणः। *दशवै॰ १५२*। शिला-वृषभसुता कात्यायनसगोत्रा ब्रह्मदत्तराज्ञी। *उत्त॰ ३७९*। शिला-पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९*। शिला-पाषाणात्मिका। *दशवै॰ २२८*। शिला-घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महान् पाषाणविशेषः। *जीवा॰ २३*। शिला-मुक्तशैलराजपट्टादीनाम्। *अनुयो॰ २५४*। शिला-दृषत्। *उत्त॰ ६८९*। शिलापाषाणः। *विपा॰ ७२*। शिला-अतिस्थिरत्वेन चर्मरत्नम्। *जम्बू॰ २४३*। शिला गन्धवेषणादिका। *जम्बू॰ १२२*।

सिलागहत्थ– शलाकाहस्तः-शलाकासङ्घातरूपः। *दशवै॰ १५२*।

सिलागहत्थग– शलाकाहस्तकः-सरित्पर्णादिशलाकासमुदायः। सरित्पर्णादिशलाकामयी सम्मार्जनी। *जम्बू॰ ३८८*।

सिलागा– शलाका-अयःशलाकादिरूपा। *दशवै॰ १५२*। सिलापब्भट्ठए-गोशालकमते पानके चतुर्थो भेदः। *भग॰ ६८०*।

सिलावट्ट– शिलापट्टः-मसृणशिला। *ज्ञाता॰ २२९*।

सिलावरिस– शिलावर्षः। *आव॰ ७३४*। करगादि। *निशी॰ ७०* अ।

सिलावुट्ठं– शिलावृष्टं-हिमम्। *दशवै॰ २२८*।

सिलावुट्ठि– शिलावृष्टिः-पाषाणनिपातनं करकारादिशिलावर्ष-मित्यर्थः। *व्यव॰ २४* आ।

सिलिंका– शलाका। *आव॰ ३६९।*

सिलिंद– शिलिन्दः-मकुण्ठः। *दशवै॰ १९३।*

सिलिंध– शिलिन्ध्रं-इषद्रक्तवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ९१।* सिलिन्ध्रं भूमिस्फोटकच्छत्रकम्। *औप॰ ४९।* सिलिग्न्ध्रः-भूमिस्फोटः। *ज्ञाता॰ १६०।*

सिलिंधपुप्फ– शिलिन्ध्रपुष्पम्। *जीवा॰ १६४।* शिलिन्ध्रपुष्पं –निलवर्णपुष्पम्। *प्रज्ञा॰ ९५।*

सिलिंधा– शिलन्ध्राः-छत्रकाणि। *ज्ञाता॰ २५।*

सिलिट्ठ– श्लिष्ठम्। *आव॰ ९९।*

सिलिट्ठसमिट्ठगब्भ– श्लक्ष्णसमितिगर्भः अतिश्लक्ष्णकणिका मूलदलः। *जीवा॰ २६८।*

सिलिपई– श्लीपदनाम्ना रोगेण यस्य पादौ शूनौ शिलावन्महा-प्रमाणो भवतः स एवंविधः श्लीपदी। *बृह॰ १९०* अ।

सिलिपत्तो– रोगो। *निशी॰ १४८* अ।

सिलिया– शिलिका-किराततिक्तकादितृणरूपा। *ज्ञाता॰ १८१।* शिलिका-किराततिक्तप्रभृतिका। *विपा॰ ४१।*

सिलिवय– श्लीपदं-पादादौ काठिन्यम्। *आचा॰ २३५।*

सिलुद्यय– शिलानां उत-ऊर्ध्वं शिरस उपरि चयः-सम्भवो यत्र स शिलोच्चयः। *सूर्य॰ ७८।*

सिलेच्छियामच्छ– मत्स्यविशेषः। *जीवा॰ ३६।*

सिलेस– श्लेषः-केनचिज्जतुसिक्थादि। *दशवै॰ १७२।* श्लेषः- सर्जरसः। *आचा॰ ५७।* श्लेषो-वज्रलेपः। *भग॰ ३९९।*

सिलेसगुलिया– श्लेष्मगुटिका। *अनुत्त॰ ५।*

सिलेसद्द– श्लेषार्द्र-वज्रलेपाद्युपलिप्तं स्तम्भकुड्यादिकं यद् द्रव्यं तत्स्निग्धाकारतया श्लेषार्द्रम्। *सूत्र॰ ३८६।*

सिलेसमिस्सा– श्लेषद्रव्यविमिश्रितम्। *प्रज्ञा॰ ३४।*

सिलोग– श्लोकः-तत्तत्स्थान एव श्लाघा। *स्था॰ ५०३।* श्लोकः। *दशवै॰ २७४।* श्लोकः-छन्दविशेषः। *दशवै॰ २५६।* श्लोकः-श्लाघा। *भग॰ ६७३।* श्लोकः। *आव॰ ७९३।* तत्स्थान एव श्लाघा। *दशवै॰ २५७।*

सिलोगद्ध– श्लोकार्द्धम्। *आव॰ ७९३।*

सिलोच्चय– शिलानां-पाण्डुशिलादीनामुर्ध्वं-शिरस उपरि चयः-सम्भवो यत्र स शिलोच्चयः, मेरुनाम। *जम्बू॰ ३७५।*

सिल्ल– वालमयम्। *बृह॰ ६९।*

सि(खि)ल्लिं– रश्मि-संयमनरज्जु। *उत्त॰ ५५१।*

सिल्हक– तुरुष्कम्। *प्रज्ञा॰ ८७।*

सिवंकर– शिवकरं-शिवं-मोक्षपदं तत्करणशीलं शैलेश्यव-स्थागमनमिति। *सूर्य॰ १९७।*

सिव– शिवं-अशेषदूरितोपशमः। *उत्त॰ ३४१।* *भग॰ ५५१, ५५२।* शिवः-शिवहेतुः। *ज्ञाता॰ ७४।* शिवःसर्वाऽऽबाधार-हितम्, महावीरः। *भग॰ ७।* यत्र वेलन्धरनागराजो वस्ति। *स्था॰ २२६।* शिवं-पवित्रम्। *दशवै॰ १९५।* शिवं-सदा मङ्गलोपेतम्। *जीवा॰ १६०।* शिवं-शिवहेतुत्वेन, अहिंसायाः सप्तत्रिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९।* शिवं-अनुपद्रवः, अनुपद्रव-हेतुर्वा। *भग॰ ११९।* शिवं-सर्वोपद्रवरहितम्। *जीवा॰ २५६।* शिवः व्यन्तरविशेषः, आकारविशेषः, आकारविशेषधरो वा रुद्रः। *भग॰ १६४।* हस्तिनागपुरे राजा। *भग॰ ५१४।* शिवः –शिवहेतुः। *भग॰ १२५।* शिवःपोसमासस्य लोकोत्तरिक-नाम। *जम्बू॰ ४९०।* भगवत्यां पुद्गलोद्देशके अतिदेशः। *भग॰ ५११।* शिवः-मगधाजनपदे राजा। *आव॰ ३५६।* शिवः-पञ्चमबलदेववासुदेवपिता। *सम॰ १५२।* शिवः-देवताविशेषः। *जीवा॰ २८१।* शिवः-देवताकृतोपसर्गवर्जितः कालः। *आव॰ ६३९।* शिवः-पुरुषसिंहवासुदेवपिता। *आव॰ १६३।* शिवः-लोकोत्तरे षष्ठो मासः। *सूर्य॰ १५३।* भगवत्यां महाबलाधिकारे अतिदेशः। *भग॰ ५४४।* निरयावल्यां तृती-यवर्गेऽष्टममध्ययनम्। *निर॰ २१, ३६, २७।* शिवः-आकारविशेषधरः, व्यन्तरविशेषो वा। *अनुयो॰ २५।* शिवं-सर्वबाधारहितम्। *सम॰ ५।* शिवं-मोक्षः। *सम॰ ६२।* सुभिक्षं सुरवविहारं च। *बृह॰ १५१* अ। शिवो-महादेवः। *ज्ञाता॰ १३४।* शिवत्वं जरामरणाभावेन। *उत्त॰ ५१०।*

सिवकोट्ठग– शिवकोष्टकः-तगरायामाचार्यशिष्यः सद् व्यवहार-काचार्यः। *व्यव॰ २५६* आ।

सिवग– शिवकः-द्वितीयो वेलन्धरनागराजः। भुजगेन्द्रो भुजग-राजः। *जीवा॰ ३११।*

सिवदत्त– शिवदत्तः। *उत्त॰ ३८०।* शिवदत्तः-नैमित्तिकवि-शेषः। *आव॰ २०५।*

सिवदत्ता– शिवदत्ता-शिवदत्तपुत्री। *उत्त॰ ३८०।*

सिवभद्द– भगवत्यामुदायनवक्तव्यतायां केशिकुमारराज्याभिषेके अतिदेशः। *भग॰ ६१८, ६१९,*

५४८। शिवधारण्योः पुत्रः। *भग॰ ५१४*।

सिवभूई– शिवभूतिः-रथवीरपुरे सहस्रामल्लः, बोटिकमूलपु-रुषः। *उत्त॰ १७८*।

सिवभूती– शिवभूतिः सहस्रमल्ल बोटिकमतप्ररूपकः। *आव॰ ३२३*।

सिवमह– महोत्सवविशेषः। *ज्ञाता॰ ३९*। शिवमहः-शिवस्य प्रतिनियतदिवसभावी उत्सवविशेषः। *जीवा॰ २८१*।

सिवरुव– शिवरूपं-भव्यरूपम्। *आव॰ २१८*।

सिवलिंग– शिवलिङ्गम्। *उत्त॰ २२१*।

सिवसेण– जम्ब्वैरवते दशमतीर्थकृत्। *सम॰ १५३*।

सिवा– शक्रदेवेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०५*। चतुर्द-शतीर्थकर्तुः प्रथमा शिष्या। *सम॰ १५२*। नमिनाथस्य माता। *सम॰ १५१*। शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसम्भूतवैशालिकचे-टकचतुर्थी पुत्री। *आव॰ ६७६*। शिवा-शृगाली। *अनुयो॰ १४२*। शिवा-नेमिनाथमाता। *आव॰ १६०*। शिवा-धर्म-कथायां नवमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५३*। शिवा-सदामङ्ग-लोपेता। *जम्बू॰ ७६*। शक्रदेवेन्द्राग्रमहिषीनां राजधानी। *स्था॰ २३१*।

सिवादवी– शिवादेवी-प्रद्योतस्य चतुर्थं रत्नं, देवी। *आव॰ ६७३*।

शिवानन्दा– आनन्दश्राद्धस्य पत्नी। *उपा॰ २*।

सिवासद्द– शिवाशब्दः। *आव॰ ४००*।

सिविया– शिबिका-कूटाकाराच्छादितजन्पानरूपा। *भग॰ ५४७*।

सिव्वेउं– सीवितुम्। *आव॰ ४२१*।

सिसिर– शिशिरः-माघमासस्य लोकोत्तरीयनाम। *जम्बू॰ ४९०*। शिशिरः-सप्तममासस्य लोकोत्तरनाम। *सूर्य॰ १५३*। शिशिरः-शीतकालः। *ओघ॰ १४५*।

सिसुनाग– शिशुनागः-अलसः। *व्यव॰ २८८ आ*। शिशुनागो-गण्डुपदोऽलसः। *उत्त॰ २४६*।

सिसुपाल– शिशुपालः-माद्रीसुतः। अवगतये दृष्टान्तम्। *सूत्र॰ ७९*। दमघोषपुत्रः। *ज्ञाता॰ २०८*।

सिस्स– शिष्यः-विनेयः। *प्रश्न॰ ३८*। शिष्य-उपाध्यायस्यो-पासकः। *जीवा॰ २८०*। शिष्यः-उपाध्यायस्योपासकः शिक्षणीय इत्यर्थः। *जम्बू॰ १२२*। शिष्यः-स्वहस्तप्रव्रा-जित उपसम्पदागतः प्रातीच्छकश्च। *आचा॰ २४९*।

सिस्सिरिलि– वनस्पतिकायिक। *जीवा॰ २७*।

सिस्सिरिली– अनन्तकायः। *भग॰ ३००*। कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१*।

सिहंडिणो– छिडिणो-शिखावन्तः। *ज्ञाता॰ ५७*।

सिह– शिखा। *आव॰ २९५*।

सिहर– शिखरः-पर्वतोपरिवर्त्तिकूटः। *ज्ञाता॰ ६३*। श्रीधरः शोभावान्। *ज्ञाता॰ ६५*। शिखरः-समुद्रमध्यवर्त्तिगोस्तूपा-दिपर्वतः। *प्रश्न॰ ९६*।

सिहरभूय– शिखरभूतः-शेखरकल्पः। *प्रश्न॰ १५२*।

सिहरि– शिखरी-कूटविशेषः। *स्था॰ ७२*। शिखरी। *स्था॰ ७०*।

सिहरिकूड– शिखरीवर्षधरनाम्नाकूटः। *जम्बू॰ ३८१*।

सिहरिणी– शिखरिणी-गुडमिश्रं दधिः। *प्रश्न॰ १५३*। शिखरिणी-पानकविशेषः। *आचा॰ ३३०*। मार्जिता। *आचा॰ ३३६*। *निशी॰ ४०* आ।

सिहरिणि– चतुर्भिर्गन्धद्रव्यैराधिक्येनोपजनितवासा कूरमध्ये प्रक्षिप्यमाणा शिखरं बध्नाति सा शिखरिणी। *बृह॰ १७८*।

सिहरी– शिखरी शिखरवान् गिरिः। *भग॰ २३८*। शिखरीना-मवर्षधरपर्वतः। *जम्बू॰ ३८१*। शिखरी-शिखरसमन्वितः। *नन्दी॰ २८८*। शिखरी-वृक्षस्तत्संस्था संस्थितानि सर्वरत्न-मयानि सन्तीति तद्योगाच्छिखरी, कोऽर्थः-अत्र वर्षधराद्रौ यानि सिद्धायतनकूटादीन्येकादशकूटान्युक्तानि तेभ्योऽतिरि-क्तानि बहूनि शिखराणि वृक्षाकारपरिणतानि सन्तीति। *जम्बू॰ ३८१*। शिखरी-शिखरवान् पर्वता। *अनुयो॰ १७१*। शिखरा-शिखरयुक्तः पर्वतः। *प्रज्ञा॰ ७१*।

सिहल– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

सिहलि– सिंहलीः-धात्रिविशेषः। *ज्ञाता॰ ३७, ४१*।

सिहि– मयूरः-अग्निश्च। *भग॰ ३०९*।

सी– सूत्रत्वेनाकारलोपात् असि-भवति। *उत्त॰ ३३९*। स्त्यायते-कठिनीभवत्यस्मिन् जलादीति शीतम्। *उत्त॰ ३८*।

सीअ– शीतः-अनुकूलः परीषहः। *स्था॰ ४४४*।

सीअघरं– शीतगृहं-जलयन्त्रगृहम्। *व्यव॰ ३९८ अ*।

सीअलु– धर्म्ममि जो पमायइ अत्थे वा। *आचा॰ १५०*।

सीअसोआ– शीतस्रोता महानदी। *जम्बू॰ ३५७*।

सीआ– सीताः-सीताभिधाना। पृथिवी। *उत्त॰ ६८५*। शीता-कूटं-शीतासूरीकूटम्। *जम्बू॰ ३७७*। सीता-सिद्धिभूमेर्द्वितीयं नाम। *आव॰ ४४२*। सीता-शिबिकाविशेषः। *आव॰ १४२*। सीता-पुरुषोत्तमवासुदेवमाता। *आव॰ १६२*। सीता –पाश्चात्यरुचकवास्तव्याऽष्टमी दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१*।

सीआमुहवण– महाविदेहे वर्षे शीताया महानद्या उत्तरदिग्वर्ति-शीतायाः मुखे समुद्रप्रवेशे वनं शीतामुखवनम्। *जम्बू॰ ३४७*।

सोई– निःश्रेणिः। *पिण्ड॰ ३८*।

सीईभूओ– कषायाग्न्युपशमात् शीतीभूतः। *आचा॰ १५०*।

सीउंढी– सिकृंढी-वनस्पतिकायिकभेदः। *जीवा॰ २७*। वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०४*।

सीउसिण– स्वां-स्वकीयामुष्णा तेजोलेस्या। *भग॰ २८२*।

सीओ– शीताकूटं-शीतासरित्सुरीकूटम्। *जम्बू॰ ३३७*।

सीओअदीव– शीतोदाद्वीपः। *जम्बू॰ ३०७, ३०९*।

सीओअप्पवायकुण्ड– शीतोदाप्रपातकुण्डः। *जम्बू॰ ३०७, ३०९*।

सीओआ– सीतोदा। *जम्बू॰ ३०७*।

सीओआकूड– शीतोदानदीसूरीकूटम्। *जम्बू॰ ३०८*। शीतोदाकूट-विद्युप्रभवक्षस्कारे कूटम्। *जम्बू॰ ३५५*।

सीओदए– शीतोदकं-नदीतडागादिषु शीतपरिणामम्। *जीवा॰ २५*।

सीओदग– शीतोदकं-अप्रासुकोदकम्। *सूत्र॰ ३९१*। शीतोदकं –अप्कायः। *आचा॰ ३४२*।

सीओसणिज्ज– शीतोष्णीयं-आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कन्ध-स्य तृतीयमध्ययनम्। *प्रश्न॰ १४५*। आचाराङ्गस्य तृतीयम-ध्ययनम्। *उत्त॰ ६१६*। शीताः-अनुकूलाः परिषहा उष्णाः-प्रतिकूलास्तानाश्रित्य यत्कृतं तत्सीतोष्णीयम्। *स्था॰ ४४४*। शीतोष्णीयं-आचारप्रकल्पस्य तृतीयो भेदः। *आव॰ ६६०*।

सीओसणीअं– आचाराङ्गस्य तृतीयमध्ययनम्। *सम॰ ४४*।

सीत– शीतः-देहस्तम्भादिहेतुः। प्रालेयाद्याश्रितः। *अनुयो॰ ११०*। शीवं-सुखम्। *आचा॰ १५०*।

सीतभारा– दगवातो। *निशी॰ २३२ आ*।

सीतल– शीतलः। *सूर्य॰ २८७*।

सीता– शीता-महानदी। *स्था॰ ७४*। हलपद्धतिदेवता। *बृह॰ १९९ अ*। क्षेत्रम्। *बृह॰ ४८ अ*।

सीतामुहवणसंड– सीतायां वनखण्डः। *ज्ञाता॰ २४२*।

सीती– दव्वे णिस्सेणी भावे संजमं सीती। *निशी॰ ५३*।

सीतोदए– शीतोदकं नदीतडागावटवापीपुष्करिण्यादिषु शीत-परिणामम्। *प्रज्ञा॰ २८*।

सीतोदप्पवायद्दह– निषधाच्छीतोदानिपतति स शीतोदा प्रपा-तह्रदः, शीताप्रपातह्रदमानः। *स्था॰ ७५*।

सीतोदा– शीतोदा-प्रवरा नदी। *प्रश्न॰ १३५*। शीतोदा-महानदी। *स्था॰ ७४*।

सीदति– भ्रश्यति। *प्रश्न॰ १२९*।

सीधु– सीधुं गुडधातकीसम्भवं मद्यम्। *विपा॰ ४९*। सीधुं-गुडधातकीभवं। *उपा॰ ४९*। *आचा॰ ३३०*। *ज्ञाता॰ २०६*।

सीभर– य उल्लपन् परम्। *व्यव॰ ३३६ अ*। उल्लपन् परं लालया सिंचति। *व्यव॰ २९० आ*। अक्षरादिभिः समा। *अनुयो॰ १३२*। अक्षरादिभिः समा। *स्था॰ ३९६*।

सीमंकर– सीमङ्करः-तृतीयकुलकरनाम। *जम्बू॰ १३२*। भरते आगामिन्यामुत्सर्पीण्या प्रथमकुलकरः। *स्था॰ ५१८*। जम्बवैरवते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां द्वितीयकुलकरः। *सम॰ १५३*।

सीमंठेऊण– विक्रीय। *बृह॰ २३०*।

सीमंतक– मध्ये नरकावासः। *स्था॰ ३६७*।

सीमंतकप्पभ– सीमन्तकस्य पूर्वस्यां नरकावासः। *स्था॰ ३६७*।

सीमंतगमज्झिमओ– सीमन्तकस्य उत्तरस्यां नरकावासः। *स्था॰ ३६७*।

सीमंतगावसिट्ठ– सीमन्तकस्य दक्षीणस्यां नरकावासः। *स्था॰ ३६७*।

सीमंतावंत– सीमन्तकस्य पश्चिमस्यां नरकावासः। *स्था॰ ३६७*।

सीमंतोन्नयणं– सीमन्तोन्नयनं-गर्भस्थापनम्। *जीवा॰ २८१*।

सीमंधर– सीमन्धरः चतुर्थकुलकरनाम। *जम्बू॰ १३२*। भरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां द्वितीयः कुलकरः। *स्था॰ ५१८*। जम्बवैरावते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां तृतीयः।

कुलकरः। *समः १५३*।

सीमंधरसामि– सीमन्धरस्वामी-निगोदस्वरूपप्ररूपकार्यरक्षि तदेशकः। *आव॰ ३०९*। सीमन्धरस्वामी-शौचोदाहरणे सत्यपर्यायपृच्छायां पूर्वविदेहे तीर्थङ्करः। *आव॰ ७०६*।

सीमच्छेदा– सत्थप्पमाणेण उवग्गहे वट्टति ते य बहुगच्छा जति समंठियायातो साधारणं खेत्त तत्थ सीमच्छेदेण वसियव्यं इमो सीमच्छेदो। *निशी॰ ५८* आ। *व्यव॰ ३७३* अ।

सीमन्तक– एताद्दशाभिधानो नरकेन्द्रकः। *जीवा॰ ९०*। नर-कविशेषः। *आचा॰ ३८*। सीमान्तकः-इन्द्रसत्कसीमन्तकः। *समः १३५*। तन्नामा नरकः। *उत्त॰ २७५*।

सीमन्धरः– इषुकारापरनाम। *उत्त॰ ३९४*।

सीमन्धरस्वामी– वर्तमानजिनः। *जीवा॰ ३*। ऋयिधातिकाऽऽ-र्यादृष्टान्ते तीर्थङ्करः। *दशवै॰ २७९*।

सीमा– विधिः-मर्यादा आचरणा च। *आव॰ ६३९*।

सीमाकार– ग्राहजन्तुभेदः। *समः १३५*।

सीमागार– सीमाकारः-ग्राहविशेषः। *प्रश्न॰ ७*। ग्राह-विशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४*। *जीवा॰ ६६*।

सीमाविक्खंभ– सीमाविष्कम्भः। *सूर्य॰ १७६*। सीमाविष्कम्भः –पूर्वापरतश्चन्द्रस्य नक्षत्रमुक्तिक्षेत्रविस्तारः। *समः ७९*।

सीय– शीतं-शिशिरः। *उत्त॰ ८२*। *भग॰ २३७*। शीतं-तृतीयः परीषहः। *आव॰ ६५६*। शीतं-किञ्चिन्यूनम्। *सूर्य॰ ५८*। शीतं-सोपचारवचः। *उत्त॰ ५७*। शीतः-स्पर्शविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४७३*।

सीयइ– सीदति-फलति। *पिण्ड॰ ३१*।

सीयई– फलति। *ओघ॰ १५९*।

सीयउरए– गुच्छाविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

सीयणा– चोयणा। *निशी॰ १४* अ।

सीयति– सीदति-नोत्सहते। *आव॰ ५३४*।

सीयघरं– वद्धकीरयणणिम्मवियं चक्किणो गिहं। *निशी॰ २९६* आ। शीतगृहं-वर्धकिरत्नकृतं चक्रिगृहम्। *बृह॰ ७४* आ।

सीयपिंड– शीतलः पिण्डः आहारः शीतश्वासो पिण्डश्च शीत-पिण्डः। *उत्त॰ २९५*। शीतपिण्डं-पर्युषितभक्तम्। *आचा॰ ३१५*।

सीयभूए– शीतीभूतं-सर्वात्मना शीतत्वेन परिणतम्। *जीवा॰ १२२*।

सीयल– सकलसत्त्वसन्तापकरणविरहादाल्हादजनकत्वाच्च शीतलः-अरीणां मित्राणां चोपरि शीतलगृहसमानः, दशम-जिनः, यस्मिन् गर्भगते पितृर्दाहोपशमो जातः तस्मात् शीतलः। *आव॰ ५०३*। शीतलः। *आव॰ २०१*।

सीयलघरसमाण– शीतलगृहसमानः। *आव॰ ५०३*।

सीया– शिबिका-पुरुषसहस्रवाहनीयः कूटाकारशिखराच्छा-दितो जम्पानविशेषः। *प्रश्न॰ ८*। शीता। *आव॰ ४२५*। प्रथमतीर्थकृत्शीबिका। *समः १५१*। जम्बूपूर्वविदेह महा-नदी। *ज्ञाता॰ २४२*। शीता-जनकाभिधमिथिलानगरीरा-जस्य दुहिता। *प्रश्न॰ ८६*। चतुर्थवासुदेवमाता। *समः १५२*। शीता-निश्रेणिगतिः। *प्रज्ञा॰ १०७*। शिबिका-कूटाच्छादि-तजम्पानविशेषः। *प्रश्न॰ ९१*। शिबिका-जम्पानविशेषः पार्श्वतो वेदिका उपरि च कूटाकृतिः। *प्रश्न॰ १६१*। शिबिका। *आव॰ ७२२*। शिबिका-कूटाकाराच्छादितो जम्पानविशेषः। *अनुयो॰ १५९*। सीता पश्चिमरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२२*। शिबिका। *उत्त॰ ४९२*। शिबिका-कूटाकारे-णाच्छादितो जम्पानविशेषः। *औप॰ ४*। ।

सीयाण– श्मशानम्। *व्यव॰ २६६* अ। श्मशानम्। *आव॰ ७४३*। शीतत्राणां-श्मशानम्। *आव॰ ४२६*।

सीयापीयय– रूप्यमयः सुवर्णमयश्च। *भग॰ ४७७*।

सीयाल– शृगालः-सनखपदश्चतुष्पदविशेषः। *जीवा॰ ३८*।

सीयोया– निषधवर्षधरपर्वते महानदी। *ज्ञाता॰ १२१*।

सीलंग– शीलाङ्गं-पृथिवीकायसंरम्भपरित्यागादिः। *आव॰ ६०२*।

सील– शील-अष्टादशभेदसहस्रसङ्ख्यं संयमं, महाव्रतसमा-धानं, तिस्त्रः गुप्तयः पञ्चेन्द्रियदमः कषायनिग्रहश्चेत्येतच्छी-लम्। *आचा॰ २१०*। शीलं-अष्टादशशीलाङ्गसहस्रसङ्ख्यं, यदिवा महाव्रतसमाधानं पञ्चेन्द्रियजयः कषायनिग्रहस्त्रिगुप्ति-गुप्तता चेत्येतत्छीलम्। *आचा॰ २५०*। शीलं-अनुष्ठानम्। *प्रश्न॰ १३७*। शीलं-अनवरतापूर्वज्ञानार्जनं विशिष्टतपः करणं वा। *सूत्र॰*

१५४। शील-समाधिः, शीलः-स्वभावः। *स्था॰ १८३*। शीलं-ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा। *सम॰ १२७*। शीलं-समाधानं चारित्र वा। *उत्त॰ ३७३*। शीलं-महाव्रतानि। *उत्त॰ ५०६*। शीलं-फलनिरपेक्षा वृतिः। *उत्त॰ ७०९*। शीलः-स्वभावः। *स्था॰ ४६८*। शीलं-समाधानविशेषः, ब्रह्मचर्यविशेषः, शीलं-अणुव्रतम्। *स्था॰ २३६*। शीलं-पिण्डविशुद्ध्याद्युत्तरगुणरूपम्। *उत्त॰ ४८५*। शीलं स्वा-भावम्। *ज्ञाता॰ २११*। शीलं-व्रतपालनात्मकोऽनुष्ठानवि-शेषः। *उत्त॰ १८७*। शीलः-स्वभावः समाधिराचारो वा। *उत्त॰ ४५*। शीलं-महाव्रतरूपम्। *औप॰ ८२*। शीलं-ब्रह्मचर्यम्। *प्रज्ञा॰ ३९९*। शीलं-चारित्रम्। *प्रज्ञा॰ ६०९*। शीलं-महाव्रतादि-उपचारातञ्जनं वचोऽपि शीलं समाधान-कारी वा। *उत्त॰ ५७*। शीलं-मनःप्रणिधानम्। *७३* अ। शीलं-परद्रोहविरतिरूपम्। *दशवै॰ २४६*। शीलं-भाव समाधिलक्षणम्। *दशवै॰ ९०*। शीलं-शुद्धभावना। *बृह॰ ३१३* अ। शीलं-रूवी। *निशी॰ ७७* अ। शीलं-आचारः। *जम्बू॰ १८२*। शीलं-समाधानम्। *प्रश्न॰ १०२*। शीलं-व्रतादिसमाधानलक्षणम्। *आव॰ ६०४*। शीलं-क्रोधाद्युपशमरूपम्। *सूत्र॰ ४००*। शीलं-स्वभावः। *प्रश्न॰ ३६*। शीलं-व्रतविशेषः। *सूत्र॰ ३४०*। शीलं-समाधानम्। अहिंसाया एकोनचत्त्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*।

सीलई– परिव्राजकविशेषः। *औप॰ ९१*।

सीलगुण– शीलगुणः-परैराक्रुश्यमानोऽपि शीलगुणादेव न क्रोधवशो भवति। *आचा॰ ८७*।

सीलगुणवरव्वयाइं– शीलं समाधानं गुणाश्च-विनयादयः तैर्वराणि-प्रधानानि यानि व्रतानि तानि शीलगुणवरव्रतानि, शीलगुणावराव्ययानि वा, शीलस्य गुणवराणां च-वरगुणानां व्रजः-समुदयो येषु तानि शीलगुणवरव्रजानि वा। *प्रश्न॰ ९९*।

सीलचंदणा– शीलचन्दना। *आव॰ २२४*।

सीलदोस– शीलदोषः। *आव॰ ६५४*।

सीलपरिघर– शीलपरिगृहं-चारित्रस्थानम्। अहिंसाया एकच-त्त्वारिंशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९*।

सीलप्पए– समारभ्यते। *बृह॰ १७१* अ।

सीलवंत– शीलवन्तः-अष्टादशशीलाङ्गसहस्रधारिणः। *आचा॰ ३५०*। शीलवन्तः-चारित्रिणः। *उत्त॰ २५३*।

सीलव– सीलेण हुतो सीलवं। *निशी॰ २७८* अ।

सीलवएनिरइयार– शीलानि च-उत्तरगुणा व्रतानि च मूलगु-णास्तेषु पुनर्निरतिचारः। *ज्ञाता॰ १२२*।

सीलवय– शीलव्रतं-अणुव्रतम्। *भग॰ ३६८*।

सीलव्वए– शीलव्रतं-उत्तरगुणमूलगुणात्मकम्। *आव॰ ११९*।

सीलव्वय– शीलव्रतं-अणुव्रतम्। *सम॰ १२०*। शीलव्रतं-अणुव्रतम्। *भग॰ १३६*। शीलव्रतं-अणुव्रतम्। *ज्ञाता॰ १३४*। शीलव्रतं-स्थूलप्राणातिपातविरमणादि। *राज॰ १२३*।

सीलायार– शीलाचारः-शीलं-समाधिस्तत्प्रधानस्तस्य वाऽऽचारः-अनुष्ठानं शीलेन वा-स्वभावेनाचार इति। *स्था॰ १८३*।

सीलेति– पेक्खति। *निशी॰ १३६* आ।

सीलेस– शीलेष-सर्वसंवररूपशरणप्रभुः। *भग॰ ९५*।

सीवग– । *जम्बू॰ १९४*।

सीवण– सीवनम् तन्तुना सन्धीकरणम्। *दशवै॰ २७०*।

सीवणी– सीवनी। *आव॰ ४२५*।

सीवण्णि– श्रीपर्णी-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*।

सीवण्णी– श्रीपर्णी। *ओघ॰ १५८*।

सीवन्न– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३*।

सीवन्नि– श्रीपर्णी-वृक्षविशेषः। *पिण्ड॰ ३०*।

सीस– शासितुं शक्यः शिष्यः। *उत्त॰ ३८*। शिरः-प्रकर्षा-वस्था संग्रामशिरः। *उत्त॰ ९१*। श्रिता अस्मिन् प्राणा इति शिरः। *उत्त॰ २७३*।

सीसक– काललोहः। *प्रश्न॰ १६४*। नागम्। *प्रश्न॰ १५२*।

सीसकरोडी– शीर्षकरोटिका। *आव॰ ३७१*।

सीसकाकर– यस्मिन्निरन्तरं महामूषास्वयोदलं प्रक्षिप्य सीस-कमुत्पाट्यते सः। *जीवा॰ १२३*।

सीसग– सीसकं-पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९*।

सीसगभग– शिष्या एव शिष्यकास्तेषां भ्रमा-भ्रान्तिर्यस्मिन् सः शिष्यकभ्रमः। विनीवतया शिष्यतुल्य इति, शीर्षकं शिर एव शिरः कवचं वा तस्य भ्रमः-अव्यभिचारितया शरीरक्षत्वेन वा सः शीर्षभ्रमः। *विपा॰ ६२*।

सीसगुणा– शिष्यगुणाः-भावविज्ञानादिकाः। *उत्त॰ ४०*।

सीसघडिया– शीर्षघटिका। *जीवा॰ २३४*।

सीसघडी– शीर्षघटी-शिरःकटिका। *अनुत्त० ६*।
सीसत्ता– शिक्षणीयता। *भग० ५८१*।
सीसदुवार– सीसत्स आवरणं। *निशी० १९१* अ।
सीसदुवारिया– शीर्षद्वारिका-कल्पेन शिर्षस्थगनरूपा। *बृह० २५४* अ। शीर्षद्वारिका। *दशवै० ८९*।
सीसनमण– शिरसा-उत्तमाङ्गेन नमनं-शिरोनमनम्। *आव० ५२४*।
सीसपहेलिअंग– शीर्षप्रहेलिकाङ्गं चतुरशीतिलक्षचूलिकाभिः। *अनुयो० १००*।
सीसपहेलिआ– चतुरशीत्यालक्षैः शीर्षप्रहेलिकाङ्गैः शीर्षप-हेलिका। *अनुयो० १००*।
सीसपहेलिकंग– शीषप्रहेलिकाङ्गं-चतुरशीतिश्चूलिकाशतसह-स्राणि। *जीवा० ३४५*।
सीसपहेलियंग– शीर्षप्रहेलिकाङ्गः-कालविशेषः। *सूर्य० ९१*। कालविशेषः। *भग० ८८८*।
सीसपहेलिया– शीर्षप्रहेलिका-शीर्षप्रहेलिकाङ्गशतसहस्राणि। *जीवा० ३४५*। *भग० २१०, २७५*। कालविशेषः। *भग० ८८८*।
सीसय– सीसकः। *प्रज्ञा० २७*।
सीसरक्ख– शीर्षरक्षकः। *आव० ८१९*।
सीसरोग– शिरोरोगः। *आव० ५८५*।
सीसव– वनस्पतिकायविशेषः। *भग० ८०३*।
सीसवा– शिंशपा-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा० ३१*।
सीसवादि– दारुम्। *निशी० २२८* आ।
सीसवेयणा– शीर्षवेदना। *आव० १९२*। शीर्षवेदना। *भग० १९७*।
सीसागर– सीसकाकरः। *भग० १९९*।
सीसावेढ– शिर आवेष्टनम्। *आव० ३६९*। शीर्षावेष्टकम्। *मरण०*। शीर्षावेष्टकम्। *आव० ६६१*।
सीसुक्कंपिय– शीर्षोत्कम्पितम्। कायोत्सर्गे दोषः। *आव० ७९८*।
सोसोवहार– शीर्षोऽपहारः-पश्वादिशिरोबलिः। *प्रश्न० ३९*।
सीहंढो– अनन्तकायः। *भग० ३००*।
सीह– शीघ्रः-वेगवान्। *भग० १७८*। गोशालकशतके अण-गारः। *भग० ६८५*। सिंहः। *आव० १७४*। सिंहः-कालायां ग्रामकूटपुत्रः। *आव० २०१*। सीहणामगणः। *निशी० ९५* आ। सनखपदश्चतुष्पदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*। सिंहः-अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य दशममध्ययनम्। *अनुत्त० २*। सिंहः-मत्स्यकच्छपविशेषः। *जीवा० ३२१*। सिंहः-सनखपदश्चतुष्पदविशेषः। *जीवा० ३८*। सिंहः-हरिः। *प्रश्न० ७*। सहस्रारकल्पे सप्तदशसागरोपमस्थितिकं दैवविमा-नम्। *सम० ३३*। सिंहः-केसरी। *जम्बू० १२४*। तृतीयं स्वप्नम्। *ज्ञाता० २०*।
सीहकंत– सहस्रारकल्पे सप्तदशसागरोपमस्थितिकं दैवविमा-नम्। *सम० ३३*।
सीहकण्ण– सिंहकर्णः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*।
सीहकन्नी– सिंहकर्णी-कन्दविशेषः। *उत्त० ६९१*। साधारण-बादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा० ३४*। सिंहकर्णीवनस्पति-कायिकः। *जीवा० २७*।
सीहकेसर– सिंहकेसरः-आस्तरणविशेषः। *ज्ञाता० १३*। सिहकेसरः-जटिलकम्बलः। *ज्ञाता० १५*।
सीहकेसरए– सिंहकेसरकः-मोदकविशेषः। *पिण्ड० १३९*।
सीहकेसरओ– सिंहकेसरिकः-मोदकविशेषः। *आव० ३६६*।
सीहकेसरा– देवदत्तभिक्षा। *अन्त० ६*। सिंहकेसराः-एतदभि-धाना मोदकाः। *अन्त० ६*।
सीहखइद– सिंहखादितम्। *आव० ८५९*।
सीहखइया– सिंहः शौर्यातिरेकादवज्ञोपात्तस्य यथारब्धभक्षणेन वा स्वादिता तथाविधप्रकृतिर्वा। *स्था० २७६*।
सीहगई– शीघ्रगतिः। *भग० १७८*।
सीहगती– अमितगतेस्तृतीयो लोकपालः। *स्था० १९८*।
सीहगिरि– आचार्यः। *निशी० २८* अ। सिंहगिरिः-आर्यसमितधर्मगुरुः। *आव० २८९*। सिंहगिरिः-छगलपुरा-धिपतिः। *विपा० ६५*। सिंहगिरिः। *उत्त० ३३३*। विंशतित-मतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम० १५१*। सिंहगिरिः-योगसङ्ग्रहे आलोचनायां मल्लवल्लभः सोपारकपत्तनाधिपतिः। *आव० ६६४*।
सीहगुहा– राजगृहे अग्नौ चोरपल्ली। *ज्ञाता० २३६*। सिंहगुहा-यत्र चौरपल्लीः। *आव० ३७०*।
सीहज्झया– सिंहध्वजा-सिंहचिह्नोपेता ध्वजा। *जीवा० २१५*।
सीहणाय– संघयणसंतिसंपन्नो रुट्ठो तुट्ठो वा भूमीं अप्फालेत्ता सीहस्सेव णादं करोति सीहणाय। *निशी०*

६१ आ। *ज्ञाता० २३७*।

सीहणिसाई– सिंहनिषादी-सिंहवन्निषीदतीत्येवंशीलः। *जीवा० ३४३*।

सीहनाय– सिंहनादः। *भग० ११५*।

सीहनिक्कीलियं– सिहनिष्क्रीडितमिव सिंहनिष्क्रीडितं-सिंहो हि विहरन् पश्चाद्भागमवलोकयति एवं यत्र प्राक्तनं तप आव-त्त्यर्योत्तरोत्तरं तद् विधीयते तत्तपः सिंहनिष्क्रीडितम्। *ज्ञाता० १२२*।

सीहपरिसा– मज्झे सीहपरिसा। *निशी० ३८* आ। सीहपरिसा-गीयगीत्था। *निशी० १९* अ।

सीहपुच्छ– सिंहपुच्छं-पृष्ठिवंशार्धम्। *आव० ६५१*।

सीहपुच्छण– सिंहपुच्छन-शेफत्रोटनम्। *प्रश्न० १६४*।

सीहपुच्छिययय– सिंहपुच्छितकं-सिंहमेहनकं त्रोटितमेहनम्। *औप० ८७*।

सीहपुर– सिंहपुरं-श्रेयांसनाथजन्मभूमिः। *आव० १६०*। सिंहपुरं-सिंहदत्तराजधानी। *विपा० ७०*। *स्था० ८०*। सिंहपुरं-स पद्मविजयस्य राजधानी। *जम्बू० ३५७*।

सीहमड– सिंहमृतः-मृतसिंहदेहः। *जीवा० १०६*।

सीहमुह– सिंहमुखः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*।

सीहमुहदीव– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था० २२६*।

सीहमुहा– सिंहमुखनाम अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०*।

सीहरह– पञ्चदशमतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम० १५१*। सिंहरथः –सिंहपुराधिपतिः। *विपा० ७१*।

सीहल– सिंहलः चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। *प्रश्न० १४*।

सीहलिपासगं– वीणासंयमनार्थमूर्णामयं कङ्कणं च। *सूत्र० ११७*।

सीहविक्कमगतो– अमितगतेश्चतुर्थो लोकपालः। *स्था० १९८*।

सीहवीअ– सहसारकल्पे सप्तदशसागरोपमस्थितिके देव-विमानम्। *सम० ३३*।

सुहसीलवयत्ता– सुखशीलाव्यक्ता सुखं-शरीरशुश्रूषादिकं शीलयन्तीति सुखशीलाः पार्श्वास्थादयः अव्यक्ताः-सुख-शीलाव्यक्तः। *बृह० १२७* आ।

सीहसेण– आराधको गजः। *मरण०*। सल्लुकीवने गन्धहस्ती-सिंहचन्द्रमुनिबोधितः कुर्कटसपहतः श्रीतिलकसुरः। *मरण०*। ऋषभसेनशिष्यः वैश्रमणदासदग्धः। *सं०*। चतुर्दशतीर्थकृ-त्पिता। *सम० १५१*। अजितनाथप्रथमशिष्यः। *सम० १५२*। सिंहसेनः-अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य एकादशम-मध्ययनम्। *अनुत्त० २*। सिंहसेनः-महासेनराजकुमारः। *विपा० ८२*। सिंहसेनः-अनन्तनाथपिता। *आव० १६१*।

सीहस्सर– सिंहस्येव प्रभूतदेशव्यापी स्वरो यस्य स सिंह-स्वरः। *जीवा० २०७*।

सीहा– सिंहा-श्रमाभावेन सिंहगतिसमाना। *भग० १६७*।

सीहाए– सिंहया तद्वार्द्धयस्थैर्येण। *ज्ञाता० ३१*।

सीहाणुग– जो महंतणिसिज्जाए ठितो सुत्तमत्थं वा एति चिट्ठइ वा सीहाणुगो। *निशी० १३७* अ।

सीहानुग– सिंहानुगः-यो महत्वां निषद्यायां स्थितः सन् सूत्र-मर्थं वा वाचयति तिष्ठति वा सिंहानुगः। *व्यव० १२१* अ।

सीहावलोय– पश्चादवलोकः। *मरण०*।

सीहासण– सिंहासनं-यस्यासनस्याधो भागे सिंहो व्यव-स्थितः स। *जीवा० २००*।

सीही– तत्प्रधाना विद्या। *आव० ३१९*।

सीहुका– सीधुका-मद्यविशेषः। *प्रश्न० १६३*।

सीहोरासियं– सिंहसामर्थ्यजम्। *मरण०*।

सुंक– शुल्कं-मूल्यम्। *ज्ञाता० १३१*।

सुंकपाल– शुल्कपालः। *आव० ३१७*।

सुंकभय– शुल्कभयः। *आव० ३५४*।

सुंकलित– वनस्पतिविशेषः। *भग० ८०२*।

सुंकलितण– तृणविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

सुकवाल– शुल्कपालः। *उत्त० १६५*।

सुंकियतो– शुल्कग्राहकः। *व्यव० ९४* आ।

सुंकिया– गामिया। *निशी० १४०* अ।

सुंगा– शुङ्गायनं विशाखागोत्रम्। *जम्बू० ५००*।

सुंगायणसगोत्ते– विशाखानक्षत्रगोत्रम्। *सूर्य० १५०*।

सुंठ– तृणविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। पर्वगविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*।

सुंठए– शुण्ठकं-नारकपचनार्थं भाजनविशेषः। *सूत्र० १२५*।

सुंठी– सिंगबेरो। *निशी० ५०* आ।

सुंड– साधुमन्यद्वा। *आचा० ३३०*।

सुंडय– शुण्ठकम्। *आव० ६५१*।

सुंडा– शुण्डा। *आव० २१७*।

सुंडिया– शौण्डिका-अत्यन्ताभिष्यङ्गरूपा। *दशवै० १८८*।

सुंदर– परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे धनदत्तजामाता। *पिण्ड॰ १२७*। त्रयोदशमतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम॰ १५१*।
सुंदरबाहू– सप्तमतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम॰ १५१*।
सुंदरमंगुलभाव– सुन्दरमङ्गुलभावः सुन्दरशुभेतरपदार्थः। *आव॰ २८०*।
सुंदरी– परिणामिकी दृष्टान्ते नासिक्यनगरे नन्दवणिजस्त्री सुन्दरी। *आव॰ ४३६*।
सुंदरीनंद– सुन्दरीनन्दः-परिणामिकी दृष्टान्ते सुन्दरीपतिर्नन्दो वणिक्। *आव॰ ४३६*।
सुंदेर– सौन्दर्यम्। *दशवै॰ १०७*।
सुबंसुंब– दवरिका-दवरिकम्। *आव॰ ६२*।
सुंब– रज्जुः। *भग॰ १६७*।
सुंबकड– शुम्बकः। *आव॰ २८९*। तृणविशेषनिष्पन्नः। शुम्बकः। *स्था॰ २७३*।
सुंबकिड्ड– वीरणकटम्। *भग॰ ६२८*।
सुंभ– श्रावस्त्यां गाथापतिः। *ज्ञाता॰ २५१*।
सुंभय– सुम्भकः-शुभवर्णकारीवस्तुविशेषः। *अनुयो॰ १४२*।
सुभंतर– जणपदविशेषः। *भग॰ ६८०*।
सुंभवडेंसए– बलीचर्चायां भवनम्। *ज्ञाता॰ २५१*।
सुंभसिरी– सुम्भगाथापतेर्भार्या। *ज्ञाता॰ २५१*।
सुंभा– सुंभसूंभश्रियोः दारिका। *ज्ञाता॰ २५१*। ज्ञातायां द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयवर्गे प्रथममध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५१*।
सुंमुइ– पुण्डजनपदे शतद्वारनगरे कुलकरः। *स्था॰ ४५८*।
सुंस– षष्ठाङ्गेऽष्टादशमं ज्ञातम्। *उत्त॰ ६१४*।
सुंसमा– ज्ञातायामष्टादशममध्ययनम्। *सम॰ ३६*। धनदत्त-पुत्री। *नन्दी॰ १६६*।
सुंसमार– संसुमारः। जलचरविशेषः। *उत्त॰ ६९९*।
सुंसु– ज्ञातायामष्टादशमध्ययनम्। *आव॰ ६५३*।
सुंसुमा– सुंसुमाभिधाना श्रेष्ठिदुहिता, ज्ञातायामष्टादशममध्य-यनम्। *ज्ञाता॰ ९*। सुंसुमा धनसार्थवाहदारिका। *आव॰ ३७०*।
सुंसुमार– जलचरविशेषः। *प्रश्न॰ ७*।
सुंसुमारपुर– यत्र चमरोत्पातः। *आव॰ २२२*।
सु– अतिशयेन सुष्ठुः। *आव॰ ५९१*। शोभनं-अतिशायिः। *सूर्य॰ २९२*।
सुअ– श्रवणं श्रुत वाच्यवाचकभावपुरस्सरीकरणेन शब्दसंस्पृ-ष्टार्थग्रहणहेतुरुपलब्धिविशेषः, एवमाकारं वस्तु जलाधारणा-द्यर्थक्रियासमर्थं घटशब्दवाच्यमित्यादिरूपतया प्रधानीकृत-त्रिकालसाधारणसमानपरिणामः, शब्दार्थपर्यालोचनानुसारी इन्द्रियमनोनिमित्तोऽवगमविशेषः। *नन्दी॰ ६५*। श्रुतं स्वदर्श-नानुगतसकलशास्त्रम्। *नन्दी॰ १५*। श्रुतं-द्वादशाङ्गम्। *दशवै॰ २४६*। आत्मैव श्रुतोपयोगपरिणामानन्यत्वाच्छृणोति श्रुतम्। *स्था॰ ३४७*।
सुअक्खाया– स्वाख्यातं सदेवमनुष्यासुरायां पर्षदि सुष्ठु आख्याता। *दशवै॰ १३७*।
सुअग्गाही– श्रुतगाही-परमपुरुषप्रणीतागमग्रहणाभिलाषी। *दशवै॰ २५०*।
सुअणुयत्त– स्वनुवर्त्तनीयः। *आव॰ ५६*।
सुअत्थधम्मा– श्रुतार्थधर्मः-श्रुतधर्मार्थः गीतार्थः। *दशवै॰ २५१*।
सुअथेरा– श्रुतस्थविराः-समवायाद्यङ्गधारिणः। *स्था॰ ५१६*।
सुअपच्चक्खाण– श्रुतप्रत्याख्यानं प्रत्याख्याने भेदः। *आव॰ ४७९*।
सुअलंकिय– सुष्ठु-अतिशयेन रमणीयतयाऽलंकृतः। स्वल-ङ्कृतः। *जीवा॰ २०६*।
सुअसमाही– श्रुतसमाधिः-द्वितीयं विनयसमाधिस्थानम् । *दशवै॰ २५५*।
सुआ– सूया-व्याजम्। *दशवै॰ २४३*।
सुइ– शुचिः। *आव॰ ६३१*। श्रुयते इति श्रुतिः-शब्दः। *ज्ञाता॰ २१५*।
सुइभूय– शूचिभूतः भावशुद्धिमान्, श्रुतभूतः-प्राप्तसिद्धान्तः। *औप॰ ३७*।
सुइयं– स्वपितुम्। *उत्त॰ १२९*।
सुइवाई– शुचीवादी-दकसौकरिकः। *बृह॰ ९०* आ।
सुइव्वं– श्वस्तनम्। *पिण्ड॰ ८२*।
सुइसमाया– शुचिः समाचारः यस्य स। *आचा॰ ३६४*।
सुई– शुचिः सत्यम्। *आव॰ ७०५*। सत्यसंयमः। *प्रश्न॰ १४६*। शुचिः-पवित्रम्। *जीवा॰ २४६*। संयमवता शुचिः, योग-सङ्ग्रहे एकादशमयोगः। *आव॰ ६६४*।

सुए– परिव्राजकविशेषः। *ज्ञाता० १०५*। शुकः-कीरः। *प्रज्ञा० ३६०*। श्रुतमदः-अष्टमदेषु सप्तमः। *आव० ६४६*। श्वः-आगमिनि दिनम्। *उत्त० ११७*। श्वः-कल्पः। *बृह० ९५*।

सुओ– शुकः-पक्षिविशेषः। *आव० ४२८*।

सुकंत– शुकान्तः घृतोदे समुद्रे पश्चिमार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३५५*।

सुक– शुल्कं राजदेयद्रव्यम्। *बृह० १५९ अ*। शुल्कं-राजदेवभागम्। *राज० १३०*।

सुकच्छ– सुकच्छोनामविजयः। *जम्बू० ३४५*।

सुकच्छकूड– सुकच्छकूटं-चित्रकूटवक्षस्कारे कूटम्। *जम्बू० ३४४*।

सुकड– सुकृतं-सुष्ठुकृतम्। *दशवै० २२०*। सुकृतं-सुष्ठुपरिपूर्णं कृतम्। *उत्त० ६७*। सुकृतं-सुष्ठ्वनुष्ठितम्। *उत्त० १०३*।

सुकडाणुमोयणा– अर्हत्त्वाद्यनुमोदनम्। *चतु०* ।

सुकण्ह– निरयावल्यां प्रथमवर्गेपञ्चममध्ययनम्। *निर० ३*।

सुकण्हा– सुकृष्णा-अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य पञ्चममध्यय-नम्। *अन्त० २५, २८*।

सुकन्ना– सुकन्या-अप्रतिहतराज्ञी। *विपा० ९५*।

सुकय– सुकृतं-सुष्ठुकृतं शोभितम्। *प्रज्ञा० ८६*। सुकृतः-निपुणशिल्पिरचितः। *जीवा० २२६*।

सुकयाणत्ति– सुकृताज्ञप्तिम्। *भक्त०* ।

सुकरण– सुखेन तस्य तस्य करणम्। *दशवै० १००*।

सुकाल– निरयावल्यां प्रथमवर्गे प्रथममध्ययनम्। *निर० ३*। सुकालीपुत्रः। *निर० २०*।
अष्टादशसागरोपमस्थितिकं देव-विमानम्। *सम० ३५*।
सुकालः-सौगन्धिकानगर्यां नीलाशो-कोद्याने यक्षः। *विपा० ९५*।

सुकाली– अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य द्वितीयममध्ययनम्। *अन्त० २५*। आर्यविशेषः। *अन्त० २७*। कोणिकस्य चुल्ल-माता। *निर० २०*।

सुकिट्ठ– चत्वारसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम० ९*।

सुकिरण– सुकिरणं शोभमानकान्तिकम्। *जम्बू० २११*।

सुकुमारं– ललितं ललतीव यत् स्वरघोलनाप्रकारेण शब्द-स्पर्शनेन श्रोत्रेन्द्रियस्य सुखोत्पादनाद्वा। *स्था० ३९६*।

सुकुमारिका– तैलकिट्ट विशेषः। *बृह० २६८*। भोज्यपदा-र्थविशेषः। *पिण्ड० १७२*।

सुकुमाल– सुकुमारः-अकर्कशः। *जीवा० २७४*। सुकुमारः-सुकुमारस्पर्शः। *जीवा० २२९*।

सुकुमालकोमलिय– सुकामारकोमलिकं-अत्यर्थं सुकुमारम्। *ज्ञाता० २००*।

सुकुमालिका– विराधितसंयमेऽपि ईशानकल्पे उत्पादे दृष्टान्तः। *प्रज्ञा० ४०६*।

सुकुमालिया– सुकुमालिका-स्पर्शेन्द्रियदृष्टान्ते जितशत्रुभार्या। *आव० ४०२*। सुकुमालिका भद्रासागरदत्तसार्थवाहपुत्री। *ज्ञाता० २००*। *निशी० २५८ अ*।

सुकुलपच्चायाइ– देवलोकादौ गत्वा सुकुले-इक्ष्वाकादौ प्रत्यायाति-प्रत्यागमनं प्रत्याजातिर्वा-प्रतिजन्मेति। *स्था० २०२*।

सुकुलपच्चायाति– सुकुले-इक्ष्वाकादौ देवलोकात् प्रतिनिवृ-त्तस्य जातिः-जन्म आयतिर्वा-आगतिः सुकुलप्रत्याजातिः सुकुलप्रत्यायातिर्वा। *स्था० १४४*।

सुकोसल– ऐरावते आगमिन्यामुत्सर्पिण्यां तीर्थकृत्। *सम० १५४*। चित्रकूटेऽनशनी मातृव्यघ्रीभक्षितः। *मरण०* । मुद्गल-गिरौ व्याघ्रीहतः। *भक्त०* ।
व्याघ्रीभक्षितमुनिः। *संस्ता०*।

सुक्क– शुष्कः। *ओघ० २९*। शुष्कः-वल्लचनकादि। *आचा० ३१५*। शुक्लवर्णद्रव्यजनितः शुक्लः। *स्था० ३२*। असं-किलिट्ठपरिणामं अट्ठविहं वा कम्मरयं सोधते तद्मा सुक्कं-परिणामविसेसो। *दशवै० १४*। *ज्ञाता० १८५*। शुक्रं-सप्तमो धातुः। *ज्ञाता० १४७*। शुष्को नीरसशरीरत्वात्। *ज्ञाता० ७४*। निरयावल्यां तृतीयवर्गे तृतीयममध्ययनम् । *निर० २१*। शुक्लं-शोधयत्यष्टप्रकारं कर्म्ममलं शुचं वा क्लमयतीति शुक्लम्। *स्था० १८८*। शुक्लं शुचिः-निर्म-लम्। *उत्त० ६०९*। शुल्कं-विक्रेयभाण्डं प्रति राजदेयं द्रव्यम्। *भग० ५४४*। शुक्लं अवधासमोहादिलक्षणं चतुर्थं ध्यानम्। *आव० ५८२*। शुल्कं-कन्यामूल्यम्। *उत्त० २०७*। शुल्कं-विक्रीतव्यभाण्डं प्रति राजदेयं द्रव्यम्। *जम्बू० १९४*। शुष्कं-स्तोकव्यञ्जनम्। *दशवै० १८१*।
सप्तदशसाग-रोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम० ३३*।
शुष्कः। *ओघ० १८८*। शुल्कः-अभिन्नवृत्तः। *भग० ३७३*।

शुल्कीयम्। *उत्त॰ २२१*। शुक्रः-द्विचत्वारिंशत्तममहाग्रहः। *जम्बू॰ ५३५*। शुष्कं-नीरसम्। *भग॰ १२५*। द्विचत्वारिंशत्तमम-हाग्रहः। *स्था॰ ७९*। शुक्लो-नामाभिन्नवृतोऽमत्सरी कृतज्ञः। *भग॰ ६५७*। ध्याने चतुर्थो भेदः। *भग॰ ९२३*। अशुचिस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ५०*। शुष्कः-चिक्खल्लः। *ओघ॰ २९*।

सुक्कछिवाडिया– शुष्काछिवाडिः-वल्लादिफलिका सा च शुष्का सति किलतीव शुल्का भवतीति शुष्काछिवाडिका। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

सुक्कपक्खिए– शुक्लपाक्षिकः-शुक्लानां वा-आस्तिकत्वेन विशुद्धानां पक्षो-वर्गः शुक्लपक्षस्तत्र भवः शुक्लपाक्षिकः। *स्था॰ ६१*।

सुक्कपक्खिय– शुक्लो विशुद्धत्वात् पक्षः-अभ्युपगमः शुक्ल-पक्षस्तेन चरन्तीति शुक्लपाक्षिकः। *स्था॰ ६०*।

सुक्कपुग्गलपरिसाड– अशुचिस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ५०*।

सुक्कयं– संस्कृतं-विशिष्टसंस्कारसहितम्। *व्यव॰ ३३५*।

सुक्कवडिंसए– शुक्रावतंसकः-शुक्रलोकस्य मध्येऽवतंसकः। *जीवा॰ ३९२*।

सुक्कहिय– सुक्कथितः यथाऽग्निपरितापतापितः। *जीवा॰ ५४*।

सुक्का– मनस्तापेन शोणितशोषात् शुष्का। *ज्ञाता॰ २८*।

सुक्काभ– शुक्राभं-सप्तमलोकान्तिकविमानम्। *भग॰ २७१*।

सुक्किलपत्ता– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२*। चतुरि-न्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

सुक्किला– लहुगा। *निशी॰ ३३* आ।

सुक्खायधम्म– सुष्ठु-शोभनः सर्वसावद्यविरतिरूपत्वादाडिति –अभिव्याप्त्याख्यातः-तीर्थकरादिभिः कथितः स्वाख्यातः तथाविधो धर्मो यस्य सोऽयं स्वाख्यातधर्मा-चारित्री। *उत्त॰ ३१६*।

सुक्खाल्लओ– अन्यभाजनगृहीततीमनेनार्द्रं ओदनः। *बृह॰ २५०* अ।

सुख– शीतम्। *आचा॰ १५१*। विषये सुखो वह्निः *१* सुखितो-ऽस्मि वेदनाऽभावे *२* विपाके हृष्टेन्द्रियार्थजं *३* मोक्षे अनुत्तमम्। *तन्दु॰ १०*। इहपरलोके सुखकरणात् सुखम्। *व्यव॰ ३९८*।

सुखदुःखे– परोदीर्यमाणवेदनारूपे साताऽसाते। *प्रज्ञा॰ ५५६*।

सुगंधि– सद्गन्धिका। *जीवा॰ १८८*। सुगन्धिः-गन्धवासः। *जीवा॰ २१४*।

सुगंधिए– जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

सुगंभीर– अतिशोभनम्। *व्यव॰ ३०३* (?)।

सुग– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*।

सुगइ– सुगतिः-सिद्धः। *आव॰ ६०*।

सुगती– सुगतिः-शोभना गतिरस्मात् ज्ञानाच्चारित्राच्चेति ज्ञानक्रिये वा। *सूत्र॰ १९७*।

सुगमं– अकृच्छ्रवृत्तिः। *स्था॰ २९७*।

सुगा– लोमपक्षीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*।

सुगिम्ह– सुग्रीष्मः-चैत्रपौर्णमासी। *स्था॰ २१४*।

सुगिम्हओ– सुग्रीष्मकः-चैत्रपूर्णिमा। *आव॰ ७३६*।

सुगुत्त– सुगुप्तः शतानीकामात्यः। *आव॰ २२२*।

सुगृहा– तदभिधाना चेटिका। *नन्दी॰ ५७*।

सुग्गइ– सोगतिं-सुगतिं देवमनुष्यगतिलक्षणां मुक्तिं वा। *उत्त॰ ६६१*।

सुग्गत– सुगतः-सुस्थः। *स्था॰ १४७*। सुगतः-ईश्वरः। *स्था॰ २४९*।

सुग्गीव– सुग्रीवं नगरविशेषः, बलभद्रराजधानी। *उत्त॰ ४५१*। भुतानन्दस्य अश्वराजः। *स्था॰ ३०२*। सुग्रीवः-सुविधि-पिता। *आव॰ १६१*। सुविधिनाथपिता। *सम॰ १५१*। नव-मवासुदेवप्रतिशत्रुः। *सम॰ १५४*।

सुग्रीवः– वालिलघुभ्राता। *प्रश्न॰ ८९*।

सुघुट्ठ– सुघुष्टः-अतिशयेन मसृणः। *जीवा॰ २०१*।

सुघोषा– वाद्यविशेषः। *जीवा॰ २६६*। सौधर्मकल्पे घण्टा। *ज्ञाता॰ १२*।

सुघोस– सुघोषं नगरं-अर्जुनराजधानी। *विपा॰ ९५*। दशसा-गरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १७*। षट् सागरोपम-स्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १२*। अतीतायामुत्सर्पिण्यां षष्ठः कुलकरः। *स्था॰ ३९८*। *सम॰ १५०*।

सुघोससंठिय– सुघोषसंस्थितः-आवलिकाबाह्यपञ्चदशमं नरकसंस्थानम्। *जीवा॰ १०४*।

सुघोसा– गीतरतेः प्रथमाऽग्रमहिसी। *भग॰ ५०५*। धर्मकथायां पञ्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*।

सुघोषाषघण्टाविशेषः। *प्रश्न॰ १५९*। सुघोषा-वीणाविशेषः। *जम्बू॰ १०१*। गीत-रतेः प्रथमाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। सुघोषा-देवलोकप्र-सिद्धा घण्टाविशेषः। आतोद्यविशेषो वा। *जीवा॰ १०५*। सुघोषा-शक्रस्य सुधर्मासभायामेतदभिधाना सुस्वरा घण्टा। *जम्बू॰ ३९६*।

सुचंद– भरतक्षेत्रेऽतितोत्सर्पिण्यां षष्ठः कुलकरः। *सम॰ १५३*।

सुचिण्ण– सुचीर्णः-सुचरितः। *जम्बू॰ ४६*। सुचीर्ण-सुचिरं-सुचरितजनितं कर्मापि वा। *जीवा॰ २०१*।

सुचिभूए– भावविशुद्धितः शुचिभूतः। *स्था॰ ४६५*।

सुचिर– प्रभूतत्वम्। *उत्त॰ २८०*। सुचिरः। *निशी॰ २०१ अ*।

सुचिरिफलनिव्वाणमुत्तिमग्गं– । *आचा॰ ४२४*।

सुचोयए– शोभने प्रेरयिता। *उत्त॰ ६५*।

सुच्छित्तं– सुक्षेत्रम्। *आव॰ २२५*।

सुच्छेत्ता– सुक्षेत्रनाम ग्रामः। *आव॰ २१८*।

सुजसा– सुयशा-समाधिज्ञाते शिशुनागश्रेष्ठिभार्या। *आव॰ ७०७*। चतुर्दशमतीर्थकृद्माता। *सम॰ १५१*। सुयशा-अनन्तजिनमाता। *आव॰ १६०*।

सुजह– सुखेन-अनायासेन हीयत इति सुहानः-सुत्यजः। *उत्त॰ २९२*।

सुजाए– सुजाता-लक्षणप्रशस्तः। *जम्बू॰ ५२९*। सुजातः-विपाकदशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे तृतीयममध्ययनम्। *विपा॰ ८९*। विनीतत्वादिना सुपुत्रः। *स्था॰ ४६२*। सुजातः-वीरकृष्णमित्रराजस्य कुमारः। *विपा॰ ९५*। सुजातः-सुपरि-पाकागतः। *जीवा॰ २६५*।

सुजाण– सुयानं-सुगतिम्। *सम॰ १८*।

सुजात– सुजातः संवेगोदाहरणे सार्थवाहधनमित्रधनश्रीपुत्रः। *आव॰ ७०९*। तृतीयग्रैवयकप्रस्तटः। *स्था॰ ४५३*।

सुजाता– अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य एकादशममध्ययनम्। *अन्त॰ २५*। कालवालस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*।

सुजाय– सुजातं-सुजातदारुमयम्। *भग॰ ४५९*। सुजातं-सुनिष्पन्नम्। *ज्ञाता॰ १२*। सुजातं-गर्भदोषविकलम्। *आव॰ ७१९*। सुजातं-मूलद्रव्यशुद्धम्। *जीवा॰ २२८*। सुजातं-यथोक्तप्रमाणोपपन्नत्वम्। *जीवा॰ २६९*। सुजातं-मूलद्रव्य-शुद्धम्। *जम्बू॰ ३२४*। सुजातः-बीजाधानादाभ्य जन्म-दोषरहितः। *जम्बू॰ १११*। सुजातः सुगुप्तः सुनिष्पन्नः। *जीवा॰ २७०*। शोभनं जातं जन्म यस्य स सुजातविशुद्ध-मणिकनकरत्नमूलद्रव्यतया जन्मदोषरहितः जम्ब्वाः सुदर्श-नायाः सप्तमं नाम। *जीवा॰ २९९*। शोभनं-जातं-जन्म यस्य सः सुजातः-विशुद्धमणिकनकरत्नमूलद्रव्यजनिततया जन्म-दोषरहितः। *जम्बू॰ ३३६*। भुतानंदस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*।

सुजेट्ठा– सुज्येष्ठा चेटकस्य षष्ठी पुत्री। *आव॰ ६७६*।

सुज्येष्ठा– शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसंभूतवैशालिकचेटकस्य षष्ठी पुत्री। *आव॰ ६७६*।

सुजोषः– पिशाचभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

सुज्ज– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जकंत– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जफूड– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जज्झय– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जप्पभ– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जलेस– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जवण– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जवित्त– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्जुत्तरवडिंसग– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्झ– रूप्यविशेषः। *जीवा॰ १९७*।

सुज्झसिंग– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुज्झसिट्ठ– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५*।

सुट्ठिए– सुस्थितः लवणाधिपतेर्नामधेयम्। *जीवा॰ ३०३*। सुस्थितः-लवणाधिपः। जंवा॰ *३१५*।

सुट्ठिग्ग– त्रिवेदिकपिलसाधुगुरुः। *बृह॰ ९८* अ।

सुट्ठिय– पाण्डवगुरुः। *मरण॰*। *ज्ञाता॰ २१७*।

सुट्ठिया– आयरिया। *निशी॰ ३१* आ, *१०२* अ।

सुट्ठतरमायाम– गंधारग्रामस्य षष्ठी मूर्च्छना। *स्था॰ ३९३*।

सुढिओ– मेषः। *आव॰ १०२*। अतीवाद्दतः सुष्ठुः। *बृह॰ ६६* अ। सुष्टो आद्दतो भूत्वा। *बृह॰ ५५* आ।

सुढिया– सुढिः-श्रान्तः। *बृह॰ ४* आ।

सुणंद– द्वादशमतीर्थकृत्प्रथमभिक्षादाता। *सम॰ १५१*। पञ्च-दशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ २९*। सुनन्दः-तृतीयमासक्षपणे भगवन्तं भिक्षादाता। *आव॰ २००*। गोशा-लकशतके गाथापतिः। *भग॰ ६६२*।

सुणंदा– सुनन्दा-तुम्बवनसन्निवेशे कश्चिद्गाथापतिसुता। *उत्त॰ ३३३*। कालवालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। भुतानंदस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*।

सुणइ– शृणोति। *आव॰ ६६५*।

सुणइयच्छिद्द– शून्यच्छिद्रम्। *आव॰ ३५२*।

सुणए– शुनकः-मृगदंशः। *प्रज्ञा॰ २५४*।

सुणक्खत्त– भद्रासार्थवाह्याः पुत्रः। *अनुत्त॰ ८*। अनुत्तरोपपा-तिके तृतीयवर्गे द्वितीयममध्ययनम्। *अनुत्त॰ २*। गोशालक-शतके मुनिः। *भग॰ ६७८*।

सुणक्खत्ता– सुनक्षत्रा-द्वितीयरात्रिनाम। *जम्बू॰ ४९१*। द्वितीयरात्रिनाम। *सूर्य॰ १४७*।

सुणग– शुनकः-श्वानः। *जम्बू॰ १२४*। कौलेयकः। *प्रश्न॰ २१*। सनखपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४५*। शुनकः-श्वानः। *जीवा॰ २८२*। सनखपदश्चतुष्पादविशेषः। *जीवा॰ ३८*। शुनकः-कुक्कूरः। *व्यव॰ ५२* आ।

सुणगमड– श्वमृतः-मृतस्वदेहः। *जीवा॰ १०६*।

सुणफ– श्वानः कौलेयकः। *प्रश्न॰ ७*।

सुणियं– शूनत्वं-श्वयथुर्वातगीत्तश्लेष्मसन्निपातरक्ताभिधानजः। *आचा॰ २३५*।

सुणिया– शूनी। *आव॰ ३८८*।

सुणिव्वुयवीसत्थे– सुष्ठुनिर्वृत्तः-श्वस्थात्मा, विश्वरस्तोविश्वास-वान् निरुत्सुको वा। *ज्ञाता॰ ३२*।

सुणेति– शृणोति, गृह्णाति, उपलभते। *प्रज्ञा॰ २९८*।

सुणेह– शृणुत-आकर्णयत, श्रवणं प्रत्यवहिता भवत, शृणु 'इहे' ति जगति जितमते वा। *उत्त॰ १९*।

सुण्ठी– कटुफरसपरिणतः। *प्रज्ञा॰ १०*। *उत्त॰ ६७७*।

सुण्ण– शून्या-शून्यान्तरवर्गणा। *आव॰ ६५*। शून्यं उद्वसम्। *उत्त॰ १०९*।

सुण्णडविसओ– शून्यविषयः। *आव॰ ३६५*।

सुण्णागार– शून्यागारः। *आव॰ ३०७*।

सुण्ह– श्वक्ष्णः वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*।

सुण्हा– स्नुषा। *आव॰ ३०५*। स्नुषा। *ओघ॰ १५६*। पुत्रवधुः। *ज्ञाता॰ ११५*।

सुत– श्रुतं-आचारप्रकल्पादिश्रुतं, नवादिपूर्वाणां श्रुतत्वेऽप्य-तीन्द्रियार्थज्ञानहेतुत्वेन सातिशयत्वादागमव्यपदेशः, केवल-वदिति द्वितीयो व्यवहारः। *स्था॰ ३१७*। बहुश्रुतः। *बृह॰ २८०* आ।

सुतखंड– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८*।

सुतत्थझरणहेउ– सूत्रार्थरक्षणहेतुः सूत्रार्थगुणनानिमित्तम्। *ओघ॰ २००*।

सुतत्था– श्रुतविषयो अर्थः-श्रुतार्थः-अभिलाप्यर्थविशेष इत्यर्थः, श्रुता वा-आकर्णिता जिनसकाशे गणधरेण ये अर्थास्ते श्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति सूत्र अर्था-निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्थाः। *सम॰ १०६*।

सुतपुव्व– श्रुतपूर्वः। *आव॰ ३४८*।

सुता– । *स्था॰ ५१२*।

सुति– श्रुतिः। *आव॰ ५१३*। श्रुतिं-वार्तामात्रम्। *ज्ञाता॰ ८४*।

सुती– श्रुतिः। *आव॰ ३५३*।

सुतोवउत्त– श्रुतोपयुक्तः-साभिलापज्ञानोपयुक्तः। *प्रज्ञा॰ ४९१*।

सुत्त– सुप्तमिव वा सुप्तम्। *स्था॰ ५२*। सूत्रं-आगमः। *स्था॰ १९०*। सुक्तं सुस्थित्त्वेन व्यापित्वेन च सुष्ठूक्तत्वाद्वा सूक्तम्। *स्था॰ ५२*। सुप्तः-निद्रावान्। *स्था॰ ३२०*। सूचनात् सूत्रं वाख्येयं वा अविवृतं मुकुलतुल्यं वा। जाव॰ *८६*। सूत्र-वल्कवलितम्। *सूत्र॰ ११८*। श्रुतं-शेषमाचारप्रकल्पादि। *भग॰ ३८४*। सूत्रं-दृष्टिवादे द्वितीयो भेदः। *सम॰ ४१*। श्रुतं-काज्जिकम्। *बृह॰ १३३* अ। श्रुतं-सूत्रमात्रं वा। *स्था॰ ३५०*। सुप्तो

निद्रया। *आचा० १५२।* सूत्रं-आगमः। *स्था० ५०३।*

सुत्तअत्थकहणा– सूत्रार्थकथनां व्याख्यानः। *आव० २६५।*

सुत्तखेड्ड– सूत्रखेलं-सूत्रक्रीडा। *जम्बू० १३९।*

सुत्तग– सुत्तकं-कटीसूत्रम्। *उत्त० ४९२।* सूत्रकं-हयमुखभू-षणविशेषः। *जम्बू० २३५।* सूत्रकं-वैकक्षककृतं सुवर्णसू-त्रम्। *जम्बू० १०५।*

सुत्तगमा– सुत्तप्रकारा। *निशी० ११ अ।*

सुत्तत्थ– सूत्रार्थ एव केवलः प्रतिपाद्यते यस्मिन्ननुयोगेऽसौ सूत्रार्थः, सूत्रार्थमात्रप्रतिपादनप्रधानो वा सूत्रार्थः। *आव० २७।*

सुत्तदोसा– द्वात्रिंशतप्रमाणः सूत्रदोषाः। *आव० ३७४।*

सुत्तपरिवाडी– सूत्रपरिपाटी-सूत्रपद्धतिः। *आव० ६७।* सूत्र-परिपाटी, सूत्रपद्धतिः। *विशे० ४९८।*

सुत्तप्फासिअनिज्जुत्ति– सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्तिः-सूत्रस्पर्शका-रिणी निर्युक्तिः। *अनुयो० २५८।*

सुत्तरुइ– सूत्रेण-आगमेन रुचिर्यस्य स सूत्ररुचिः। *उत्त० ५६३।* सूत्रं-आचाराङ्गाद्याङ्गप्रविष्टं अङ्गबाह्यं-आवश्यक-दशवैकालिकादि तेन रुचिर्यस्य स तथा, सूत्रमाचारदिक-मङ्गप्रविष्टमङ्गबाह्यमावश्यकादिकं ततः यः सम्यक्त्वमवगाहते – प्रसन्नप्रसन्नतराध्यवसायश्च भवति स सूत्ररुचिः। *प्रज्ञा० ५६।* सूत्रेण-आगमेन रुचिर्यस्य स सूत्ररुचिः। *उत्त० ५६३।*

सुत्तविहीणा– सूत्रविधिना। *पिण्ड० १०५।*

सुत्तवेयालिया– कर्मार्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ५६।*

सुत्ता– सुप्तानीव सुप्तानि-बाल्यादअव्यक्तचेतनानि। *ज्ञाता० ३८।*

सुत्ताणुगम– सूत्रानुगमः अनुगमे भेदः। *आचा० ३।* सूत्रानुगमः –सूत्रव्याख्यानम्। *अनुयो० २५८।*

सुत्तानुगम– अस्खलितादिप्रकारं शुद्धं सूत्रमुच्चारणीयम्। *दशवै० २०।*

सुत्तालावगनिप्फण– सूत्रालावकनिष्पन्नः, निक्षेपे भेदः। *दशवै० १५।* सूत्रालापकनिष्पन्नः-निक्षेपे द्वितीयो भेदः। *आचा० ३।*

सुत्ति– शुक्तिः-चन्दनाद्याधारभूता। *जम्बू० १०१।*

सुत्तिमइ– नगरविशेषः। *ज्ञाता० २०८।*

सुत्तिया– कर्मार्यभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ५६।*

सुत्थिए– स्वस्तिकः। *जीवा० १८९।*

सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमः– निर्युक्त्यनुगमे भेदः। *जम्बू० ९।*

सुदंसण– सुदर्शनः-जम्बूद्वीपाधिपदेवः। *स्था० ४३७।* सुदर्शनः। *उत्त० ३७९।* सुदर्शनः-कायोत्सर्गदृष्टान्ते चम्पायां श्रेष्ठिपुत्रः। *आव० ८००।* सुदर्शनः-अन्तकृद्दशानां षष्ठमव-र्गस्य दशममध्ययनम्। *अन्त० १८।* राजगृहे श्रेष्ठिः। *उत्त० ११२।* सुदर्शनः। *जम्बू० २०४।* सुदर्शनः-मथुरायां भण्डीरोद्याने यक्षः। *विपा० ७०।* पञ्चमबलदेवनाम। *सम० १५४।* सुदर्शनः-अरचक्रीपिता। *आव० १६२।* सुदर्शनः- अरनाथपिता। *आव० १६१।* सुदर्शनः-स्वयम्भूवासुदेवध-र्माचार्यः। *आव० १६३।* सुदर्शनः-पञ्चमबलदेवः। *आव० १५९।* नागकुमारस्य हस्तिराजः। *स्था० ३०२।* अष्टमचक्रवर्त्तिपिता। *सम० १५२।* शोभनं जम्बूनदमयतया वज्ररत्नबहुलतया च मनोनिर्वृत्तिकरं दर्शनं यस्याऽसौ सुदर्शनः। *सूर्य० ७८।* सुदर्शनः मेरुर्जम्बूद्वीपनाभिभूतः। *सूत्र० १४६।* मल्लीनाथपिता। *सम० १५१।* ग्रैवेयके षष्ठ-प्रस्तटः। *स्था० ४५३।* तृतीयबलदेववासुदेवस्य धर्माचार्यः। *सम० १५३।* पार्श्वनाथपूर्वभवनाम। *सम० १५१।* वाणिक-ग्रामे श्रेष्ठी। *भग० ५३२।* वाणिकग्रामे वास्तव्यः। *अन्त० २३।* सृष्ठु-शोभनं जाम्बूनदमयतया रत्नबहुलतया च मनो-निर्वृत्तिकरं दर्शनं यस्याऽसौ सुदर्शनः मेरूनाम। *जम्बू० ३७५।* राजगृहे श्रेष्ठी। *अन्त० २०।* गाथापतिः। *अन्त० २०।* नमस्कारात् श्रेष्ठिसुतः। *भक्त०* । राजगृहे गाथापतिः। *निरया० ३७।*

सुदंसणगिरि– सुदर्शनो गिरिः-मेरुः। *दशवै० २७८।*

सुदंसणा– सुदर्शना-सुष्ठु दर्शनं अस्याः इति सुदर्शना। *स्था० ६९।* सुदर्शना-उत्तरकुरुषु जम्बूवृक्षः, पृथिवी परिणामः-सुदर्शनेति तन्नाम। *सम० १४।* आधायाः परावर्त्तितद्वारे निलयश्रेष्ठिपत्नी। *पिण्ड० १००।* सुदर्शना-चन्द्रावतंसक-प्रथमराजपत्नी। *आव० ३६६।* सुदर्शना-श्रीमहावीरस्वामिनो भगिनी, अपर नामाऽनवद्याङ्गी। *उत्त० १५३।* सुदर्शना-अपर नाम जम्बूवृक्षः। *उत्त० ३५२।* कालवालस्य चतुर्थाऽ–ग्रमहिषी। *स्था० २०४।* अञ्जनपर्वते चतुर्था पुष्करिणी।

स्था॰ २३०। पिशाचेन्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। सुदर्शना सुष्ठु-शोभनं नयनमनसोरानन्दकत्वेन दर्शनं यस्याः सा। *जम्बू॰ ३३६*। साहञ्जनीनगर्यां गणिका। *विपा॰ ६५*। शक्रेन्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिष्या राजधानी। *स्था॰ २३१*। कालपिशाचेन्द्रस्य चतुर्थ्याऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*। अजित-नाथशीबिका। *सम॰ १५१*। सुदर्शना-शोभनं दर्शनं-दृश्य-मानता यस्याः सा, जम्बाः सुदर्शनायाः प्रथमं नाम। *जीवा॰ २९९*। सुदर्शना। *प्रश्न॰ १३६*। सुदर्शना-सुष्ठु-शोभनमति-शयेन वा दर्शनं-विचारणमनन्तरोक्तस्वरूपं चिन्तनम्। *जम्बू॰ ३३६*। सुदर्शना-सुप्रभबलदेवमाता। *आव॰ १६२*। सुदर्शना-पूर्वदिग्स्थिताञ्जनपर्वतस्य उत्तरस्यां दिशि पुष्करिणीविशेषः। *जीवा॰ ३६४*। सुदर्शना-दक्षिणपश्चिमरतिकर-पर्वतस्योत्तरस्यां शक्रदेवेन्द्रस्य रोहिण्याग्रमहिष्या राजधानी। *जीवा॰ ३६५*। भ॰ महावीरस्य ज्येष्ठा भगिनी। *आचा॰ ४२२*। धर्मकथायां पञ्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*। सुदर्शना-जम्बूसुदर्शना। *जीवा॰ ३२६*। सौगन्ध्यां नगर्यां श्रेष्ठीनी। *ज्ञाता॰ १०४*। सुदर्शना-स्वामिदुहिता। *आव॰ ३१२*।

सुदक्खुजागरिया– सुट्ठु दरिसणं सो सुदक्खू तस्स जागरिया-प्रमादनिद्राव्यपोहेन जागरणं सुदक्खुजागरिया। *भग॰ ५५*।

सुदत्त– सुदत्तः धर्मघोषस्थविरान्तेवासी अनगारः। *विपा॰ ९२*।

सुदर्शन– वासुदेवस्य चक्रम्। *उत्त॰ ३५०*। चक्रविशेषः। *प्रश्न॰ ७७*। चक्रनाम। *सम॰ १५७*।

सुदाढ– सुदंष्ट्रः-नागकुमारराजः। *आव॰ १९७*। नागकुमार-विशेषः। *निशी॰ ७८ अ*।

सुदाम– अतीतोत्सर्पिण्यां द्वितीयकुलकरः। *सम॰ १५०*। भरतेऽतीतायामुत्सर्पिण्यां द्वितीयकुलकरः। *स्था॰ ३९८*।

सुदिट्ठपरमत्थ– सुष्ठु-यथावद्दर्शितया दृष्टा-उपलब्धाः-परमार्थाः जीवादयो यैस्ते सुदृष्टपरमार्थाः। आचार्यादयाः। *उत्त॰ ५६६*।

सुदिट्ठपरमत्थसेवणा– सुष्ठु-सम्यग् रीत्या दृष्टाः परमार्थाः-जीवादयो यैस्ते सुदृष्टपरमार्थाः तेषां सेवता-पर्युपास्तिः सुदृष्टपरमार्थसेवनम्। *प्रज्ञा॰ ५६*।

सुदित– जातिशुद्धो। *निशी॰ २६८ आ*।

सुदुक्कर– सुदुष्करः-सुदुःशकः। *उत्त॰ ४५७*।

सुदेसिय– सुदेशितं-सुष्ठु सदेवमनुजासुरायां पर्षदि नानाविध-नयप्रमाणैरभिहितम्। *प्रश्न॰ ११३*।

सुद्द– शूद्रः। *आव॰ २६२*।

सुद्ध– अप्पायच्छिती। *निशी॰ ४१ आ*। ऋणं न दाप्यते। *बृह॰ २४५ अ*। बहुफलम्। *निशी॰ १६५ आ*। शुद्धं-अलेपकृतं शुद्धोदनं च। *स्था॰ १४८*। शुद्धं-शुद्धोदनो व्यंजनरहितो भवति शुद्धम्। *व्यव॰ ३५३ आ*। यत् अलेपकृतं काञ्जिकेन पानीयेन वा सन्मिश्रीकृतं तत् शुद्धम्। *व्यव॰ ३५३ आ*। शुद्धः-शुद्धिमितिः-दोषर-हितः। *उत्त॰ २९४*। शुद्धं-भक्तदोषविवर्जितम्। *सूर्य॰ २९३*। शुद्धं-भक्तदोषवर्जितम्। *भग॰ ३२६*। शुद्धं केवलं-अन्यपदासंसृष्टम्। *दशवै॰ १२६*।

सुद्धगंधारा– गंधारग्रामस्य चतुर्थी मुर्च्छना। *स्था॰ ३९३*। शुद्धगान्धारा-गान्धारस्वरस्य चतुर्थी मुर्च्छना। *जीवा॰ १९३*।

सुद्धगणी– शुद्धाग्निः अयपिण्डादौ। *प्रज्ञा॰ २९*।

सुद्धदंते– आगामिन्यां चतुर्थचक्रवर्त्ती। *सम॰ १५४*। शुद्ध-दन्तः-अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य पञ्चममध्य-यनम्। *अनुत्त॰ २*। शुद्धदन्तः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४*। शुद्धदन्तनामान्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*।

शुद्धदंतदीव– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६*।

सुद्धपउम– कुसुमान्तरवियुतं पुण्डरीकं वा शुद्धपद्मम्। *गा॰ ५*।

सुद्धपरिहार– जो सो वि सुच्चा पंचयामं अणुत्तरं धम्मं परिहरइ –करोति। *निशी॰ ८९ आ*। शुद्धपरिहारः-शुद्धस्य सतः परिहारसंचयमनुत्तरधर्म्मकरणं, यो विशुद्धः कल्पव्यव-हारक्रियते स शुद्धपरिहारः। *व्यव॰ ४५ अ*।

सुद्धपरिहारिओ– शुद्धपरिहारिकः। *जम्बू॰ १५० टि॰*।

सुद्धपाण– अपाने चतुर्थो भेदः, दैवहस्तस्पर्शः। *भग॰ ६८०*।

सुद्धपुढवी– शुद्धपृथिवी-पर्वतादिमध्ये या पृथिवी। *जीवा॰ १४०*। शुद्धपृथिवी-अशस्त्रोपहता भूमिः। *दशवै॰ २२८*। शुद्धपृथिवी-नदीतटभीत्यादिरूपा। *जीवा॰ २३*। सत्थो-वहता वि जाणवेत्थरि सा। *दशवै॰ ११९*।

सुद्धप्पा– शुद्धात्मा। *अन्त॰ २१*। शुद्धात्मा-स्नानेन

शुचिकृ-तदेहः। *औप॰ २३*।

सुद्धप्पावेसाइं– शुद्धात्मानी-वैश्याणि वेषोचितानि अथवा शुद्धानि च तानि प्रवेश्यानि च राजादिसभाप्रवेशोचितानि शुद्धप्रवेश्यानि। *भग॰ १३७*।

सुद्धभूमि– शुद्धभूमिः लाढावज्रभूमिः। *आव॰ २१२*।

सुद्धवाए– शुद्धवातः मन्दस्तिमितो बस्तिदृत्यादिगतो वा। *जीवा॰ २९*।

सुद्धवाताणुओग– शुद्धा-अनपेक्षितवाक्यार्था या वाक्वचनं सूत्रमित्यर्थः तस्या अनुयोगो-विचारः शुद्धवागनुयोगः। *स्था॰ ४९५*।

सुद्धवाय– मंदस्तिमितः शीतकालादिषु शुद्धवातः। *आचा॰ ७४*।

सुद्धवाया– शुद्धवाताः-उत्कलिकाद्युक्तविशेषविकला मन्दा-निलादयः। *उत्त॰ ६९४*।

सुद्धवियड– शुद्धविकटं-प्रासुकमुदकम्। *आचा॰ ३४६*। शुद्धविकटं-उष्णोदकम्। *स्था॰ १४८*।

सुद्धसज्जा– सद्यग्रामस्य सप्तमी मूर्च्छना। *स्था॰ ३९३*।

सुद्धागणि– शुद्धाग्निः-निरिन्धन अग्निः। *दशवै॰ १५४*।

सुद्धागणी– शुद्धाग्निः-अयःपिण्डादौ योऽग्निः। *जीवा॰ २९*। शुद्धाग्नि-अयस्पिण्डाद्यनुगतोऽग्निर्विद्युदादिर्वा। *जीवा॰ १०७*।

सुद्धागनि– शुद्धाग्निः-अयस्पिण्डान्तर्गतोऽग्निः। *ज्ञाता॰ १०४*।

सुद्धाणं– समत्ते वंदणे आयरिओ पणामं करोति एवं शुद्धाणं असत्तो गिलाणो शुद्धमेव केवलं पणमति। *निशी॰ २३८* आ।

सुद्धाभिसित्त– जातिसुद्धोपि दिनादिएण अभिसित्तो सुद्धाभि-सित्तो। *निशी॰ २६८* आ।

सुद्धेसणा– शुद्धैषणा-दशैषणादोषरहित आहारादिः। *आचा॰ २४३*।

सुद्धेसगिए– शुद्धैषणा-शङ्कितादिदोषपरिहारतः पिण्डग्रहस्त-द्वांश्च शुद्धैषणिकः। *भग॰ ९२१*।

सुद्धेसणित– शुद्धैषणिकः-शुद्धा-अनतिचारा एषणाशङ्किता-दिदोषवर्जनरूपा तया चरति। *स्था॰ २९८*।

सुद्धोदए– शुद्धोदकं-तडागसमुद्रनदीह्रदावटादिगतमवश्या-दिरहितं जलम्। *आचा॰ ४०*। शुद्धोदकं अन्तरिक्षसमुद्भवं नद्यादिगतं च। *प्रज्ञा॰ २८*। शुद्धोदकं-अन्तरिक्षसमुद्भवे नद्यादिगतं वा। *जीवा॰ २५*।

सुद्धोदग– शुद्धोदकं-अन्तरिक्षोदकम्। *दशवै॰ १५३*।

सुद्धोदण– शुद्धोदनः। *आव॰ ८५६*।

सुद्धोदणसुओ– शुद्धोदनसुतः। *आव॰ ४१२*।

सुद्धोदय– शुद्धोदकं-मेघमुक्तं समुद्रादिसम्बन्धि च जलम्। *उत्त॰ ६९१*।

सुद्धोयण– शाकादिवर्जितं कूरम्। *भग॰ १६३*।

सुद्धोवहडे– शुद्धोपहृतं-अल्पलेपाभिधानचतुर्थैषणाविषय-भूतम्। *स्था॰ १४८*।

सुद्धम्म– सुधर्मः अणगारविशेषः। *विपा॰ ९५*। सुधर्मः-स्थविरविशेषः। *विपा॰ ९२*।

सुधम्मसामी– सुधर्मास्वामी-काष्ठहारकदृष्टान्ते आचार्यः। *दशवै॰ ९३*।

सुधम्मा– सुधर्मा-विशष्टच्छन्दकोपेता विजयदेवस्य सभा। *जीवा॰ २२६*।

सुधर्मसभा– सुधर्मविमाने सभा। *प्रश्न॰ १३५*।

सुधर्मस्वामी– पञ्चमगणधरः। *आचा॰ ११*। पञ्चमगणधरः। *स्था॰ ७*। जम्बूस्वामिनं प्रति गुरूपर्वक्रमलक्षणसम्बन्ध-स्योपदेष्टा। *भग॰ ६*। जम्बूस्वामिनं कथकः। *आचा॰ २६*।

सुधर्मा– सौधर्मकल्पे सभा। *ज्ञाता॰ १२७*।

सुधर्मास्वामी– अर्थतोऽनन्तरागमे पञ्चमगणधरः। *ज्ञाता॰ १*।

सुनंद– सुनन्दः-वासुपूज्यजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव॰ १४७*। सुनन्दः-हस्तिनापुराधिपतिः। *विपा॰ ४८*। अष्टम-तीर्थकृत् पूर्वभवनाम। *सम॰ १५३*। सुनन्दो चम्पायां श्रावकः। *उत्त॰ १२३*।

सुनंदा– धनपालेभ्यस्य दुहिता। *आव॰ २८९*।

सुनंदी– सत्समृद्धिकः। *ज्ञाता॰ ५८*।

सुनक्खत्त– गोशालकशतके अनगारः। *भग॰ ६७८*।

सुनक्षत्र– वीरदेवकुशिष्यमुक्ततेजोलेश्यादग्धमुनिः। *जम्बू॰ २२४*।

सुनाभ– पद्मनाभपुत्रः, युवराजश्च। *ज्ञाता॰ २१४*।

सुनिउण– सुनिपुणः सुसूक्ष्मः वा सुष्ठुनिश्चितगुणः। *सम॰ ११५*।

सुनिच्छिय– सुनिश्चितः-ज्ञानदर्शनचारित्राणां यावज्जीवं

मया विराधना न कर्त्तव्येत्येवं सुष्ठु निश्चितवान् यः स सुनिश्चितः। *बृह॰ १३४अ।*

सुनिम्मय– सुनिर्मित-सुष्ठु अधोमुखीकृतम्। *भग॰ ५४१।*

सुनिसीअं– सुनिशीतं-उज्वालितम्। *दशवै॰ २६५।*

सुन्दरी– मूलद्वारविवरणे धनश्रेष्ठिपुत्री। *पिण्ड॰ १४४। उत्त॰ ६३१।* सुन्दराकारा। *जीवा॰ २७४।* नन्दपत्नी। *नन्दी॰ १६७।* सुन्दरी-आधायाः परावर्त्तितद्वारे तिलकश्रेष्ठिपत्नी। *पिण्ड॰ १००।*

सुन्दरीनन्दः– द्वेषे दृष्टान्तः। *उत्त॰ ६३१।*

सुन्न– शून्यः कर्त्तव्यमूढः। *प्रश्न॰ ६३।*

सुन्नकाल– शून्यकालः-नारकभवानुगतसंसारावस्थानका-लस्यऽप्रथमो भेदः। *भग॰ ७।*

सुन्नघर– शून्यगृहम्। *ज्ञाता॰ ७९।*

सुन्नागार– शून्यागारं-उद्वसितगृहम्। *उत्त॰ ६६५।*

सुपइट्ठ– सुप्रतिष्ठं महासेनराजधानी। *विपा॰ ८२।* अन्तकृद्द-शानां षष्ठमवर्गस्य त्रयोदशममध्ययनम्। *अन्त॰ १८।* शास्त्रीयद्वितीयमासनाम। *सूर्य॰ १५३। जीवा॰ २३४।*

सुपइट्ठग– सुप्रतिष्ठकं-स्थापनकं तच्चेहारोपितवारकादि। *भग॰ ५२४।* सुप्रतिष्ठकं-शरयन्त्रकं तच्चेह उपस्थापितक-लशादिकं ग्राह्यम्। *भग॰ २८८।* सुप्रतिष्ठकः। *जम्बू॰ ४१०।* सुप्रतिष्ठकं-स्थापनकम्। *जम्बू॰ ११६।* सुप्रति-ष्ठकः-पुष्पपात्रविशेषः। *जम्बू॰ १०१।* सुप्रतिष्ठकः-आधारविशेषः। *जम्बू॰ १५८।* सुप्रतिष्ठकः। *जम्बू॰ ८२।*

सुपइट्ठपुर– सुप्रतिष्ठपुरं-नगरविशेषः। *विपा॰ ४४।*

सुपइट्ठय– सुप्रतिष्ठकं-स्थापनकम्। *प्रश्न॰ ८४।*

सुपइट्ठाभ– अष्टसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः १४।*

सुपइट्ठाभ– सप्तमलोकान्तिकविमानम्। *स्था॰ ४३२।*

सुपइट्ठिअ– सुप्रतिष्ठितः-सत्प्रतिष्ठावान्। *जम्बू॰ १०९।*

सुपइट्ठिय– सुष्ठु मनोज्ञतया प्रतिष्ठितः सुप्रतिष्ठितः। *जीवा॰ २०६।* सुप्रतिष्ठावान्। *प्रश्न॰ ८०।*

सुपक्कखोतरसे– सुपक्वेक्षुरसमूलदलनिष्पन्नः सुपक्वेक्षुरसः। *३६४।*

सुपण्हपास– शोभनाः-प्रश्नाः येषां सुखेन वा प्रश्न्यन्ते ये ते सुप्रश्नाः। शोभना आशाः-वाञ्छा येषां ते स्वशाः सुखेन प्रश्न्यन्ते शास्यन्ते च शिक्ष्यन्ते ये ते सुप्रश्नशास्याः शोभनानि वा प्रश्नशस्यानि-पृच्छाधान्यानि येषां ते तथ। सुप्रश्नाः शस्याश्च-प्रशंसनीयाः। *औप॰ ४८।*

सुपतिट्ठ– सावस्त्यां गाथापतिः। *निर॰ २३।* सुप्रतिष्ठः पर्वतविशेषः। *आव॰ ८२७।*

सुपतिट्ठग– सुप्रतिष्ठकः। आधारविशेषः। *जीवा॰ २१३।*

सुपतिट्ठाभ– सुप्रतिष्ठाभ अष्टमं लोकान्तिकविमानम्। *भग॰ २७१।*

सुपतिट्ठित– सुतिष्ठितं स्थिरम्। *ओघ॰ २११।*

सुपन्नत्ता– सुष्ठु प्रज्ञप्ता यथैवाख्याता तथैव सुष्ठु-सूक्ष्मपरि-हाराभवनेन प्रकर्षेण सम्यगासेविता। *दशवै॰ १३७।*

सुपम्ह– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः १५। स्था॰ ८०।* सुपक्ष्मो विजयः। *जम्बू॰ ३५७।*

सुपरक्कंत– सुपराक्रान्तजनितं कर्म सकलसत्यमैत्रीसत्यभा-षणपरद्रव्यानपहारसुशीलादिरूपसुपराक्रमजनितम्। *जम्बू॰ १०६।*

सुपरिक्कंत– सुपराक्रान्तं सुपराक्रान्तजनितं कर्मैव। *जीवा॰ २०१।*

सुपावय– सुपापकम्। *उत्त॰ ३६१।*

सुपास– ऐरवते भावितीर्थकृत्। *समः १५४।* ऐरवते उत्सर्पि-ण्यां तीर्थकृत्। *समः १५४।* भरते आगामिन्यां तृतीयतीर्थ-कृत्। *समः १५३।* भरतेऽतीतायामुत्सर्पिण्यां तृतीयकुल-करः। *समः १५०।* शोभनानि पाश्र्वान्यस्येति सुपाश्र्वः सप्त-मजिनः, यस्मिन् गर्भगते जनन्यास्तीर्थकरानुभावेन शोभनौ पाश्र्वौ जाताविति सुपाश्र्वः। *आव॰ ५०३।* भरते अतीतायामु-त्सर्पिण्यां तृतीयकुलकरः। *स्था॰ २९८।* भ॰ महावीरस्य पितृव्यः। *आचा॰ ४२२।*

सुपासा– सुपाश्र्वाः पाश्र्वनाथशिष्यप्रशिष्याः। *स्था॰ ४५७।*

सुपीए– सुपीतः पञ्चममुहूर्त्तनाम। *सूर्य॰ १४६।*

सुपंख– द्वादशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः २२।*

सुपुंड– द्वादशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः*

२२।

सुपुप्फ– विंशतिसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः ३८।*

सुपुष्पा– वापीनाम। *जम्बू० ३७१।*

सुपेसल– सुपेशलं नाम शोभनं प्रीतिकरं वा इति वृद्धाः ततश्च-सुपेशलं शोभनं प्रीतिकरं वा। *उत्त० ३६१।*

सुप्प– गयकण्णाकारं। *निशी० ६० आ।* सूर्प्पम्। *प्रश्न० ८।* सूर्पः। *आचा० ७५।*

सुप्पइण्णा– सूप्रतिज्ञा, दक्षिणरुचकवास्तव्या द्वितीया दिक्कु-मारीमहत्तरिका। *जम्बू० ३६१।*

सुप्पकत्तर– शूर्पकर्त्तरं शूर्पखण्डम्। *उपा० २१।*

सुप्पकोण– शूर्पकोणम्। *आव० २२४।*

सुप्पणहं– शूर्प्पमिवधान्यशोधक भाजनविशेषवत् नखा यस्य स शूर्प्पणखः। *ज्ञाता० १३३।*

सुप्पणिहिइंदिए– सुपणिहितेन्द्रियः-श्रोत्रादिभिर्गाढमुपयुक्तः। *दशवै० १९०।*

सुप्पणिहिय– सुप्रणिहितं-सुणिधानवत् सुरक्षितम्। *प्रश्न० ११२।*

सुप्पदिण्णा– सुप्रदत्ता-दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव० १२२।*

सुप्पबद्ध– अष्टमग्रैवेयकविमानप्रस्तटः। *स्था० ४५३।*

सुप्पबुद्धा– सुष्ठु-अतिशयेन प्रबुद्धा-उत्फुल्ला सा सुप्रबुद्धा। *जम्बू० ३३६।* सुप्रबुद्धा सुष्ठु-अतिशयेन प्रबुद्धे व प्रबुद्धाः मणिकनकरत्नानि निरन्तरं सर्वतश्चाकचिक्येन सर्वकाल-मुन्निन्द्राः, जम्ब्वा सुदर्शनायास्तृतीयं नाम। *जीवा० २९९।* सुप्रबुद्धा, दक्षिणरुचकवास्तव्या तृतीया दिक्कुमारिका मह-त्तरिका। *जम्बू० ३९१।* सुप्रबुद्धा-दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव० १२२।*

सुप्पभ– सुप्रभः चतुर्थबलदेवविशेषः। *आव० १५९।* आगा-मिन्यां तृतीयकुलकरः। *समः १५३।* भरते आगामिन्यामु-त्सर्पिण्यां तृतीयकुलकरः। *स्था० ३९८।* सुप्रभः क्षोदवर-द्वीपे पूर्वार्धाधिपतिर्देवः। *जीवा० ३५५।* पद्मप्रभजिनः षष्ठ-जिनः। *नन्दी० ४७। समः १५४।*

सुप्पभा– चतुर्थबलदेवमाता। *समः १५२।* द्वितीयतीर्थकृत्-शीबिका। *समः १५१।* कालवालस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *स्था० २०४।* भुतानंदस्य षष्ठ्यग्रमहिषी। *भग० ५०४।* सुप्रभा-भद्रबलदेवमाता। *आव० १६२।*

सुप्पमाण– सुप्रमाणः-उचितप्रमाणः। *औप० १०।*

सुप्पसिद्धा– चतुर्थतीर्थकृत्शीबिका। *समः १५३।*

सुपतिष्ठकं– भाजनविधिविशेषः। *जीवा० २६६।*

सुफणि– सुष्ठु सुखेन फण्यते-क्वाथ्यते तक्रादिकं यत्र तत्सफणि स्थालीपिठरादिभाजनम्। *सूत्र० ११७।*

सुबंधु– सुबन्धुः श्रीदामराजस्यामात्यः। *विपा० ७०।* सुबन्धुः। *उत्त० ३०६।*

सुबंधुसचिव– भोगान्तरायविशेषे दृष्टान्तः। *प्रज्ञा० ४६५।*

सुबन्धू– प्रागामिन्यां सप्तमकुलकरः। *समः १५३।* द्वितीयब-लदेवपूर्वभवनाम। *समः १५३।* भरते आगामिन्यामुत्सर्पि-ण्यां सप्तमकुलकरः। *स्था० ३९८।*

सुबंभ– एकादशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः १९।*

सुबंभचेर– सुब्रह्मचर्यं-संयमः। *सूत्र० २४२।*

सुबाहु– रुक्मिधारिण्योर्दारिका। *ज्ञाता० १४०।* सुबाहुः-वज्रानिधारिण्योः पुत्रः। *आव० ११७।*

सुबाहुकुमार– सुबाहुकुमारः। *विपा० ९०।*

सुबाहू– सुबाहूः-विपाकदशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे प्रथममध्य-यनम्। *विपा० ८९।*

सुबीए– सुपीतः। *जम्बू० ४९१।*

सुबुद्धि– सगरचक्रे महामात्यः। *नन्दी० २४२।* सुबुद्धि-मंत्ति। *निशी० ११९ अ।*

सुबुद्धी– सुबुद्धिः मन्त्रीविशेषः। *ओघ० १०।* सुबुद्धिः-महा-बलराज्ञोऽमात्यः। *आव० ११६।* सुबुद्धिः-गजपुरे नगरश्रेष्ठी। *आव० १४५।* सुबुद्धिः-विजयबलदेवपूर्वभवनाम। *आव० १६३।* प्रतिबुद्धिनामराजस्य मन्त्री। *ज्ञाता० १३०।* चम्पायां जितशत्रोरमात्यः। *ज्ञाता० १७३।* सचिवविशेषः। *निशी० ३५१ आ।*

सुब्भ– रूप्यविशेषः। *राज० २८।* रूप्यविशेषः। *जम्बू० २९१।*

सुब्भिदुब्भि– शुभाशुभः। *प्रश्न० १६०।*

सुब्भिसद्द– शुभशब्दः। *ज्ञाता० १७४।* शुभशब्दः। *प्रज्ञा० २८९।*

सुब्भिसद्दपरिणाम– शुभशब्दपरिणामः। *जीवा० ३७३।*

सुब्भिसद्दि– शुभशब्दो मनोज्ञाः। *स्था० २५।*

सुब्भी– जं भोयणं वण्णगंधरसफासेहिं सुभेहिं उववेतं तं सुब्भि। *निशी॰ १५० आ।*

सुभ– सुभवडेंसगे सींहासनम्। *ज्ञाता॰ २५१।* शुभं-निर-पायम्। *पिण्ड॰ २१।* शुभं-मङ्गलभूतम्। *जीवा॰ १८८।* शुभफलम्। *जीवा॰ २०१।* शुभं-सामायिकस्य षष्ठपर्यायः। *आव॰ ४७४।* सुभगः-सौभाग्ययुक्तः। *सूर्य॰ २९२।* शुभं-पुण्यम्। *आव॰ ५९२।* शुभं-अर्थावहम्। *भग॰ १६३।* जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।* द्वीसागरोपमस्थितिकं देवावि-मानम्। *सम॰ ८।* नमिनाथस्य प्रथमशिष्यः। *सम॰ १५२।*

सुभकंत– द्वीसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ८।*

सुभगंध– द्वीसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ८।*

सुभग– सुभगम्। *प्रज्ञा॰ ३७।* पद्मविशेषः। *राज॰ ८।* यदुद-यवशादनुपकृदपि सर्वस्य मनःप्रियो भवति तत्सुभगनाम। *प्रज्ञा॰ ४७४।* सभगं-पद्मविशेषः। *जीवा॰ १७७। ज्ञाता॰ ९६।*

सुभगा– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।* भूतेन्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४।* सुरूपभूते-न्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४।* सुभगं-पद्मविशेषः। *जम्बू॰ २६।* धर्मकथायां पञ्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२।*

सुभगाकर– दुर्भगमपि सुभगमाकरोतीति विद्याविशेषः। *सूत्र॰ ३१९।*

सुभजोग– शुभयोगः-उपयुक्ततया प्रत्युपेक्षादिकरणम्। *भग॰ ३२।*

सुभणाम– शुभनाम-यदुदयाद्नाभेरुपरितना अवयवाः शुभा जायन्ते तत्शुभनाम। *प्रज्ञा॰ ४७४।*

सुभद्द– द्वितीयवासुदेवधर्माचार्यः। *सम॰ १५३।* सुभद्रः-सहञ्जनीनगर्यां सार्थवाहः। *विपा॰ ६५।* द्वितीयग्रैवेयकप्रत-स्तटः। *स्था॰ ४५३।* अरुणोदे समुद्रे देवविशेषः। *जीवा॰ ३६७।* षोडशमसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३२।* शुभद्रः-द्विपृष्ठवासुदेवधर्माचार्यः। *आव॰ १६३।* निर-यावल्यां द्वितीयवर्गे चतुर्थममध्ययनम्। निरया॰ १९। अचलपुरीयः कौटुम्बिकः। *मरण॰ ।*

सुभद्दा– वतिरोयणेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४।* नागवित्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४।* द्वितीयबल-देवमाता। *सम॰ १५२।* प्रथमचक्रिणो हस्त्रीरत्नम्। *सम॰ १५२।* कालवालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४।* शुभद्रा-इहलोके कायोत्सर्गफलदृष्टान्ते जिनदत्तश्रेष्ठिसुता। *आव॰ ७९९।* प्रतिमाविशेषः, तपविशेषः। *औप॰ ३१।* अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य दशममध्ययनम्। *अन्त॰ २५।* शुभद्रा-वणिग्ग्रामे विजयमित्रसार्थवाहभार्या। *विपा॰ ४६।* सुभद्रा-बलराज्ञी। *विपा॰ ९५।* सुभद्रा-विजयबलदेवमाता। *आव॰ १६२।* सुभद्रा-भद्रस्य भारिया। *निर॰ २९।* सुभद्रा – योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानविषये उज्जयिन्यां श्रेष्ठिभार्या। *आव॰ ६७०।* सुभद्रा-भद्राप्रतिमासमाप्रतिमा। *स्था॰ ६५।* शुभद्रा-भद्राप्रतिमासमाप्रतिमा, द्वितीया प्रतिमा। *स्था॰ १९५।* सुभद्रा। *उत्त॰ ३५४।* पञ्चप्रतिमायां द्वितीया। *स्था॰ २९२।* सुभद्रा-इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते कायो-त्सर्गकारिणीजिनदत्तश्रेष्ठिसुता परमश्राविका। *आव॰ ७९९।* सुभद्रा-प्रियचन्दराज्ञी। *विपा॰ ९५।* जिनदत्तसुश्रावकस्य पुत्री सुभद्रा। *दशवै॰ ४७।* जम्ब्वाः-सुदर्शनायाः पञ्चमं नाम। *जीवा॰ २९९।* सुभद्रा-सत्योदाहरणे शौर्यपुरे धनञ्जयश्रे-ष्ठिभार्या। *आव॰ ७०५।* वैरोचनेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४।* अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य दशममध्ययनम्। *अन्त॰ २५।*

सुभद्दाव– मुण्डयेत्। *गणि॰ ।*

सुभद्द– यक्षभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

सुभद्दा– वापीविशेषः। *जम्बू॰ ३७०।* कृष्णवासुदेवभागिनी अर्जुनपत्नी। *प्रश्न॰ ८९।* भरतचक्र स्त्रीरत्नम्। *जम्बू॰ २५२, २७२।* अनुशिष्ट्यामुदाहरणम्। *व्यव॰ ११७ अ।*

सुभफास– द्विसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ८।*

सुभर– कुव्वासहेत्यर्थः। *निशी॰ ३३२ आ।*

सुभलेस– द्विसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ८।*

सुभवण्ण– द्विसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ८।*

सुभा– रमणिज्झविजये राजधानी। *जम्बू॰ ३५२।* शुभा-वैरोचनेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०३।* शुभा-। *स्था॰ ८०।* शुभफला। *जम्बू॰ ४६।*

सुभासियं– शोभनव्यक्तवाग्रूपं सुभाषितं शुभाश्रितं सुखाश्रितं सुधाश्रितम्। *प्रश्न॰ ११४।*

सुभासुभ– शुभाशुभं दुर्भिक्षादि। *ओघ॰ १३५।*

सुभिक्ख– सुभिक्षं-सुकालः-भिक्षुकाणां भिक्षासमृद्धिः। *भग॰ १९९।*

सुभूम– चक्रवर्तीः। *भग॰ ७५३।* अष्टमचक्रवर्त्ती। *सम॰ १५२।* आगामिन्यां द्वितीयकुलकरः। *सम॰ १५३।* मानिक्ष-त्रियः। *सूत्र॰ १७३।* कार्तवीयसुतः त्रिः सप्तकृत्त्वो ब्रह्मणा व्यापादिताः। *सूत्र॰ १७०।* सुभौमः-अष्टमचक्रवर्ती। *आव॰ १५९।* सुभूमः-कार्तवीर्यपत्न्याः सभ्रमेण सुखेन पलितः। *आव॰ ३९२।* सुभूमः-अष्टमचक्रवर्ती। *जीवा॰ १२१।*

सुभूमिभाए– चम्पायामुद्यानम्। *ज्ञाता॰ ९१।*

सुभूमिभाग– उद्यानम्। *ज्ञाता॰ १९६।* पृष्ठचम्पायामुद्यानवि-शेषः। *उत्त॰ ३२३।* उद्यानविशेषः। *ज्ञाता॰ २०४।*

सुभोगा– तृतीया दिक्कुमारी। *जम्बू॰ ३८३।* सुभोगा-अधोलोकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२१।*

सुभोम– ग्रामविशेषः। *आव॰ २१८।* भरते आगामिन्यामुत्स-र्पिण्यां द्वितीयकुलकरः। *स्था॰ ३९८।*

सुमंगल– विमलवाहनराज्ञो नोदितोमुनिः। *भग॰ ६८९।* ऐरवते आगामिन्यां प्रथमतीर्थकृत्। *सम॰ १५४।* सुमङ्गलः-शिक्षा-योगदृष्टान्ते जितशत्रुराजपुत्रः। *आव॰ ६७८।* सुमङ्गलः-ग्रामविशेषः। *आव॰ २२५।*

सुमंगला– भरतमाता। *आव॰ १६१।* प्रथमचक्रवर्त्तेर्माता। *सम॰ १५२।*

सुमई– सुमतिः-प्रथमकुलकरः। *जम्बू॰ १३२।* शोभना मतिरस्येति सुमतिः-पञ्चमजिनः, यस्मिन् गर्भगते जननी सर्वत्र विनिश्चयेषु अतीव मतिसंपन्ना जाताऽतः सुमतिः। *आव॰ ५०२।* सुमतिः-धृतिमतिविषये मुख्या पाण्डववंशे कनिष्ठा पाण्डुसेणराजपुत्री। *आव॰ ७०८।* ऐरवते आगामि-न्यां दशमकुलकरः। *सम॰ १५३।*

सुमण– सुमनः-नन्दीश्वरोदे समुद्रे देवविशेषः। *जीवा॰ ३६५।* स्वप्ना-निद्राविकृतविज्ञानप्रतिभातार्थविशेषः। *स्था॰ ५०२।* शोभनं-धर्मध्यानादिप्रवृत्तिं वृत्तं मनोऽस्येति सुमनः। *आव॰ ३६५।* इशानेन्द्रलोकपालस्य सोमस्य विमानम्। *भग॰ २०३।* सुमनः-शोभनं मनो यस्याऽसौ। *जीवा॰ २४३।* सुमनः-शोभनमनः। *उत्त॰ ३८५।* सुमनः रुचक-समुद्रे पूर्वार्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८।* सुमनसः-पुष्पाणि। *ओघ॰ ७५।*

सुमणभद्द– सुमनोभद्रः-अन्तकृद्दशानां षष्ठमवर्गस्य द्वादशम-मध्ययनम्। *अन्त॰ १८।* चम्पायां मशकहतः। *मरण॰।* सुमनोभद्रः-वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। *भग॰ २००।* सुमनोभद्रः। *अन्त॰ २३।*

सुमणस– वल्लीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२।* सुमनसः-नन्दीश्वरोदे समुद्रे देवविशेषः। *जीवा॰ ३६५।*

सुमणा– सप्तमतीर्थकृतस्यप्रथमा शिष्या। *सम॰ १५२।* सुमना –नागमित्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४।* सुमनाः-शोभनं यस्याः सकाशाद् भवति सा सुमनाः। *जम्बू॰ ३३६।* सुमनाः-दक्षिणपूर्वरतिकरपर्वतस्य पूर्वस्यां शक्रदेवेन्द्रस्य पद्मनामिकाया अग्रमहिष्याः राजधानी। *जीवा॰ ३६५।* शोभनं मनो यस्याः सकाशाद् भवति सा सुमना। जम्ब्वाः सुदर्शनायाः अष्टमं नाम। *जीवा॰ २९९।* सुमनाः कालवाले-न्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४।* सुमनसः- मनः कालुष्याभावात् सौमनसः। *जम्बू॰ ३५४।*

सुमणातिया– अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य द्वादशममध्ययनम्। *अन्त॰ २५।*

सुमणुभद्द– सुमनोभद्रः-चम्पायां जितशत्रोः पुत्रः युवराजः-धर्मघोषशिष्यः। *उत्त॰ ९२।* सुमनोभद्रः-अरुणोदे समुद्रे देवविशेषः। *जीवा॰ ३६७।*

सुमतिस्वामी– गर्भस्थे तज्जनन्या व्यवहारकारकः तीर्थकरः। *नन्दी॰ १५८।*

सुमत्तओ– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰।*

सुमना– वापीनाम। *जम्बू॰ ३७०।*

सुमनोभद्रा– यक्षभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

सुमरणीया– स्मर्त्तव्या। *चतु॰।*

सुमरुत– अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य षष्ठममध्ययनम्। *अन्त॰ २५।*

सुमहंदोस– सुमहान् दोषः। *ओघ॰ २२१।*

सुमह– सुमहान्-अतिशयगुरुरत्युच्चः। *उत्त॰ ३५२।*

सुमहु– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०४।*

सुमागह– सुमागधः-राष्ट्रकविशेषः। *आव॰ २१९।*

सुमिणंतय– स्वप्नान्तः। *आव॰ ७०२।*

सुमिणंतियं– स्वप्नान्तिकं स्वप्नप्रत्ययं कर्म। *सूर्य॰ १२।*

सुमणि– स्वप्नः-निन्द्रावशविकल्पज्ञानः। *समः १७*। स्वप्नं –स्वप्नफलाविर्भावकम्। *समः ४९*। स्वप्नं-स्वप्नफलमु-पचारात् स्वप्नम्। *समः १८*। स्वप्नः-निद्राविक्रमः। *प्रश्नः १०९*।

सुमिणगदंसणोवम– स्वप्नदर्शनोपमः। *उत्तः ३२९*।

सुमित्त– द्वितीयचक्रवर्तिपिता। *समः १५२*। सुमित्रः-शान्ति-जिनप्रथमभिक्षादाता। *आवः १४७*। मल्लिनाथ-सहप्रव्रजकः तृतीयो राजकुमारः। *ज्ञाताः १५०*। शान्तिनाथजिनप्रथम-भिक्षादाता। *समः १५१*। पञ्चमजिनपूर्वभवनाम। *समः १५१*।

सुमित्तविजए– सुमित्रविजयः-सगरचक्रीपिता। *आवः १६३*।

सुमित्तु– सुमित्रः-मुनिसुव्रतपिता। *आवः १६१*।

सुमुख– अभिष्टवक्ता पुरुषः। *स्थाः ४३*।

सुमुह– यादवविशेषः। *ज्ञाताः २१३*। अन्तकृद्दशानां तृतीय-वर्गस्य नवममध्ययनम्। *अन्तः ३*। अन्तकृद्दशायामणगारः। *अन्तः १४*। सुमुखः यदोरपत्त्यः। *प्रश्नः ७३*। सुमुखः-हस्तिनागपुरे गाथापतिः। *विपाः ९१*।

सुमेघा– उर्ध्वलोकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आवः १२२*।

सुमेहा– सुमेघा तृतीया दिक्कुमारीमहत्तरिका। *जम्बूः ३८८*।

सुयंगा– श्रुतं-श्रुतज्ञानं अङ्गं-कारणं यस्याः सा श्रुताङ्गाः, अहिंसाया नवमं नाम। *प्रश्नः ९९*।

सुय– श्रुतं-विशिष्टमत्यंशरूपः। *स्थाः ३४८*। श्रुतं-द्वादशाङ्गम्। *स्थाः ५२*। श्रूयते तदिति श्रुतं-शब्द एव स च भाव-श्रुत कारणम्। *स्थाः ४६*। श्रुतं-ग्रंथः। *स्थाः ४४५*। श्रूयत इति श्रुतं शब्द एव, भावश्रुतकारणत्वात्, श्रूयतेऽनेनेति श्रुतं, तदावरणक्षयोपशमः, श्रूयतेऽस्मादिति श्रुतं, तदावरण-क्षयोपशमः, श्रूयतेऽस्मिन्निति वा क्षयोपशमः, शृणोतीति वाऽऽत्मैव तदुपयोगानन्यत्वात्। *आवः ७*। श्रुतं-द्वितीया परिज्ञा। *व्यवः ३९१ अ*। श्रवणं-श्रुतं अभिलाष-प्लावितार्थग्रहणस्वरूप उपलब्धिविशेषः। *अनुयोः २*। शुकः-कीरः। *प्रश्नः ८*। श्रुतं-प्रतिविशिष्टार्थप्रतिपादनफलं वाग्योगमात्रं, भगवता निसृष्टमात्मीयश्रवणकोटरप्रविष्टं क्षायोपशमिकभावपरिणामाविर्भावकारणं श्रुतम्। *दशवैः १३६*। श्रूयत इति श्रुतं-शब्द एव, भावश्रुतकारत्वात्, कारणे कार्योपचाराद्, श्रूयते वा अनेनास्मदस्मिन्वेति श्रुतं, तदावरणकर्म्मक्षयोपशमः, आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामा-नन्यत्वात् शृणोतीति श्रुतम्। *स्थाः ३४७*। सूत्र्यन्ते सूच्यन्ते वाऽर्था अनेनेति सूत्रम्। *स्थाः ५२*। श्रुतं-द्वादशाङ्गीरूपम-र्हत्प्रवचनम्। *भगः ६*। स्मृतं-प्रतिपादितं अनुचिन्तितं वा। *भगः ६५*। स्मृतं-अनुध्यातम्। *भगः १००*। स्मृतमिव स्मृतं स्पष्टप्रतिभासभावात्। *भगः ३१६*। श्रुतं-आकर्णितम्। *भगः १००*। श्रुतं-वाच्यवाचकभावपुरस्सरीकारेण शब्दसंस्पृष्टार्थग्रहणहेतुरूपलब्धिविशेषः, एवमाकारं वस्तु घटशब्द-वाच्यं जलधारणाद्यर्थक्रियासमर्थमित्यादिरूपतया प्रधानीकृतः समानपरिणामः, शब्दार्थपर्यालोचनानुसारी इन्द्रियम-नोनिमित्तोऽवगमविशेष इत्यर्थः। *प्रज्ञाः ५२६*। श्रुतं-आक-र्णितं, अवधारितम्। *उत्तः ८०*। श्रुतं-सामायिकादिबिन्दु-सारान्तं शास्त्रम्। *आवः ६०४*। श्रुतं-कषायोपशमहेतुः श्रुतान्तर्गतोपदेशः। *उत्तः ५०६*। श्रूयते तदिति श्रुतं-शब्द-मात्रम्। *उत्तः ५५६*। श्रुतं-आकर्णितं-अवगतं अवधारितम्। *आचाः ११*। श्रुतं-आकर्णितम्। *उत्तः २८४*। सूत्र्यन्ते सूच्यन्ते वाऽर्था अनेनेति सूत्रम्। *स्थाः ५२*।

सुयकरणं– श्रुतकरणं व्याकरणादिपरिज्ञानरूपोऽवस्थाविशेषो-ऽपरकलापरिज्ञानरूपश्च, उत्तरकरणे द्वितीयः। *सूत्रः ५*।

सुयकेवली– श्रुतकेवली, सुयकेवली-पण्णवणं पडुच्च केवलीवद्भवति कथमुच्यते चउव्विहे जाणणे य गहणे य तुल्ले रागदोसे अणंतकायस्स वज्जणया एकाणि दाराणि अण्णे य पयत्थे जहा केवली पण्णवेइ तहा सुअधरोऽवि। *निशीः १३९ अ*।

सुयक्खंध– श्रुतस्कन्धः-अध्ययनसमुदायलक्षणः। *समः १०८*।

सुयक्खायधम्म– सुष्ठू दाख्यातो धर्म्मोऽस्येति स्याख्यातधर्म्मा, संसारभीरुत्वाद्यथारोपितभारवाहीत्यर्थः। *आचाः २४४*।

सुयट्ठाण– श्रुतस्थानं-आचार्योऽहमित्यादिकम्। *पिण्ड॰ ९७।* श्रुतस्थानं-गण्यादिः। *पिण्ड॰ ९८।*

सुयधम्म– श्रुतधर्मः-श्रुतस्वभावः, बोधस्वभावत्वात् श्रुतबो-धश्च। *आव॰ ८७।* श्रुतधर्मः-चारित्रधर्मः, श्रुतं-द्वादशाङ्गं तस्य धर्मः श्रुतधर्मः। *दशवै॰ २३।* श्रुतमेव-आचारादिकं दुर्गतिप्रपत्तज्जीवधारणात्। धर्म्मः-श्रुतधर्म्मः। *स्था॰ ५१५।* श्रुतमेव धर्म्मः श्रुतधर्म्मः-स्वाध्यायः। *स्था॰ १५४।*

सुयनिस्सिए– श्रुतं-कर्म्मतापानं निश्रितं-आश्रितम्, श्रुतं वा निश्रितमनेनेति श्रुतनिश्रितम्, यत्पूर्वमेव श्रुतकृतोपकारास्ये-दानीं पुनस्तदनपेक्षमेवानुप्रवर्त्ततेतदवग्रहादिलक्षणं श्रुतनि-श्रितम्। *स्था॰ ५१।*

सुयपय– श्रुतपदाभिधेयं-आचारादिशास्त्रम्। *अनुयो॰ ३२।*

सुयपिच्छ– शुकपिच्छं शुकस्य पतत्रम्। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

सुयपेट– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*

सुयबेंट– त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

सुयभत्ती– श्रुतभक्तिः-श्रुतबहुमानः, विपक्षितकर्मबन्धकारणम्, एकोनविंशतितमस्थानकम्। *आव॰ ११९।* श्रुतभक्तियुक्तता-प्रवचनप्रभावना श्रुतभक्तिः-प्रवचनप्रभावना तया च निर्वर्त्ति-तवान श्रुतबहुमानेन। *ज्ञाता॰ १२२।*

सुयभावभासा– श्रुतभावभाषा, भाषाभेदः। *दशवै॰ २०८।*

सुयमुहगुज्झद्धरागसरिस– शुकमुखस्य गुञ्जार्धस्य च रागेण-सदृशो रागः। *ज्ञाता॰ २३१।*

सुयवेय– तृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

सुयसागर– ऐरवते आगामिन्यां नवम तीर्थकृत्। *सम॰ १५४।*

सुयान– सुगतिं-सुज्ञानं वा। *सम॰ १८।*

सुयाल– सुकालः। *भग॰ १९९।*

सुयी– पञ्चदशमजिनस्य प्रथमा शिष्या। *सम॰ १५२।*

सुरंगा– सुरङ्गा। *आव॰ ५६०, ६७७।*

सुर– सुष्ठु राजते सः सुरः-देवः। *उपा॰ २६।* पिट्ठकम्पादिद-व्यसंजोगओ। *दशवै॰ ८८। ज्ञाता॰ २०९।*

सुरइय– सुरचितः सुष्ठुकृतः सुरतिदो वा सुखकरः। *प्रश्न॰ ७०।* अचलपुरीयः कौटुम्बिकः। *मरण॰।*

सुरक्खिय– सुष्ठु-प्राहरिकपुरुषादिव्यापारणद्वारेण रक्षितः-पालितो दस्युभूषिकादिभ्यः। सुरक्षितः। *उत्त॰ ३५१।*

सुरक्ता– वापीनाम। *जम्बू॰ ३७१।*

सुरगणनरिंदमहिय– सुरगणनरेन्द्रमहितः-देवसमूहनृपपूजितः। *आव॰ ७८८।*

सुरगोव– सुरगोपः-इन्द्रगोपाभिधानो रक्तवर्णः कीटः। *ज्ञाता॰ १६०।*

सुरङ्गः– भूमिगृहम्। *उत्त॰ ३७८। नन्दी॰ १६७।*

सुरट्ठ– सुराष्ट्रजनपदः। *ज्ञाता॰ २०। निशी॰ ३०४* आ।

सुरत– मैथुनम्। *ओघ॰ १०७।*

सुरतानुबन्धि– मनःपरिचारणं-सुरतानुबन्धिः परस्परं सभ्या-सभ्यमनःसङ्कल्पकरणरूपम्। *प्रज्ञा॰ ५५२।*

सुरत्तकणवीर– सुरक्तकणवीरं कुसुमविशेषः। *प्रश्न॰ ५९।*

सुरदत्त– उत्कृष्टमालापहृते गृहपतिः। *प्रश्न॰ १०९।*

सुरप्पिए– यक्षायतनम्। *ज्ञाता॰ ९९०।* सुरप्रियः-यक्षायतन-विशेषः। *अन्त॰ २।* सुरप्रियनामयक्षायतनम्। *आव॰ ६२।*

सुरप्पिय– नन्दनवनोद्याने यक्षः। *निर॰ ३९।*

सुरभि– सुरभिः-शतग्रुः। *बृह॰ १४३* आ।

सुरभिउवल– सुरभ्युपलः-गन्धपाषाणः। *पिण्ड॰ ९।*

सुरभिगंधनाम– यदुदयाज्जन्तुशरीरेषु सुरभिगन्ध उपजायते तत्सुरभिगन्धनाम। *प्रज्ञा॰ ४७३।*

सुरभिगंधकासाइया– सुरभिगन्धकषायद्रव्यपरिकर्मिता लघु-शारिका सुरभिगन्धकाषायिकी। *जीवा॰ २५३।*

सुरभिदाण– सुरभिदानं-सुगन्धिमद्जलम्। *ज्ञाता॰ १६०।*

सुरभिपुर– श्रीमहावीरविहारक्षेत्रम्। *आव॰ १९७।*

सुरयरिक्का– सुरतविरतः मुक्तमैथुनः। *चतु॰।*

सुरवर– सुरवरः-सत्योदाहरणे शौर्यपुरे यक्षविशेषः। *आव॰ ७०५।*

सुरहि– सुरभिः शतग्रुः। *आचा॰ ३४८।*

सुरहितोवलए– गन्धारोहकः। *ओघ॰ १३०।*

सुरहिपलंब– सुरभिः शतग्रिप्रलम्बः। *आचा॰ ३४८।*

सुरा– हिमवद्वर्षधरे नवमकूटम्। *स्था॰ ७१।* सुरापिष्टा-दिनिष्पन्नाः। *दशवै॰ १८८।* तन्दुलधवादिवल्लीनिष्पन्ना। *विपा॰ ४९।* काष्ठपिष्टनिष्पन्नः। *उपा॰ ४९।*

सुरादेव– वाराणस्यां गृहपतिः। *स्था॰ ५०९।* महावीरस्य चतुर्थश्राद्धः। *उपा॰ ३४।*

सुरादेवी– सुरादेवी पश्चिमरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी *आव॰ १२२*। पाश्चात्यरुचकवास्तव्या द्वितीया दिक्कुमारीमहत्त-रिका। *जम्बू॰ ३९१*। शिखरिणिवर्षधरे चतुर्थो कूटः। *स्था॰ ७२*। निरयावल्यां चतुर्थवर्गेऽष्टममध्ययनम्। *निर॰ ३७*।

सुरादेवीकूड– सुरादेवीकूटम्। *जम्बू॰ २९६*। सुरादेवीकूटं-सुरादेवीदिक्कुमारीकूटम्। *जम्बू॰ ३८१*।

सुरासुरिया– भोजने अयं च सूरोऽयं च सूरो भूंक्तां च यथेष्ट-मित्येवं या परिवेषणक्रिया सा सूरासूरिका। *ज्ञाता॰ २५३*।

सुरिंदगोवग– सुरेन्द्रगोपकः-वर्षासु रक्तवर्णः क्षुद्रजन्तुविशेषः। *जम्बू॰ २१२*।

सुरिंददत्त– तृतीयतीर्थकृत्प्रथमभिक्षादाता। *सम॰ १५१*। सुरेन्द्रदत्तः-इन्द्रदत्तराजस्यामात्यदुहितसम्भूतः। कुमारः। *उत्त॰ १४९*। सुरेन्द्रदत्तः-तितिक्षोदाहरणेऽमात्यपुत्रीजातः इन्द्रदत्तराजसुतः। *ओघ॰ ७०२*।

सुरियाभ– सूरियाभः-ज्ञातायां त्रयोदशमेऽध्ययनेऽतिदेशः। *ज्ञाता॰ १८०*। ज्ञातायां षोडशमेऽध्ययने अतिदेशः। *ज्ञाता॰ २१०*। ज्ञातायां त्रयोदशममध्ययने अतिदेशः। *ज्ञाता॰ १७८*। नाट्यविधावतिदेशः। *निर॰ २९*।

सुरूआ– मध्यमरुचकवास्तव्या तृतीया दिक्कुमारिका। *जम्बू॰ ३९१*।

सुरूचि– सुरूची रुढिगम्या आभरणविशेषो वा। *प्रश्न॰ ७०*।

सुरूप– आधानुमोदनायां श्रीनिलयपुरे राजपत्न्युपभोक्ता वणिक्। *पिण्ड॰ ४९*।

सुरूपविद्युन्मती– किन्नरीविशेषः। *प्रश्न॰ ९०*।

सुरूपा– भूतानन्दस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*।

सुरूपा– मध्यरुचकवास्तव्या दिक्कुमारीप्रधाना। *आव॰ १२३*।

सुरूव– यशस्मत्कुलकरभार्या। *स्था॰ ३९८*। भूतेन्द्रः। *स्था॰ ८५*। सुरूपः। *ज्ञाता॰ ११*। सुरूपः-भूतेन्द्रः। *जीवा॰ १७४*। सुरूपः-दक्षिणनिकाये द्वितीयो व्यन्तरेन्द्रः। *भग॰ १५८*।

सुरुवा– सुरूपा भूतानदस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*। सुरूपस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। दिक्कुमारी। महत्तरिका। *स्था॰ ३६१*। तृतीया दिक्कुमारिमहत्तरिका। *स्था॰ १९८*। सुरूपा-तृतीयकुलकरपत्नी। *आव॰ ११२*। धर्मकथायां चतुर्थवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*। धर्मकथायां पच्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*।

सुरेंददत्ते– सुरेन्द्रदत्तः-सम्भवजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव॰ १४७*।

सुलभबोहिय– सुलभबोधिकः बोधिः-जिनधर्मः। प्राप्तिः सा सुलभा यस्य स सुलभबोधिकः। *स्था॰ ६०*।

सुललिअ– सुललितं-स्वरघोलनाप्रकारेण सुष्ठु-अतिशयेन ललतीव यत्, यदिवा यत् श्रोत्रेन्द्रियस्य शब्दस्पर्शनमतीव सूक्ष्ममुत्पादयति सुकुमारमिव च प्रतिभासते तत्। *जम्बू॰ ४०*।

सुललिय– स्वरघोलनाप्रकारेण सुष्ठु-अतिशयेन ललतीव यत् सुकुमालं तत् सुललितम्। *अनुयो॰ १३२*।

सुलस– कालसौकरिसुतः अभयकुमारस्य सखा। *सूत्र॰ १७८*। सुलसद्रहः। *जम्बू॰ ३०८, ३५५*।

सुलसदह– देवकुरौ चतुर्थो ह्रदः। *स्था॰ ३२६*।

सुलसा– दशमतीर्थकृत्प्रथमा शिष्या। *सम॰ १५२*। आगामिन्यां षोडशतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम॰ १५४*। स्मृतिविशेषः। *आव॰ १५८*। भद्दिलपुरे नागगाथापतेर्भार्या। *अन्त॰ ४*। सुलसा-अमूढदृष्टित्वोदाहरणे श्राविका। *दशवै॰ १०२*। अम्बडपरिव्राजकसमृद्धिरुपलभ्यापि न संमोहं गता श्राविका। *प्रज्ञा॰ ६१*। सुलसा। *निशी॰ १५अ*। सुलसा-शिक्षायोगदृष्टान्ते राजगृहे प्रसेनजित्सत्करथिकपत्नी श्राविका। *आव॰ ६७६*।

सुलसुलायइ– झटति। *तन्दु॰*।

सुलोचना– मानपिण्डोदाहरणे कौटुम्बिकगृहिणी। *पिण्ड॰ १३४*।

सुवग्गू– सुवल्गू-ईशानेन्द्रलोकपालस्य वरुणस्य विमानम्। *भग॰ २०३*। सुवल्गूर्विजयः। *जम्बू॰ ३५७*। *स्था॰ ८०*।

सुवच्छ– सुवत्सः-दक्षिणात्यक्रन्दितव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ९८*। कंद्रेन्द्रः। *स्था॰ ८५*। सुवत्सः विजयः। *जम्बू॰ ३५२*।

सुवच्छा– सुवत्सा-अधोलोकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव॰ १२१*। सुवत्सा पञ्चमी दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू॰ ३८८*। *स्था॰ ८०*। सुवत्सा-विमलकञ्चनकूटे देवी। *जम्बू॰*

३५३।

सुवज्जं– त्रयोदशमसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ २५*।

सुवण्ण– सद्वर्णः ज्योतिष्कः। *भग॰ १३५*। सुवर्ण-पृथिवी-भेदः। *आचा॰ २९*। प्रवालांकुरसन्निभं। *निशी॰ १२५आ*। सुवर्णवर्णकृमिसूत्रभवं वस्त्रम्। *बृह॰ २०१अ*। षोडशकर्ममाषकनिष्पन्नः सुवर्णः। *अनुयो॰ १५५*। सुवर्णः-सद्वर्णः ज्योतिष्क इति, सुवर्णकुमारो वा। *औप॰ १००*। *ज्ञाता॰ ४९*। सुवर्ण-शोभनं वर्ण विशिष्टवर्णिकम्। *उत्त॰ ३१६*। सुवर्णाः-शोभनवर्णोपेतत्वाज्ज्योतिस्का यक्षराक्षस-किन्नराः। *सम॰ ६२*।

सुवण्णकारा– तृतीया श्रेणिः। *जम्बू॰ १९३*।

सुवण्णकूलाकूड– सुवर्णकूलानदीकूटम्। *जम्बू॰ ३८१*।

सुवण्णखलगं– सुवर्णखलं-ग्रामविशेषः। *आव॰ २००*।

सुवण्णखोडीअ– सुवर्णखोरकः। *आव॰ ४२१*।

सुवण्णजुहिया– सुवर्णयूथिका। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

सुवण्णजूहियाकुसुम– सुवर्णयूथिकाकुसुमम्। *जीवा॰ १९१*।

सुवण्णपास– सोपर्णेयपार्श्वः-गरुडसमीपः। *उत्त॰ ४११*।

सुवण्णभूमी– सुवर्णभूमिः। *उत्त॰ १२७*। *आव॰ १४८*।

सुवण्णवालुगा– सुवर्णवालुका-नदीविशेषः। *आव॰ १९५*।

सुवण्णसद्दाल– सुवर्णशब्दालं सकिंकणीकं वस्त्रम्। *जीवा॰ ४०४*। सुवर्णशब्दालं नूपुरादिनिर्घोषयुक्तः। *जीवा॰ ४०४*।

सुवण्णा– सुवर्णाः-गरुडकुमाराः। *जम्बू॰ २०१*।

सुवण्णागर– सुवर्णाकरः। *ज्ञाता॰ २२८*।

सुवति– नस्यति। *निशी॰ १६अ*।

सुवन्न– सुवर्णवर्णसूत्रम्। *३३८*। सुवर्णम्। *प्रज्ञा॰ २७*।

सुवन्नकुमारा– सुवर्णकुमाराः-वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचनानिर्द्देश-शवर्त्तिनो देवाः। *भग॰ १९९*। भुवनपतिभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९*।

सुवन्नकुमारीओ– सुवन्नकुमार्यः-वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचन-निर्द्देशवर्त्तिन्यो देव्यः। *भग॰ १९९*।

सुवन्नकोडी– सुवर्णकोटिकः-सुवर्णपुरुषः। *आव॰ ४५२*।

सुवन्नजुत्ति– कालविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८*।

सुवन्नदार– सिद्धायतने चतुर्थं द्वारम्। *स्था॰ २३०*।

सुवन्नपाग– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८*।

सुवन्नभूमी– सागरस्थानम्। *बृह॰ ३९अ*।

सुवन्नवासा– सुवर्णवर्षः। *भग॰ १९९*।

सुवन्नवुट्ठी– सुवर्णवृष्टिः। *भग॰ १९९*।

सुवन्नसिप्पी– सुवर्णशुक्तिका-सुवर्णमयी शुक्तिका। *प्रज्ञा॰ ३६३*।

सुवन्नागर– सुवर्णाकरः। *भग॰ १९९*।

सुवप्प– सुवप्रविजयः। *जम्बू॰ ३५७*।

सुवर्ण– चत्त्वारि मधुरतृणफलान्येकः-श्वेत सर्षपः षोडशः ते एकं धान्यमाषफलं द्वे ते एका गुञ्जा पञ्च ता गुञ्जाः एक कर्म-माषकः, षोडशकर्ममाषका एक सुवर्णः। *जम्बू॰ २२६*।

सुवर्णकूल– ह्रदविशेषः। *स्था॰ ७५*।

सुवर्णकूला– शिखरीवर्षधरे सप्तमकूटम्। *स्था॰ ७२*। सुवर्ण-कुला। *स्था॰ ७५*।

सुवर्णगुलिका– उदायननृपस्य प्रभावतीदेवीसत्का दत्ताभिधाना दासी। *प्रश्न॰ ८९*।

सुवर्णचरितादि– आच्छादनम्। *उत्त॰ ६५०*।

सुवर्णछल्ली– त्वग्विशेषः। *जीवा॰ १३६*।

सुवर्णपण– नाणकविशेषः। *नन्दी॰ १५६*।

सुवर्णभूमी– यत्रजलमार्गेण गम्यते तत्। *सूत्र॰ १९६*।

सुवर्णकरः– यस्मिन्निरन्तरं महामूषासु सुवर्णदलं प्रक्षिप्य सुवर्णमुत्पाट्यते सः। *जीवा॰ १२३*।

सुवाय– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सुवासव– सुवासवः-वासवदत्तराजकुमारः। *विपा॰ ९५*। सुवासवः-विपाकदशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे चतुर्थममध्य-यनम्। *विपा॰ ८८*।

सुविणंत– स्वप्नान्तातः, विभागः अवसानः। *भग॰ ७१२*। स्वप्न-स्वापक्रियानुगतार्थः विकल्पः। *भग॰ ७१०*। स्व-प्नम्। *आव॰ ४२९*। स्वप्नः-स्वप्नप्रतिपादको ग्रन्थः। *सूत्र॰ २१८*। सामान्यफलवान्। *भग॰ ५४३*।

सुविणपाढग– स्वप्नपाठकः। *आव॰ ३४३*।

सुविणा– स्वप्नात् पुष्पचूलाया इव या स्वप्ने वा या प्रतिपद्यते सा स्वप्ना। *स्था॰ ४७३*।

सुविणीअप्पा– सुविनीतात्मा-जन्मान्तरकृतविनयः-निरति-चारधर्माराधकः। *दशवै॰ २४९*।

सुविधिस्वामी– तीर्थव्यवच्छेदसमयवान्। *प्रज्ञा॰ १९*।

सुविनीयसंसाए– सुष्ठु-अतिशयेन विनीतः-अपनीतः-प्रसा-दितगुरुणैव शास्त्रपरमार्थसमर्पणेन संशयो-दोलायमानमान-सात्मकोऽस्येति सुविनीतसंशयः, सुविनीता वा संसत्-परि-षदस्येति सुविनीतसंस्तकः विनीतस्य हि स्वयमतिशयवि-नीतैव परिषद्भवति। *उत्त॰ ६६*।

सुविभत्त– सुविभक्तः। *सूर्य॰ २९*। सुविभक्तः-सुविच्छित्तिकः। *जम्बू॰ २५*।

सुविभत्तिओ– सुविभक्तिकः-सुविच्छित्तिकः। *जीवा॰ १८२*।

सुविर– स्वप्तारं-स्वप्नशीलम्। *बृह॰ २४८ आ*। सुविरः-दोषवान् साधुः। *ओघ॰ ९८*।

सुविसाय– विंशतिसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३८*।

सुविसुद्ध– सुविशुद्धः-निर्म्मलः। *ज्ञाता॰ ६३*।

सुविहि– सुविधिः-योगसङ्ग्रहे एकोनविंशतितमो योगः। *आव॰ ६६४*। शोभनो विधिरस्येति सुविधिः, नवमजिनः, यस्मिन् गर्भगते सर्वविधिष्वेव विशेषतः कुशला जननीति सुविधिः। *आव॰ ५०३*।

सुविहिअ– सुविहितं-सामायिकपञ्चमपर्यायः। *आव॰ ४७४*।

सुविहिअकोट्ठग– सुविधिकोष्ठकं सुसूत्रणा पूर्वकरचितोपरितन-भागविशेषः। *जम्बू॰ १०७*। सुविधिकोष्ठकम्। *जीवा॰ २६९*।

सुविहिता– साधवः। *निशी॰ १५३ आ*।

सुविहिय– सुष्ठु विहितं-अनुष्ठितं यस्य सः सुविहितः। *सम॰ १२७*। सुविहितः साधुः। *ओघ॰ ४*। सुविहितः-साधुः। *आव॰ ५२०*। शोभनं विहितं अनुष्ठानं यस्य स सुविहितः-साधुः। *आव॰ ६१९*। सुविहितः-शोभनानुष्ठानः। *ओघ॰ १५६*। सुविहितः-शोभनं विहितं-अनुष्ठानं यस्येति साधुः। *ओघ॰ ४*। सुविहितं शोभनं विहितं-सम्यग्दर्शनाद्यनुष्ठानम्। *आचा॰ ३४*।

सुविही– छद्मारुआलिंदो। *निशी॰ १९२ अ*। अङ्गणम-ण्डपिका। *बृह॰ २१२ अ*।

सुवीर– षट्सागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १२*।

सुवुट्ठि– सुवृष्टिः-धान्यादिनिष्पत्तिहेतुः। *भग॰ १९९*।

सुव्वत– लोभपिण्डदृष्टान्ते साधुः। *पिण्ड॰ १३९*।

सुव्वए– शोभनो निरतिचारतया सम्यग्भावानुगततया च व्रतं-शीलं परिपालनात्मकस्येति सुव्रतम्। *उत्त॰ २५१*। ऐरवते आगामिन्यां तीर्थकृत्। *सम॰ १५४*।

सुव्वता– आर्या। *निर॰ ३०*।

सुव्वत्त– सुव्रतं-सुव्यक्तम्। *उत्त॰ ११३*।

सुव्वय– सुव्रतं-अणुव्रतम्। *प्रश्न॰ १३६*। पद्मप्रभोः प्रथम-शिष्यः। *सम॰ १५२*। सुव्रतः। *जम्बू॰ ५३५*। एकाशीति-ममहाग्रहः। *स्था॰ ७९*। सुव्रतः-सद्व्रतः। शोभनचित्तवृत्त-वितरणे वा। *ओघ॰ १०७*। सुव्रतः-समाधिज्ञाने शिशुनाग-श्रेष्ठिपुत्रः। *आव॰ ७०७*। सुव्रतः-धृतसत्पुरुषव्रतः। *उत्त॰ २८१*।

सुव्वया– धर्मनाथमाता। *सम॰ १५१*। आर्याविशेषः। *ज्ञाता॰ १०७*। आर्याविशेषः। *ज्ञाता॰ २०९*। आर्याविशेषः। *ज्ञाता॰ २२६*। आर्या। *निर॰ ३४*। सुव्रता-धर्मजिनमाता। *आव॰ १६०*। सुव्रता। *आव॰ ७९३*। सुव्रताः-शोभनानुव्रतधा-रकाः। *बृह॰ २ अ*।

सुसंकय– सुसंस्कृतः-परमसंस्कारमुपनीतः। *जीवा॰*।

सुसंजत्त– सुसंयुक्तः-सावधानः। *आव॰ ७१६*।

सुसंतुट्ठ– सुसन्तुष्टः-येन वा केन वा सन्तोषगामी। *दशवै॰ २३१*।

सुसंपरिग्गहिय– सुसम्परिगृहीतः-सुष्ठु-अतिशयेन सम्यग्-मनागप्यचलनेन परिगृहीतः। *जीवा॰ ३६१*।

सुसंभंत– सुसम्भ्रातः-अत्याकुलः। *उत्त॰ ४७४*।

सुसंवरं– सुगुप्तम्। *ओघ॰ १३९*।

सुसंहया– सुसंहता-सुश्लिष्य। *जीवा॰ २७०*।

सुसंहियं– सुसम्भृतम्। *आव॰ ४०१*।

सुसज्ज– सुष्ठुप्रगुणम्। *ज्ञाता॰ २२१*।

सुसण्णाग– अलसो। *निशी॰ १६३*।

सुसमण– सुशामनः-सुष्ठु-अतिशयेन शमनं शान्तभावो यस्य स। *जम्बू॰ १३१*।

सुसमदुसम– कालविशेषः। *आव॰ ५३९*।

सुसमदुसमा– सुषमदुःषमः-सागरोपमकोटाकोटीद्वयप्रमाणः कालः। *भग॰ २७५*। सुषमदुष्षमा-अवसर्पिण्यां तृतीयारकः। *आव॰ १२०*।

सुसमदुस्समा– सुषमदुष्षमः-दुष्टाः समा अस्यामिति दुष्षमा, सुषमा चासौ दुष्षमा च सुषमदुष्षमा, सुषमानुभावबहुलस्य दुष्षमानुभावः। *जम्बू॰ ८९*।

सुसमदुष्षमातृतीयारकः। *स्था॰ ७७।*

सुसमसूसमा– सुषमा चासौ सुषमा च सुषमासुषमा द्वयोः समानर्थयोः प्रकृष्टार्थवाचकत्वादत्यन्त सुषमा, एकान्तसुख-रूपोऽस्या एव प्रथमारक इति। *जम्बू॰ ८९।* सुषमसुषमः-सागरोपमकोटाकोटीचतुष्टयप्रमाणः। कालः। *भग॰ २७५।* सुषमसुषमा-अत्यन्तसुखस्वरूपः प्रथमारकः। *स्था॰ २७।* सुषमसुषमा-प्रथमारकः। *स्था॰ ७७।*

सुसमा– सुषमा-द्वितीयारकः। *स्था॰ ७७।* सुष्ठु-शोभनाः समाः-वर्षाणि यस्यां सा सुषमा। *जम्बू॰ ८९।*

सुसमाकाल– सुषमाकालः-द्वितीयारकः। *जम्बू॰ ८९।*

सुसमारपुर– सुसुमापुरम्। *भग॰ १७१।*

सुसमाहिए– सुसमाहितः-शुद्धभावः। *दशवै॰ २२८।*

सुसमाहिय– सुषमाहितः-सुगुप्तः। *आव॰ ६५३।* सुसमाहितः –ज्ञानादिषु यत्नपरः। *दशवै॰ ११९।* सुसमाहितः-उद्युक्तः। *दशवै॰ २००।* दर्शनादिषु सुष्ठु-सम्यगाहितः सुसमाहितः। *आव॰ ५१६।*

सुसमाहिया– नाणे दंसणे चरित्ते य सुट्ठु आहिया सुसमाहिया। *दशवै॰ ५२।*

सुसर– दशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १७।*

सुसहाव– सुखभावः-शोभनस्वरूपः शुद्धभावो वा। *प्रश्न॰ १५८।*

सुसागय– सुस्वागतं-अतिशयेन स्वागतम्। *भग॰ ११६।*

सुसागर– एकसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ २।*

सुसाण– श्मशानम्। *उत्त॰ ३०१।* शबानी शयनं अस्मिन्निति श्मशानं पितृवनम्। *उत्त॰ १०८।* मयसयणं। *निशी॰ ७० अ।* श्मशानम्। *ज्ञाता॰ ८०।* श्मशानम्। *आचा॰ ३०७।* श्मशानं-प्रेतभूमिः। *उत्त॰ ६६५।* शबानां शयनं श्मशानं पितृवनम्। *आचा॰ २७०।*

सुसाणगिह– श्मशानगृहं-पितृवनगृहम्। *भग॰ २००।* श्मशा-नगृहं कम्मंताणि शून्यगारं विविक्तम्। *आचा॰ ३१६।*

सुसाणसामंत– श्मशानसामन्तं-शबस्थानसमीपम्। *स्था॰ ४७६।*

सुसामाण– सप्तदशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३३।*

सुसाल– अष्टादशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३५।*

सुसाहुवाढी– सुष्ठु साधु-शोभनं हितं मितं प्रियं वदितुं शीलम-स्येत्यसौ सुसाधुवादी, क्षीरमध्वाश्रववादीत्यर्थः। *सूत्र॰ २३७।*

सुसियकसाए– शोषितकषायः। *गच्छा॰।*

सुसिर– सुषिरं-काहलादि। *जीवा॰ २४७।* एकोनविंशतितम-सागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ ३७।* शुषिरं वंशादि। *जीवा॰ २६६।* शुषिरः। *सूर्य॰ २८६।* सुसिरं-आउज्झं। *निशी॰ १ अ।*

सुसिलिट्ठ– सुश्लिष्टः-सुघनः-सुस्थितः। *जम्बू॰ ११०।* सुश्लिष्टः-संबद्धः। *जीवा॰ २२६।* सुश्लिष्टः-सुश्लेषावयवः मसृणः। *जम्बू॰ ४०३।* सुश्लिष्टः-संगतः। *जीवा॰ २७१।* सुश्लिष्टः-मांसलः। *जीवा॰ २७०।*

सुसिलिट्ठा– सुश्लिष्टा-अविसर्वरा। *ज्ञाता॰ १६।*

सुसीमा– वच्छविजयराजधानीनाम। *जम्बू॰ ३५२।* सुसीमाः। अन्तः *१८।* सुसिमा। *स्था॰ ८०।* अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य पञ्चममध्ययनम्। *अन्त॰ १५।* षष्ठतीर्थकृन्माता। *सम॰ १५१।* पद्मप्रभमाता। *आव॰ १६०।*

सुसील– सुशीलः। *आव॰ ७९३।*

सुसीलभूओ– सुष्ठु-शोभनं शीलं-समाधानं चरित्रं वा भूतः-प्राप्त सुशीलभूतः। *उत्त॰ ३७३।*

सुसीलसंसग्गी– सुशीलसंसर्गी, आयतनपर्यायः। *ओघ॰ २२२।*

सुसुई– सुश्रुतिः सुशुचिः-सम्यक् श्रुतं-ग्रन्थः सत्सिद्धान्तो वा। *औप॰ ४८।*

सुसुज्ज– नवसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १५१।*

सुसुणाय– शिशुनागः-समाधिज्ञाते सुदर्शनपुरे श्रेष्ठी। *आव॰ ७०७।*

सुसुमा– सुसुमा-परिणामिक्यां धनदत्तपुत्री। *आव॰ ४३०।*

सुसुमार– शिशुमारपुरं-संवेगोदाहरणे धन्धुमारराजधानी। *आव॰ ७०९।* शिशुमारः-जलचरतिर्यञ्चः। *प्रज्ञा॰ ४३।*

सुसूर– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०।*

सुसेण– सुषेणः। *जम्बू॰ २१८।* सुषेणः-महाचन्द्रराजस्या-मात्यः। *विपा॰ ६५।*

सुस्थितः– लवणसमुद्राधिपतिर्देवः। *प्रज्ञा॰ ११४।*

सुस्समण– शोभनाः श्रमणाः यस्मिन् स सुश्रमणः। *आव॰ ५१९।*

सुस्सरणिग्घोसा– सुस्वरनिर्घोषा-सूर्याणां घण्टा। *जम्बू॰ ४०९।*

सुस्सरा– सुस्वरा-उदधिकुमाराणां घण्टा। *जम्बू॰ ४०७।* सुस्वरा-चन्द्राणां घण्टा। *जम्बू॰ ४०९।* गीतरतेस्तृतीया-ऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४।* सुस्वरघोषः सुष्ठु यत्स्वं-स्वकीयं अनन्तरोक्तं वर्ण शृङ्खलादिकं तेन राजते इति सुस्वरः। *जम्बू॰ ५३।* धर्मकथायां पञ्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२।* गीतरतेः-तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०५।*

सुस्सवणा– सुष्ठु श्रवणं-शब्दोपलम्भो येषां ते सुश्रवणाः। *जम्बू॰ ११३।*

सुस्सूस– शुश्रूषस्व-श्रवणेच्छां विधेहि। *आचा॰ २३९।*

सुस्सूसई– सुश्रूषति-यथाविषयमवबुध्यते। *दशवै॰ २५६।* शुश्रूषते-विनययुक्तो गुरुवदनारविन्दाद्विनिर्गच्छद्वचनं श्रोतु-मिच्छति। *नन्दी॰ २५०।* विनययुक्तो गुरुमुखात् श्रोतुमिच्छति शुश्रूषति। *आव॰ २६।*

सुस्सूसण– शुश्रुसणं-अदूरासन्नतया सेवनम्। *दशवै॰ २४१।* सुश्रूषणं ण पक्खओ ण पुरओ इत्त्यादि विधिना गुरुवचन-श्रवणेच्छा पर्युपासनमिति। *उत्त॰ १७।* शुश्रूषणं-पर्युपास-नम्। *उत्त॰ ५७८।*

सुस्सूसणाविणए– शुश्रूषणा-सेवा सैव विनयः शुश्रूषणा-विनयः। *भग॰ ९२२।*

सुस्सूसमाण– शुश्रूषणाः-धर्म्मं श्रोतुमिच्छा न गुर्वादेः पर्यु-पास्तिं कुर्वन्। *आचा॰ २५६।* शुश्रूषन्-श्रोतुमिच्छन्। *दशवै॰ २५२।* भगवद्वचनानि श्रोतुमिच्छन् शुश्रूषमाणः। *सूर्य॰ ६।*

सुस्सूसा– शुश्रूषा-पूजा। *दशवै॰ २४९।* गुरोरादेशं प्रतिश्रोतु-मिच्छा शुश्रूषा गुर्वादेर्वैयावृत्यम्। *सूत्र॰ १८५।* शुश्रूषा-तदादेशंप्रति श्रोतुमिच्छा पर्युपासना वा। *उत्त॰ ६०९।*

सुहंसुहं– सुखायेति-ऋतुभाज्यमानसुखः। *ज्ञाता॰ ३३।* सुखंसुखं-सुखपरम्परावाप्तिः। *उत्त॰ ५८१।*

सुहं– सुखं-सुखहेतुत्वात्, उपशमश्रेण्यामुपशामकं प्रत्यपूर्व-करणानि वृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायरूपा गुणत्रयावस्था। *सूत्र॰ १९७।* सुखं-तद्भवसम्बन्धिः। *जम्बू॰ ३९८।* सुखं-विशिष्टाह्लादरूपम्। *प्रश्न॰ १११।* सुखं-शर्म। *भग॰ ११५।* सुखं। *निशी॰ ९ आ।* अणबाहं। *निशी॰ ७७ अ।* भवे निरुपद्रवता। *राज॰ २६।* प्रधानः। *राज॰ ७।* शुभः-स्व-स्वकर्मकुशलः। *राज॰ ३।* सुखं-यथेप्सितवि-षयावाप्ता वाह्लादः। *उत्त॰ २८४।* सुखं शर्म क्षेमं च। *जीवा॰ २४२।* सुखं-आह्लादनुभवरूपं क्षणम्। *दशवै॰ ३९।* शुभः-मङ्गलभूतः। *जम्बू॰ ३०।* सुखं-श्रवणकालोद्भवमानन्दम्। *सम॰ ६२।* सुख-विशिष्टाह्लादरूपम्। *आव॰ ४४६।* सुखं-आनन्दरूपम्। *भग॰ ६७२।*

सुहड– सुहृतं-शाकपत्रादेस्तिक्तत्वादि घृतादि वा सूपविलेपि-कादीनाम्। *उत्त॰ ६१।*

सुहणामा– सुभनामा-पञ्चमीतिथी। *सूर्य॰ १४८।* शुभनामा-पञ्चमीतिथी। *जम्बू॰ ४९१।*

सुहत्थि– स्थूलभद्रशिष्यः, विशिष्टगोत्रः सुहस्ती। *नन्दी॰ ४९।*

सुहत्थी– शुभार्थी भव्यान् प्रति सुहस्ती वा पुरुषवरगन्धहस्ती। *भग॰ १२७।*

सुहदुक्ख– सुखदुःखा-सुकृतदुष्कृतम्। *उत्त॰ ३८२।*

सुहफास– सुखस्पर्श वा शुभस्पर्शम्। *सूर्य॰ २६३।* सुखस्पर्शः शुभस्पर्शः वा। *प्रज्ञा॰ ९९।* शुभस्पर्शम्। *जीवा॰ १९९।*

सुहमेहति– सुखं-ऐकान्तिकात्यन्तिकमुक्तिसुखात्मकम्, 'एधति' इत्यनेकार्थत्वद्धातूनां प्राप्नोति शुभं-पुण्यमेधते-अन्तर्भावितण्यर्थत्वात् वृद्धि नयति। *उत्त॰ ३१३।*

सुहम्म– वद्धमाणसामिस्स सिस्सो। *निशी॰ २४३ अ।* सुधर्मः-मृगग्रामनगरे चन्दनपादपोद्याने यक्षविशेषः। *विपा॰ ३५।* सुधर्मः-वणिग्ग्रामे दूवीपलाशचैत्ये यक्षविशेषः। *विपा॰ ४५।* सुधर्मः पञ्चमगणधरः। *आव॰ २४०।* द्वादशमतीर्थकृ-त्प्रथमशिष्यः। *सम॰ १५२।* सुधर्मे नाम समे, सुधर्मा शब्दार्थः सुष्ठु-शोभनो धर्मो-देवानां माणवकस्तम्भवर्तिजि-नसक्थ्याशातनाभीरुकत्वेन देवाङ्गनाभोगविरतिपरिणामरूवो यस्यां सा तथा, वस्तुतस्तु सुष्ठु-शोभनो धर्म्मो-राजधर्मः समन्तुनिर्मन्तुनिग्रहानुग्रहस्वरूपो यस्यां सा। *जम्बू॰ ३२२।*

सुहम्मसामि– गणहरो। *निशी॰ ३७ अ।*

सुहम्मा– सुधर्मकल्पे-सभा। *ज्ञाता० १३५*। कृष्णस्य सभा। *ज्ञाता० २०८*। सौधर्मकल्पे सभा। *ज्ञाता० १७८*। सुधर्मा। *राज० ९२*। इशाने कृष्णावतंसके सभा। *ज्ञाता० २५३*। सौधर्मकल्पे सभा। *ज्ञाता० २५७*।

सुहरिए– सुहृत-मित्रमेव सकलकालमव्यभिचारि हितोपदेश-दायि च। *जीवा० २८१*।

सुहलेसा– सुखलेश्याः। *सूर्य० २८१*।

सुहल्लियं– मुखगतम्। *भक्त०*।

सुहविमोयतर– सुखविमोच्यतरकः-सुखं विमोच्यते-त्यज्यते यः स सुखविमोच्यतरकः, अत्यन्तं सुखेनैव विमुञ्चति यो देहिनं स सुखविमोच्यतरकः। *स्था० ४७*।

सुहविहार– सुखविहारः-अवस्थानशयनादिरूपः। *जीवा० २६९*।

सुहवेयतर– सुखापेयः-सुखापनेयः सुखापेयतरः। *स्था० ४७*।

सुहवेयतरय– सुखवैद्यतरकः-मोहजनितग्रहापेक्षयाऽकृच्छ्रानु-भवनीयतरः। *स्था० ४७*।

सुहसंगतायंति– सुखसङ्गत्यागे। महाप०।

सुहसाइ– सुखशायि-मनोविघाताभावान्निराकुलतर्याऽऽस्त-इति। *उत्त० ५८६*।

सुहसाए– सुखशायः-सुखेन शयनं, यदि वा सुखाशातः-सुखस्य शातनम्। *उत्त० ५८६*।

सुहसायग– सुखास्वादकः-अभिष्वङ्गेण प्राप्तसुखभौक्ता। *दशवै० १६०*।

सुहसाया– सुख-वैषयिकं शातयति-तद्गमनस्पृहानिवारणे-नापनयतीति सुखशातस्तस्य भावः सुखशातता। *उत्त० ५८६*।

सुहसीलजण– सुखशीलजनः-पार्श्वस्थजनः। *आव० ५३९*। पासत्थादी। *निशी० १६०* आ।

सुहसीलय– सुखशीलता। *मरण०*।

सुहसोलवियन्ना– सुहे सीलं-व्यक्तं येषां ते, मोक्खसुहे सीलं जं तंमि विगतो आया जेसिं ते। *निशी० ८०* आ।

सुहा– सुखा-शुभा। *भग० ५४३*।

सुहाए– सुखाय शर्म्मणे। *भग० ४५९*।

सुहाकम्मंत– सुधाकर्मान्ता-यत्र सुधापरिकर्म क्रियते। *आचा० ३६६*।

सुहावह– सीतानद्याः दक्षिणे वक्षस्कारः। *ज्ञाता० १२१*। वक्ष-स्कारः। *जम्बू० ३५७*। सीतोदानद्याः पञ्चमवक्षस्कारः। *स्था० ३२६*।

सुहि– सुहृद्-मित्रम्। *ज्ञाता० ८८*। सुहृद्। *उत्त० ४७३*।

सुहिरण्णया– सुहिरण्यका-वनस्पतिविशेषः। *राज० ३३*। सुहिरण्यिका-वनस्पतिविशेषः। *जम्बू० ३४*।

सुहिरन्नियाकुसुम– सुहिरण्यिकाकुसुमं-सुहिरण्यिकावनस्प-तिविशेषः तस्याः कुसुमम्। *प्रज्ञा० ३६१*।

सुही– सुहृत्-सज्जनो हितैषी। *स्था० २४५*। *निशी० १९४* आ।

सुहोइ– सुहृद्-मित्रमेव सकलकालमव्यभिचारि हितोपदेशदायि च। *जम्बू० १२३*।

सुहुम– सूक्ष्मः-लोभकिट्टिकारूपः। *स्था० ३२४*। सूक्ष्माणि-श्लक्ष्णत्वादल्पधारतया च सूक्ष्मः। *स्था० ४३०*। सूक्ष्मः-मन्दः-वस्तुचलनासमर्थः। *स्था० ३८५*। किट्टीकरणतः सूक्ष्मः। *उत्त० ५६८*। सूक्ष्मनामकर्मोदयात् सूक्ष्मः। *आव० २९*। वालग्राणां सूक्ष्मखण्डकरणात् सूक्ष्मम्। *अनुयो० १८१*। सूक्ष्मः-प्रायश्चेतोविकारकारित्वेनान्तरः। *सूत्र० ८४*। सूक्ष्मः –चक्षुरादीन्द्रियपथमतिक्रान्तः। *प्रज्ञा० ३०३*। सूक्ष्मः-अतीन्द्रियः। *प्रज्ञा० ४७४*। सूक्ष्मं-श्लक्ष्णः। *जीवा० २३४*। सूक्ष्मं-सुक्ष्मकायिकम्। *दशवै० १७*। भरते आगामिन्यामुत्स-र्पिण्यां षष्ठः कुलकरः। *स्था० ३९८*। *सम० १५३*। सूक्ष्मः –सारः। *जीवा० २४४*। सूक्ष्मं-ध्यानविशेषम्। *आव० ७२२*। सूक्ष्मं-मृदुलघुस्पर्शम्, अच्छमिति। *प्रज्ञा० ९१*। सूक्ष्ममेव वाऽतिचारमालोचयति यः स। *स्था० ४८४*। सूक्ष्मं –अल्पम्। *दशवै० १४५*। सूक्ष्मम्। *बृह० २६२* आ। सूक्ष्मम्। *भग० १८४*। सूक्ष्ममेवातिचारजातमालोचयति आलोचनायां षष्ठदोषः। *भग० ९१९*। सूक्ष्मं-स्नेह सूक्ष्म-पुष्पसूक्ष्मादिकमष्टविधम्। *दशवै० २२९*। सूक्ष्मसम्परायः-भूतग्रामस्य दशमं गुणस्थानम्। लोभाणून् वेदयन् सूक्ष्मो भण्यते। *आव० ६५०*।

सुहुमकाइअ– सूक्ष्मकायिकम्। *दशवै० १०३*। सूक्ष्मकायिकम्। *दशवै० ४३*।

सुहुमकाय– सूक्ष्मकाय हस्तादिकं वस्तुम् वस्त्रम्। *भग० ७०१*।

सुहुमकिरिए– निर्वाणगमनकाले केवलिनो निरुद्धमनोवाग्यो-गस्यार्द्धनिरुद्धकाययोगस्यैतद्। अतः-सूक्ष्मा क्रिया कायिकी उच्छ्वासादिका यस्मिंस्तत्तथा। *स्था॰ १९१।*

सुहुमकिरिए अप्पडिवाइ– सूक्ष्मा क्रिया यत्र निरुद्धवाङ्मनोयो-गत्वे सत्यर्द्धनिरुद्धकाययोगत्वात् ततः सूक्ष्मक्रियम्, अप्रति-पाति-अप्रतिपतनशीलं प्रवर्धमानपरिणामत्वात्, एतच्च निर्वाणगमनकाले केवलिन एव स्यादिति। *औप॰ ४४।*

सुहुमकिरियं– सूक्ष्मक्रिया। *आव॰ २२७।*

सुहमणिगोए– सूक्ष्मनिगोदः-प्रत्येकमनन्तानां जीवानामाधा-रभूता शरीररूपाः। *जीवा॰ ४१४।*

सुहुमनाम– सूक्ष्मनाम-बहूनां समुदाये चक्षुषाऽग्रहणं भवति तत्सूक्ष्मनाम। *प्रज्ञा॰ ४७४।*

सुहुमवणस्सइ– सूक्ष्मवनस्पतिः-निगोदा एव। *जीवा॰ ४१४।*

सुहुमसंपराय– संपर्येति एभिः संसारमिति सम्परायः-कषायः सूक्ष्माः लोभांशविशेषत्वात्, सम्पराया यत्र तत् सूक्ष्मसंप-रायम्। *आव॰ ७१।* सूक्ष्मो लोभांशावशेषः संपरायः- कषा-योदयो यत्र तत्सूक्ष्मसंपरायम्। *प्रज्ञा॰ ६८।* सूक्ष्मः-असङ्-ख्यातकिट्टिकावेदनतः सम्परायः-कषायः स च लोभकषा-यरूपः उपशमकस्य क्षपकस्य वा यस्य स सूक्ष्मसम्परायः। *स्था॰ ५३।* सूक्ष्मः-लोभकिट्टिकारूपाः सम्परायाः-कषाया यत्र तत् सूक्ष्मसम्परायम्। *स्था॰ ३२४।*

सुहुमा– सूक्ष्मा-अत्यन्तदुःखावबोधसूक्ष्मव्यवहितार्थपरिच्छे-दसमर्थाः। *आव॰ ४१४।* सूक्ष्मा-पतला। *जम्बू॰ ५२७।* सूक्ष्मा-कुशाग्रीया। *आचा॰ ३८८।*

सुहुमुत्तरआयामा– सूक्ष्मोत्तरायामा-गान्धारस्वरस्य षष्ठी मूर्च्छना। *जीवा॰ १९३।*

सुहोइय– सुखोचितं-सुभाचितम्। *उत्त॰ ४७२।*

सुहाचिओ– सुखोचितः-राजपुत्रादिः। *पिण्ड॰ १७३।*

सुहोदए– शुभोदकः, तीर्थोदकः, सुखोदकः-नात्युष्णाना-तिशातः। *जम्बू॰ १८९।*

सुहोरासी– सुखराशिः सुखसङ्घातः। *आव॰ ४४६।*

सुइ– ताडपत्रसूच्यादिखुंपको वस्त्रसीवनी वा। *बृह॰ २५३ अ।* सूचिः। *आव॰ ६५१।*

सुइअ– सूचित-व्यञ्जनादियुक्तम्। *दशवै॰ १८१।* सूता-अभिनवप्रसूता। *दशवै॰ १६६।*

सूइओ– सूचितः-तिरस्कृतः। *बृह॰ २२अ।*

सुइमुह– यत्र प्रदेशे सूचीफलकं भित्त्वा मध्ये प्रविशति तत्प्र-त्यासन्नो देशः सूचीमुखम्। *जीवा॰ १८२। निशी॰ १८आ।*

सूइयं– दध्यादिना भक्तमार्द्रीकृतम्। *आचा॰ ३१५।*

सूइयानेवत्था– प्रसूतिनेपत्थ्या। *आव॰ २१३।*

सूई– सूचिः-एकप्रादेशिकी श्रेणिः। *प्रज्ञा॰ २७५।* सूची-लोहमयीवस्त्रसीवनिका। *पिण्ड॰ १७।* सूचिः-फलकद्वय-सम्बन्धविघटनाभावहेतुपादुकास्थानीया नानामणिमया। *जीवा॰ १८०, १९८। आव॰ ७९८।* फलकसम्बन्धविघ-टनाभावहेतुपादुकास्थानीया तेषामपरि इति तात्पर्यार्थः। *जम्बू॰ २५।*

सूईअंगुल– दैर्ध्येणाङ्गुलायता बाहल्यतस्त्वेकप्रादेशिकीनभः-प्रदेशश्रेणिः सुच्च्यङ्गुलम्। *अनुयो॰ १५८।*

सूईओ– सूचयः-फलकद्वयस्थिरसम्बन्धकारिपादुकास्था-नीया। *जम्बू॰ २३।*

सूईतल– सूचीतलं-उर्द्ध्वमुखशूचीकम्। *प्रश्न॰ २०।*

सूईपुडंतर– सूचीपुटान्तरं-द्वे सूच्यौ सूचीपुटं तेषामन्तरम् । *जीवा॰ १८२।* द्वौ सूच्यो सूचीपुटं तेषामन्तरम्। *जम्बू॰ २६।*

सूईफलए– सूचीभिः-सम्बन्धिता ये फलकप्रदेशास्तेऽप्यु-पचारात् सूचीफलकः, सूचीनामध उपरि च वर्तमानः। *जम्बू॰ २५।*

सुईफलय– सूचीभिः सम्बन्धितो यो फलकप्रदेशः सोऽप्यु-पचारात् सूचीफलकः। *जीवा॰ १८२।*

सूईमुह– सूचीमुखः-द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३१।* यत्र प्रदेशे सूचीफलकं भित्त्वा मध्ये प्रविशति तत्प्रत्यासन्नो देशः सूचीमुखम्। *जम्बू॰ २५।*

सूईवूह– सूचीव्यूहः-सैन्यविन्यासविशेषः। *प्रश्न॰ ४७।*

सूएमो– सूचयामः-लक्षयामः। *पिण्ड॰ १२३।*

सूकरोत्कीर्ण– एतादृशो भूप्रदेशः। *ओघ॰ ५४।*

सूक्ष्मक्रियमप्रतिपाति– ध्यानविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६०८।*

सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यान– त्रिभागोनप्रदेशसङ्कोचकम्। *प्रज्ञा॰ १०९।*

सूक्ष्मक्रियाऽनिवृत्तिध्यान– शुक्लध्यानतृतीयः पादः। *आव॰ ४४१।*

सूक्ष्मक्रियानिवृत्तिः– प्रधानशुक्लध्यानभेदः, सयोगकेवली-ध्याता इति योगः। *आव॰ ६०३।*

सूक्ष्मक्षेत्रपल्योपम– क्षेत्रपल्योपमे भेदविशेषः। *स्था॰ ९१।*

सूक्ष्ममत्स्य– मत्स्यविशेषः। *प्रश्न॰ ९।*

सूक्ष्ममुद्धारपल्योपम– उद्धारपल्योपमे भेदविशेषः। *स्था॰ ९१।*

सूक्ष्मसंपराय– लोभाशमात्रावशेषतया सूक्ष्मः संपरायो यत्र तत्। *अनुयो॰ २२२।*

सूचा– परं दोषेण सूचयति स्पष्टमेव दोषं भाषतीत्यर्थः। *निशी॰ २७७* आ। स्वव्यपदेशः। *बृह॰ १२८* अ।

सूचीकलाप– तैजसकायिकानां संस्थानम्। *प्रज्ञा॰ ४११।*

सूचीकलाव– सूचीकलापः। *जीवा॰ १०७।*

सूचीकुसग्गसंवर– अयं चौघिकोपकरणापेक्षः, तथा शूच्याः कुशाग्राणां च शरीरोपघातकत्वाद्यत्संवरणं-सङ्गोपनं स शुचीकुशाग्रसंवरः। *स्था॰ ४७३।*

सूच्याजीवी– तुन्नाकः। *प्रज्ञा॰ ५८।*

सूण– शूनः-लघुप्रकृतिः। *सूत्र॰ १८०।*

सूणा– घातस्थानम्। *निर॰ ११।* चुल्लन्यादयः। *गच्छा॰।*

सूणीय– शूनत्वं-श्वयथुर्वातपित्तश्लेष्मसन्निपातरक्ताभिघात-जोऽयं रोगः। *आचा॰ २३३।*

सूत– सूतः। *आव॰ ८१९।* सूदः। *आव॰ ३६६।*

सूती– शूचिः-भावशौचरूपा, अहिंसायाः षट्पञ्चाशत्तमं नाम। *प्रश्न॰ ९९। निशी॰ १७२* अ।

सूत्तकप्पिओ– आवश्यकादिं कृत्वा यावदाचारः तावत्सर्व्वोऽ–पिसूत्रकल्पिकः। *बृह॰ ६२* आ।

सूत्र– दृष्टिवादांशः। *उत्त॰ ५६५।* आगमः। *आव॰ ६०४।*

सूत्रकमुच्ची– भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८।*

सूत्रयति– अभ्युपगच्छति। *अनुयो॰ १८।* गमयति। *आव॰ २८४।*

सूत्रवलनक– वर्त्तम्। *जीवा॰ २७०।*

सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति– निर्युक्त्यनुगमे तृतीयो भेदः। *स्था॰ ६।*

सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगम– सूत्रावयवानां साक्षेपपरिहारमर्थ-कथनम्। *आचा॰ ३।*

सूत्रस्य उद्देशनाचार्यः– आचार्यस्य तृतीयो भेदः। *स्था॰ २९९।*

सूत्रानुगम– अनुगमे द्वितीयो भेदः। *स्था॰ ६।* अनुगमे भेदः। *जम्बू॰ ९।*

सूत्रालापक– सूत्रपदः। *स्था॰ ६।*

सूत्रालापकनिष्पन्न– निक्षेपे तृतीयो भेदः। *आव॰ ५८।*

सूप– सूपः-मुद्गादिविकारः। *प्रश्न॰ १५३।* सूपः। *उत्त॰ ६१।*

सूपपुरुषः– सूपकारः पुरुषः। *जीवा॰ २६८।*

सूप्प– सूर्पः। *आचा॰ ३४५।*

सूय– सूदम्। *आव॰ २१७।* सूतः-ब्राह्मणस्त्रीक्षत्रियाभ्यां जातः। *आचा॰ ८।* अष्टादशव्यञ्जनभेदे प्रथमः। *सूर्य॰ २९३।*

सूयक– सूचकः-पिशुनः। *प्रश्न॰ ३०।*

सूयगड– स्वपरसमयसूचनं कृतमनेनेति सूत्रकृतः। *सूत्र॰ २।* सूत्रकृत्-निर्युक्त्यां पञ्चम आगमः। *आव॰ ६१।*

सूयगपारायणं– संहिता। *व्यव॰ २५६।*

सूयगा– सूचकाः-सामन्तराज्येषु गत्वा अन्तपुरपालकैः मैत्री-कृत्वा यत्तत्र रहस्यं तत्सर्वं जानन्ति। *व्यव॰ १७०* आ।

सूयय– सूचकः-राजपुरुषविशेषः। *बृह॰ ७३* आ।

सूयर– सूकरः-गर्त्तासूकरः। *उत्त॰ ४५।*

सूयरजाइयं– सूकरजातिकं, चतुष्पदजातिविशेषः। *आचा॰ ३४०।*

सूयलि– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५।*

सूया– सूचाः-पचनभङ्गिविशेषः। *पिण्ड॰ १२८।* सूचाव्याजः। *स्था॰ ३०४।* परगतासूया। *निशी॰ २७८* अ। य अप्पणो परस्पर फुडमेव दोसं भासति एसा। *निशी॰ २७८* अ। श्रुवः-घृतादिप्रक्षेपिका दर्व्यः। *उत्त॰ ३७२।*

सूयीमुह– सूचीमुखः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

सूर– सूरः-शूरमन्यः सुभटः। *सूत्र॰ ८०।* सूर्यः-भूषणविधि-विशेषः। *जीवा॰ २६९।* सूर्यः-ज्योतिष्कभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६९।* सूरो-वक्षस्कारपर्वतः। *जम्बू॰ ३५७।* सूरः-कुन्थु-नाथपिता। *आव॰ १६१।* अष्टादशमतीर्थकृत्पिता। *सम॰ १५१।* सप्तमचक्रवर्त्तेः पिता, षष्ठमचक्री। *सम॰ १५२।*

पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*। शूरः-निर्भयः। *व्यव॰ २३० अ*।

सूर्य– द्वीपविशेषः। समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३६९*। निर्भयः-स च कुतश्चिदपि न भयमुपगच्छति। *व्यव॰ २८३ आ*। शूरः-पराक्रमवान् योधो वा। *उत्त॰ ९१*। शूरः-अत्यन्तसाहस-धनः। *प्रश्न॰ १३३*। शूरः-चारभटः। *प्रश्न॰ १६*। शूरः-चौरचारभटादिभिरनभिभवनीयः। *बृह॰ ३१० अ*। सोम-स्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्ती देवः। *भग॰ १९५*। शूरः-चारभटः। *उत्त॰ ३४९*। विमानविशेषः। *ज्ञाता॰ २५२*। निरयावल्यां तृतीयवर्गे द्वितीयममध्ययनम्। निरया॰ *२१*। *२९*। सूरो-विक्रमी। *ज्ञाता॰ ३३६*। सूरः-द्रहनाम। *जम्बू॰ ३५५*। सूरः-ह्रदनाम। *जम्बू॰ ३०८*।

सूरकंत– सूर्यकान्तः-खरबादरपृथिवीकायः। *प्रज्ञा॰ २७*। पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*। सूरकान्तः-मणिभेदः। *उत्त॰ ६८९*। सूरकान्तः-पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९*।

सूरकंतमणिणिस्सए– सूर्यकान्तमणिनिसृतः-सूर्यखरकिरण-सम्पर्के सूर्यकान्तमणेर्यः समुजायते तत्बादरतेजस्कायः। *प्रज्ञा॰ २९*।

सूरकूड– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरज्झय– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरण– कन्दः। *दशवै॰ १६७*। कन्दविशेषः। *आचा॰ ३०*।

सूरणए– सूरणकं-कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१*।

सूरणकंद– अनन्तकायभेदः। *भग॰ ३००*। सूरणकन्दः-वनस्पतिविशेषः। *जीवा॰ २७*। सूरणकन्दः-साधारणबादर-वनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

सूरदह– देवकुरौ तृतीयो महाह्रदः। *स्था॰ ३२६*।

सूरदेव– भरते आगामिन्यां द्वितीयतीर्थकृत्। *सम॰ १५३*।

सूरपव्वत– सीतोदानद्यौ द्वितीयो वक्षस्कारः। *स्था॰ ३२६*।

सूरप्पडिही– सूर्यप्रतिधिः-सूर्यप्रतिधानं सूर्यनिवेश इति। *सूर्य॰ ९५*।

सूरप्पभ– सूर्यविमाने सिंहासनम्। *ज्ञाता॰ २५२*। अरक्षुरी-नगर्यां गाथापतिः। *ज्ञाता॰ २५२*।

पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरप्पभा– सूर्यस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४*। सूर्यप्रभा-सूर्यस्य ज्योतिषिन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी। *जीवा॰ ३८५*। धर्मकथायां सप्तमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२*। जोतिषचक्रे तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०५*। सूरप्रभसूर श्रीयोः पुत्री। *ज्ञाता॰ २५२*।

सूरप्पमाणभोई– सूरप्रमाणभोजी-सूर्योदयादस्तमयं यावदश-नपानाद्यभ्यवहारी। *सम॰ ३७*।

सूरप्पमाणभोती– यः सूर्योदयमात्रादारब्धो यावत् नास्तमेति तावत् भुनक्ति सूर्यप्रमाणभोजी, एकोनविंशतितममसमाधि-स्थानम्। *आव॰ ६५३*।

सूरप्पह– एकादशमतीर्थकृत् शीबिका। *सम॰ १५१*।

सूरप्रमाणभोजित्वं– उदयादस्तमयं यावद् भोक्तृत्वम्, एकोन-विंशतितममसमाधिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४*।

सूरमंडल– सूरमण्डलः-आदित्यविमानवृत्तः। *सम॰ २६*।

सूरमल्लि– सूरुल्लि-वनस्पतिविशेषः। *राज॰ ८०*।

सूरमालिआ– सूर्यमालिका-दीनाराद्याकृतिमणिकमाला। *जम्बू॰ १०६*।

सूरलेस– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरवण्ण– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरसिंग– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरसिट्ठ– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०*।

सूरसिरी– सूरप्रभगाथापतेभार्या। *ज्ञाता॰ २५२*। सप्तमचक्र-वर्तेः स्त्रीरत्नम्। *सम॰ १५२*।

सूरसेण– सूरसेनः-जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*। ऐरवते आगामिन्यां तीर्थकृत्। *सम॰ १५४*।

सूरहग– सूरदकः-शुरदकः कलहादिकुर्वतां शिक्षां कर्तुं समर्थः। *बृह॰ २९३ अ*।

सूराइय– सूरादिकः-सूरकारणः। *सूर्य॰ २९२*।

सूराभ– अष्टसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १४*। षष्ठमलोकान्तिकविमानः। *स्था॰ ४३२*। सूर्याभं-षष्ठम-लोकान्तिकविमानम्। *भग॰ २७१*।

सूरामि– सृजामि-त्यजामि। *दशवै॰ १४४*।

सूरावत्त– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०।*

सूरिआवत्त– सूर्यरुपलक्षणमेतत्तत्र चन्द्रादयश्च प्रदक्षिणामावर्त-न्ति यस्य स सूर्यावर्त्तः-मेरुनाम। *जम्बू॰ ३७५।*

सूरिआवरण– सूर्यैरुपलक्षणमेतत् चन्द्रग्रहनक्षत्रादिभिश्चस-मन्ताद् भ्रमणशीलैराव्रियते सम वेष्ट्यते स्मेति सूर्यावरणः-मेरुनाम। *जम्बू॰ ३७५।*

सूरिउऊ– सूर्यर्त्तुः। *सूर्य॰ २०९।*

सूरिय– सूर्यशब्दार्थस्तथाहि सूरेभ्यः क्षमातपोदानसङ्ग्रामादि-वीरेभ्यो हितः सूरेषु वा साधुः सूर्यः। *भग॰ ६५६।*

सूरियउवराग– सूर्योपरागः-सूर्यग्रहणम्। *जीवा॰ २८३।*

सूरियकंत– शिवराजर्ष्यधिकारे अतिदेशः। *भग॰ ५१४।* प्रदे-शिसूर्यकान्तयोः कुमारः। *राज॰ ११५।*

सूरियकंता– सूर्यकान्ता प्रदेशिनो राज्ञी। *राज॰ ११५।*

सूरियगताइं– सूर्येण गतानि-चीर्णानि स्वचीर्णानि। *सूर्य॰ २१।*

सूरियपण्णत्ती– सूर्यप्रज्ञप्तिः-निर्युक्त्यां नवमसूत्रम्। *आव॰ ६१।*

सूरियपन्नत्ती– सूर्यचर्यायाः प्रज्ञपनं यस्यां ग्रन्थपद्धतौ सा सूर्यप्रज्ञप्तिः। *नन्दी॰ २०५।*

सूरियपरिवेस– सूर्यपरिवेषः-सूर्यस्य परितो वलयाकारपरि-णतिरूपः। *जीवा॰ २८३।*

सूरियभद्द– सूर्यभद्रः-सूर्ये द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियमत– सूर्येण पूर्वं निष्क्रमणकाले अतीकृतम्। *सूर्य॰ २३।*

सूरियमहाभद्द– सूर्यमहाभद्रः-सूर्ये द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियमहावर– सूर्यमहावरः-सूर्यसमुद्रे सूर्यवरे समुद्रे चाऽपरा-र्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ २६९।*

सूरियवर– सूर्यवरः-द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३६९।* सूर्यवरः-सूर्ये समुद्रे सूर्यवरे समुद्रे च पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरभद्द– सूर्यवरभद्रः-सूर्यवरभद्रः-सूर्यवरे द्वीपे पूर्वार्द्धा-धिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरमहाभद्द– सूर्यवरमहाभद्रः-सूर्यवरे द्वीपेऽपरार्द्धापति-र्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरावभास– सूर्यवरावभासः-द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरावभासभद्द– सूर्यवरावभासभद्रः-सूर्यवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरावभासमहाभद्द– सूर्यवरावभासमहाभद्रः-सूर्यवराव-भासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरावभासमहावर– सूर्यवरावभासमहावरः-सूर्यवराव-भासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियवरावभासवर– सूर्यवरावभासवरः-सूर्यवरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाऽधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६९।*

सूरियाभ– भगवत्यां जमाल्यधिकारे सूरियाभातिदेशः। *भग॰ ४७३।* निरयावल्यां तृतीयवर्गेऽतिदेशः। *निर॰ २१।*

सूरियाभवेव– राजप्रश्नीये निर्दिष्टा सूरियाभदेववक्तव्यता। *भग॰ १६२।*

सूरियाभविमाणं– सूरियामविमानम्। *भग॰ १९५।*

सूरियावत्त– सूर्य उपलक्षणमेतत् चन्द्रग्रहनक्षत्रतारकाश्च प्रद-क्षिणमावर्त्तन्ते यस्य स सूर्यावर्त्तः। *सूर्य॰ ७८।*

सूरियावरण– सूर्येरुपलक्षणमेतत् चन्द्रग्रहनक्षत्रतारकाभिश्च समन्ततः परिभ्रमणशीलैराव्रियते स्म-वेष्ट्यते सूर्यावरणः। *सूर्य॰ ७८।*

सूरिल्लि– सूरिल्लिः-वनस्पतिविशेषः। *जीवा॰ २००।* सूरिल्लिः –वनस्पतिविशेषः। *जम्बू॰ ४५।*

सूरुत्तरवडिंसग– पञ्चसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *सम॰ १०।*

सूरोदय– सूर्योदयः-चन्द्राननापूर्या चन्द्रावतंसराज्ञ उद्यानम्। *पिण्ड॰ ७६।*

सूरोवराए– सूरोपरागः-सूर्यविमानस्योपरागो-राहुविमानतेज-सोपरञ्जनं ग्रहणम्। *स्था॰ ४७६।*

सूरोवराग– सूर्यग्रहणम्। *भग॰ १९६।*

सूर्यकान्त– मणिविशेषः। *जीवा॰ २३।*

सूर्यमासः– सार्धत्रिंशदहोरात्रः। *सूर्य॰ १०।*

सूर्यागमनप्रविभक्ति– सप्तमनाट्यभेदः। *जम्बू॰ ४१६।*

सूर्याभदेव– येन वर्द्धमानस्वामिगुरतो

द्वात्रिंशन्नाट्यविधयो भाविताः। *जीवा॰ २४६।*

सूर्यावसिप्रविभक्तिः– पञ्चमनाट्ये भेदः। *जम्बू॰ ४१६।*

सूल– शूलं-शस्त्रविशेषः। *आव॰ ६५१।* शूलम्। *जम्बू॰ २०६।* शूलं-एकशूलम्। *जम्बू॰ २६६।* शूलम्। *जीवा॰ ११७।* शूलम्। *आव॰ ५८५।* शूलं-एकशूलम्। *औप॰ ७१। निशी॰ १४८* अ। शूलम्। *आव॰ ५१३।*

सूलग्ग– शूलाग्रम्। *जीवा॰ १०६।*

सूलपाणो– शूलपाणिः-यक्षविशेषः। *आव॰ १९०।* शूलपाणिः। *जीवा॰ ३९१।*

सूलाइतयं– शूलिकाभिन्नम्। *ज्ञाता॰ १६३।*

सुलाइत्त– सूलायमानः। *ज्ञाता॰ १५९।*

सूलाइय– शूलाप्रोतः। *ज्ञाता॰ १५७।* शूलायितः-आचरित-शूलारूपः। *ज्ञाता॰ १५७।* शूलायामतिशयेन गत शूलाति-गम्। *राज॰ १३४।*

सूलाइयग– शूलाचितकः-शूलिकाप्रोतः। *औप॰ ८७।*

सूलिय– शूलकः-कीलकविशेषः। *प्रश्न॰ ८।*

सूलिया– शूलिका-वध्यप्रोतनकाष्ठम्। *प्रश्न॰ ८।*

सूव– सूपम्। *ओघ॰ २१५।* सूपः-पत्रशाकः। *सूत्र॰ ११७।* सूपः-राद्धमुद्गदाल्यादिः। *पिण्ड॰ १६८।*

सूवकारा– श्रेणिविशेषः। *जम्बू॰ १९३।*

सूवपुरिस– सूपपुरुषः-सूपकारः। *जम्बू॰ १०५।*

सूवियग– पायसो। *दशवै॰ ७५।*

सूवोदण– सूप ओदनश्च सूपोदनः। *ओघ॰ २१५।*

सूसमदुसमा– तृतीयारकः। *स्था॰ ७६।*

सूसरनाम– यदुदयवशात् जीवस्य स्वरः श्रोतृणां प्रीतिहेतु-रूपजायते तत् सुस्वरनाम। *प्रज्ञा॰ ४७४।*

सूसरपरिवादिणि– सूसरपरिवादिनी-वीणाविशेषः। *प्रश्न॰ १५९।*

सूसुमा– रागतो चिलातिपुत्रेण वर्धिता। *व्यव॰ १२* अ।

सेंधणा– ग्रहणम्। *निशी॰ ९८* अ।

सेंधव– सिंधवलोणपव्वए लोणं। *दशवै॰ ५१।*

सेंवली– सिंगा। *दशवै॰ ८१।*

से– त्वाम्। *आचा॰ ४४।* स-कश्चित्-अथार्थो वा वाक्यो-पक्षेपे। *स्था॰ २४७।* तत्शब्दार्थे। *आचा॰ २३४।* असौ। *भग॰ ५४२।* निद्देसे। *दशवै॰ ६५। ११८३।* असौ। *आव॰ २१४।* तत्। *प्रज्ञा॰ ५९१।* सेशब्दोऽथशब्दार्थः। *दशवै॰ १४१।* सेशब्दः मागधदेशीप्रसिद्धः अथशब्दार्थः। *दशवै॰ १४५।* तस्य। *दशवै॰ १५६।* असौ-परिप्रश्नार्थः। *भग॰ ३११।* बहुवचनार्थः ते। *जम्बू॰ ३५।* तत्। *भग॰ १४।* तस्य। *आव॰ ४३८।* अथ-वाक्योपन्या-सार्थः परिप्रश्नार्थो वा। *भग॰ १४।* तस्य। *अनुयो॰ २५६।* सोऽथशब्दार्थो वा। *उत्त॰ २८४।* तच्छब्दार्थे। *आचा॰ ३८।* सेशब्दोऽथशब्दार्थः। *प्रज्ञा॰ ८।* तस्यै। *आव॰ ४२०।* सेशब्दो मागधदेशीप्रसिद्धो निपातः तत्रशब्दार्थे, अथवा अयशब्दार्थे, स च वाक्योपन्यासार्थः। *प्रज्ञा॰ ७।* सेशब्दोऽथार्थः। *स्था॰ ४९५।* एषाम्। *भग॰ १७४।* तस्य। *भग॰ ९३।* अथशब्दार्थेऽप्रश्नार्थश्च। *प्रज्ञा॰ ६०१।* प्रतिवचनवाचि-नोऽथशब्दार्थस्यार्थे। *उत्त॰ १२६।* स-सावशेषकुशलकर्मा तेषाम्। *उत्त॰ १८७।* अथः। *प्रज्ञा॰ २४६।* मगधदेशप्रसिद्धो निपातोऽथशब्दार्थे, अथ शब्दश्च प्रक्रियाद्यर्थाभिधायी "अथ प्रक्रियाप्रश्नान्तर्यमङ्गलोपन्या-सप्रतिवचनसमुच्ययेषु"। *जीवा॰ ४।* सेशब्दः मागधदेशी-प्रसिद्धो निपातस्तच्छब्दार्थः। *आव॰ ८२२।* तस्यारम्भा-सोर्यः। *आचा॰ १३०।* तस्य। *आव॰ १२८।* से तस्यतदी-यस्य। *ज्ञाता॰ १०२।*

सेअंस– श्रेयांस-पञ्चमो लोकोत्तरमासः। *जम्बू॰ ४९०।*

सेअ– स्वेदः। *आव॰ ८४५।*

सेअमाला– श्वेतमाला-द्रुमजातिविशेषः। *जम्बू॰ ९८।*

सेअवड– श्वेतपटः-श्वेताम्बरः साधुः। *दशवै॰ ४७।*

सेअवि– श्वेतवी-भारद्वाजब्राह्मणोत्पत्तिनगरी। *आव॰ १७२।*

सेइंगाला– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२।*

सेइआ– द्वे प्रमृति सेतिका। मगधदेशप्रसिद्धो मानविशेषः। *जम्बू॰ २४४।*

सेइया– द्वे प्रसृती सेविका। *ज्ञाता॰ ११९।* सेतिका। *आव॰ ६९२।*

सेउ– सेतूः-तदभिज्ञानभूतः पाली तन्मार्गो वा। *स्था॰ २९४।* अरहट्टजलेन सिच्यते तत्शेतुः। *बृह॰ ५०* अ। सेतुं-मार्गमपङ्गतानां निस्तरणोपायः। *स्था॰ ४६२।* कद्दम-बहुलं पाणीयं। *निशी॰ १९२* अ। सेतुः-मार्गः। *औप॰ २।* सेदुः-कुल्याजलसेकक्षेत्रम्। *औप॰ २।* सेतुः पालि-बन्धः। *औप॰ ८।* सेतुः-मार्गः, आलवालपाली वा। *जीवा॰ १८९। औप॰ ८।* सेतुः-मार्गः आलवालपाली वा। *जम्बू॰ ३०।*

सेतुः-अरहट्टादिना सिंच्यमानं यन्निष्पद्यते तत्सेतु क्षेत्रम्। *बृह॰ १३८* आ। सेतुः-मार्गः-आलवालपालिर्वा। *राज॰ ७*।

सेउसीमा– सेतुसीमा। *राज॰ २*।

सेए– सैजः-सकम्पः। *भग॰ २३५*। सेकः। *आचा॰ ४१*। ज्वरविसूचिकादीनां स्वेदः। *आचा॰ ५०*। श्रेयान्-द्वितीय-मुहूर्त्तनाम। *जम्बू॰ ४९१*। कुहन्डेद्रः। *स्था॰ ८५*। श्वेतः-दाक्षिणात्यकोहण्डव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ९८*।

सेओ– सीयन्ते-अवबध्यन्ते यस्मिन्नसौ कर्दमः सेयः। *सूत्र॰ २७२*। श्वेतो नाम राजा। *राज॰ ९*। सेकः। *उत्त॰ १९३*। खद्धम्। *ओघ॰ १२१*। पङ्कः-पनको वा सजलो यत्र निम-ज्ज्यते स सेकः। *स्था॰ ३२८*।

सेकाल– एष्यत्कालः। *प्रज्ञा॰ ५०३*।

सेचनक– हल्लविहल्लयोर्गन्धहस्ती। *भग॰ ३१६*।

सेचनपथ– नीकादि। *आचा॰ ४११*।

सेज्जंत– प्रातिवेश्मिकागृहम्। *व्यव॰ २५७* आ।

सेज्जंभव– शय्यम्भवः-दशवैकालिकसूत्ररचयिता। *दशवै॰ १९९*। *निशी॰ २४३* अ।

सेज्जंस– श्रेयांसः-शास्त्रीयपञ्चममासनाम। *सूर्य॰ १५३*। श्रेयांसः-एकादशो जिनः। *सम॰ ८*। श्रेयांसः-सोमप्रभपुत्रः बाहुबलिपौत्रः। *आव॰ १४५*।

सेज्जा– शय्या-त्यग्वर्तनम्। *ज्ञाता॰ २०५*। शयनीयस्थानं शेरतेऽस्यामिति शय्या। *आव॰ २६६*। शय्या-सर्वाङ्गीणां फलकादिरूपा। *स्था॰ ३१२*। शेरते यस्यं साधवः सा शय्या। *स्था॰ ४६८*। शय्या-वसतिः। *आव॰ ७८१*। शय्या –बृहत् संस्तारको। *भग॰ १३६*। शय्या-वसतिः। *दशवै॰ २८१*। शय्या-संस्तारको वसतिर्वा। *दशवै॰ १५६*। शय्या-संस्तारकः चम्पकादिपट्टः, एकादशमपरीषहः। *आव॰ ६५६*। शय्या-सर्वाङ्गिकी। *आव॰ ७२७*। शय्या-वसतिः, यत्र वा प्रसारितपादैः सुप्यते सा शय्या। *प्रश्न॰ १२०*। शय्या-नैषेधिकीरूपा। *आव॰ २६६*। शव्या-यत्र प्रसारितपादैः सुप्यते। *औप॰ ४१*। उवसग्गादिमट्टकोट्टगादिसन्ना। *दशवै॰ ८५*। शय्या-वसतिः शयनं वा, यत्र प्रसारितपादैः सुप्यते। *ज्ञाता॰ १०७*। शय्या-आचारप्रकल्पे द्वितीयश्रुत-स्कन्धस्य द्वितीयममध्ययनम्। *प्रश्न॰ १४५*। शय्या-संस्तारकः चम्पकादिपट्टश्च। *आव॰ ६५७*। शय्या। *ज्ञाता॰ ६०*। शव्या-आस्तरणम्। *ओघ॰ ५६*। सव्वंग्गिया। *निशी॰ १६०* आ।

सेज्जातरपिंड– शय्यातरपिण्डः-अशनादिर्वस्त्रादिशूच्यादि। *स्था॰ ४६८*।

सेज्जायर– शेरते यस्यां साधवः सा शय्या तया तरति भव-सागरं इति शय्यातरो-वसतिदाता। *स्था॰ ४६८*।

सेज्जावाली– शय्यापालिका। *आव॰ ३६६*।

सेज्जासंथार– शय्यासंस्तारो-शय्या-वसति, सुस्यतां यत् स्थानं शयनयोग्यावकाशलक्षणा शय्यां-संस्तारकः। *बृह॰ २८७* आ।

सेज्जासंथारए– शय्या-शयनं तदर्थं संस्तारकभूमयः, अथवा शय्यायां-वसतौ संस्तारकः शय्यासंस्तारकः। *ज्ञाता॰ ६२*।

सेज्जासंथारग– शय्या-सर्वाङ्गीणां फलकादिरूपा संस्तारको-लघुतरोऽथवा शय्या-शयनं तदर्थः-संस्तारकः शय्या-संस्तारकः। *स्था॰ ३१२*।

सेज्जि– आचाराङ्गस्यैकादशममध्ययनम्। *उत्त॰ ६१६*।

सेटिका– द्रव्यविशेषः। *आचा॰ २*। *सम॰ १३८*। *प्रज्ञा॰ ८६*।

सेट्ठि– श्रेष्ठी-श्रीदेवताऽध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गः। *भग॰ ४६४*। श्रेष्ठी-श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टभूषितोत्त-माङ्गः पुरज्येष्ठो वणिक्। *स्था॰ ४६३*। श्रेष्ठी-श्रीदेवताऽ–ध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गः पुरज्येष्ठो वणिग्विशेषः श्रेष्ठी। *अनुयो॰ २३*। श्रेष्ठी श्रीदेवताध्यासितः। *बृह॰ १४५* आ। श्रेष्ठी-श्रीदेवताऽध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गः। *भग॰ ३१९*। श्रेष्ठी-श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टालङ्कृतशिरः-पुरज्येष्ठो वणिग्विशेषः। *जम्बू॰ १२२*।

सेट्ठिय– श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितशिरोवेष्टनोपेत-पौरजननायकः। *भग॰ १०१*।

सेट्ठियाकुलं– श्रेष्ठिकुलम्। *आव॰ ५३६*।

सेट्ठी– वणिग्गामे महत्तरो। *दशवै॰ १५७*। जस्स रण्णा अणुण्णातं सो। *निशी॰ २०९* अ। अट्ठारसण्हपगतीणं जो महत्तरो। *निशी॰ २०९* अ। श्रेष्ठी-श्रीदेवताध्या-सितसौवर्णपट्टत्वभूषितोत्तमाङ्गः। *औप॰ १४*। श्रेष्ठी-

श्रीदेव-ताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गः पुरज्येष्ठो वणिग्विशेषः। *जीवा॰ २८०*। श्रेष्ठी-श्रीदेवतालङ्कृतशिरोवेष्टनकवान् वणिग् नायकः। *प्रश्न॰ ९६*। श्रीदेवताध्यासितशिरोवेष्टनभूषितोत्त-माङ्गः-श्रेष्ठी। *बृह॰ ८५ अ*। श्रेष्ठी-तुष्टनरपतिप्रदत्तश्री-देवाध्यासितसौवर्ण्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गो नगरचिंताकारी नागरिकजनश्रेष्ठः। *व्यव॰ ४६ आ*।

सेट्ठीदोसा– णियमारक्खिओ। *निशी॰ १६५ अ*।

सेडंगुली– श्वेताङ्गुलिः। *निशी॰ १०१ अ*।

सेडिया– सेटिका-खटिका। *आचा॰ ३४२*। वनस्पतिकाय-विशेषः। *भग॰ ८०२*।

सेडी– लोमपक्षिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*।

सेडीवड– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*।

सेडुग– कर्पासः। *बृह॰ ११६ अ*।

सेडुगतिल– निश्चेतकतिलः। *बृह॰ ११६ आ*।

सेडुगवतंत– सेटुकवृत्तान्तम्। *आव॰ ६८१*।

सेढि– श्रेणिः-आकाशप्रदेशपङ्क्तिः। *उत्त॰ ५९७*। श्रेणिः-तथाविधबिन्दुजातादेः पङ्क्तिः। *जम्बू॰ ३१*।

सेडिआ– श्वेतिका-शुक्लमृत्तिका। *दशवै॰ १७०*।

सेढिगणिओवाओ– एयस्स ठवणारोवणसंवहेस्स संवग्गफला-णयणिमित्तं आयरिएहिं इमो सुहुमो, सेढिगणिउवाओ उद्दिट्ठो। *निशी॰ १०८ आ*।

सेढितवो– श्रेणितपः-पङ्क्त्युपलक्षित तपः। *उत्त॰ ६००*।

सेढिदुग– श्रेणिद्विकं-उपशमश्रेणिक्षपकश्रेणिलक्षणम्। *बृह॰ १३९ आ*।

सेढिसय– ऋज्वायतश्रेणिप्रधानं शतं श्रेणीशतम्। *भग॰ ९६४*।

सेढी– श्रेणिः-उत्तरोत्तरगुणपरम्परास्वरूपा। *उत्त॰ ५८०*। श्रेणिः-उत्तरोत्तरगुणपरम्परास्वरूपा। *उत्त॰ ५८०*। श्रेणिः-प्रदेशपङ्क्तिः। *स्था॰ ४०७*। श्रेणिः-क्षेत्रप्रदेशपङ्क्तिः। *आव॰ १४*। श्रेणिः-पङ्क्तिमात्रं आकाशप्रदेशपङ्क्तिः। *भग॰ ८६५*। श्रेणिः-तथाविधबिन्दुजातादेः पङ्क्तिः। *जीवा॰ १८९*। प्रमाणाङ्गुलेन यद्योजनं तेन योजनेना। *अनुयो॰ १५६*। सङ्ख्येययोजनकोटाकोट्यः, संवर्तितसमचतुरस्रोकृतलको-स्यैका श्रेणिः। *अनुयो॰ १७३*।

सेढीअंगुल– श्रेण्यङ्गुलम्। *अनुयो॰ १७३*।

सेण– सप्तमबलदेवपूर्वभवनाम। *सम॰ १५३*। तेव्वियराया-धिता। *निशी॰ २५९ अ*। श्येनः। *आव॰ ३५१*। पक्खो। *निशी॰ १३३ आ*। राजबिम्बविरहितं सैन्यम्। *बृह॰ २७३ आ*।

सेणग– सेनकः-शिक्षायोगदृष्टान्ते जितशत्रुराजस्थामात्यपुत्रः। *आव॰ ६७८*।

सेणयए– गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*।

सेणा– सेना-कल्पवंशप्रसूतशकटालस्य पञ्चमी पुत्री। *आव॰ ६९३*। सेना-योगसङ्ग्रहे शिक्षादृष्टान्ते श्रेणिकभगिनी। *आव॰ ६७२*। सेना-चातुरङ्गबलसमूहः। *उत्त॰ ६०५*। सेना –महती सन्ततिः। *उत्त॰ ३६६*। सेना-संभवनाथमाता। *आव॰ १६०*।

सेणावइ– सेनापतिः-चतुरन्तस्वामी राज्ञानुज्ञातः। *आव॰ ६६३*। सेनापतिः-गणराजा। *आव॰ ५१६*। सेनापतिः-नृपतिनिरूपितचतुरङ्गसैन्यनायकः। *भग॰ ३१९*। सेनापतिः –यदायत्ता नृपेण चतुरङ्गसेना कृत भवति। *जम्बू॰ १२२*।

सेणावच्च– सेनापत्यम्। *जम्बू॰ ६३*।

सेणावति– सेनापतिः-नृपतिनिरूपितो हस्त्यश्वरथपदातिस-मुदायलक्षणाया सेनायाः प्रभुः। *स्था॰ ४६३*। सेनापतिः-सकलानीकनायकः। *प्रश्न॰ ७९*। सेनापतिः-हस्त्यश्वरथ-पदातिसमुदायलक्षणा या सेना तस्याः प्रभुः। *जीवा॰ २८०*। सेनापतिः-सैन्यनायकः। *प्रश्न॰ ९६*।

सेणावती– सेनापतिः-सैन्यनायकः। *स्था॰ ३९९*। सेनापतिः –नृपतिनिरूपितचतुरङ्गसैन्यनायकः। *प्रज्ञा॰ ३२७*।

सेणावतीरयण– सेनापतिः-सैन्यनायकः, चक्रवर्तेः पञ्चेन्द्रिय-प्रथमरत्नः। *स्था॰ ३९८*।

सेणाहिव– सेनाधिपः। *आव॰ ७३८*।

सेणि– श्रेणयः। *जम्बू॰ १९३*। कुम्भकाराद्या अष्टादशश्रे-णयः। *जम्बू॰ २६४*। *भग॰ ३१५*।

सेणिओ– राजगृहे राजा। *ज्ञाता॰ ११*। राजगृहे नरपतिः। *ज्ञाता॰ १७८*। राजगृहे नृपतिः। *उपा॰ ४८*। श्रेणिकः-राजगृहे नरपतिः। *अन्त॰ १८*। राजगृहे नरपतिः।

अनुत्त० १०। राजगृहे राजा। *अनुत्त० ७*। राजगृहे राजा। *ज्ञाता० २४७*। श्रेणिकः-राजगृहनगराधिपतिः। *अन्त० १८*। रायगिहे राया। *निशी० ७* आ। श्रेणिकः-शुद्धिविषये वस्त्रदृष्टान्ते राजगृहेराजा। *आव० ५६२*। श्रेणिकः-उपबृंह-णोदाहरणे रायगिहे राजा। *दशवै० १०२*। भावोपायोदाहरणे राजा। *दशवै० ४१*। श्रेणिकः-राजगृहे नगरे राजा। विषयकोपे उदाहरणम्। *आव० ९५*। श्रेणिकः-गुरोर्विनयकरणदृष्टान्ते राजा। *दशवै० १०४*। श्रेणिकः-द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे राजा०। *आव० ४८७*। श्रेणिकः-औत्पत्तिकीबुद्धिदृष्टान्ते मुद्रारत्ने प्रसेनजित्सुतः। *आव० ४१७*। राजगृहनगरे राया। *बृह० ३१* अ।

सेणिओराया– एकस्थम्भप्रासादकारकः। *व्यव० १७* अ। राजगृहे राजा। *व्यव० १९* अ।

सेणिय– श्रेणिकः-गुरोर्विनयकरणदृष्टान्ते राजा। *दशवै० १०४*। श्रेणिकः-संवरोदाहरणे राजगृहनगरे पृच्छकः। *आव० ७१३*। भरतै आगामिन्यां प्रथमतीर्थकृत्पूर्वभवनाम। *सम० १५४*। कोणिकपिता। *निर० ४*।

सोगसण्णा– शोकसंज्ञा-विप्रलापवैमनस्यरूपा। *आचा० १२*।

सोगिल– शोफवत्। *विपा० ७४*।

सोचविय– शोचं-तृतीयं महाव्रतम्। *स्था० ४६५*।

सोच्चा– आकर्ण्य। *भग० ८९*। श्रुत्वा-आकर्ण्य। *जीवा० २४३*।

सोज्झ– शुद्धिः प्रक्षेपश्च। *उत्त० ५३७*।

सोढं– णिस्संदिद्धं। *निशी० ३१२* अ।

सोणंद– त्रिकाष्ठिका। मूशलम्। *औप० २०*। त्रिकाष्ठिका मूशलम्। *प्रश्न० ८०*। सौनन्दं-आयुधम्। *जम्बू० १११*।

सोणिए– समुर्च्छिममनुष्योत्पत्तिस्थानम्। *प्रज्ञा० ५०*।

सोणिताणुसारी– शोणितानुसारि। *स्था० ३७५*।

सोणिय– शोणितं-रक्तम्। *प्रश्न० ८*। शोणितं-नवविकृतिमध्ये एकः। *आव० ८५४*। शोणितं-आर्तवं सामान्येन वा रुधिरम्। *ज्ञाता० १४७*। शौनिकः-श्वद्वितीयोः लुब्धकः। *बृह० ८२*।

सोणिसुत्तग– श्रेणिसूत्रकं-बालकानां वर्मादिदवरकरूपं कटी-सूत्रम्। *ज्ञाता० २३०*। श्रोणिसूत्रकं-सौवर्णकटीसूत्रम्। *औप० ५५*।

सोणिसूत्तग– श्रोणिकसूत्रकं-कटिसूत्रकम्। *जम्बू० १०६*।

सोणी– श्रोणिः-बाहल्यं पिण्डः। *जम्बू० २३८*। श्रोणिः-कटी। *प्रश्न० ८३*। श्रोणिः-कटेरग्रभागः। *जीवा० २७५*। श्रोणिः-कटेरग्रभागः। *जम्बू० ११४*।

सोणीसुत्तय– श्रोणिसूत्रकं-भूषणविधिविशेषः। *जीवा० २६९*।

सोतणता– शोचनता-दीनता। *स्था० १८९*।

सोतांसि– श्रोतांसि-इन्द्रियाणि। *प्रश्न० १०५*।

सोतामणी– चतुर्थीविद्युत्कुमारीमहत्तरिका। *स्था० ३६१*। चतुर्थी विद्यत्कुमारी महत्तरिका। *स्था० १९८*।

सोतिंदिय– श्रोत्रेन्द्रियं-पञ्चममिन्द्रियम्। *प्रज्ञा० २९३*।

सोत्तबंधण– श्रोताबन्धनं-जलप्रवेशवारणम्। *प्रश्न० १४*।

सोत्तिए– सूत्रं पण्यमस्येति सोत्रिकः। *अनुयो० १४९*।

सोत्तिओ– सौत्रिकः। *आव० ४१८*।

सोत्तिय– हरितविशेषः। *प्रज्ञा० ३३*। श्रुतिस्मृति क्रियावर्जितो श्रोत्रिकः। *निशी० ९७* आ। द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *प्रज्ञा० ४१*। द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा० ३१*।

सोत्तियवई– शौक्तिकावती-आर्यक्षेत्रे चेदिंजनपदे नगरम्। *प्रज्ञा० ५५*।

सोत्तिया– सुत्ते भवा वस्त्रकंबल्यादि। *निशी० १२१*।

सोत्थिअ– स्वस्तिकः। *जम्बू० ५३५*। स्वस्तिकः-अष्टम-ङ्गले सप्तमम्। *जम्बू० ४१९*।

सोत्थिए– षष्ठीतममहाग्रहः। *स्था० ७९*।

सोत्थिकूड– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थिय– स्वस्तिकः-दक्षिणेन हस्तेन वामं बाहुशीर्षं वामेन दक्षिणं एष द्वयोरपि कल्पविकयोर्हृदये यो विन्यासविशेषः। स स्वस्तिकाकार इति कृत्वा स्वस्तिक उच्यते। *बृह० २३७* आ। स्वस्तिकः। *जम्बू० २०९*।

सोत्थियकंत– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थियज्झय– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थियपभ– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थियलेस– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थियवन्न– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थियावत्त– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थिसिगार– विमानविशेषः। *जीवा० १३७*।

सोत्थुत्तरवडिंसग– विमानविशेषः। *जीवा॰ १३७*।
सोदरिया– सौदर्याः-समानकुक्षिभवा भ्रातरः। *उत्त॰ ४०६*।
सोदामणी– धरणेन्द्रनागकुमारेन्द्रस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४*। सौदामिनी-विदिग्रुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कु-मारी। *जम्बू॰ ३९१*।
सोदास– आधाकर्मण अभोज्यतायां उग्रतेजसो ज्येष्ठभ्राता। *पिण्ड॰ ७१*। सौदासः-जिह्वेन्द्रियदृष्टान्ते मांसप्रियो राजा। *आव॰ ४०१*। सोदासः-स्वर्गे कायोत्सर्गफलमिति दृष्टान्ते राजा। *आव॰ ७९९*।
सोधिकप्पो– सोधिः-प्रायश्चित्त तं द्रव्यादिपुरुषभेदेन कल्पते यः स सोधिकल्पः। *निशी॰ १४६* आ।
सोधिय– गुणयोगात् शोभितः, शुद्धिकारी शोधिदः, सुहृदा-सर्वप्राणिमित्रम्। *प्रश्न॰ १५७*।
सोधीकर– चौद्दसपुव्वीहिं णिबद्धं तं जो गणपरिवट्टीसुत्ततत्थे धरेति सोवि सोधीकरो, चोद्दसपुव्वेहिं णिज्झूहिओ एस पक्कप्पो णिबद्धो तद्धारी सोधिकारीत्यर्थः। *निशी॰ १४६* आ।
सोद्धरित– सावशेषम्। *उत्त॰ ५३९*।
सोपचार– ग्रामभणितिरहितम्। *अनुयो॰ २६२*।
सोपार– यत्र अट्टनमलपराजितः। *व्यव॰ ३५७*।
सोपारए– सोपारकः-पत्तनविशेषः-मल्लवल्लभसिहगिरिरा-जधानी। *आव॰ ६६४*।
सोपारय– सोपारकं-शिल्पसिद्धविषयदृष्टान्ते नगरं, यत्र सर्व-शिल्पकुशलो रथकारः। *आव॰ ४०९*। सोपारकं-समुद्रतटे सिंहगिरिराजधानी। *उत्त॰ १९२*। सोपारकं-नगरविशेषः। *आव॰ ३०४*। सोपारकं-शिल्पसिद्धदृष्टान्ते नगरम्। *आव॰ ४१०*। सोपारकं-योगसंग्रहे आलोचनादृष्टान्ते समुद्रतीरे नगरम्। *आव॰ ६६५*।
सोप्पारग– पंचकुटुंबियनगरं। *निशी॰ ५* आ।
सोबहिफोडो– सोबधिस्फोटः। *आव॰ २०७*।
सोभण– शोभनः-निर्दोषगुणपोषः। *जम्बू॰ २३७*।
सोभा– शोभा-तत्कालोचितपरभागलक्षणा। *उत्त॰ ४८३*।
सोभावियं– शोभितम्। *आव॰ १९८*।
सीभेति– शोभयति-पारणकदिने गुरुदत्तशेषभोजनकरणात् शोधयति वा-अतिचारपङ्कक्षालकः। *ज्ञाता॰ ७३*।
सोमंगलग– द्वीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४१*। द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३१*।
सोमंगला– द्वीन्द्रियजीवविशेषः। *उत्त॰ ६९५*।
सोम– सौम्यः-अरौद्राकारः-निरोगः। *भग॰ ५७८*। सौम्यं-अरौद्रम्। *ज्ञाता॰ २१३*। चम्पायां ब्राह्मणः। *ज्ञाता॰ १९६*। सोमः-अविषमगात्रः। *ज्ञाता॰ ६२*। सौम्यः-अरौद्राकारो नीरोगो वा। *ज्ञाता॰ ६६*। सोमः-पूर्वदिक्पालः। *जम्बू॰ ७५*। सश्रीकः। *जम्बू॰ ११३*। एकादशममहाग्रहः। *स्था॰ ७८*। चमरेन्द्रस्य प्रथमो लोकपालः। *स्था॰ १९७*। सोमः-द्वादशममहाग्रहः। *जम्बू॰ ५३४*। तृतीयबलदेववासुदेवपिता। *सम॰ १५२*। सोमः-पुरुषोत्तमवासुदेवपिता। *आव॰ १६३*। सौम्यः-अदारुणः नीरुजो वा। *प्रश्न॰ ७०*। दृष्टिसुभगम्। *जीवा॰ २६९*। सश्रीकम्। *जीवा॰ २७३*। सुभगम्। *जीवा॰ २०७*। सौभ्यः-सर्वजननयनमनोरमणीयः। *आचा॰ ३*। सौम्यं–उपशान्तम्। *ज्ञाता॰ १३*। सौम्यः-अरौद्राकारः। *सूर्य॰ २९२*।
सोमकाइय– सोमस्य कायः-निकायः यस्यास्तीति स सोम-कायिकः-सोमपरिवारभूतः। *भग॰ १९६*।
सोमचंद– ऐरवते सप्तमतीर्थकृत्। *सम॰ १५३*।
सोमजमवरुणवेसमणकाइया– सोमयमवरुणवैश्रमणकायिकाः-आभियोगिकदेवाः। *जम्बू॰ ७२*।
सोमजसा– सोमयशाः शौचोदाहरणे यज्ञयशस्तापसस्नुषा। *आव॰ ७०५*।
सोमण– स्वप्नो-निद्रावशविकल्पः। *स्था॰ ३८०*।
सोमणस– मध्यमहेट्ठिमगैयेवकविमानप्रस्तटनाम। *स्था॰ ४५३*। सौमनसः-यानविमानकारको देवः। *जम्बू॰ ४०५*। सौमनसः-पर्वतविशेषः। *प्रज्ञा॰ १६१*। सौमनसः-शास्त्रि-यनवमदिवसः। *सूर्य॰ १४७*। सौमनसः-अष्टमदिवस-नाम। *जम्बू॰ ४९०*। सैमनसो-वक्षस्कारः। *जम्बू॰ ३५३*। सुमनसामयमावास इति सौमनसः। *जम्बू॰ ३५४*। सौमनसकूटं-सौमनसवक्षस्कारकूटनाम्। *जम्बू॰ ३५७*। सौमनसः-रुचकसमुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*। सौमनसः। *स्था॰ ७१*। सौमनसं-सुमनसां-देवानामिदं वनम्। *जम्बू॰ ३६३*। सौमनस्यं-धर्मजिनस्य प्रथमपार-णकस्थानम्। *आव॰ १४६*। सौमनसः। *औप॰ ५२*।
सोमणसवण– सौमनसवनं, सुमनसां-देवानामिदं

सौमनसं देवोपभोग्यभूमिकासनादिमत्त्वम्। *जम्बू० ३५९। स्था० ८०।*

सोमणसा– सौमनसा-पञ्चमरात्रिनाम। *जम्बू० ४९१। स्था० ८०।* सौमनसा-शास्त्रीयपञ्चमीरात्री। *सूर्य० १४७।* सौमनसा-दक्षिणपूर्वव्यतिकरपर्वतस्य दक्षिणस्यां शक्रदेवे-न्द्रस्य शिवाऽभिधाग्रमहिष्या राजधानी। *जीवा० ३६५।* सौमनस्य हेतुत्वात् सौमनस्या, न हि तां पश्यतः कस्यापि मनोदुष्टं भवति। *जम्बू० ३३६।* सौमनस्य हेतुत्वात्। सौमनस्या, जम्ब्वाः सुदर्शनायाः दशमं नाम। *जीवा० २९९।* शक्रेन्द्राग्रमहिषीणां राजधानी। *स्था० २३१।*

सोमणस्सिय– सुमनसो भावः सौमनस्यम्। *जीवा० २४३।*

सोमदत्त– सोमदत्तः-शतानीकराजस्य पुरोहितः। *विपा० ६८।* अष्टमजिनप्रथमभिक्षादाता। *सम० १५१।* सोमदत्तः-चन्द्र-प्रभजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव० १४७।* सोमदत्तः-कौशाम्ब्यां यज्ञदत्तस्य ज्येष्ठसुतः। *उत्त० ११५।* चम्पायां ब्राह्मणः। *ज्ञाता० १९६।*

सोमदत्ताई– नद्यूढाः सागरे मृताः। *मरण०।*

सोमदासी– सोमदासीनामा श्राविका। *आव० १९८।*

सोमदेवः– यज्ञवाटकाधिपतिः पुरोहितः। *उत्त० ३६५।* सोमदेवो–ब्राह्मणविशेषः। *निशी० २९* आ। सोमदेवः-पद्म-प्रभजिनप्रथमभिक्षादाता। *आव० १४७।* षष्ठमजिनप्रथमभि-क्षादाता। *सम० १५१।* सोमदेवः-आर्यरक्षितपिता। *आव० २९६।* सोमदेवः-आर्यरक्षितपिता। *उत्त० ९६।* सोमदेवः-कौशाम्ब्यां यज्ञदत्तलघुसुतः। *उत्त० १११।*

सोमदेवय– सोमदेवता-सोमसामानिकादिः। *भग० १९६।*

सोमदेवयकाइय– सोमदेवताकायिकः-सोमदेवता-सोमसा-मानिकादयस्तासां कायो यस्यास्ति सः सोमदेवताकायिकः-सोमसामानिकादिदेवपरिवारभूतः। *भग० १९६।*

सोमप्पभे– असुरकुमारस्योत्पातपर्वतः। *स्था० ४८२।* सोम-प्रभः-बाहुबलिपुत्रः श्रेयांसपिता। *आव० १४५।*

सोमभूई– सोमभूतिः-प्रद्वेषविषये येन गजसुकुमालो व्यपरो-पितः। *आव० ४०४।* सोमभूतिः-सोमदत्तसोमदेवयोराचार्यः। *उत्त० १११।*

सोमभूतो– चम्पायां ब्राह्मणः। *ज्ञाता० १९६।*

सोममुहो– सौम्यमुखी-सौम्यं मुखं यस्याः सा, अशिवका-रिण्याः विशेषणमिदम् अनन्तरविषये प्रत्युपद्रवाकरणात्। *ओघ० १७।*

सोमया– कुच्छगोत्रे सप्तमो भेदः। *स्था० ३९०।*

सोमलेस– अनुपतापकारिपरिणामः। *स्था० ४६५।*

सोमलेस्स– अनुपतापहेतुमनःपरिणामः सोमलेश्यः। *औप० ३६।*

सोमविजयवाचक– वाचकविशेषः। *जम्बू० ५४५।*

सोमसिरी– सोमश्री-द्वारवत्यां सोमिलब्राह्मणभार्या। *अन्त० ९।*

सोमा– शक्रदेवेन्द्रस्य चतुर्थ्यग्रमहिषी। *स्था० २०४।* सप्तमी दिशा। *भग० ४९३।* सोममहाराज्ञोः चतुर्थ्याग्रमहिषी। *भग० ५०५।* सौम्याः कायकुचेष्टा अभावात्। *जम्बू० ३५४।* सप्तमतीर्थकृत् प्रथमा शिष्या। *सम० १५२।* सोमिलात्मजा। *अन्त० ९।* सिन्धुदत्तसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी। *उत्त० ३७९।* उत्पलभगिनी। *आव० २०२।* सौम्या-दिग्दाहाद्युत्पातव-र्जिता। *ज्ञाता० १२४।* सोमिलब्राह्मणपत्नी। *अन्त० ९।* विभेलसन्निवेसे दारिया। *निर० ३३।*

सोमाकार– सौम्याकारं-शान्ताकृतिः। *ज्ञाता० १३।*

सोमालंगी– सुकुमालाङ्गी। *भक्त०।*

सोमित्ता– सौमित्री-शौचोदाहरणे यज्ञयशस्तापसभार्या। *आव० ७०५।*

सोमिदासी– जिणदासपत्नी श्राविका। *आव० १९८।*

सोमिल– सोमिलः-द्वारवत्त्यां ब्राह्मणविशेषः। *अन्त० ९।* वनिकग्रामे ब्राह्मणः। *भग० ७५८।* वाणारस्यां ब्राह्मणः। *निर० २३।* सोमिलः-गजसुकुमालमारको ब्राह्मणः। *व्यव० १८८* आ। उज्जेणीनगरी, तत्थ सोमिलो नाम बंमणो। *बृह० १९०* आ। बंभणो। *निशी० २९* आ। मध्य-मानगर्यां ब्राह्मणः। *आव० २२९।* सोमिलः-भयादायुर्भेदे दृष्टान्तः। *आव० २७२।*

सोमिलद्विजः– भयाद् प्राणत्यागे दृष्टान्तः। *अनुयो० १३७।*

सोमिलुद्देसए– भगवत्यामष्टादशशतके दशमोद्देशकः। *भग० ९२४, ९२२।*

सोम्म– सौम्यं-चान्द्रमसापरनाम मृगशिरो देवता। *जम्बू० ४९९।*

सोम्मा– सौम्या-उत्तरदिक्। *आव० २१५।*

सोयंधिए– सौगन्धिककाण्डं-अष्टमं सौगन्धकानां काण्डम्। *जीवा॰ ८९।*

सोय– शोकम्। *आचा॰ १९४।* विषयाभिष्वङ्गः-संसारश्रोतः। *आचा॰ १६४।* शौचं-द्रव्यतो निर्लेपता भावतोऽनवद्यसमा-चारः। *औप॰ ३३।* शौचं-सर्वोपाधिशुचित्वं निर्वाच्यव्रत-धारणम्। *आचा॰ २५६।* पापोपादानम्। *आचा॰ १९४।* शौचं-द्रव्यतो निर्लेपता। *ज्ञाता॰ ७।* शौचं-संयमं प्रति निरुपलेपता। *आव॰ ६४६।* श्रोत्रं-श्रोत्रेन्द्रियविषयः क्षयोपशमः। *प्रज्ञा॰ ४६०।* शौचं-द्रव्यतो निर्लेपता भावतो-ऽनवद्यसमाचारता। *राज॰ ११९।*

सोयणं– शोचनं-अश्रुपरिपूर्णनयनय दैन्यम्। *आव॰ ५८७।*

सोयणया– दीनता। *भग॰ ९२६।* जोणी। *दशवै॰ १५।*

सोयमाण– शोचत्सु मनसा खिद्यमानः। *ज्ञाता॰ १५७।*

सोयमाणी– धरणस्याग्रमहिषी। *ज्ञाता॰ २५१।*

सोयमूलय– परिव्राजकधर्मः। *ज्ञाता॰ १०५।*

सोयरिओ– शौकरिकः। *आव॰ ४०१।*

सोयरिय– शौकरिकः-सूकरैश्चरति-मृगयां करोतीती सौक-रिकः। *स्था॰ २३८।* शौकरिकः। यः शूकरैर्मृगयां करोति सः। *प्रश्न॰ १३।* सौदर्यः-भ्रातृभगिन्यादिः। *सूत्र॰ १३।* शौकरिकः-स्वपचश्चाण्डालः खट्टिक इति। *सूत्र॰ ३२१।* शौकरिकः। *पिण्ड॰ ९८।* शौकरिकः-शूकरेण सन्निहितेन शूकरवधार्थं चरति, शूकरान् वा घ्नन्तीति शौकरिकः। *अनुयो॰ १३०। निशी॰ २१४* आ।

सोयविण्णाण– श्रोतविज्ञानं-श्रोत्रेन्द्रियोपयोगः। *प्रज्ञा॰ ४६०।*

सोयविन्नाणावरण– भावेन्द्रियावरणः। *भग॰ ६३।*

सोयविय– शौचम्। *सूत्र॰ ३०१।*

सोयस– श्रेयान् कल्याणकारित्वात्। *व्यव॰ ३९८* अ।

सोया– श्रोतांसि-कर्म्माश्रवद्वाराणि तानि च प्रतिभवाभ्यासा-द्विषयानुबन्धादीनि गृह्यन्ते, तत्र उर्द्ध्वं श्रोतांसि-वेमानिका-ङ्गनाभिलाषेच्छा वैमानिकसुखनिदानं वा। *आचा॰ २२९।* श्रोता। *आव॰ २३७।* श्रोता-गर्भाशयश्छिद्रलक्षणं यस्याः सा। *स्था॰ ३९३।*

सोयामणी– सौदामिनी-विदिग्युचकवास्तव्या विद्युत्कुमारी-स्वामिनी। *आव॰ १२२।* सौदामिनी-प्रधानमणिः। *उत्त॰ ४९०।*

सोयावण– शोकापनः-दैन्यप्रापणः। *भग॰ १८४।*

सोयावरण– द्रव्येन्द्रियावरणः। *भग॰ ६३।*

सोरिअनयर– सौरिकनगरं-नेमिनाथजन्मभूमिः। *आव॰ १६०।*

सोरट्ठ– सौराष्ट्रः-गुरुनिग्रहविषये सौराष्ट्रश्रावकः। *आव॰ ८१३।* सुराष्ट्रः जनपदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६।* सौराष्ट्रः। *दशवै॰ ३५।*

सोरट्ठिआ– सौराष्ट्रिका-तुवरिका। *दशवै॰ १७०।*

सोरट्ठिया– सौराष्ट्रिका-तुवरिका। *आचा॰ ३४२।* वरमट्टिया। *निशी॰ २१८* आ। चरिया जीए सुवण्णकारा उप्पक-रेति सुवण्णस्स पिंडं। *दशवै॰ ७८।*

सोरट्ठसड्ढग– सौराष्ट्रश्रावकः। *आव॰ ८१८।*

सोरिय– सौरिकं-आर्यक्षेत्रकुशावर्त्तजनपदे नगरम्। *प्रज्ञा॰ ५५।* शौरिकनगरे शौरिकदत्तो नाम मत्स्यबन्धकपुत्रः। *स्था॰ ५०८।* शौर्यः-शौर्यपुरस्य शौर्यवतंसकोद्याने यक्षः। विषा॰ ७९। शौर्यपुरे-सत्योदाहरणे नगरम्। *आव॰ ७०५।*

सोरियदत्त– शौर्यदत्तः-समुद्रदत्तमत्स्यबन्धसुतः। *विपा॰ ७९।* शोरिकदत्तः मत्स्यबन्धपुत्रः दुःखविपाकानामष्टमम-ध्ययनम्। *विपा॰ ३५।* शौर्यदत्तः-शौर्यपुराधिपतिः। *विपा॰ ७९।*

सोरियपुर– सौर्यपुरं-वसुदेवराजधानी। *उत्त॰ ४८९।* शौर्यपुरं –शौर्यदत्तराजधानी। *विपा॰ ७९।*

सोरियवडंसग– शौर्यावतंसकं-शौर्यपुरे उद्यानम्। *विपा॰ ७९।*

सोल– तुरगचिन्तकः। *बृह॰ ३११* अ।

सोलसग– सूत्रकृताङ्गस्य षोडशममध्ययनम्। *सम॰ ३१।* श्रेणिकः-प्रसेनजित्पुत्रः-प्रधानदर्शनवतोऽपि चारित्रेण विनाऽधरगतिप्राप्तिः। *आव॰ ५३२।* श्रेणिकः-सवरोदाहरणे राजगृहनरेशः। *आव॰ ७१३।* श्रेणिकः। *भक्त॰ ।*

सेणियराय– श्रेणिकराजः-चरणकरणेऽशक्तानामालम्बनम्। *आव॰ ५३१।*

सेणी– श्रेणीः। *आव॰ २०३।* श्रेणिकः। *भक्त॰ ।*

सेण्टित– सेण्टनं-सेण्टितं तत्सेण्टितं-अनक्षरश्रुतविशेषः। *आव॰ २५।* उत्कृष्टबालक्रीडापनम्। *आव॰ १३०।*

सेण्हय– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३।*

सेत– श्रेयान्-द्वितीयमुहूर्त्तः। *सूर्य॰ १४६*। नाट्याधिपतिर्देवः। *स्था॰ ४०*। श्रेयान्-अतिप्रशस्यः श्वेतो वा। *स्था॰ ४६३*।

सेतणओ– सेचनकः-नद्यां तन्तुकेन गृहीतो गन्धहस्ती। *आव॰ ३५५*।

सेतबंधुजीव– श्वेतबन्धुजीवः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

सेतिका– वनस्पतिफलविशेषः। *प्रज्ञा॰ ६०२*।

सेतु– सेतुः-मार्गविशेषः पालिर्वा। *प्रश्न॰ ८*

सेतुञ्ज– पाण्डवानां सिद्धगमनगिरिः। *ज्ञाता॰ २२६*। सुमुख-कुमारसिद्धिगमनस्थानम्। *अन्त॰ १४*।

सेदसप्पा– दर्वीकर अहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६*।

सेदुक– ब्राह्मणविशेषः। *व्यव॰ १९१ अ*।

सेधितं– निष्पादितम्। *ज्ञाता॰ ६१*।

सेब्भगो– समोसियगो। *निशी॰ २११ आ*।

सेयंकर– अष्टषष्ठीतममहागृहः। *स्था॰ ७९*। श्रेयस्करः। *जम्बू॰ ५३५*।

सेयंबिया– श्वेताम्बिका-चण्डकौशिकाश्रमनिकटवर्त्तिनगरी। *आव॰ १९६*।

सेयंस– चतुर्थबलदेववासुदेवस्य धर्माचार्यः। *सम॰ १५३*।

सेयंसो– पङ्कः। *ज्ञाता॰ ६८*।

सेय– श्रेयः पुण्यमात्महितं वा। *आचा॰ १६९*। स्वेदः-प्रस्वेदः। *प्रश्न॰ १३७*। स्वेदः प्रस्वेदः। *जीवा॰ २७७*। श्रेयः-उपशमश्रेणिमस्तकावस्था, उपशान्तसर्वमोहावस्थेति। *सूत्र॰ १९७*। श्रेयः-कल्याणम्। *भग॰ ११६*। श्वेतम्। *जीवा॰ ३६०*। स्वेदः-स्यन्दः। *प्रश्न॰ १६२*। श्रेयः-पथ्यं हितम्। *दशवै॰ १३७*। स्वेदः-प्रस्वेदः। *भग॰ ३७*। प्रस्वेदः। *निशी॰ १९० आ*। अत्यन्तशुक्ला। *ज्ञाता॰ १५*।

सेयकंठ– महासेनाधिपतिः। *स्था॰ ३०२*।

सेयकणवीर– श्वेतकणवीरम्। *जीवा॰ १९१*। श्वेतकणवीरम्। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

सेयकाल– आगामी तृतीयसमयः। *सूत्र॰ १३७*। एष्यत्कालः। *भग॰ १८५*। एष्यत्कालः। *भग॰ ९२८*। एष्यत्कालः। *आव॰ ६१५*।

सेयचंदण– श्वेतचन्दन-श्रीखण्डम्। *प्रश्न॰ १६२*।

सेयण– सप्तध्यान्यकादिभिः स्वेदनम्। *ज्ञाता॰ १८१*।

सेयणओ– सेचनकः एतदभिधानो गन्धहस्ती। *उत्त॰ ५३*।

सेयणगंधहत्थि– हस्तिविशेषः। *ज्ञाता॰ २५*।

सेयणगपिट्ठ– सेचनकपृष्ठं श्येनपृष्ठम्। *सूर्य॰ ७१*।

सेयणगसंठिया– श्येनकसंस्थानं-श्येनकसंस्थिता। *सूर्य॰ ७१*।

सेयपुर– श्वेनपुरं, सुविधेः प्रथमपारणकस्थानम्। *आव॰ १४६*।

सेयबंधुजोए– श्वेतबन्धु जीवः। *जीवा॰ १९१*।

सेयबिय– श्वेताम्बी। *आव॰ २२१*।

सेयभद्द– श्वेतभद्रः-कौशाम्ब्यां चन्द्रोत्तरणोद्याने यक्षविशेषः। *विपा॰ ६८*।

सेयवग– लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*।

सेयविया– श्वेतविका-श्वेताम्बिका। *राज॰ ११४*। श्वेतविका नगरी यस्यामव्यक्तकदृष्टिः समुत्पन्ना। *आव॰ ३१५*। श्वेता-म्बिका-केकयजनपदार्द्ध आर्यक्षेत्रम्। *प्रज्ञा॰ ५५*। श्वेताम्बी-यत्र तृतीयो निह्नव उत्पन्नः। *उत्त॰ १६०*। श्वेताम्बी-नगरी। *आव॰ १९७*। श्वेताम्बिका-अव्यक्तनिह्नवोत्पत्तिस्थानम्। *आव॰ ३१२*।

सेयसप्प– श्वेतसर्पः-उरःपरिसर्पविशेषः। *जीवा॰ ३९*।

सेया– शक्रदेवेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०५*।

सेयाइ– श्वेतता-प्रकाशः। *सूर्य॰ ६*।

सेयाल– एष्यत्कालः। *भग॰ २२*। एष्यत्कालः-चतुर्थसमयादि। *उत्त॰ ५९६*।

सेयावंग– स्वेदापन्नो-जातस्वेदः श्वेतापाङ्गो वा। *ज्ञाता॰ ९५*।

सेयासोए– श्वेताशोकः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

सेयासोय– श्वेताशोक-कनकपुरनगरे उद्यानम्। *विपा॰ ९५*।

सेरिआगुम्मा– सेरिकागुल्माः। *जम्बू॰ ९८*।

सेरिका– रथ्या। *उत्त॰ ६०५*।

सेरित्तु– वीर्यं क्षिप्त्वा-व्युत्सृज्य। *आव॰ ६८५*।

सेरियागुम्म– वृक्षविशेषः। *जीवा॰ १४५*।

सेरुयालवण– वृक्षविशेषवनम्। *जीवा॰ १४५*।

सेल– शैलः-पाषाणः श्लक्ष्णरूपः। *स्था॰ २३५*। शैलः-शिखरहीनपर्वतः। *प्रज्ञा॰ ७१*। पव्वतो। *निशी॰ ७० अ*। शैलः-पर्वतः। *आव॰ ५६८*। मुण्डपर्वतः। *भग॰ २३८*। पाषाणः। *ओघ॰ १२७*।

सेलए– षष्ठाङ्गस्य पञ्चमं ज्ञातम्। *उत्त॰ ६१४*। ज्ञातायां पञ्च-ममध्ययनम्। *आव॰ ६५३*। ज्ञातायां पञ्चममध्ययनम्। *सम॰ ३६*। शैलकपुरे राजा। *ज्ञाता॰ १०४, १६३*।

सेलकार– शिल्पविशेषः। *अनुयो॰ १४९*।

सेलकुड्ड– शैलभित्तिः। *मरण॰*।

सेलग– शैलको राजर्षिः, ज्ञातायां पञ्चममध्ययनम्। *ज्ञाता॰ ९*। ज्ञातायामेकोनविंशतितमेऽध्ययनेऽतिदेशः। *ज्ञाता॰ २४२*।

सेलगपुर– शैलकराजनगरम्। *ज्ञाता॰ १०४*।

सेलगिह– शैलगृहं-पर्वतमुत्कीर्य यत्कृतम्। *स्था॰ २९४*। शैलगृहं-पर्वतमुत्कीर्य कृतं गृहम्। *भग॰ २००*।

सेलतता– वत्सगोत्रे भेदः। *स्था॰ ३९०*।

सेलपाल– धरणस्य तृतीयो लोकपालः। *स्था॰ १९७*।

सेलमालगा– एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः। *जीवा॰ १४५*।

सेलवालए– अन्ययूथिकः। *भग॰ ३२३*।

सेलसुत्थिय– शैलसुस्थितम्। *जीवा॰ २६९*।

सेला– मुण्डपर्वताः। *अनुयो॰ १७१*।

सेलु– शेलुः-श्लेष्मातकः वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*। वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३*।

सेलू– श्लेष्मातकः शेलुः-वृक्षविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*।

सेलेस– शैलेशः-सर्वसंवरूपचरणप्रभुस्तस्येयमवस्था शैलेशो वा मेरुः। *भग॰ ९५*।

सेलेसिंद– शैलेशेन्द्रः, उरःपरिसर्पविशेषः। *जीवा॰ ३९*।

सेलेसि– शैलेशी-मेरुवत् स्थैर्यावस्था। *भग॰ ९५*। शैलश-स्येव-मेरोरिव या स्थिरता सा शैलेशी। *स्था॰ १९२*। शैलेशी। *स्था॰ १९१*। शैलेशी। *स्था॰ ५०*।

सेलेसी– शिलाभिर्निवृत्तः शिलानां वाऽयमिति शैलः-पर्वतः, तेषामीशः प्रभुः शैलेशः-मेरुः, तस्येवेयं स्थिरतासाम्याद-वस्था शैलेशी, अशैलेशः सन्नभूततद्भावाच्छैलेशवदाचरतीति वा अवस्था। सर्वसंवरः शीलं तस्येशः शीलेशः तस्येयं योग-निरोधावस्था वा। *आव॰ ४४१*।

सेलेसीभाव– शैलेशीभावं-शिलानामिमे शैलाः-पर्वतास्तेषा-मीशः शैलेशो-मेरुः स इव शैलेशो-मुनिर्निरुद्धयोगतथाऽ–त्यन्यस्थैर्येण तस्येयमवस्था-शैलेशी तस्या भावः अशैले-शस्य भावः शैलेशीभवनं शैलेशीभावः। *उत्त॰ ५९३*।

सेलोदाइ– अन्ययूथिकः। *भग॰ ३२३*।

सेलोदायी– मड्डुकश्रावकाधिकारे अन्ययूथिकः। *भग॰ ७५०*।

सेलोवट्ठाण– शैलोपस्थापनं पाषाणमण्डपः। *आचा॰ ३६६*।

सेलोवट्ठावणगिह– शैलोपस्थानगृहं-पाषाणमण्डपः। *स्था॰ २९४*।

सेल्ल– वालमयं झुसिरं। *निशी॰ १०६ अ*। शस्त्रविशेषः। *ज्ञाता॰ २०५*।

सेल्लग– शल्यकः-भुजपरिसर्पविशेषः, यच्चकर्मतेलकैरङ्गरक्षा-विधीयते। *प्रश्न॰ ८*।

सेल्लार– तुन्नाकविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५६*।

सेवए– सेवेतः-उपभुञ्जीतः। *उत्त॰ २९५*।

सेवण– आसेवनं-मैथुनक्रिया, संप्राप्तकामस्य द्वादशमभेदः। *दशवै॰ १९४*।

सेवणा– सेवना-पर्युपास्तिः। *प्रज्ञा॰ ६०*।

सेवणाधिकार– सेवनानां-चौर्यादिप्रतिसेवनानां अधिकारः-नियोगः सेवनाधिकारः, अब्रह्मणः पञ्चमं नाम। *प्रश्न॰ ६६*।

सेवना– भजना समर्थना च। *आव॰ ३३९*।

सेवय– सेवकः-चारभट्टः। *बृह॰ २७३ आ*।

सेवा– वृत्यर्थिना राजदीनामवलगनम्। *प्रश्न॰ ९७*। नित्यपरि-शीलना। *सम॰ १५०*। हास्यमोहादिभिः परिभोगोऽनाचार-भाण्डसेवा। *उत्त॰ ७११*।

सेवाल– अनन्तजीववनस्पतिभेदः। *आचा॰ ५९*। सेवालः। *प्रज्ञा॰ ४०*। गुल्मविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३२*। जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। शेवालः-पुरुषसिंहवासुदेवपूर्वभवः। *आव॰ १६३*। जलोपरि मलरूपम्। *आचा॰ ३०*। शैवालः। *उत्त॰ ३२१*। साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

सेवालगुम्मा– सेवालगुल्माः। *जम्बू॰ ९८*।

सेवालभक्खिण– तापसविशेषः। *निर॰ २५*।

सेवाली– शेवालः-अष्टमं अष्टमेन यः सेवालः स्वयं ग्लानः-भूतः-तमाहारयति स तृतीयां मेखलां विलग्नः स तापस-विशेषः। *आव॰ २८७*।

सेवालोदाइ– अन्ययूथिकः। *भग॰ ३२३*।

सेविअ– सेवितं-आचरितम्। *दशवै॰ २०१*।

सेस– शेषं मत्यादिचक्षुर्दर्शनादि। *स्था॰ २१३*। शेषः-पुरुषो-

पयोगिनः परिजिज्ञासितात्तुरगादेरर्थादन्यो हेषितादिरर्थः-शेषः। *अनुयो॰ २१३।*

सेसदविया– गृहोपयुक्तशेषद्रव्येण कृता शेषद्रव्या, नालन्दाबा-हिरिकायामुदकशाला। *सूत्र॰ ४०९।*

सेसमई– सप्तमवासुदेवमाता। *सम॰ १५२।* शेषमती-दत्त-वासुदेवमाता। *आव॰ १६२।*

सेसव– तुरगादेरर्थादन्यो हेषितादिरर्थः शेषः, स गमिकत्वेन यस्यास्ति तच्छेषवदनुमानम्। कार्येण-कार्यद्वारेणोत्पन्नं शेष-वदनुमानम्। *अनुयो॰ २१३।* शेषः-तुरगादन्यहेषिताद्यर्थवान्। *अनुयो॰ २१३।*

सेसवई– महावीरविभोर्नप्तरे प्रथमं नाम। *आचा॰ ४२२।* शेषवती-दक्षिणरुचकवास्तव्या षष्ठी दिक्कुमारीमहत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१।*

सेसा– शेषा-पुष्पसमुदायलक्षणा। *आव॰ २९६।*

सेसावसेसं– शेषावशेषं-उद्धरितस्याप्युद्धरितम्। *उत्त॰ ३६०।*

सेसिंद– दर्वीकराहिभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६।*

सेसिअ– शेषं कृतं शेषितं-स्थित्यादिभिः प्रभृतं सत् स्थिति-सङ्ख्यानुभावापेक्षयैवानाभोगसद्दर्शनज्ञानचरणाद्युपायतः शेषं –अल्पं कृतमितिभावः। *आव॰*

सेहंबं– सैन्धाम्लं-सन्धानेनाम्लीकृतमालिकादि। *प्रश्न॰ १६३।*

सेह– "षिधू संराद्धाविति" सेध्यते-निष्पाद्यते यः स सेधः शिक्षां वाऽधीत इति शैक्षः। *स्था॰ १३०।* शैक्षः-अभिनव-प्रव्रजितः। *प्रश्न॰ १२६।* अगीयत्थो, अभिणवदिक्खिओ। *निशी॰ ८६ अ।* शैक्षः-अज्ञः। *बृह॰ १५८ अ।* सेहः-शैक्षकः। *ओघ॰ १८३।* शैक्षः-अभिनवप्रव्रजितः। *पिण्ड॰ १५।* शैक्षः-अल्पपर्यायः। *सम॰ ५९।* शैक्षकः-अभिनवप्रव्रजितः। *ओघ॰ १९९।* शैक्षः। *ओघ॰ २०।* शैक्षः। *आव॰ ५७७।* सेहो। *प्रश्न॰ ३७।* शिक्षकोऽभिनवप्रव्रजितः। *स्था॰ २९९।* शैक्षः। *आचा॰ ३२४।* सेहः-तीक्ष्णश-लाकाकुलशरीरो भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रश्न॰ ८।* अभिनवप्रव्र-जितः। *औप॰ ४३।* अगीतार्थः। *निशी॰ ५१ अ।* अभिणवपव्वतितो। *निशी॰ ६२ अ।* अभिणवपव्वइतो। *निशी॰ १४ आ।* अगीतार्थः- आचार्यपदादिसमृद्धिम-प्राप्तः। *बृह॰ ८६ आ।* पव्वइउ काभो। *निशी॰ १६१ आ।* सेहः-अभिनवप्रव्रजितः। *ओघ॰ १३९।*

सेहकुल– शैक्षकुलं-अभिनवप्रपन्नधर्मस्य कुलम्। *व्यव॰ १७८ अ।*

सेहग– शैक्षकः। *आव॰ २६३।*

सेहणिप्फेडिया– शिष्यनिष्फेटिका, अपहृतः। *स्था॰ १६५।*

सेहत्ति– सेहणिप्फेडियाए। *निशी॰ ४५ आ।*

सेहनिप्फेडिया– शिष्यानिष्फेटिका। *आव॰ ३०२।*

सेहर– शेखरः-शिखा। *पिण्ड॰ ७२।*

सेहा– भुजपरिसर्पविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४६।* लोमपक्षीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९।*

सेहावए– सेधयति-निष्पादयति। *ज्ञाता॰ ३८।*

सेहाविओ– सेधावितः। *आव॰ ७९३।*

सेहावियं– सेहिणं-शिक्षितम्। *भग॰ १२२।* सेधितं-निष्पा-दितम्। *ज्ञाता॰ ६०।*

सेहिओ– सेधितः। *आव॰ ७९३।*

सैन्धव– लवणवस्त्रपुरुषवाजिशब्दवाच्यः। *प्रज्ञा॰ २५९।* लवणः घोटको वा। *आव॰ ३७६।* सैन्धवम्। *आचा॰ ३४३।*

सोंड– शोण्डः-मद्यपः। *बृह॰ १६५ आ।* सिधूम्। *आचा॰ ३३०।*

सोंडमगरा– मकरविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४।* शुण्डमगरः-मगर-विशेषः। *जीवा॰ ३६।*

सोंडा– शुण्डा। *आव॰ ६८२।*

सोंडिता– सूण्डिकाः-पिटकाकाराणि सुरापिष्टस्वेदभाजनानि कवेल्ल्यः। *स्था॰ ४१९।*

सोंडिया– जा सुरा विस्सुगेही। *दशवै॰ ८८।*

सोंडियालिंग– अग्नेराश्रयविशेषः। *जीवा॰ १२३।*

सोंडीर– शोण्डीर-चारभटः। *प्रश्न॰ १५८।* हस्तीव शूरः कषायादिरिपून् प्रति। *स्था॰ ४६४।* शोंडीरो यथा शौर्यतया शूर एव रणकरणेन वशीकृतः, पुत्रतया प्रतिपद्यते यथा महेन्द्रसिंहः। *स्था॰ ५१६।*

सोंडिरयं– शौण्डीर्यं-शौर्यम्। *आव॰ ४३२।*

सोअ– शौचं-अमायमनुष्ठानम्। *उत्त॰ ३८४।* स्रोतः-धुरः प्रवेशरन्ध्रम्। *जम्बू॰ १७१।*

सोअणवत्तिआ– स्वप्नप्रत्ययं-स्वप्ननिमित्तम्। *आव॰ ५७४।*

सोइय– शोचितं-मानसो विकारः। *अनुयो॰ १३९।*

सोउं– सुप्त्वा। *बृह॰ २११* आ।

सोउज्जोय– सोद्द्योतं-बहिर्व्यवस्थितवस्तुस्तोमप्रकाशकरम्। *जीवा॰ १६१*।

सोए– श्रोतः-पयः प्रवाहः। *आव॰ ५२८*।

सोक्कलि– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३*।

सोक्खीर– शुष्कः। *निशी॰ ६१* अ।

सोगंधिए– सौगन्धिकः-मणिभेदः। *उत्त॰ ६८९*। सोगन्धिकः –मणिविशेषः। *जीवा॰ २३*। सौगन्धिकः-मणिविशेषः। *प्रज्ञा॰ २७*।

सोगंधिय– सौगन्धिकं-कल्हारम्। *जीवा॰ १७७*। *जम्बू॰ २६*। सौगन्धिकः। *प्रज्ञा॰ ३७*। रत्नपृथिव्याः-खरकाण्डाभिधानप्रथमकाण्डस्यान्तरकाण्डभूते अष्टमः सौगन्धिकाभि-धानरत्नमयः। सौगन्धिककाण्डः। *समं॰ ९२*। सौगन्धिकं-कल्हारम्। *राज॰ ७८*। *ज्ञाता॰ ९६*। सौगन्धिकः। *ज्ञाता॰ ३१*।

सोगंधिया– सौगन्धिकानगरी-अप्रतिहतराजधानी। *विपा॰ ९५*। सुर्दशनश्रेष्ठिनगरम्। *ज्ञाता॰ १०४*।

सोगंधो– सुभं सागारियस्स गंधं मण्णतीति सेगंधी। *निशी॰ ३३* आ।

सोग– शोकः-आक्रन्धादिचिह्नः। *समं॰ १२७*। शोकं-दैन्यम्। *स्था॰ ५०५*। शोकः-इष्टवियोगात् मानसं दुःखम्। *उत्त॰ २६१*। शोकः-मनसो दुःखविशेषः। *आव॰ ७८८*। शोकः-दैन्यम्। *आव॰ ६११*। शोकः-दैन्यम्। *भग॰ १८०*। शोकः –चित्तखेदः। *ज्ञाता॰ ३१*। शोकः-प्रकर्षावस्थं दैन्यम्। *प्रश्न॰ ६२*।

सोगकम्म– शोककर्म-यदुदयेन शोकरहितस्यापि जीवस्याक्र-न्दनादि शोको जायते तच्छोककर्म। *स्था॰ ४६९*।

सोगमोहणिज्जं– शोकमोहनीयम्। *प्रज्ञा॰ ४६९*।

सोलसम– षोडशः। *पिण्ड॰ १२१*।

सोलसिं– षोडशीं-षोडशपूरणम्। *उत्त॰ ३१६*।

सोलसिआ– षोडशिका-षोडशपलप्रमाणा। *अनुयो॰ १५२*।

सोलसिया– घटकस्य-रसमानविशेषस्य षोडशभागपात्रो मानविशेषः। *भग॰ ३१३*।

सोलोय– सावलोकं-सोद्योतम्। *ज्ञाता॰ २३०*।

सोलोयरिट्ठगा– सावलोकं-सोद्योतं यद्रिष्ठकं-रत्नविशेषस्तद्वद्ये वर्णसाधर्म्यात् ते। *ज्ञाता॰ २३०*।

सोल्लग– भडित्रीकृतम्। *उत्त॰ ४६१*।

सोल्लिंति– ओदनमिव राध्यान्ति, खण्डशो वा कुर्वन्ति। *विपा॰ ५८*।

सोल्लिय– पक्वम्। *विपा॰ ४९*। कुसुमविशेषः। *औप॰ ११५*।

सोवक्कस– सहोपक्रमेण-अपवर्तनाकरणाख्येन वर्त्तत इति सोपक्रमः। *उत्त॰ २३७*।

सोवच्चल– सेंधवलोणपव्वयस्स अंतरंतरेसु लोणखाणी। *दशवै॰ ५१*।

सोवणियंतिय– स्वभिश्चरति शौवनिकः अन्तोऽस्यास्तीत्य-न्तिकोऽनो वा चरत्यान्तिकः पर्यन्तवासीत्यर्थः, शौवनि-कान्तिकः-क्रूरसारमेयपरिग्रहः, प्रत्यन्तनिवासी च प्रत्य-न्तनिवासिभिर्वा स्वभिश्चरतीति। *सूत्र॰ ३२२*।

सोवणिय– शौवनिकः-सारमेयपापर्द्धिः। *सूत्र॰ ३२१*।

सोवण्णिओ– सोवर्णिकः। *आव॰ ३५६*।

सोवत्थिअ– सौवस्तिकः। *जम्बू॰ ५३५*।

सोवत्थिअकूड– सौवस्तिककूडं-विद्युत्प्रभवक्षस्कारकूटनाम। *जम्बू॰ ३५५*।

सोवत्थिए– एकषष्ठीतममहाग्रहः। *स्था॰ ७९*।

सोवत्थिय– सौवस्तिकः-लक्षणविशेषः। *जीवा॰ १८९*। दृष्टिवादे सूत्रभेदे एकादशमभेदः। *समं॰ १२८*। त्रीन्द्रिय-जन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२*। त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

सोवत्थी– श्वतीत्याह चरति वा सौवस्तिकः, माङ्गलिकाभिधायी मागधादिरन्या। *स्था॰ २१४*।

सोवयणपवेसकाल– शयनप्रवेशकालः। *आव॰ ३९४*।

सोवयार– सोपचारं-अग्राम्याभिधानम्, सूत्रे षष्ठो गुणः। *आव॰ ३७६*। सोपचारं-अनिष्ठुराविरुद्धालज्जनीयार्थवाचकं सानु-प्रासं वा। सोपचारम्। *अनुयो॰ १३३*। सौपचारं-अनिष्ठुराविरु-द्धालज्जनीयाभिधानं सोत्प्रासं वा। *स्था॰ ३९७*।

सोवरिफौट– सोपधिस्फोटः। *आव॰ २०७*।

सोवाग– यौ शुनः पचति तन्त्रीश्च विक्रिणाति सः स्वपचः चण्डालः। *व्यव॰ २३१* अ। श्वपाकः-चाण्डालः। *उत्त॰ ३५७*।

सोवाण– सोपानं-इष्टिकामयमवतरणम्। *पिण्ड॰ ११०*।

सोवाणपंतो– सोपानपङ्क्तिः। *जीवा॰ २६९*।

सोवान– सौपानः-उन्नतारोहणमार्गविशेषः। *समः १११।*

सोवीर– सौवीरं-आरनालम्। *आचा० ३४६।* सौवीरः-देश-विशेषः। *उत्त० ४४८।* सौवीरः-जनपदविशेषः। *भग० ६२०।* आचाम्लम्। *स्था० ४१९।*

सोवीरत– सौवीरकं-काञ्चिकम्। *स्था० १४७।*

सोवीरा– मध्यमग्रामस्य षष्ठी मूर्च्छना। *स्था० ३९३।*

सोव्वए– श्रोतव्यः। *बृह० १९ अ।* श्रोतव्या। *बृह० २८० आ।*

सोस– शोषः-क्षयरोगः। *जम्बू० १२५।* शोषः। *भग० १९७।* शोषः-गवेषणाद्यायासः। *व्यव० २५०।*

सोहइत्ता– शोधयित्वा-गुरुवदनुभाषणादिभिः शुद्ध विधाय। *उत्त० ५७२।* शोधयित्वा उत्तरोत्तरशुद्धिप्रापणेन। *उत्त० ५७२।* शोधयित्वा-शुद्धं विधाय। *उत्त० ५७२।*

सोहग्ग– सौभाग्यं-जनादेयत्वम्। *प्रश्न० १६१।* सौभाग्यं-सर्वजनस्पृहणीयतारूपम्। *उत्त० ५८०।*

सोहणागं– शोधनकम्। *सूर्य० ११३।*

सोहणगदुगं– कर्णदन्तशौधनके। *बृह० २५३ अ।*

सोहम्म– कल्पः। *ज्ञाता० २३४।* कल्पविशेषः। *ज्ञाता० २५३।* कल्पविशेषः। *ज्ञाता० १७८।* सौधर्मः-दत्तवासुदे-वागमनकल्पः। *आव० १६३।* सौधर्मः-देवलोकवि-शेषः। *आव० ११५।* सोधर्मावतंसकाभिधविमानविशेषो-पलक्षितो देवलोकविशेषः। *अनुयो० ९२।* सुधर्मानाम शक्रस्य सभाऽस्मिन्नस्तीति सौधर्मः। *उत्त० ७०२।*

सोहम्मवडिंसए– सौधर्मदेवलोकस्यावतंसकशेखरकः स इव प्रधानत्वात् सौधर्मावतंसकम्। *समः २६।* महाविमानवि-शेषः। *भग० १९४।*

सोहम्मवडिंसग– द्वीसागरोपमस्थितिकं देवविमानम्। *समः ८।*

सोहम्मा– सौधर्माः-कल्पोपन्नवैमानिकभेदविशेषः। *प्रज्ञा० ६९।*

सोहा– शोभा-पुलकादिरूपा। *ज्ञाता० ३५।*

सोहिकर– शुद्धिकरं-अनन्तानुबन्धिक्षयप्रक्रमेण क्षायिकसम्य-क्त्वापादनम्। *आचा० २६९।* शुद्धिकरं-अपनयनकर्तृ। *उत्त० ३४३।*

सोहिठाण– शोधिस्थानं-आयतनपर्यायः। *ओघ० २२२।*

सोहिय– सोधितः-शोभावान्, शोधितो वा निराकृतातिचारो वा। *भग० १२२।* शोधितः-अपनीतः। *जीवा० ३५५।* गुर्वा-दिप्रदानशेषभोजनासेवनेन शोभितम्। *आव० ८५१।* सौहृ-दम्। *आव० १९८।* शोभनं-चन्दनमालाचतुष्कपूरणादिना शोभाकरणम्। *प्रश्न० १२७।* शोधकः। *उत्त० २८८।* शोभितं –अन्येषामपि तदुचितानां दानात् अतिचारवर्जनाद्वा शोधितं वा निरतिचारं कृतम्। *प्रश्न० ११३।*

सोहिया– शोभिता-नानाविधगुच्छगुल्ममण्डलपकशोभिताः। *राज० ७।* शोभिता-तत्समाप्तौ गुर्वादिप्रदानशेषभोजनासेव-नेन शोधिता वा-अतिचारवर्जनेन तदालोचनेन वा। *स्था० ३८८।* सुहृद्। *आव० २६२।*

सोही– शुद्धिहेतुत्वेन शोद्धिः, सुहृद् वा मित्रम्। *भग० १३६।* शुद्धिः-कषायकालुष्यापगमः। *उत्त० १८५।* शुद्धिः। *ओघ० २२५।* शोधनं शुद्धिः-विमलीकरणम्, प्रतिक्रमणस्याष्टमनाम षड्भेदभिन्नं प्रतिक्रमणमेव। *आव० ५५२।*

सोहेइ– शोभयति-शोधयति वा। *उपा० १५।* शोभयति शोधयति वा। *भग० १२४।*

सोहेउं– शोधयित्वा-विविच्य। *ओघ० १७३।* शोधयित्वा-कृत्वा। *ओघ० ८८।* शोधयित्वा-प्रत्युपेक्ष्य। *ओघ० १५४।*

सोहेति– शोधयति। *आव० २२४।*

सोहेपाण– प्रतिपादयन्। *ज्ञाता० १८०।*

सौगत– बेन्नातटपुरे श्वेतपटक्षुल्लकपृच्छकः। *नन्दी० १५२।*

सौदास– जिह्वानष्टः। *भक्त०।*

सौधर्म– सामान्येनाज्ञाग्राह्ययेऽर्थे दृष्टान्तः। *आव० ८६२।*

सौधर्मकल्प– यत्र शक्रेन्द्रः। *ज्ञाता० १२७।*

सौधर्मादिकल्पगतवक्तव्यतागोचरा– कल्पिकाः। *नन्दी० २०७।*

सौधर्मावतंसक– विमानविशेषः। *दशवै० २७०।*

सौमनस– वक्षस्कारपर्वतः। *स्था० ६८।* मेरुसम्बन्धीवन-विशेषः। *प्रश्न० १३५।*

सौमनसा– वापीनाम। *जम्बू० ३७०।*

सौरभेय– बलीवर्दः। *नन्दी० १५४।*

सौरभ्यवर्तिभूत– गन्धवर्त्तिभूतः। *जीवा० २०६।*

सौवीराञ्जन– अञ्जनविशेषः। *प्रज्ञा० २७।*

स्कन्दक– मुनिसुव्रतस्वामिनोंऽतेवासी। *व्यव० ४३२ अ।*

स्कन्दकाचार्य– कर्कशत्वे दृष्टान्तः। *भग॰ ३०५*। पालकेन हत आचार्यः। *सूत्र॰ २६९*।

स्कन्दशिष्यगण– मार्यमाणे दृष्टान्तः। *सूत्र॰ ६२*।

स्कन्दाः– भूतभेद विशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

स्कन्ध– शरीरेऽवयवविशेषः। *आव॰ ८१९*।

स्कन्धशालिनः– महोरगभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

स्कन्धावार– कटकः। *व्यव॰ १९८* आ।

स्खलित– प्रतिहतः। *उत्त॰ ६८४*।

स्तम्भनता– वातादिना। *आचा॰ २५५*।

स्तुभायिका– वनस्पतिजीवविशेषः। *आचा॰ ५७*।

स्तौति– प्रशंसति-बहुमन्यते। *आव॰ ५८७*।

स्त्रीकला– चतुःषष्टिरूपप्रतिपादिकाः कलाः। *जम्बू॰ १३९*।

स्त्र्यादिलक्षणं– शब्दव्यवहारानुगतं वेदानुगतं च। *प्रज्ञा॰ २५०*।

स्थगनं– संरक्षणम्। *ओघ॰ २१३*।

स्थण्डिलसंनिवेशः– । *दशवै॰ १८३*।

स्थपतिः– शिल्पी। *उत्त॰ ४१८*।

स्थलपत्तन– यथा मथुरा। *आचा॰ २८५*।

स्थविरोपघातित्व– षष्ठमसमाधिस्थानम्। *प्रश्न॰ १४४*।

स्थाणु– स्तम्भः। *स्था॰ २१९*।

स्थान– विशेषः वसतिः, स्थानशब्दो भेदार्थः पदम्, सादि-पर्यवसितादिरूपः, स्थानशब्दः क्रियावचनः। *स्था॰ ३*। लौकिकं आलीढादिपञ्चस्थानानि। *उत्त॰ २०४*।

स्थानभङ्गः– यथा प्रियधर्मनामैकः, नोदृढधर्मेत्यादि। *आव॰ ५१६*।

स्थानसप्तैकक– आचाराङ्गे द्वितीयश्रुतस्कंधे प्रथमः। *स्था॰ ३८७*।

स्थानीयं– ठवइज्जं ठवइत्ता पन्नेन हि नाचरणीयं तत्स्थानी-यम्। *व्यव॰ ११४* अ।

स्थापक– पक्षं स्थापितवानिति स्थापकः। *स्था॰ २६१*।

स्थापत्यापुत्र– स्थिरीकरणे दृष्टान्तः। *व्यव॰ १४१* आ। स्थापत्यापुत्रः। *व्यव॰ १९९* अ। स्थापत्यापुत्रः-बोधने उदाहरणम्। *व्यव॰ २००* अ।

स्थापनकं– सुप्रतिष्ठिकम्। *भग॰ ५२४*।

स्थापना– पर्यायः। *स्था॰ ४*।

स्थापनानमस्कारः– नमस्कारकरणप्रवृत्तस्य संकोचितकर-चरणस्य काष्ठपुस्तचित्रादिगतः साध्वादेशकारः। *जम्बू॰ १०*।

स्थापनिका– । *पिण्ड॰ १५०*। स्थापनिका। *नन्दी॰ १५७*।

स्थापिता– आरोपणायां भेदः। *व्यव॰ १२४* आ।

स्थाप्यः– पञ्चाद्वक्षे इत्यर्थः। *व्यव॰ ३३* आ।

स्थाप्यते– मुच्यते। *ओघ॰ ११९*।

स्थाल– भाजनविधिविशेषः। *जीवा॰ २६६*।

स्थितकल्पिक– साधुभेदविशेषः। *भग॰ ४*।

स्थितास्थितकल्पः– आचेलक्यादिनवविधकल्पः। *आव॰ ७९*।

स्थितास्थितकल्पिकः– साधुभेदविशेषः। *भग॰ ४*।

स्थितिपद– प्रज्ञापनायां पदविशेषः। *जीवा॰ १४०*। प्रज्ञापना-यामष्टादशमकायस्थितिपदम्। *जीवा॰ १४१*।

स्थिरसंहननता– तपःप्रभृतिषु शक्तियुक्तता, शरीरसम्पत्सु चतुर्थो भेदः। *उत्त॰ ३९*।

स्थुड– स्कन्धः। *राज॰ ९*। स्कन्धः। *स्था॰ ५२१*। स्कन्धः। *प्रज्ञा॰ ३१*।

स्थूलभद्र– रथिकगणिकायां दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६२*।

स्थूलमारुक्क– प्रथमं क्षुद्रकुष्ठम्। *प्रश्न॰ १६१*।

स्थूलारुष्क– प्रथमक्षुद्रकुष्टम्। *आचा॰ २३५*।

स्नान– स्नानम्। *जीवा॰ १९१*।

स्नानादिक– सुगन्धिद्रव्येणाघृष्णः प्रघृष्टो वा। *आचा॰ ३९६*।

स्नायक– भार्यादेशकरः, अन्वर्थपुरुषविशेषः। *पिण्ड॰ १३५*।

स्नायु– शिराजालम्। *जीवा॰ ४०१*।

स्निग्धः– स्पर्शविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४७३*। स्निग्धः-संयोगे सति संयोगिनां बन्धकरणम्। *स्था॰ २६*।

स्नेह– सामान्यतत्स्वपत्यादिगोचरः। *आव॰ २७२*।

स्नेहरागः– अप्रशस्तपरिणामविशेषः-विषयादिनिमित्तविक-लोऽविनीतेष्वप्यपत्यादिषु यो भवति। *आव॰ ३८७*।

स्पर्द्धक– नामावधिज्ञानप्रभाया गवाक्षजालादिद्वारविनिर्गत प्रदीपप्रभाया इव प्रतिनियतो विच्छेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५३७*।

स्पर्द्धकपति– उपाध्यायादिकम्। *व्यव॰ २८४* अ।

स्पर्द्धकावधिः– अवधिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५४२*।

स्पर्शनीय– अनुसरणीयः। *स्था॰ ९२*।

स्पर्शयन्तं– रञ्जयन्तम्। *आव॰ ४१६*।

स्पृशति– संधट्टयति। *आव॰ ६१३*।

स्पृष्टं– बद्धम्। *स्था॰ ४३३*। समूहगता यः सूचिसम्बन्धवत् स्पृष्टकर्मबन्धः। *आव॰ २०६*।

स्पृष्टमात्रं– जीवप्रदेशैः शुष्ककुड्यापिततचूर्णमुष्टिवत्। *स्था॰ ४१३*।

स्पृहणं– तच्छ्रद्धालुतयाऽऽत्मन आविष्करणम्। *उत्त॰ ५८७*।

स्फीतीभूत– आनन्दितम्। *जीवा॰ २४३*।

स्फुटं– सद्भूतदोषोच्चारणम्। *व्यव॰ ५६* आ।

स्फोट– वेदनाविशेषः। *उत्त॰ १२०*।

स्फोटितं– कम्पितम्। *नन्दी॰ ४१*।

स्मरण– जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तादुत्कर्षतोऽसङ्ख्येयकालात् परतो यत् स्मरणं सा धारणा। *नन्दी॰ १७७*।

स्मृति– प्रागुपलब्धमित्यादिरूपं सा स्मृतिः। *नन्दी॰ १६८*। स्मृतिः-पूर्वानुभूतालम्बनः प्रत्ययविशेषः। *नन्दी॰ १८७*। धारणाभेदः। *दशवै॰ १२५*।

स्मृतिकालः– स्मर्यन्ते यत्र भिक्षाकालः सः स्मृतिकालः-भिक्षाकालः। *दशवै॰ १८३*।

स्यन्दनं– भ्रामरीषड्भ्रामरीपरिवादनीनां स्यन्दनम्। *राज॰ ५२*।

स्वं– कर्म। *आचा॰ ४३०*।

स्वधीतं– सुष्ठु-कालविनयाद्याचाराद्येनाधीतं, गुरुसकाशात् सूत्रतः पठितं स्वधीतम्। *स्था॰ १७३*।

स्वपक्ष– संयतवर्गः। *आचा॰ ३२६*।

स्वभावः– स्वात्मीयो भावः-स्वभावः स्वशीलम्। *व्यव॰ १२१* आ।

स्वभावः– धर्म्मः। *स्था॰ ३७५*।

स्वभावः– निसर्गः। *आव॰ ६०४*। स्वभावः-स्वो भावः।

स्वभावः– तस्यैवात्मीया सत्ता। *नन्दी॰ ४०*। स्वभावः-यः स्वो भावः स्वभावः आत्मीयो भावः। *नन्दी॰ २२४*।

स्वभाववादी– अस्ति स्वभावः स्वतो नित्य इति वादी। *आव॰ ८१६*। स्वभाववादी। *स्था॰ २६८*। *सम॰ ११०*।

स्वयम्पचः– तापसः। *दशवै॰ २६०*।

स्वयम्बुद्धः– साधुभेदविशेषः। *भग॰ ४*। स्वयम्बुद्धः-स्वयं-आत्मना बुद्धः-तत्त्वं ज्ञानवान् स्वयम्बुद्धः। *स्था॰ ३३*।

स्वरूपभ्रष्टतेजा– ध्यामतेजा। *भग॰ ६८४*।

स्वरूपसत्ता– पारम्पर्यप्रसिद्धिः। *आव॰ ५३३*।

स्वल्पः– स्तोकः। *आव॰ ५६८*।

स्वल्पकुटीरकः– खुड्डलकः। *ओघ॰ ४४*।

स्वविषयं– स्वोचिताहारयोग्यम्। *प्रज्ञा॰ ५०३*।

स्वस्तिकः– नाट्यविशेषः। *जम्बू॰ ४२४*। स्वस्तिकः। *निशी॰ २५५* अ। स्वस्तिकः-शुभनाम। *भग॰ २८२*। स्वस्तिकः-सन्निवेशविशेषः। *जम्बू॰ २०९*।

स्वस्तिकश्रीवत्सनन्दावर्त्तवर्द्धमानकभद्रासनकलशमत्स्यदर्पण रूपाष्टमङ्गलाकाराभिनयात्मकः– प्रथमो नाट्यविधिः। *जीवा॰ २४६*।

स्वाति– वृत्तवैताढ्यवास्तव्यो देवः। *स्था॰ ७१*।

स्वीकरणं– ग्रहणम्। *उत्त॰ ७११*।

स्वैरिणी– दुश्चारिणी। *नन्दी॰ १५५*।

स्वोपज्ञशब्दानुशासनविवरण– आचार्यमलयगिरिकृतव्याकरणम्। *प्रज्ञा॰ २५१*।

– x –x –x – x –

ह

हं– आकारलोपदर्शनादहम्। *ज्ञाता॰ १८६*।

हंत– हन्तः-सम्प्रेषणे। *सूत्र॰ २७४*।

हंता– हन्ता-सम्प्रेषणप्रत्यवधारणविपादार्थे। *प्रज्ञा॰ ४३७*। *३२७*। वाक्यारम्भे कोमलामन्त्रणे वा। *जम्बू॰ १२२*। कोमलामन्त्रणार्थः। *भग॰ १६*। एवमेव तदिति-अभ्युगम-वचनः इति वृद्धाः। *भग॰ १६*। कोमलामन्त्रणः। *ज्ञाता॰ ६१*। हन्ता-विनाशकः। *ज्ञाता॰ ५५*। हन्ता-सम्प्रेषण-प्रत्यवधारणविवादेषु। *प्रज्ञा॰ २४७*।

हंता अत्थि– सद्भूतोऽयमर्थः। *भग॰ ११७*।

हंद– कोमलामन्त्रणं वचनम्। *स्था॰ ३८०*। आमन्त्रणे। *ज्ञाता॰ ११३*। आमन्त्रणे। *निशी॰ २१३* आ।

हंदह– हन्दहं-गृहणीत। *आचा॰ ३५५*।

हंदि– आमंत्रणे-प्रत्यक्षभावदर्शने वा। *निशी॰ ७३* अ। हन्दि इति सत्यै, तेन यथाशयं वदामीत्यर्थः, अथवा हंदीति सम्बोधनं शृण्वन्तु भवन्तः। *जम्बू॰ २०१*। हन्दी-उपप्रदर्शने। *दशवै॰ ६४*।

हंदी– उपप्रदर्शने। *दशवै॰ ३३*।

हंस– लोमपक्षीविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४९*। हंसः-परिव्राजकविशेषः। *औप॰ ९१*। हंसः-लोमपक्षिविशेषः। *जीवा॰ ४१*। हंसः-रजकः। *सूत्र॰ ११९*। हंसः-पतङ्गश्चतुरिन्द्रियो जीवविशेषः। *अनुयो॰ ३४*। हंस-

श्वेतपक्षः। *प्रश्न॰ ८*। अण्डजखेचरपक्षी। *भग॰ ३०३*। तेणगो। *निशी॰ २२८* आ।

हंसगब्भ– हंसगर्भकाण्डं-नरके षष्ठं हंसगर्भाणां विशिष्टो भूभागः। *जीवा॰ ८९*। हंसगर्भः-रत्नविशेषः। *जीवा॰ ३५९*। हंसगब्भः-रत्नविशेषः। *जाता॰ ३१*। हंसगर्भः-रत्नविशेषः। *जीवा॰ २३*। हंसगर्भः। *प्रज्ञा॰ २७*। हंसगर्भः-मणिभेदः। *उत्त॰ ६८९*।

हंसगब्भतूली– हंसगर्भतूली। *जीवा॰ १९२*। हंसगर्भतूली। *जम्बू॰ ३६*।

हंसतूली– मनोज्ञस्पर्शे दृष्टान्तः। *प्रज्ञा॰ ६२*।

हंसतेल्ल– औषधसंभारभृतहंसपक्वम्। *बृह॰ ११६* अ। *निशी॰ १९५* अ।

हंसपाक– हसेन-औषधसंभारभूतेन यत्तैलं पच्यते। *बृह॰ २०९* अ।

हंसरुत– मृदुस्पर्शे दृष्टान्तः। *उत्त॰ ६७७*। मृदुस्पर्शपरिणते दृष्टान्तः। *प्रज्ञा॰ १०*।

हंसलक्खण– विशेषवस्त्रः। *आचा॰ ४३३*। विशेषवस्त्रः। *भग॰ ४७३*। हंसस्वरूपं-शुक्लं हंसचिह्नम्। *भग॰ ४७६*। विशेष-वस्त्रम्। *आचा॰ ४२४*।

हंसवण्ण– हंसवर्णः। *जाता॰ २३१*।

हंसस्सर– हंसस्येव मधुरः स्वरो यस्य स हंसस्वरः। *जीवा॰ २०७*।

हंसस्सरा– हंसस्वरा-सुवर्णकुमाराणां घण्टा। *जम्बू॰ ४०७*।

हंसावली– हंसावलिः-हंसपङ्क्तिः। *जीवा॰ १९१*।

हंसासणा– येषां आसनानामधोभागे हंसा व्यवस्थिताः। *जम्बू॰ ४५*।

हंसोवल्लीली– हंसोली। *आव॰ ८१६*।

ह– खेदे। *बृह॰ १२३* आ।

हओ– हतः यष्ट्यादिभिस्ताडितः। *उत्त॰ ११४*। चपेटा-दिना हतः। *बृह॰ ११४* अ।

हओवहए– नानाव्याधिरुद्भावक्षतशरीरत्वाद्धतः समस्तलोक-परिभूतत्वादुपहतः। हतोपहतः। *आचा॰ १२०*।

हकुवी– वनस्पतिविशेषः। *अनुत्त॰ ५*।

हक्कविऊण– हक्कारयित्वा। *आव॰ ६७५*।

हक्कार– ह' इति अधिक्षेपार्थस्तस्य करणं हक्कारः। *स्था॰ ३९९*।

हक्कारिय– आहूतः। *ओघ॰ १९८*।

हक्कारेइ– हक्कारं करोति। *जीवा॰ २४८*।

हक्कोरेति– आक्रोश्यति। *आव॰ ३८४*।

हक्खुत्तं– अभिक्षिप्तम्। *आव॰ १४५*।

हगइ– हदति। *आव॰ ३६८*।

हट्ठ– हृष्टं-विस्मितम्। *भग॰ ११९*। दृढीभूतः। *ओघ॰ ४२*। हृष्टः-विस्मितः नीरोगः। *भग॰ ६९१*। हृष्टः-विस्मयमापन्नः। *जीवा॰ २४३*। हृष्टः-नीरोगः। *ओघ॰ १२६*। हृष्टः-तुष्टः। *अनुयो॰ १७९*। हृष्टः-बहिःपुलकादिकम्। *उत्त॰ ४४१*। दृष्टः-नीरुजः। *आव॰ ८४३*। हृष्टः-पुष्टधातुः। *जम्बू॰ ९०*। अगिलाणो। *निशी॰ ८२* आ। निरोगो। *निशी॰ २१२* आ। णिरोगो। *निशी॰ २२४* आ।

हट्ठतुट्ठ– अत्यर्थं तुष्टं हृष्टं वा विस्मितं तुष्टं च तोषवत्। *भग॰ ३१७*। हृष्टतुष्टः-अतीवतुष्टः। *जीवा॰ २४३*।

हट्ठा– शोकाभावेन हृष्टा इव हृष्टाः। *स्था॰ २४७*। आतङ्क-रहिता। *बृह॰ २०७*।

हठ– वनस्पतिविशेषः। *उत्त॰ ४९५*।

हड– हडः-वातप्रेरितः। *दशवै॰ ९७*।

हडकारग– हठेन करोति यः स हठकारकः। *प्रश्न॰ ४६*।

हडप्प– हडप्पो-द्रम्मादिभाजनं ताम्बूलार्थं पूगफलादि-भाजनं वा। *भग॰ ४९९*। *निशी॰ २७७* अ।

हडप्फ– आभरणकरण्डकः। *जाता॰ ५७*। हडप्फः-द्रम्मादि-भाजनं ताम्बूलार्थं पूगफलादिभाजनं वा। *जम्बू॰ २६४*।

हडाहड– अत्यर्थम्। *जाता॰ १९९*। अत्यर्थम्। *जाता॰ १९९*। अत्यर्थम्। *विपा॰ ३६*।

हडि– हडिः खोटकः। *औप॰ ८७*।

हडिबंधण– हडीबन्धनं-खोटकक्षेपः। *प्रश्न॰ १६४*।

हड्डि– काष्ठविशेषः। *प्रश्न॰ ५६*।

हढ– वनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ११४*। जलरुहविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। हढः-अनन्तजीववनस्पतिभेदः। *आचा॰ ५९*। साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*। हढः-जलजवनस्पतिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४०*।

हणंति– घ्नन्ति। *आव॰ ६५०*।

हण– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*। हनं-स्वरूपपरित्यागः। *उत्त॰ ४७०*। हनः। *जाता॰ २३८*।

हणरोमग– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

हणाइ– हन्ति। *उत्त॰ ४७८।*

हणिंहणिं– अहनि अहनि-प्रतिदिनं सर्वव्यापि। *प्रश्न॰ १५५।*

हणिहणि– अहन्यहनि-प्रतिदिनम्। *प्रश्न॰ १२४।*

हणुगा– हनुः। *आव॰ ६८९।*

हणुदाणि– तत इदानीम्। *बृह॰ ३* आ। तत इदानीम्। *बृह॰ १०५* आ।

हणुय– हनुकम्। *जीवा॰ २७२।* चिबुकम्। *अनुत्त॰ ५।*

हणुया– हनुः। *आचा॰ २८३।* चिबुकः। *अनुत्त॰ ५।*

हणुयाजंतमाई– हनुयन्त्रादि। *आव॰ ४०५।*

हणू– हनु-चिबुकम्। *प्रश्न॰ ८१।*

हणे– हन्ति। *ओघ॰ १४९।*

हण्डिका– पात्रविशेषः। *ओघ॰ १६१।*

हण्णू– मार्यमाणः। *सूत्र॰ ६२।*

हत्थंदुय– हस्तान्दुकं-लोहादिमयं हस्तयन्त्रणम्। *प्रश्न॰ ५६।*

हत्थ– हस्तम्। *आचा॰ ३४२।* हस्तः-प्रधानावयवः। *सम॰ ११६।* हसन्ति-तेनावृत्य मुखं घ्नन्ति वा घात्यमनेनेति हस्वः। *उत्त॰ २४३।* गदो। *निशी॰ ५८* अ। हस्तः-चतुर्विंशत्यङ्गुलमानः। *अनुयो॰ १५४।* हस्तनक्षत्रविशेषः। *सूर्य॰ १३०।* हस्तः। *स्था॰ ७७।* शीघ्रम्। *औप॰ ६२।* गणोकः। *निशी॰ ३८* अ।

हस्थकप्प– हस्तिकल्पं-धृतिमतिविषये नगरम्। *आव॰ ७०९।* हस्तकल्पं-क्रोधपिण्डदृष्टान्तोदाहरणे नगरम्। *पिण्ड॰ १३३।* नगरविशेषः। *ज्ञाता॰ २२६। निशी॰ १००।*

हत्थकम्मं– हस्तकर्म्म-प्रथमशबलः, हस्तक्रिया परस्परं हस्तव्यापारप्रधानः कलहः। *सूत्र॰ १८१।* हस्तकर्म्म-हस्तेन शुक्रपुद्गलनिर्घातनक्रिया। *स्था॰ १६३।* हस्तकर्म्महस्त-मैथूनम्। *आव॰ ६५५।*

हत्थकिच्च– हस्तकृत्यं-हस्तकरणम्। *भग॰ १९१।*

हत्थग– मुहपोत्तियां। *दशवै॰ ८२।* हस्तकं-मुखवस्त्रिका-रूपम्। *दशवै॰ १७८।* रयहरणं। *निशी॰ ५८* अ।

हत्थगा– हस्तकाः-समूहाः। *जम्बू॰ ४४९।*

हत्थच्छिन्नयं– हस्तच्छेदनम्। *सूत्र॰ ३२८।*

हत्थउड– हस्तपुटः। *आव॰ ६३३।*

हत्थताल– हस्तेन ताडनं हस्ततालः। *बृह॰ ८६* अ।

हत्थपुड– हस्तपुटं-वाद्यविशेषः। *जम्बू॰ १०१।*

हत्थब्भास– हस्ताभ्यासः। *आव॰ ४२५।*

हत्थमद्दिय– हस्तेन मर्दितं-मलितम्। *भग॰ ६८४।*

हत्थमालग– हस्तमालकम्। *जम्बू॰ १०६।*

हत्थमालय– हस्तमालकः-अङ्गेणेत्रिका। *औप॰ ५५।* हस्त-मालकं-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९।*

हत्थलघुत्तण– हस्तलघुत्वं-तृतीयाधर्मद्वारस्य पाठान्तरेणैका-दशमनाम। *प्रश्न॰ ४३।*

हत्थलत्तणं– परधनहरणकुत्सितो हस्तो यस्यास्ति स हस्त-लस्तद्भावो हस्तलत्त्वं, तृतीयाधर्मद्वारस्यैकादशमं नाम। *प्रश्न॰ ४३।*

हत्थसंठित– हस्तसंस्थितः। *सूर्य॰ १३०।*

हत्थाताल– हस्तेनाऽऽताडनं-हस्तातालः। *स्था॰ १६२।*

हत्थाभरण– हस्ताभरणं-अङ्गुलीयकादीनि। *स्था॰ ४२१।*

हत्थामोस– हस्तामर्शः। *आव॰ ४२७।*

हत्थालंब– हस्तालम्ब इव हस्तालम्बः। *स्था॰ १६४।* हस्तालम्बः-अशिवाद्युपशमायाभिचारुकमन्त्रादिः। *बृह॰ ८६* अ।

हत्थिंदु– हस्तान्दुः-करविषयकाष्ठमयबन्धनम्। *पिण्ड॰ १५७।*

हत्थिकन्नदिव– अन्तरद्वीपः। *स्था॰ २२६।*

हत्थिखंधवरगत– वरहस्तिस्कन्धगतः। *आव॰ ३४१।*

हत्थिगडगडाइय– हस्तिगडगडापितम्। *जीवा॰ २५७।*

हत्थिच्चगा– हस्तयोग्यानि आभरणानि। *पिण्ड॰ १२४।*

हत्थिजाम– हस्तियामः-राजगृहे वनखण्डविशेषः। *सूत्र॰ ४०९।*

हत्थिणउण– हस्तिनापुरं-ऋषभस्य प्रथमपारणकस्थानम्। *आव॰ १४६।*

हत्थिणपुर– हस्तिनापुरं-कृष्णवासुदेवनिदानभूमिः। *आव॰ १६३।* हस्तिनागपुरं-नगरविशेषः। *अनुत्त॰ ८।* हस्ति-नागपुरं-ब्रह्मदत्तनिदानभूमिः। *उत्त॰ ३७३।* असुत्तरोपपा-तिक्यां पञ्चमवर्गे नगरम्। *अनुत्त॰ ८।* १-हस्तिनापुर सनत्कुमार २-शान्ति ३-कुन्थ्वर, ४-सुभूमराजधानी-५। *आव॰ १६१।* हस्तिनापुरं-नगरविशेषः ब्रह्मदत्तभ्रमणनगरम्। *उत्त॰ ३७९।*

हत्थिणाउर– हस्तिनापुरं-राजाभियोगविषये नगरम्। *आव॰ ८११।* हस्तिनापुरं-सुमुखगाथापतिनगरम्। *विपा॰ ९१।* हस्तिनागपुरं-सुनन्दराजधानी। *विपा॰ ४८।*

कुरुजनपदे नगरम्। *ज्ञाता० १४२*। नगरविशेषः। *ज्ञाता० २५३*। नगर-विशेषः। *ज्ञाता० २०८*। हस्तिनापुरं-नगरविशेषः। *आव० ३५८*। हस्तिनागपुरं-अनन्तवीर्यनगरम्। *आव० ३९२*। कार्तिकश्रेष्ठीवास्तव्या नगरी। *भग० ७३७*। गंगदत्तवास्तव्या नगरी। *भग० ७०७*। यत्र सहस्रामवनोद्यानम्। *भग० ५१४*।

हत्थिणागपुर– बलराजराजधानि। *भग० ५३५*।

हत्थितावस– हस्तिनं मारयित्वा बहुकालं भोजनतो यापय-न्तीति। *भग० ५१९*। यो हस्तिनं मारयित्वा तेनैव बहुकाल भोजनतो यापयति हस्तितापसः। *औप० ९०*। हस्तिनं मार-यित्वा तेनैव बहुकालं भोजनतो यापयति। *निर० २५*।

हत्थिपिप्पलीए– हस्तिपिप्पल्या-गजपिप्पल्या। *उत्त० ६५३*।

हत्थिपूयणा– गण्डीपदश्चतुष्पदविशेषः। *जीवा० ३८*।

हत्थिभुइ– हस्तिभूतिः-क्षुत्परिषहवोढा क्षुल्लकः। *उत्त० ८५*।

हत्थिमउ– हस्तिमृतः-मृतहस्तिदेहः। *जीवा० १०६*।

हत्थिमित– हस्तिमित्रः-उज्जयिन्यां गाथापतिः। *उत्त० ८५०*।

हत्थिमुह– हस्तिमुखः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा० १४४*। हस्तिमुखनामा अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा० ५०*।

हत्थिमुहदीव– अन्तरद्वीपः। *स्था० २२६*।

हत्थिमेंठ– हस्तिमेण्ठः। *आव० ३५०*।

हत्थिरयण– चक्रवर्त्तेः पञ्चमपञ्चेन्द्रियरत्नम्। *स्था० ३९८*।

हत्थिवाउए– हस्तिव्यावृतो-महामात्रः। *औप० ६३*।

हत्थिसीस– नगरविशेषः। *ज्ञाता० २२७*। हस्तिशीर्षः ग्राम-विशेषः। *आव० २१८*। हस्तिशीर्षनगरं यत्र दमदन्तराजा। *आव० ३६५*।

हत्थिसीसनयर– नगरविशेषः। *ज्ञाता० २०८*।

हत्थिसुंडिया– हस्तिशुण्डिका-एकं पादमुत्पाट्योपवेशनं सा। *बृह० २००*अ।

हत्थिसोंडगा– हस्तिसौंडिका। *स्था० २९९*।

हत्थिसोंडा– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा० ४२*। त्रीन्द्रियजन्तुवि-शेषः। *जीवा० ३२*।

हत्थी– गण्डीपदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*। हस्ती-गण्डीपदचतु-ष्पदः। *जीवा० ३८*।

हत्थीपूयणया– गण्डीपदविशेषः। *प्रज्ञा० ४५*।

हत्थीसीस– हस्तिशीर्षनगरं अदीनशत्रुराजधानी। *विपा० ८९*।

हत्थुत्तरा– हस्तोत्तरा-उत्तरफाल्गुनी-सुधर्मस्वामिजन्मनक्ष-त्रम्। *आव० २५५*।

हत्थुस्सेह– हस्तोच्छ्रयः। *आव० ५२४*।

हवज्ञ– भार्यादेशकरः-अन्वर्थः पुरुषविशेषः। *पिण्ड० १३५*।

हदुसरक्खो– विष्ठासरजस्कः। *आव० ६३२*। *निशी० १८६* अ।

हट्ठ– हृष्टः-वनसि परितोषवान्। *बृह० २४७*आ।

हनुक– शरीरावयवः। *आचा० ३८*।

हनुमत्– महाविद्याधरराजः। *प्रश्न० ८९*।

हन्त– कोमलामन्त्रणे-अभ्युपगमद्योतने वा। *अनुयो० १६१*।

हम्म– हर्म्यं-धनवतां गृहम्। *सूर्य० ६९*। हर्म्यं-शिखररहितं धनवतां भवनम्। *जीवा० २७९*।

हम्मतल– भूमितलं तरं वा हम्मतलं। *निशी० ८४*अ।

हम्मति– हन्यते-हनिष्यति। *उत्त० ४९१*। हन्यते। *ओघ० १५९*।

हम्ममाण– हन्यमानः। *आव० ८११*।

हम्मिअ– हर्म्यं-शिखररहितं धनवतां भवनम्। *जम्बू० १२१*।

हम्मिए– धार्मिकः-धर्मेण चरति-व्यवहरति वा धार्मिकः। *विपा० ४८*।

हम्मितल– हर्म्यतलं-भूमिगृहम्। *आचा० ३६२*।

हम्मियतलसंठिया– हर्म्यतलसंस्थिता हर्म्यं-धनवतां गृहं तस्य तल-उपरितनो भागस्तत्र संस्थित-संस्थानं यस्याः सा। *सूर्य० ६९*।

हम्मिहामि– घानिषम्। *आव० ३५४*।

हय– हतं-खण्डितम्। *जम्बू० २४२*। प्रहारदानतः हतः। *भग० ३१९*। हतः-दूषितः। *बृह० १८५*आ। हतः-निन्दावाचकः। *बृह० १९८*आ। हतः-ताडितः। *उत्त० ३६८*।

हयइच्छित– हृदयेप्सितं-मनोवाञ्छितम्। *ज्ञाता० ३१*।

हयकंठ– हयकण्ठः हयकण्ठप्रमाणः। *जम्बू० ५८*। हयकण्ठः –हयकण्ठप्रमाणरत्नविशेषः। *जीवा० २१४*,

२३४। हय-कण्ठप्रमाणरत्नविशेषः। *राज॰ ७७*।

हयकण्ण– हयकर्णः-अन्तरद्वीपविशेषः। *जीवा॰ १४४*।

हयकन्नदीव– अन्तरद्वीपविशेषः। *स्था॰ २२६*।

हयकन्ना– हयकर्णनामा अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*। हयकर्ण-द्वीपवास्तव्यामनुष्याः। *स्था॰ २२६*।

हयच्छाया– अश्वसत्का छाया। *प्रज्ञा॰ ३२७*।

हयजोही– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८*।

हयतेय– हततेजः। *भग॰ ६८३*।

हयपोंडरीय– ह्रदपुण्डरीकः-पक्षिविशेषः। *प्रश्न॰ ८*।

हयमहिय– हतमथितः-अत्यर्थं हतः। *ज्ञाता॰ २२१*।

हययनिव्वुइयरे– ह्रदयनिर्वृत्तिकरं-मनःस्वास्थ्यकरम्। *ज्ञाता॰ १२*।

हयलक्खण– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८*।

हयलाला– अश्वलाला। *ज्ञाता॰ २५*।

हयलालापेलवाइरेग– हयलाला-अश्वलाला तस्या अपि पेल-वमतिरेकेण-हयलालापेलवातिरेकं, अतिविशिष्टमृदुत्वलघु-त्वगुणोपेतम्। *जीवा॰ २५३*।

हयविहया– हतविहता। *आव॰ ९८*।

हयवीही– हथवीथी-अन्यत्र नागवीथी। *स्था॰ ४६९*।

हयसंघाड– हयसङ्घाटः-हययुग्मम्। *जीवा॰ १८१*।

हयसत्तु– हतशत्रुः, मुद्गलैशपुरनृपतिः। *उत्त॰ १२१*।

हयहियओ– हतह्रदयः। *आव॰ २९३*।

हया– हताः-ताडिताः। *उत्त॰ ३६८*।

हयाणीय– चम्पियगुडिएहिं हतेहिं बलदरिसणा हयाणीयं। *निशी॰ ७१* आ।

हयानीक– सप्तनामनीकानां प्रथमः। *जीवा॰ २१७*।

हरइ– हरति-गृह्णाति। *पिण्ड॰ १३१*। हरति-उद्वालयति। *बृह॰ ८१* आ।

हरए– ह्रदः-नदः। *भग॰ ८३*।

हरणं– उदरान्तरसङ्क्रामणम्। *स्था॰ ५२३*।

हरणविप्पणास– हरणेन-मोषणेन विप्रणाशः-परद्रव्यस्य हर-णविप्रणासः, तृतीयाधर्मद्वारस्य चतुर्थदशमं नाम। *प्रश्न॰ ४३*।

हरतणु– हरतनुः-भुवमुद्भिद्य तृणाग्रादिषु भवति। *दशवै॰ १५३*।

हरतणुए– हरतनुर्यो भुवमुद्भुद्य गोधूमाङ्कुरतृणाग्रादिषु बद्धो विम्दुरूपजायते तत्। *प्रज्ञा॰ २८*।

हरतणुया– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

हरतणू– सलिलबिन्दवः। *ओघ॰ ११७*। हरतनुः-वर्षाशरत्कालयोर्हरिताङ्कुरमस्तकस्थितो जलबिन्दुः। भूमिस्नेहसम्प-र्कोद्भूतः। *आचा॰ ४०*। हरतनुः-यो भुवमुद्भिद्य गोधूमाङ्कुर-तृणाग्रादिषु बद्धो बिन्दुः। *जीवा॰ २५*।

हरतनु– स्नेहसूक्ष्मम्। *दशवै॰ २२९*। प्रातः सस्नेहपृथिव्युद्भव-स्तृणाग्रजलबिन्दुः। *उत्त॰ ६९१*।

हरति– आत्मवशं नयति। *जीवा॰ १८१*।

हरदीदग– ह्रदोदकम्। *आव॰ ६२०*।

हरहरा– अतीव भिक्षाप्रस्तावः। *आव॰ २७४*।

हराहि– गृहाण। *भग॰ ४८२*।

हरि– विद्युत्कुमारेन्द्रः। *स्था॰ ८४*। पुरुषविशेषः। *स्था॰ ५२४*। हरिः-पिङ्गो वर्णः। *स्था॰ ५०२*। हरिशब्देन सूर्य-चन्द्रः। *जम्बू॰ ३०६*। महाहिमवत् कूटम्। *स्था॰ ७२*। निषधवर्षधरे कूटम्। *स्था॰ ७२*। हरिसलिलताऽपरमपर्याया महानदी। *जम्बू॰ ३०८*। हरिः-एकोनचत्वारिंशत्तममहा-ग्रहः। *जम्बू॰ ५३५*। हरिः-विद्युत्कुमारेन्द्रः। *आव॰ २२१*।

हरिअसुहुम– हरितसूक्ष्मं-तच्चात्यन्ताभिनवोद्भिन्नं पृथिवीस-मानवर्णमेव। *दशवै॰ ३३०*।

हरिए– हरितं दूर्वादि। *दशवै॰ १५५*। हरितः। *जम्बू॰ ३०८*। हरितस्तु-शुकपिच्छवत् हरितालाभः। *जम्बू॰ २८*।

हरिएस– हरिकेशः-उत्तराध्ययनेषु द्वादशममध्ययनम्। *उत्त॰ ९*। *ओघ॰ २२३*। हरिकेशः-चाण्डालः। *उत्त॰ ३०२*। हरिकेशः-अपरनाम बलः। *उत्त॰ ३५७*। हरिकेश-चाण्डा-लविशेषः। *प्रश्न॰ १३*। हरिकेशः-मातङ्गजातीयः आभ्रचोरकः पुरुषः। *दशवै॰ ४२*। हरिकेशः-चाण्डालः। *आव॰ ७१८*।

हरिएसा– हरिकेशाः-ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणो मध्ये प्रथमा। *उत्त॰ ३७९*। *निशी॰ ४३* आ।

हरिएसिज्जं– उत्तराध्ययनेषु द्वादशममध्ययनम्। *सम॰ ६४*।

हरिकंत– हरिकान्तः-विद्युत्कुमारीणामधिपतिः। *प्रज्ञा॰ ९४*। हरिकाः। *जीवा॰ १७०*। हरिकान्तः-चतुर्थो दक्षिणनिका-येन्द्रः। *भग॰ १५७*।

हरिकंतदीव– हरिकान्तद्वीपः। *जम्बू॰ ३०२*।

हरिकंतप्पवायकुंड– हरिकान्ताप्रपातकुण्डः-यत्र हरीकान्ता-महानदेः प्रपातः। *जम्बू॰ ३०२*।

हरिकंतप्पवायदह– हरिकान्तामहानदौ हरिकान्ताप्रपातह्रदः। *स्था॰ ७५*।

हरिकंता– हरिकान्ता महानदी। *जम्बू॰ ३०२*। हरिकान्ता-महानदी। *जम्बू॰ ३०५*।

हरिकन्न– हरिकर्णः-अन्तरद्वीपः। *प्रज्ञा॰ ५०*।

हरिकांत– इन्द्रविशेषः। *स्था॰ २०५*।

हरिकान्ता– महानदीविशेषः। *स्था॰ ७४*। महाहिमवति कूटम्। *स्था॰ ७२*।

हरिकुंड– हरिकुण्डः-कुण्डविशेषः। *जम्बू॰ ३०८*। *स्था॰ ७४*।

हरिकुलपहु– कृष्णः। *भक्त॰*।

हरिकुट– विद्युत्प्रभाभिधाने गजदन्तीकारपर्वते कूटम्। *सम॰ १०५*। हरिनाम्नो दक्षिणश्रेण्यधिपविद्युत्कुमारेन्द्रस्य कूटं-हरिकूटम्, विद्युत्प्रभवक्षस्कारकूटनाम। *जम्बू॰ ३५५*।

हरिकेशबल– सहायलब्धिकः। *बृह॰ १५६ अ*। अस्त-मितोदिते दृष्टान्तः। *स्था॰ २३७*।

हरिचंदण– हरिचन्दनः-अन्तकृद्दशानां षष्ठमवर्गस्याष्टम-मध्ययनम्। *अन्त॰ १८*। हरिचन्दनः। *अन्त॰ २३*।

हरिडए– हरीतकः-कोङ्कणदेशप्रसिद्धः कषायबहुलः वृक्ष-विशेषः। *प्रज्ञा॰ ३१*।

हरिणमिय– हरिणश्चासौ मृगश्च हरिणमृगः। *उत्त॰ ६३४*।

हरिणेगमेसि– विद्याराजः। *आव॰ ४११, १७९*। हरेः-इन्द्रस्य निगमं-आदेशं इच्छतीति हरिनैगमेषी। *जम्बू॰ ३९७*।

हरिणेगमेसि– सुलसाया इष्टदेवः। *अन्त॰ ७*। पदानिकाधि-पतिः। *स्था॰ ३०२*। सुधोषाघण्टावादकः। *ज्ञाता॰ १२७*। हरिनैगमेषी-महावीरगर्भपरावर्तको इन्द्रसम्बन्धीदेवः। *भग॰ १२८*।

हरित– महानदी। *स्था॰ ७४*। हरितं-दूर्वादि। *भग॰ ३०६*। तं चेव अंकुरभिण्णं हरितं। *निशी॰ ८३ अ*। वास्तु-लादि, सामान्यतस्तरूवनस्पतिः। *बृह॰ १६३ अ॰*। हरितं-दूर्वादिवनस्पतिः। *प्रश्न॰ १२७*। हरितः-तन्दुलीक-वस्तुलप्रभृतिः। *जीवा॰ २६*। हरितं-दूर्वादि। *जम्बू॰ १७४*।

हरितको– औषधिविशेषः। *आव॰ ३९०*।

हरितग– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०२*। वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ८०२*। हरितविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। हरितकं-नीलकम्। *भग॰ १००*।

हरितगरेरिज्जमाणे– हरितकाश्च ते नीलका रेरिज्जमानाश्च हरितकरेरीज्यमाना। *भग॰ ३००*।

हरितपणीय– हरितं-तत्र शाकादि बाहुल्येन भक्ष्यते। *ओघ॰ ६३*।

हरितभद्राः– यक्षभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

हरिवत्थो– सव्वे चेव वणस्सइ कोमलो हरितवत्थो। *निशी॰ १४२ अ*।

हरितसुहुम– हरितसूक्ष्मं-अत्यन्ताभिनवोद्भिन्नपृथिवीसमानवर्णं हरितमेवेति। *स्था॰ ४३०*।

हरिताल– क्षारमृत्तिका। *आचा॰ ३४२*।

हरितालिया– हरितालिका-पृथिवीकाररूपा प्रतीता। *जीवा॰ १९१*।

हरितालियागुलिया– हरितालिकागुलिका-हरितालिकाखार-निर्वर्त्तिता गुटिका। *जीवा॰ १९१*।

हरितालियाभेय– हरितालिकाभेदः-हरितालिकाछेदः। *जीवा॰ १९१*।

हरिदिव– हरिद्वीपः। *जम्बू॰ ३०८*।

हरिद्दा– हरिद्रा। *जीवा॰ १९१*।

हरिद्दागुलिया– हरिद्रागुलिका-हरिद्रासारनिर्वर्त्तिता गुलिका। *जीवा॰ १९१*।

हरिद्दाभेओ– हरिद्राभेदः-हरिद्राच्छेदः। *जीवा॰ १९१*।

हरिनैगमेषि– भगवन्महावीरगर्भसंक्रामको देवः। *सम॰ १०६*।

हरिप्पवायद्दह– ह्रदविशेषः। *स्था॰ ७५*।

हरिबेर– ह्रीवेरः-बालकः। *उत्त॰ १४२*।

हरिमंथा– कालचणया। *दशवै॰ ९२*।

हरिमन्थ– हरिमन्थः-कृष्णचणकः। *दशवै॰ १९३*।

हरिमेल– हरिमेलकः-वनस्पतिविशेषः। *भग॰ ४८०*।

हरिमेलओ– हरिमेलकः-वनस्पतिविशेषः। *जम्बू॰ ५३०*।

हरिमेला– हरिमेला-वनस्पतिविशेषः। *जम्बू॰ २६५*। वनस्पतिविशेषः। *औप॰ ७०*।

हरिय– पिङ्गीभूतम्। *भग॰ ६५१*। *ज्ञाता॰ ११६*। हरितं-तन्दुलेयकादि। *उत्त॰ ६९२*। हरितं-व्रीहिकादि। *पिण्ड॰ १९*। उद्भिन्नं बीजं। *बृह॰ १६६ आ*। हरितं-शाकादि। *ओघ॰ ६३*। हरितं-मधुरतृणकटुभाण्डादि। *ज्ञाता॰ ४९*। हरितकः-ह्रस्वतृणम्। *ज्ञाता॰ २५*। हरि-तण्डुलीयकवस्तुलप्रभृतम्। *प्रज्ञा॰ ३०*। वत्थुलादि। *निशी॰ १४२ अ*। हरितः-नीलः। *जीवा॰ १८८*। हरितं-नीलतरपत्रम्। *औप॰ ७*।

हरियकंड– पिङ्गीभूतजालम्। *भग॰ ६५१*।

हरियक्कमण– हरिताक्रमणं सकलवनस्पतेः पादेन पीडनम्। *आव॰ ५७३*।

हरियग– हरितकं-जीरकादि। *स्था॰ ११८*। हरितकं-जीरकादि। *भग॰ ३२६*। हरितकम्। *सूर्य॰ २९३*। हरितकं-जीरकादिहरितम्। *प्रश्न॰ १६३*।

हरियगरेरिज्जमाणे– हरितक इतिकृत्त्वा 'रेरिज्जमाणेत्ति' आतिसयेन राजमानः। *भग॰ ६६४*।

हरियपण्णी– हरितपत्री-शाकादिहरिताबाहुल्येन भक्ष्यते। *व्यव॰ ७३*।

हरियपत्तीए– बाहुल्येन हरितपत्रशाकम्। *बृह॰ २३१ आ*।

हरियभोयण– प्रतिषेधभोजनम्। *स्था॰ ४६०*। *भग॰ ४६७*।

हरियभोयणा– हरितभोजना-हरितानि भोजने यस्यां सा। *आव॰ ५७६*।

हरियाल– हरितालः-पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९*। हरितालः। *प्रज्ञा॰ २७*। हरितालः धातुविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३६१*। हरितालः –धातुविशेषः। *उत्त॰ ६५३*। हरितालः। *उत्त॰ ६८९*।

हरियालगुलिया– हरितालमयीगुटिका। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

हरियालभेय– हरितालभेदः-हरितालस्य द्वैधीभावः। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

हरियालया– हरितालिका-पृथिवीविकाररूपा। *जम्बू॰ ३४*।

हरियालसमुग्गय– हरितालसमुद्गकम्। *जीवा॰ २३४*।

हरियालिया– हरितालिका दूर्वा। *भग॰ ५४२*। हरितालिका-दूर्वा। *अनुयो॰ २४*।

हरियाहडि– पूर्वं हृतं पश्चादाहृतं अनीतं वस्त्रं हृताहृतम्, हृताहृता हरिताहृतिका हृत्वा हरितेषु प्रक्षिप्ता। *बृह॰ ११७*।

हरियाहडिया– स्तेनानीतप्रतीच्छा हृताहृतिका। *व्यव॰ ३४५ आ*।

हरिरेणु– हरिद्रेणु-नीलवर्णपांसुः। *ज्ञाता॰ २३०*।

हरिवंश– उच्चैर्गोत्रविशेषः। *सूत्र॰ २३६*।

हरिवंस– हरिवंशः-अरिष्ठनेमिवंशस्थानीयः। *आचा॰ ३२०*। हरिवंशः-कुलविशेषः। *आव॰ १७९*।

हरिवर्ष– रुक्मिशिखरिणोरन्तराले क्षेत्रम्। *स्था॰ ६८*। निषधे कूटम्। *स्था॰ ७२*।

हरिवस्स– हरिवर्षः। *जम्बू॰ ३०२*।

हरिवास– हरिवर्षः-अकर्मभूमिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५०*।

हरिवासकूड– हरिवर्षकूटं निषधे कूटम्। *जम्बू॰ ३०८*।

हरिवाहण– हरिवाहनः-नन्दीश्वरे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६५*।

हरिस– रूढिगम्यम्। *औप॰ ५५*। रोग-विशेषः। *भग॰ १९७*।

हरिसय– हर्षकं-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६९*। हर्षकम्। *जम्बू॰ १०६*।

हरिसवसविसप्पमाणहियए– हरिवंशविषर्षद्हृदयः-हर्षवशेन विसर्प्पद्-विस्तारं व्रजद् हृदयं यस्य स। *भग॰ ११९*।

हरिसह– हरिषहः उत्तरनिकाये चतुर्थो इन्द्रः। *भग॰१५७*। हरिस्सहः-प्रियपृच्छकः। *आव॰ २२१*।

हरिसागओ– सञ्जातहर्षः। *आव॰ २६९*।

हरिसेण– दशमचक्रवर्त्ती। *सम॰ १५२*। हरिसेणः-दशमचक्रवर्त्ती। *आव॰ १५९*।

हरिस्सह– लोकपालविशेषः। *स्था॰ २०५*। विद्युत्कुमारेन्द्रः। *स्था॰ ८४*। हरिस्सहः-विद्युत्कुमाराणामधिपतिः। *प्रज्ञा॰ ९४*।

हरिस्सहकुड– हरिसहकुटः-माल्यवद्वक्षस्कारे कूटः। *सम॰ १०५*। उत्तरश्रेणिपतिविद्युत्कुमारेन्द्रस्य कूट हरिस्सहकूटम्। *जम्बू॰ २३८*। हरिस्सहकूटं-माल्यवन्ते कूटम्। *जम्बू॰ ३३९*।

हरी– एकोनचत्त्वारिंशत्तममहाग्रहः। *स्था॰ ७९*। *भग॰ ७००*। सद्यग्रामस्य मूर्च्छना। *स्था॰ ३९३*। हरिः-हरित्सलिला-महानदीः। *जम्बू॰ ३०५*।

हरीमण– ह्रीमनाः-ह्रीः-लज्जा-संयमो मूलोत्तरगुणभेदभिन्न-स्तत्र मनो यस्याऽसौ, ह्रीमनः योऽनाचारं कुर्वन्नाचार्यादिभ्यो लज्जते स। *सूत्र॰ २३४*।

हरे– हंहो। *आव॰ ६२७*।

हरेणुअ– हरेणुकः-प्रियङ्गु। *उत्त॰ १४२*।

हर्षपुरीय– गच्छविशेषः। *अनुयो॰ २७१।*

हल– हलः-भूमिकर्षकशस्त्रविशेषः। *आव॰ ८२९। भग॰ १८२।* लाङ्गलम्। *प्रश्न॰ २१।* हलम्। *जीवा॰ ११७।* हलः-प्रतीतम्, अधोनिबद्धतिर्यक्तीक्ष्णलोहपट्टिकम्। *अनुयो॰ ४८।* हले-नानादेशापेक्षया गौरवकुत्सादिगर्भमामन्त्रणवचनम्। *दशवै॰ २१६।*

हलबंभ– हलकर्षः। *उत्त॰ ११९।*

हलहरकोसेज्ज– हलधरकौशेयं-बलदेववस्त्रम्। *ज्ञाता॰ ६।*

हलहरवसण– हलधरवसनं-बलदेववस्त्रम् नीलत्वात्। *प्रज्ञा॰ ३६०।*

हलिद्दरुक्ख– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०४।*

हलिद्दा– हरिद्रा-इहपिण्डहरिद्रा। *प्रज्ञा॰ ३६१।* हरिद्रा-कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।* हरिद्रा-हारिद्रवर्णपरिणता। *प्रज्ञा॰ १०।* हरिद्रा-पिण्डहरिद्रा। *उत्त॰ ६५३।*

हलिद्दुग– हरिद्राकः-ग्रामविशेषः। *आव॰ २०५।*

हलिमच्छा– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४।*

हलियंड– बंभणिया अंडयं। *दशवै॰ १२१।*

हलीमुह– हलीमुखम्। *जम्बू॰ २१२।*

हलीसागत– मत्स्यविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४४।*

हलीसागर– मत्स्यविशेषः। *जीवा॰ ३६।*

हलोहलिअंडं– सरडीअंडगं। *दशवै॰ १२१।*

हल्ल– हल्लः-चम्पायां कूणिकराज्ञो अनुजः। *भग॰ ३१६।* गोवालिकातृणसमानाकारः कीटकः। *भग॰ ६८४।* हल्लः-अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य षष्ठममध्ययनम्। *अनुत्त॰ २।* हल्लः-शिक्षायोगदृष्टान्ते श्रेणिकचेल्लणासुतः। *आव॰ ६७९।*

हविपिंड– घृतपिण्डः। *मरण॰ ।*

हविप्रचुर– अतिस्निग्धः। *आव॰ ५६८।*

हव्व– शीघ्रम्। *ज्ञाता॰ २२१।* शीघ्रम्। *जीवा॰ २८२।* शीघ्रम् । *उत्त॰ ५७७।* कदाचित्। *जम्बू॰ १२२।* शीघ्रम्। *जीवा॰ ३९९।* शीघ्रम्। *भग॰ ७८।* शीघ्रम्। *स्था॰ ११७।* शीघ्रम्। *बृह॰ ३५* आ। हव्यं-शीघ्रम्। *अनुयो॰ १६२।*

हव्ववाह– हुतभुक्। *आचा॰ १९७।*

हव्वाए– आरात् तीराय। *आचा॰ ११३।* एहिकसुखभाजः। *सूत्र॰ १९०।* अर्वाक्तटवर्त्ती। *सूत्र॰ २७३।*

हसण– हसनं-स्वाभाविकहास्यम्। *आव॰ ६३४।* मुहं विप्फालिय सविकारकहक्कहं हसणं। *निशी॰ ६१।*

हसन– अट्टट्टहसादि। *उत्त॰ ७१०।*

हसहसायइ– भृशं दीप्यते। *बृह॰ २०१* अ।

हसहसेइ– देदीप्यते। *बृह॰ ३१५* अ।

हसहसेऊण– जाज्वलित्वा। *बृह॰ २५९* अ।

हसहसेति– प्रज्वलति। *बृह॰ २७* आ।

हसिय– हसितं-सप्रमोदं कपोलसूचितं हसनम्। *सूर्य॰ २९४।* हसितं-हासः। *प्रश्न॰ १३७।* हसितं-हसनं कपोलविकासि प्रेमसंदर्शि च। *जम्बू॰ ११६।* हसितं-हसनं-कपोलवि-कासि प्रेमसंदर्शि च। *जीवा॰ २७६।*

हसियसद्द– हसितशब्दः-कलहादिकम्। *उत्त॰ ४२५।*

हस्त– शरीरावयवः। *आचा॰ ३८।*

हस्तकर्म्म– प्रथमशबलः। *प्रश्न॰ १४४।*

हस्तितापस– हस्तिनं व्यापाद्यात्मनो वृत्ति कल्पयन्तीति हस्तितापसः। *सूत्र॰ ४०४।*

हस्तिदन्तक– भूलकम्। *जम्बू॰ २४४।*

हस्तिनागपुर– कुरुजनपदे नगरम्। *ज्ञाता॰ १२५।* पाण्डुराज-धानी। *प्रश्न॰ ८७।*

हस्तिमित्र– धनशर्मपिता। *मरण॰ ।*

हस्तिशिक्षा– लौकिकगुणचरणे उदाहरणम्। *आचा॰ ९।*

हस्तिसुण्डिका– यत्र तु पुताभ्यामुपविष्टः। सन् एकं पादमुत्पा-ट्यास्ते सा हस्तिसुण्डिका। *स्था॰ २९९।*

हस्त– महाकायेन्द्रः। *स्था॰ ८५।*

हस्सगइपरिणाम– ह्रस्वगतिपरिणामः-दीर्घगतिपरिणामाद्वि-परीतः। *प्रज्ञा॰ २८९।*

हस्सट्ठिय– हासार्थिकः हासार्थी। *प्रश्न॰ ३०।*

हस्सरती– महाकायेन्द्रः। *स्था॰ ८५।*

हाउं– हापयित्वा-वंचयित्वा। *बृह॰ १२* आ।

हाकट्ट– विलापम्। *निशी॰ १५५* आ।

हाडहडं– तक्कालं। *निशी॰ ९५* आ। देशीपदं तत्कालम्। *व्यव॰ ५६* अ।

हाडहडा– यत् लघुगुरमासादिकमापन्नस्तत् सद्य एव यस्या दीयते सा हाडहडा। *स्था॰ ३२६। निशी॰ १३९।*

हाणि– घ्राणं-पोथः। *जम्बू॰ २३७।*

हाणी– होनिः-क्षुधा बाधनम्। *ओघ॰ १२७।* हानि-हिलना। *ओघ॰ १६२।*

हादेज्ज– मारेज्ज। *निशी॰ २८०* अ।

हायंतो– । *ज्ञाता॰ १७१।*

हायणि– हायनी-जन्तोः षष्ठी दशा। *दशवै॰ ८*।

हायणी– हापयति पुरुषमिन्द्रियेष्विति-इंद्रियाणि मनाक् स्वार्थग्रहणापटूनि करोति हापयति हायणि। *स्था॰ ५१९*। दशदसायां षष्ठी। *निशी॰ २८* आ।

हार– भागः। *भग॰ ५३५*। हारः-अष्टादशसरिकः। *ज्ञाता॰ १९* हारः। *आव॰ १२४*। हारः-अष्टादशसरिकः। *जीवा॰ १८१*। हारः-अष्टादशसरिकः। *औप॰ ५५*। द्वीपविशेषः। *जीवा॰ ३६८*। हारः-भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८*। हारः-मुक्ताकलापः। *उत्त॰ ६५३*। तन्नामाद्वीपः समुद्रोऽपि च। *प्रज्ञा॰ ३०७*। अष्टादशसरिकः। *भग॰ ४७७*। हारः-अष्टादशसरिकः। *जम्बू॰ १०५*।

हारण– धारणं-अङ्गीकरणम्। *आचा॰ ५९*।

हारद्धहार– हारार्धहारः। *आव॰ १२४*।

हारपुडपाय– लोहपात्रम्। *आचा॰ ४००*।

हारपुडय– हारपुटकं-मुक्ताशुक्तिपुटम्। *औप॰ ९३*।

हारप्पभा– हारप्रभा-अपरिणीता दुहिता, चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टा-न्ते धनसार्थवाहपुत्री। *आव॰ ३९९*।

हारभद्द– हारभद्रः हारद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारमहाभद्द– हारमहाभद्रः-हारे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारमहावर– हारे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवर– हारवरः-द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३६८*। हारवरः-हारवरे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*। हारसमुद्रे-पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरभद्द– हारवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरमहाभद्द– हारवरे द्वीपेऽपरार्द्धापतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरमहावर– हारवरे समुद्रेऽपरार्द्धापतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरावभास– हारवरावभासः-द्वीपविशेषः। समुद्रविशेषश्च। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरावभासभद्द– हारवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरावभासमहाभद्द– हारवरावभासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरावभासमहावर– हारवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवरावभासवर– हारवरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा॰ ३६८*।

हारवा– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

हारवित– आहारितम्। *आव॰ १०३*।

हारा– मृतवाहकाः। *व्यव॰ २६७* अ।

हारित– जिह्वेन्द्रियप्रीतिकारकमित्यर्थः। *निशी॰ १२४* आ। पराजितः। *भग॰ ३१७*।

हारिता– कोच्छगोत्रे भेदः। *स्था॰ ३९०*।

हारित्ता– हारयित्वा-नाशयित्वा। *उत्त॰ २७८*।

हारी– मनआह्लादकारी। *आचा॰ २४२*।

हारोद– हारोदः समुद्रविशेषः। *जीवा॰ ३६८*।

हारोस– म्लेच्छविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५५*।

हालहला– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

हालाहल– विसजातिभेओ। *दशवै॰ १३२*। त्रीन्द्रियजन्तु-विशेषः। *जीवा॰ ३२*।

हालाहला– सावस्त्यां कुम्भकारी। *भग॰ ६५९*। गोशालाका-धिकारे कुम्भकारी। *भग॰ ६७५*।

हालिद्दगुलिया– हरिद्रागुटिका-हरिद्रानिवर्त्तिता गुटिका। *प्रज्ञा॰ ३६१*।

हालिद्दपत्त– चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। *जीवा॰ ३२*। चतुरि-न्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२*।

हालिद्दभेद– हरिद्राभेदः-हरिद्राया द्वैधीभावः। *प्रज्ञा॰ ६१*।

हालिद्दा– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४*।

हाव– हावः-मुखविकारः। *ज्ञाता॰ १४४*। हावः-मुखविकारः। *प्रज्ञा॰ १४०*।

हाविज्जामि– हापयामि। *आव॰ ३५८*।

हासंकुहए– हास्यकुहकः-हास्यकारिकुहकयुक्तः भिक्षुविशेषः। *दशवै॰ २६९*।

हास– विज्झुणमालीणो अग्गमहिषी। *निशी॰ ३४५*। अ। हासः-दक्षिणात्यमहाक्रन्दितव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ९८*। हासः-कपोलविकासादिः। *उत्त॰ ६२६*। हासो-विस्मयादिषु वक्रविकोशात्मकः। *उत्त॰ २६१*। हासो-मुखविकाशात्मकः। *उत्त॰ ४६४*। हासः-प्रहसनिकाभिधानो रसविशेषः। *प्रश्न॰ १३९*। हास्यः-विकृतासम्बन्धपरवचनवेषालङ्कारादिहास्या-र्दपदार्थप्रभवो मनः-प्रकर्षादिचेष्टात्मको रसः। *अनुयो॰*

१३५। हर्षः-प्रमोदः। *ज्ञाता॰ १३१*। हासः। *आचा॰ १५९*। हासः –हास्यते हास्यम्। *दशवै॰ ७८*। हास्यमिश्रितं मृषा। *स्था॰ ४८९*।

हासइत्ता– हासकान् परिहासकारी। *प्रश्न॰ १२१*।

हासणकर– हासनकरो-वेषवचनादिना स्वपरहासोत्पादकः। *स्था॰ २७५*।

हासणिस्सिया– हास्यनिसृता-यत्केलिवशतोऽनृतभाषणम्। *प्रज्ञा॰ २५६*।

हासनिस्सेया– हास्यनिसृतो-मृषाभाषाभेदः। *दशवै॰ २०९*।

हासरई– हास्यरतिः-औदिच्यमहाक्रन्दितव्यन्तराणामिन्द्रः। *प्रज्ञा॰ ९८*।

हासा– पञ्चशैले देवी। नि॰ *४२* आ। उत्तररुचक वास्तव्यादिक्कुमारी। *आव॰ १२२*। उत्तररुचकवास्तव्या पञ्चमा दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१*। हासात् क्रीडातः। *व्यव॰ ३५७* आ।

हासुस्सलिओ– हसितमुखः-हासेन युक्तः। *बृह॰ ८५* अ।

हाहा– गन्धर्वभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०*।

हाहाभूए– हाहाभूतः-हाहा इत्येतस्य शब्दस्य दुःखार्तलोकेन करण हाहोच्यते, तद्भूतः प्राप्तो यः काल स हाहाभूतः। *जम्बू॰ १६७*। हाहा इत्येतस्य शब्दस्य दुःखार्तलोकेन करणं हाहोच्यते, तद्भूतः प्राप्तो यः कालः स हाहाभूतः। *भग॰ ३०५*।

हिंगुरुक्ख– वलयविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*।

हिंगुलए– हिङ्गुलकः। *प्रज्ञा॰ २७*। हिङ्गुलकः-पृथिवीभेदः। *आचा॰ २९*। हिङ्गुलकः। *उत्त॰ ६८९*।

हिंगुलयसमुग्गय– हिङ्गुलसमुद्गकम्। *जीवा॰ २३४*।

हिंगुलुय– हिङ्गुलकः। *उत्त॰ ६५३*।

हिंगुशिव– मालाकारकृतः। *स्था॰ २५७*।

हिंगुसिव– हिङ्गुशिवः-वाणव्यंतरविशेषः। *दशवै॰ ४४*।

हिंगोल– करुडागादियं। *निशी॰ २२* आ। मृतकभक्तं यक्षादियत्राभोजनं वा। *आचा॰ ३३४*।

हिंडतो– हिण्डमानः। *आव॰ ८५८*।

हिंस– हिंस्यत इति हिंस्यः-जीवः, हिंसनशीलो हिंस्रः-प्रमत्तः। *प्रश्न॰ ६*। हिनस्तीत्येवंशीलो हिंस्रः-स्वभावतः एव प्राणव्यपरोपणकृत्। उक्त॰ *२७४*।

हिंसइ– हिनस्ति-व्यापादयति। *दशवै॰ १५६*।

हिंसग– हिंसकं-परपीडाकारि। *दशवै॰ १८७*।

हिंसप्पयाण– हिंसाप्रदानं-आयुधादिप्रदानम्। *आव॰ ८३०*।

हिंसविहिंसा– हिंस्याः-जीवास्तेषां विहिंसा-विघातः हिंस्य-विहिंसा, हिंसनशीलो हिंस्रः-प्रमत्तस्तत्कृताविशेषवती हिंसा –हिंसाविहिंसा, प्राणवधस्य तुरीयः पर्यायः। *प्रश्न॰ ५*।

हिंसा– प्राणवधः। *प्रश्न॰ ४*। हिंसायै क्रिया, क्रियायास्तृतीयो भेदः। *आव॰ ६४८*। प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा। *दशवै॰ २४*।

हिंसागं– सौकरिकादिगृहम्। *ओघ॰ १५६*।

हिंसाणुबंधि– हिंसा-सत्त्वानां वधबन्धनादिभिः प्रकारैः पीडा-मनुबध्नाति सततप्रवृत्तं करोतीत्येवंशीलं यत्प्रणिधानं हिंसा-नुबन्धो वा यात्रास्ति तत् हिंसानुबन्धिः। *स्था॰ १८९*।

हिंसादंड– हिंसादण्डः-हिंसामाश्रित्य हिंसितवान् हिनस्ति हिंसिष्यति वा अयं वैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेन दण्डो-विनाशनं हिंसादण्डः। *सम॰ २५*।

हिंसादण्ड– हिंसिष्यतीत्यादि यत् दण्डः, तृतीयं क्रियास्था-नम्। *प्रश्न॰ १४३*।

हिंसादि– हिंस्रमत्स्यादि। *आव॰ ८२३*।

हिंसाफल– साम्परायिकं-संसारजननं-दुःखजननम्। *ओघ॰ २२०*।

हिअ– हितं-अभ्युदयः। *नन्दी॰ १६५*। हितं-अभ्युदयः। *आव॰ ४२८*। हितं-परिणामसुन्दरम्। *दशवै॰ २२३*।

हिअकरो– हितकरः-परिणामपथ्यकरः, प्रशस्तभावकरः। *आव॰ ४९९*।

हिअइम– अधिकं-वादकाले यत्परप्रत्यायनं प्रत्यतिरिक्तं दृष्टान्तनिगमादि तद्दोषः। अष्टमदोषः। *स्था॰ ४९२*।

हिए– ह्रीकः-लज्जालुः। *ओघ॰ २१६*।

हिएसए– हितैषकः-मुक्तिगवेषकः। *उत्त॰ ६५७*।

हिओ– हितोपदेशेन सम्यग् प्ररूपणाया वा हितः। *जीवा॰ २५५*।

हिङ्गुलक– लोहितवर्णपरिणतः। *प्रज्ञा॰ १०*। क्षारमृत्तिका। *आचा॰ ३४२*।

हिच्चा– हित्त्वा-गत्वा। *आचा॰ २४०*। हित्त्वा-गत्वा। *आचा॰ १९२*।

हिज्ज– हयः। *आव॰ ३०१*।

हिट्ठाहुतो– अधस्तात्। *उत्त॰ १०३*।

हिट्ठिल्ल माणुसुत्तरे संजूहे– गोशालकशतकेऽधिकारः। *भग॰ ६७४।*

हित– सुखम्। *व्यव॰ ३९८।* अपीडाकरं। *दशवै॰ ११५।* यथावद्विकल्पेनाप्तः। *उत्त॰ ५१८।*

हितय– हृदयं-हृदयमांसम्। *प्रश्न॰ ८।*

हिताकुरए– कुहणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३।*

हिदय– हृदयम्। *आव॰ ३१७।*

हिम– हिमं-स्त्यानोदकम्। *जीवा॰ २५।* हिमं-शिशिरसमये शीतपुद्गलसम्पर्काज्जलमेव कठिनीभूतम्। *आचा॰ ४०।* नारके वेदना। *जीवा॰ ११९।* हिमं-स्त्यानोदकम्। *दशवै॰ १५३।*

हिमए– शिशिरादौ वातेरिता हिमकणाः। *सूत्र॰ ३२८।* हिमं-स्त्यानोदकम्। *प्रज्ञा॰ २८।*

हिमकुंड– हिमकुण्डं-नारके वेदना। *जीवा॰ ११९।*

हिमकुंडपुंज– हिमकुण्डपुञ्जं-नारके वेदना। *जीवा॰ ११९।*

हिमगसंफासा– हिमसंस्पर्शाः-शीतस्पर्शवेदना। *आचा॰ ३०९।*

हिमपक्वं– शीतपक्वम्। *विपा॰ ८०।*

हिमपडल– हिमपटलं नारके वेदना। *जीवा॰ ११९।*

हिमपडलपुंज– हिमपटलपुञ्जं-नारके वेदना। *जीवा॰ ११९।*

हिमपुंजं– हिमपुञ्जं-नारके वेदना। *जीवा॰ ११९।*

हिमवंतं– हिमवान्-पर्वतविशेषः। *आव॰ ३९१।* हिमवान्-गिरिविशेषः। अद्भुतकार्यकारिवनस्पतिविशेषाणामुत्पत्ति-स्थानम्। *प्रश्न॰ १३५।* अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य चतुर्थ-ममध्ययनम्। *अन्त॰ ३।* हिमवान्-पर्वतविशेषः। *प्रश्न॰ १३२।*

हिमवंतकूड– हिमवत्कूटम्। *आव॰ ४३४।*

हिमवत्– वर्षधरपर्वतविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७३।* हिमवद्-वर्षधर-विशेषः। *ज्ञाता॰ १२८।* पर्वत-विशेषः। *उत्त॰ १६६।* हिमवान्-अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य चतुर्थममध्ययनम्। *अन्त॰ ३।* पर्वतविशेषः। *नन्दी॰ २२८।*

हिमसीयल– हिमशीतलः-कृष्णपुद्गलप्रकारः। *सूर्य॰ २८७।*

हिय– हितं-परमार्थतो मुक्तिवाप्तिस्तत्करणं वा सम्यग् दर्शन-ज्ञानचारित्राख्यम्। *सूत्र॰ १९७।* हितं-परिणामसुंदरम्। *व्यव॰ १९ अ।* हितः-एकान्तपथ्यः। *उत्त॰ २९१।* हितः-पथ्यः। *उत्त॰ २९०।* हितः-यथाभिलाषितविषयावाप्त्या-भ्युदयः। *उत्त॰ २९१।* हियं-हृतम्। *ओघ॰ १७२।* हितः-आयाति-पथ्यः। *उत्त॰ ४१६।* हितः-आत्यन्तिकद्रक्षाप्रकर्षे प्ररूपणेनानुकूलवर्त्ती। *सम॰ ३।* हितं-आपापाभावः। *भग॰ ६७२।* हितं-अभ्युदयः। *नन्दी॰ १६५।* हितं-अभ्युदयम्। *सम॰ ६२।* हितं-अनर्थप्रतिघातार्थप्राप्तिरूपम्। *सम॰ ११६।* हितं-पथ्यम्। *प्रश्न॰ १३०।* हितं-जन्मान्तरकल्या-णवहम्। *जम्बू॰ ३९८।* हितं-पथ्यम्। *भग॰ ११५।* हितं-जन्मान्तरेऽपि कल्याणवहं तथाविधकुशलम्। *राज॰ २६।* हृतः-प्रदेशान्तरे स्थापितः। *ज्ञाता॰ २१५।* हितः-मोक्षः। *उत्त॰ ६२१।*

हियउंडए– हृदयमांसपिण्डः। *विपा॰ ६८।*

हियउड्डावण– हृदयोड्डापनं-चित्ताकर्षणहेतुः। *ज्ञाता॰ १८७।*

हियकामए– सुखनिबन्धनं वस्तुवाञ्छति यः स। *भग॰ १६९।*

हियणुपेही– हितं पथ्यं अनुप्रेक्षते-पर्यालोचयतीत्येवंशीलो हितानुप्रेक्षी। *उत्त॰ ३८६।*

हियते– आक्षिप्यते। *व्यव॰ २११ अ।*

हियनिस्सेसा– हितः-पथ्यो भावाऽऽरोग्यहेतुत्वात्। निःश्रेयसो –मोक्षः हितनिःश्रेयसः। निश्शेषं-समस्तं हितं-सम्यग्ज्ञाना-दिनिश्शेशहितम्। *उत्त॰ २९०।*

हियमियभोई– हितमितभोजी-पथ्यस्तोकभोजी। *आव॰ ७६५।*

हिययं– हृदयं-पारमार्थिकाभिप्रायः। *सूर्य॰ २९६।* सम्यग-भिप्रायम्। *व्यव॰ २५७।*

हिययगमणीआ– हृदयङ्गमा। *सम॰ ६२।*

हिययरक्खग– हृदयरक्षकः-हृदयस्य त्रायका। *ज्ञाता॰ १६५।*

हिययसूल– रोगविशेषः। *भग॰ १९७।*

हिययुड्डावण– हृदयोड्डापनं-शून्यचित्ततताकारकम्। *विपा॰ ५४।*

हियसुहनिस्सेककामये– हितसुखनिःशेषकामः हितं यत् सुखं-अदुःखानुबन्धमित्यर्थः, तन्निःशेषाणां वाञ्छति

यः स। *भग॰ १६९।*

हियहिययो– हृदहृदयः आयत्तः। *आव॰ ६८७।*

हिया– हिता पथ्यान्नवत्। *भग॰ ४५६।* हिता-इहपरलोकाराधकत्वेन मुक्तिपापिका। *प्रज्ञा॰ २४७।* हिता-परिणामसुन्दरता। *जीवा॰ १४२।*

हियासए– हिताशयः-परोपकारचेता। *उत्त॰ ६५७।*

हिरण्ण– हिरण्यं-दीनारादिद्रव्यजातम्। आशा॰ *३६३।* हिरण्यं –घटितस्वर्णं स्वर्णम्। *उत्त॰ ३१६।* हिरण्यशब्देन सुवर्णं रूप्यमपि च। *जम्बू॰ ३८१।* हिरण्यं-रूपकादि। *दशवै॰ १९३।* हिरण्यं-अघटितं सुवर्णम्। *जीवा॰ २८०।* हिरण्यं-सुवर्णम्। *उत्त॰ १८८।* हिरण्यं-रूप्यम्। *जम्बू॰ ४१४।* हिरण्यं-अघटितरूपम्। *आव॰ १८१।* हिरण्यं-धर्मलाभा-दिकं वा। *सूत्र॰ २९२।* हिरण्यं-रूप्यमघटितसुवर्णं वा। *जम्बू॰ १२२।* रूपका। *निशी॰ १४४* आ। अघडियरूवं। *निशी॰ ८२* अ।

हिरण्णजुत्तिं– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ ३८।*

हिरण्णवए– हैरण्यवतः-अकर्मभूमिः। *प्रज्ञा॰ ५०।*

हिरण्णविही– हिरण्यविधिः-हिरण्यरूपो मङ्गलप्रकारः। *जीवा॰ २४६।*

हिरण्णागर– हिरण्याकरः। *ज्ञाता॰ २२८।* हिरण्याकारः-यस्मिन्निरन्तरं महाभूषाषु हिरण्यदलं प्रक्षिप्य हिरण्युमत्पा-ट्यते स। *जीवा॰ १२३।*

हिरण्यनाम– अरिष्टनगराधिपतिः। राममातुलः। *प्रश्न॰ ८८।* रुधिरराजपुत्रः। *प्रश्न॰ ९०।*

हिरण्यवत्– वर्षधरः। *स्था॰ ६८।*

हिरन्न– हिरण्यं-रजतमघटितं घटितं वा अनेक प्रकारं द्रम्मादि। *आव॰ ८२६। ज्ञाता॰ ४९।*

हिरन्नपागं– कलाविशेषः। *ज्ञाता॰ २८।*

हिरन्नपेड हिरन्नपेल– हिरण्यस्य मञ्जूषा। *भग॰ ६२८।*

हिरन्नवास– हिरण्यं-रूप्यं घटितसुवर्णमित्यन्ये वर्षोऽल्पतर-हिरण्यवर्षः। *भग॰ १९९।*

हिरन्नवुट्ठो– हिरण्यं-रूप्यं घटितसुवर्णमित्यन्ते, वृष्टिः-महति वृष्टिः-हिरण्यवृष्टिः। *भग॰ १९९।*

हिरि– ह्रीः-उत्तररूचकवास्तव्याऽष्टमी दिक्कुमारी महत्तरिका। *जम्बू॰ ३९१।* ह्री-लज्जा संयमो वा। *स्था॰ १३८।* ह्री-निरयावल्यां चतुर्थवर्गे द्वितीयममध्ययनम्। *निर॰ ३७।*

हिरिबर– हिरिबरं-वालकः। *ज्ञाता॰ २३२।*

हिरिबेरपुड– ह्रीबेरपुटः-वालपुटः। *जम्बू॰ ३५।*

हिरिम– जे सलज्जया स्वभावेनैव सलज्जा। *निशी॰ ९* अ। ह्रीः-लज्जा सा विद्यतेऽस्य ह्रीमान्। *उत्त॰ ३४७।* ह्रीमान् लज्जावान्। *उत्त॰ ६३५।*

हिरिमण– सत्त्वः-ह्रिया-हसिष्यन्ति मामुत्तमकुलजातं जनाः इति लज्जया मनस्येव न काये रोमहर्षकम्पादिभयलिङ्गोप-दर्शनात् सत्त्वं यस्य स ह्रीमनः। *स्था॰ २५१।*

हिरिमणसत्त– ह्रियाऽपि मनस्येव सत्त्वं यस्य न देहं शीतादिशु कम्पादिविकारभावात् स ह्रीमनः सत्त्वः। *स्था॰ ३४२।*

हिरिमिक– यक्षः अपरनामा दैवतम्। *व्यव॰ २४७* अ।

हिरिमेक्क– ह्रिमैकः-अस्वाध्याय विषये मातङ्गानामाडम्बरा-भिधानयक्षस्य अपरनाम। *आव॰ ७४३।*

हिरिलि– हिरिलिः-वनस्पतिविशेषः। *जीवा॰ २७।*

हिरोली– कन्दविशेषः। *उत्त॰ ६९१।* अनन्तकायवनस्पतिः। *भग॰ ३००।*

हिरिवत्तिय– ह्रीप्रत्ययं-लज्जानिमित्तम्। *भग॰ ८६।*

हिरिसत्त– ह्रिया-लज्जया सत्त्वं-परिसहादिसहने रणाङ्गणे वा अवष्टम्भो यस्य सो ह्रीसत्त्वः। *स्था॰ २५१।*

हिरिसिरि– परिवज्जिए। *भग॰ १७२।*

हिरो– हारिणो-मनआहलादकारिणो ह्रीरूपाः-याचनाऽचेलादयः। *आचा॰ २४१।* ह्रीरूपाः-याचनाऽचेलादयः। *आचा॰ २४२।* किंपुरिसेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *स्था॰ २०४।* सत्पुरिसेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। *भग॰ ५०४।* ज्ञातायां पञ्चमवर्गेऽध्ययनम्। *ज्ञाता॰ २५२।* महापद्मद्रहवास्तव्या देवी। *जम्बू॰ ३०१।* ह्रीः-उत्तररुचकवास्तव्या दिक्कु-मारी। धाव॰ *१२२।*

हिल्लीया– त्रीन्द्रियविशेषः। *प्रज्ञा॰ ४२।*

हिल्लीरी– मत्स्यबन्धविशेषः। *विपा॰ ८१।*

हिविप्पडं– विस्तरम्। *निशी॰ १५३* आ।

ही– प्रशान्तभावातिशयद्योत्तकः। *अनुयो॰ १४०।* कन्दार्पाति-शयद्योतकं वचः। *अनुयो॰ १३९। नन्दी॰ ६३।*

हीण– हीनः-असमग्रः। *ज्ञाता० १३९*। हीनः। *ज्ञाता० १९२*।

हीणगहण– हीनग्रहणं-विषमग्रहणम्। *व्यव० ८६* आ।

हीणपुण्णचाउद्दसी– हीना-असमग्रा पुण्या-पवित्रा चतुर्दशी। *ज्ञाता० १३९*।

हीणपेसण– हीनप्रेषणः-हीनगुर्वाज्ञापरः। *दशवै० २५१*।

हीणाइरित्तद्दंसण– हीनातिरिक्तदर्शनम्। *आव० ६१२*।

हीयमाण– अवधिज्ञाने चतुर्थो भेदः। *स्था० ३७०*।

हीर-हीरः– विषमच्छेदमुद्दन्तुरं वा। *प्रज्ञा० ३६*। लघुकुत्सितं तृणम्। *जीवा० २८२*। हीरोणाम असी। *निशी० १४१* अ।

हीरइ– ह्रीयते-अपनीयते। *दशवै० २२५*। रज्यति। *आव० ६७४*।

हीरक– वज्रः। *प्रज्ञा० २७*। वज्रम्। *जम्बू० ४१४*। गुरुत्वे दृष्टान्तः। *उत्त० ६७७*। हीरकः-वज्रमणिः। *उत्त० ६८९*।

हीरमाण– हीयमाणं-हीयमानम्। *आचा० ३३७*। हीयमाणः। *सूर्य० ६७*।

हीरविजयः– आचार्यप्रवरः। *जम्बू० ५४३*। सूरिवर-जम्बु-द्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिकारकाणामाचार्यः। *जम्बू० १*।

हीरि– हीरिः। *जम्बू० १०७*।

हीलंति– जात्याद्युद्घाटनतः हीलयति। *ज्ञाता० १४४*।

हीलणा– एक्कं वारं दुव्वणियस्स भवइ। फरूसं भणियस्स वा भवह। *दशवै० १४०*। हीलनं-जात्याद्युद्घाटनतः-कुत्सा। *भग० २२७*। अनभ्युथानादि। *अन्त० १८*। हीलनाजात्यु-द्घाटनम्। *प्रश्न० १०९*। जन्मकर्ममर्मोद्घट्टनम्। *औप० १०३*।

हीलणिज्जे– हीलनीयः। *ज्ञाता० ९४*।

हीलनं– सुयया-असूयया वा सकृदुष्टाभिधानं हीलनम्। *दशवै० २५४*।

हीलना– प्रवचनहानिः। *ओघ० १६२*।

हीलिअवयण– हीलितं-सासूयवचनम्। *स्था० ३७०*।

हीलिए– हीलितः-कदर्थितः। *आचा० ४३०*।

हीलिय– हीलितं-सासूयं गणिन्। वाचक। ज्येष्ठार्येत्यादि। *स्था० ३७०*। हीलितं-यत् गणिन् किं भवता वन्दितेने-त्यादि, हीलयित्वा वन्देते, कृतिकर्म्मणि एकविंशतितमो-दोषः। *आव० ५४४*।

हीलियव्व– हीलितव्यं-अवज्ञाकार्या। *प्रश्न० १६०*।

हीलिया– हीलिता। *आव० २२५*।

हीलेति– जात्याद्युद्घाटनतः कुत्सति। *भग० १६६*।

हीलेह– हीयलयेत्-अवधूतं पश्यत। *उत्त० ३६५*। जात्याद्यु-द्घाटनं कुरुत। *भग० २१९*।

हुंड– हुण्डं-षष्ठं संस्थानम्, यत्र सर्वेऽप्यवयवाः प्रमाणलक्षण-परिभ्रष्टास्तत् हुण्डसंस्थानम्। *जीवा० ४२*। हुण्डं-निम्नो-न्तम्। *ओघ० २११*। विषमस्थिति क्वचिन्निम्नं क्वचिदुन्न-तम्। *बृह० २४४* आ। समचउरंस जं ण भवति तं। *निशी० १२५* आ। हुण्डं-सर्वत्रासंस्थितं सस्वानम्, षष्ठं संस्थानम्। *आव० ३३७*। यत्र सर्वेऽप्यवयवाः प्रायो लक्षण-विसंवादिन् एव भवन्ति तत् संस्थानं हुण्डम्। *अनुयो० १०३*। हुण्डं-यत्र हस्तपादाद्यवयवः बहु प्रायः प्रमाणा विसंवादिनश्च। *सम० १५०*। यत्र सर्वेऽप्यवयवाः प्रमाणलक्षणपगिभृष्टास्तत् हुण्डं-षण्ठं संस्थानम्। *जीवा० ४२*। क्वचिन्निम्नं क्वचिदु-न्नतं यत्तत्। *ओघ० २११*। हुण्डं-सर्वत्रासंस्थितं संस्थानम्। *प्रश्न० १६*। सर्वत्रासंस्थितं, यस्य हि, प्रायेणैकोप्यवयवः शरीरलक्षणोक्तप्रमाणेन न संवदति तत् सर्वत्रासंस्थितं हुंडमिति। *स्था० ३५८*।

हुंडसंठाण– यत्र सर्वेऽप्यवयवाः प्रमाणलक्षणपरिभृष्टास्तद्-हुण्डसंस्थानम्। *प्रज्ञा० ४१२*। हुण्डसंस्थानम्। *प्रज्ञा० ४७२*।

हुंडिओ– हुण्डिकः-परलोकनमस्कारफलदृष्टान्ते मथुरायां चौरविशेषः। *आव० ४५४*। हुण्डिकः-अर्थाधिकारणोदाहरणे मथुरायां चौरविशेषः। *आव० ४५२*।

हुंवउट्ठं– कुण्डिकाश्रमणः। *भग० ५१९*। कुण्डिकाश्रमणः। *औप० ९०*। हुण्डिकाश्रमण। *निर० २५*।

हु-हुः– निश्चितम्। *व्यव० ३२* आ। समर्थनम्। *आव० ५०८*। निपातः। एवकारार्थः। *आव० १६७*। हु शब्दः हेत्वर्थे। *बृह० १२०* आ। हुः बहुल्यसूचकः। *उत्त० ३३७*। हुः-हेतौ। *आचा० २५१*।

हुच्चा– भूत्वा। *सूत्र० ३६७*।

हुडसंठिय– सर्वत्रासंस्थितम्। *भग० ७२*।

हुडुअंग– चतुरशीत्या लक्षैरवयैः हुडूकाङ्गं। *अनुयो० १००*।

हुडुक्का– महाप्रमाणो मर्दलः। *जीवा० २४५*। हुडुक्का। *औप० ६३*।

हुत्तं– अभिमुखम्। *प्रश्न० ६२*। *निशी० १४०* आ।

हुत्थिभागा– साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३४।*

हुयवह– हुतवहः-वैश्वानरः। *जीवा॰ १६४।*

हुयवहरत्था– हुतवहरथ्या। *उत्त॰ ३५४। उत्त॰ ३५५।*

हुयासण– हुताशनः वाणव्यन्तरविशेषः। *आव॰ २९५।* हुताशनः-आचारोदाहरणे पाटलिपुत्रे ब्राह्मणः। *आव॰ ७०७।*

हुरत्थ– बहिः। *आचा॰ २०१।*

हुरत्था– हुरवत्था-बहिः। *आचा॰ २३०।* अन्यत्र। *आचा॰ २७१।*

हुरब्भ– उरभ्रः-मेषः। *प्रश्न॰ ७।* हुरब्भा-वाद्यविशेषः। *उपा॰ २१।*

हुलायिकी– वीरल्लसकुनिः। *बृह॰ २०५* आ।

हुलितं– शीघ्रम्। *प्रश्न॰ १४।*

हुलियं– शीघ्रम्। *औप॰ ५४।* शीघ्रम्। *प्रश्न॰ ५०।*

हुसो– पोतलउयो जो वाहिमो। *दशवै॰ ११०।*

हुहुए– चतुरशीत्या लक्ष्यैर्हूहुकाङ्गः हुहुकम्। *अनुयो॰ १४०।*

हुहुए– कालविशेषः। *भग॰ ८८८।*

हुहुकंग– हूहूकाङ्गं-चतुरशीतिशतसहस्राणि। *जीवा॰ ३४५।*

हुहुग-हूहुकं– चतुरशीतिर्हूहुकाङ्गशतसहस्राणि। *जीवा॰ ३४५।*

हू-हूः– वाक्यालंकारे। *उत्त॰ ४०६।*

हूण-हूणः– चिलातदेशवासी म्लेच्छः। *प्रश्न॰ १४।*

हूयवह– अग्निना यो जनित इति हृदयस्थम्। *ज्ञाता॰ ६३।*

हूहूः– गन्धर्वभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

हूहूए– कालमानविशेषः। *भग॰ २७५। भग॰ २१०।*

हूहूयंग– कालविशेषः। *भग॰ ८८८।* कालविशेषः। *सूर्य॰ ९१।*

हूहूय– कालविशेषः। *सूर्य॰ ९१। स्था॰ ८६।*

हूहूयमाण– हूहूयमानं-अतिशयेन जाज्वल्यमानम्। *जीवा॰ १२४।*

हृदय– शरीरावयवः। *आचा॰ ३८।*

हृदयग्राहि– हृदयग्राहित्वं-श्रोतृमनोहरता, वचनस्य त्रयोदशगुणः। *सम॰ ६३।*

हृदयङ्गमः– किन्नरभेदविशेषः। *प्रज्ञा॰ ७०।*

हृष्ट– तुष्टः। *आव॰ ७५९।*

हेट्ठा– अधस्ताद् भुवम्। *ओघ॰ १७५।*

हे– निपातो वाक्यालंकारे। *प्रश्न॰ ३१।*

हेउ– यत्रोपन्यासोपनये पर्यनुयोगस्य हेतुरुत्तरतयाभिधीयते स हेतुरिती। *स्था॰ २६०।* हेतुः-अनुमानोत्थापकं लिङ्गमुपचा-रादनुमानमेव वा। *स्था॰ ४९१।* हेतु-उपादानकारणम्। *उत्त॰ २६८।* हेतुः-अन्यथाऽनुपपत्तिलक्षणः। *स्था॰ २६१।* हेतुः-अन्वयव्यतिरेकलक्षणः। *अनुयो॰ २६२।* हेतुः-साध्यसद्भावभावतदभावाभावलक्षणः। हिनोति-गमयतीति हेतुः। *स्था॰ ४९३।* हेतुः-अन्यथाऽनुपपत्तिरूपो युक्ति-मार्गः। *दशवै॰ १२५।* हेतुः-अध्यवसानादिर्मरणकारणं तद्यो-गान्मरणमपि हेतुः। *भग॰ २३९।* हेतुः-उपपत्तिः। *प्रज्ञा॰ ५३२।* हेतुः-साध्यधर्मान्वयव्यतिरेकलक्षणः। *आव॰ ६२।* हेतुं-विवक्षितार्थगमकम्। *प्रज्ञा॰ ५९।* हिनोति-गमयति जिज्ञासितधर्मविशिष्टानर्थान् इति हेतुः-कारको व्यञ्जकश्च। *आव॰ ५९७।* हेतुः-परार्थ स्वार्थप्रतिपादकं वचः। *आव॰ ४२७।*
अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुगम्यत्वाद्धेतुः। *भग॰ ११६।* अनुमानप्रतिपादकं वचो हेतुः। *नन्दी॰ १६५।* पायच्छित्तं वहंतस्स पायच्छित्तमावण्णस्स जाव मणालोइयं ताव। *निशी॰ ३०५* आ। हेतुः-पञ्चावयववाक्यरूपः। *उत्त॰ ३०८।* हेतुः-अन्वयव्यतिरेकलक्षणः। *उत्त॰ ३०८।* हेतुः। *आव॰ ७९३।* हेतुः-अन्यथानुपपत्तिलक्षणः। *दशवै॰ ८८।*

हेउकारणचोइओ– हिनोति-गमयति विवक्षितमर्थमिति हेतुः, स च पञ्चावयवरूपः कारणं च-अन्यथाऽनुपपत्तिमात्र ताभ्यां चोदितः-प्रेरितः हेतुकारणचोदितः। *उत्त॰ ३०८।*

हेऊजुत्त– हेतुयुक्तं-अर्थगमकारणयुक्तम्। *स्था॰ ३९७।* गीतनिबद्धार्थं गमकहेतुयुक्ततया दृब्धं हेतुयुक्तम्। *अनुयो॰ १३३।* अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुयुक्तम्। *आव॰ ३७६।*

हेउजुत्ती– हेतुयुक्तिः-पक्षधर्मान्वयव्यतिरेकलक्षणा। *आचा॰ २६।*

हेतुवाद– त्रिविधसञ्ज्ञायां प्रथमा। *सम॰ १८।*

हेउदोस– हिनोति-गमयतीति हेतुः साध्यसद्भावभावतद भावाभावलक्षणः तेषां दोषः स्वलक्षणकारणहेतुदोषः। *स्था॰ ४९२।*

हेउनिजुत्तं– हेतुनियुक्तं-ज्ञोपपत्तिकम्। गद्यगुणः। *दशवै॰ ८८।*

हेउप्पभव– हेतुप्रभवः-हेतुजन्मा। *दशवै॰ १२०।*

हेऊ– यत्रोपन्यासोपनये पर्यनुयोगस्य हेतुरुतरतयाऽभिधीयते स हेतुः। *स्था॰ २५४।* हेतुः। *ज्ञाता॰ ११०।* हेतुः-साध्यविनाभूतत्वलक्षणः। *प्रश्न॰ ११७।*

हेउवन्नास– हेतूपन्यासः, उपन्यासस्य चतुर्थो भेदः। *दशवै॰ ५५।*

हेज्जं– हार्यं-आवर्जनीयम्। *पिण्ड॰ १३२।*

हेज्जा– हार्या-गुह्यायाः। *बृह॰ २५६* अ।

हेट्ठ– गुह्यपदेसो। *निशी॰ २६७* आ।

हेट्ठा– आर्धा नापिता। *बृह॰ ३११* अ।

हेट्ठावणि– अधोऽवनिः-महाराष्ट्रः। *पिण्ड॰ १६७।*

हेट्ठाहुत्ती– अधस्तात्-अर्वाङ्मुखी। *आव॰ ६७५।*

हेट्ठिं– अधस्तात्। *स्था॰ ४३२।*

हेट्ठिल्ल– अधस्तात्तन्नुः। *अनुयो॰ १७७।*

हेट्ठिल्ला– अधस्तनी। *आव॰ ६४७।*

हेडग– वनस्पतिकायविशेषः। *भग॰ ८०३।*

हेडिय– हेडितं-बाधितं अधोनिमितम्। *उत्त॰ ३६१।*

हेडी-हेठकः– बाधकः ऋक्संस्थानीयो मन्त्रः। *सूत्र॰ १६९।*

हेतु-हेतुः– कृतकृत्त्वादिलक्षणहेतुत्त्वर्थप्रतिपादकं पदम्। *स्था॰ ३९२।* हेतुः-इहान्यथाऽनुपपन्नत्वलक्षणहेतुजन्यत्वानुमानमेव वा कार्ये कारणोपचारत्वाद् हेतुः। *स्था॰ २६२।*

हेतुनिउण– सकारणं। *दशवै॰ ३५।*

हेतुवात– हिनोति-गमयति जिज्ञासितमर्थमिति हेतुः-अनुमा-नोत्थापकं लिङ्गमुपचारादनुमानमेव वा तद्वादो हेतुवादः। *स्था॰ ४९१।*

हेतुसत्थ– अक्खपादादि। *निशी॰ ३०* आ। न्यायशा-स्त्रम्। *निशी॰ ३३* आ।

हेमंत– हेमन्तः-शीतकालः। *भग॰ २११।* हेमन्तः-शीतका-लमासः। *जम्बू॰ १५०।* हेमन्तः-शिशिरः। *ओघ॰ २१२।* हेमन्तो-माघादि। *भग॰ ४६२।* हेमन्तः-शीतकालः। *सूर्य॰ ९१।* हेमन्तः-पोषमाघो। *ज्ञाता॰ ६३।* शीतकालः। *ज्ञाता॰ ६५।* शीतकालमासः। *ज्ञाता॰ १२४।* पोषमाघो। *ज्ञाता॰ १६०।* हेमन्तः-चतुर्थी ऋतुः। *सूर्य॰ २०९।*

हेमंता- हेमन्ती-शीतकालभावी। *सूर्य॰ २१९।*

हेम- हेमसंनिभो हेमकूडकुमारो। *निशी॰ ३१* आ।

हेमकुंड- हेमकुण्डम्। *आव॰ ८२७।* हेमपुरनगरे राया। *निशी॰ ३१* आ।

हेमगा- हिमं-तुहिनं तदेव हिमकं तस्यैते हैमका हिमपातरूपा। *स्था॰ २८७।*

हेमचन्द्रसूरिः- अनुयोगद्वारव्याख्याकारकः आचार्यविशेषः। *अनुयो॰ २७१।*

हेमजाल- सच्छिद्रः सुवर्णालङ्कारविशेषः। *औप॰ ५५।* सुवर्णमयदामसमूहः। *राज॰ ६४।* हेममयदामसमूहम्। *जीवा॰ १९२।* हेमजालं-सच्छिद्रसुवर्णालङ्कारविशेषः। *जम्बू॰ १०५।* सर्वात्मना हेममयः लम्बमानः दासमूहः। *जीवा॰ १८१।* भूषणविधिविशेषः। *जीवा॰ २६८।*

हेमपुर- हेमकूडरायरायहाणी। *निशी॰ ३१* अ।

हेमव- हिमवान्-अष्टमशास्त्रीयमासनाम। *जम्बू॰ ४९०।* हेमवान्-शास्त्रीयाष्टममासनाम। *सूर्य॰ १५३।*

हेमवए- हैमवतं-नामवर्षम्। *जम्बू॰ २९९।* हेम-नित्ययोगि प्रशस्यं वाऽस्यास्तीति हेमवत् हेमवदेतम्। *जम्बू॰ ३०१।*

हेमवत- हैमवतं-हिमवन्महाहिमवतोर्मध्ये क्षेत्रम्। *स्था॰ ६८।* हैमवतः-अकर्मभूमिविशेषः। *प्रज्ञा॰ ५०।*

हेमवन्न- हेमवर्णः-निषधजाम्बूनदागर्भः। *सूत्र॰ १४७।*

हेमवय- हैमवतं-हिमवत्पर्वतभामि। *जीवा॰ १९२।* हेमवतं-हिमपद्गिरिजातम्। *भग॰ ३२२।*

हेमवयकूड- हैमवतवर्षैशसूरकूरम्। *जम्बू॰ २९६।*

हेमसंभवा- हेमकूडभारीया। *निशी॰ ३१* अ।

हेरंग- हेरङ्गम। *विपा॰ ८०।*

हेरण्यवयकूड- हैरपण्यवत्कूटं-हैरण्यवत्क्षेत्राधिपदेवकूटे मणिकाञ्चनकूटम्। *जम्बू॰ ३८०।* हैरण्यवतक्षेत्रसूरकूटम्। *जम्बू॰ ३८१।*

हेरण्णिओ- सुवर्णकारः। *आव॰ ४२७।*

हेरिक-हेरिक-गुप्तचरः। *पिण्ड॰ ४९।*

हेरिय- हेरिकः-परराष्ट्रस्वरूपगवेषकः। *बृह॰ ८२* आ।

हेरुताल- वृक्षविशेषः। *जम्बू॰ ९७।*

हेरुयालवणं- वृक्षविशेषः। *जीवा॰ १४५।*

हेरुयलिति- विकोपयति। ज्ञात॰ *१४४।*

हेलियमच्छ- मत्स्यविशेषः। *जीवा॰ ६६।*

हेवक- अभ्यासः। *स्था॰ २८५।*

हेवाक- स्वभावः। *आव॰ २७६*।

हेसासण- हंसासनं-यस्यासनस्याधोभागे हंसो व्यवस्थितः। स। *जीवा॰ २००*।

हेसिअ-हेषितः- हेसारवरुपः। *जम्बू॰ १४४*।

हेसितं- अश्वशब्दः। *आव॰ ३४३*।

हेहंभूतो- गुणदोषपरिज्ञानविकलोऽशठभावः। *व्यव॰ ३८*।

हेहयकुलं- हैहयकुलम्। *आव॰ ६७६*।

हैमवत- भोगभूमिविशेषः। *प्रश्न॰ ९६*। हिमतद्वर्षधरे दशम-कूटम्। *स्था॰ ७१*।

हैमवत्- महाहिमवति तृतीयकूटम्। *स्था॰ ७२*।

हैरण्यक- कर्मबुद्धो दृष्टान्तः। *नन्दी॰ १६४*।

हैरण्यवत्- शिखरिवर्षधरे तृतीयकूटम्। *स्था॰ ७२*। रुक्मिवर्षधरे सप्तमकूटम्। *स्था॰ ७२*।

हैरिकः- चारिकः। *प्रश्न॰ ३०*।

हो- भोः। *आव॰ ४०९*।

होइ- भवति-संजायते। *दशवै॰ ३९*।

होअव्वयं- भावितव्यं-वर्त्तितव्यम्। *दशवै॰ २२७*।

होक्कारंत- हुङ्कारयति। *आव॰ २७२*।

होक्खामि- भव्यामि-मोक्ष्यामि-पालयिष्यामि। *उत्त॰ २४४*।

होज्ज- भवेत्। *व्यव॰ ४६५अ*।

होज्जा- भवन्ति। अवगाहना। *अनुयो॰ ६१*।

होडहड- किंचित् ज्ञास्ये। *व्यव॰ १२४आ*।

होडिओ- नाविकः। *आव॰ २२३*।

होढ- गाढमलीकम्। *बृह॰ २२१आ*। *निशी॰ १२*।

होढा- देशीपदम्-दत्तम्। *व्यव॰ १३४आ*।

होत्तिअ- वृणविशेषः। *प्रज्ञा॰ ३३*। अग्निहोत्रिकः। *औप॰ ९०*। अग्निहोत्रिकः। *निर॰ २५*।

होप्पेह- गले धृत्त्वा प्रेरयथ। *बृह॰ २१५अ*।

होम-होमः- अग्निहवनम्। *अनुयो॰ २९*। अग्निकारिका। *प्रश्न॰ ५१*।

होरंभा- रूढिगम्या- ढक्काविशेषः। *भग॰ २१७*। होरम्भाम-हाढक्का। *जम्बू॰ ३०६*। होरम्भा-महाढक्का। *जीवा॰ २६६*।

होरम्भा- महाढक्का। *राज॰ ४९*। होरंभा-महाढक्का-महानिस्वाना। *जम्बू॰ १०१*।

होल- देशान्तरेऽवज्ञासंसूचकः। *आचा॰ ३८८*। होलः-तत्तद्देशप्रसिद्धो नैष्ठूर्यवाचकोऽयं शब्दः। *दशवै॰ २१५*। नानादेशापेक्षया आमन्त्रणवचनम्। *ज्ञाता॰ १६५*। होलः-नानादेशपेक्षया गौरवकुत्सादिगर्भमान्त्रणवनचम्। *दशवै॰ २१६*।

ह्री- महाहिमवति पञ्चमकूटम्। *स्था॰ ७२*। महापद्मवास्तव्या देवता। *स्था॰ ७३*।

ह्लसन- कम्पनम्। *पिण्ड॰ १०९*।

– x –x –x – x –

ईति पञ्चमो भाग: समाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागरगूरूभ्यो नमः

आगम-सागर-कोष: ५

[मूल शब्दसंकलनकर्ता:- पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज]

(प्राकृत-संस्कृत-शब्द एवं तेषाम् ससंदर्भ-व्याख्या सह)

कोष-रचयिता

मुनिश्रीदीपरत्नसागरजी महाराज

[M.com._M.Ed._Ph.D._श्रुतमहर्षि]